दिगम्बर जैन मन्दिर परिचय जिला जयपुर

[ग्रामीण अञ्चल]

प्रधान सम्पादक

अनूपचन्द न्यायतीर्थ

सम्पादक

कुबेरचन्द काला

सम्पादक मण्डल

श्री ज्ञानचन्द्र खिन्दूका

डा. कस्तूरचन्द कासलीवाल

डा. शीतलचन्द जैन

प्रबन्ध मण्डल

श्री महेन्द्रकुमार पाटनी

श्री भागचन्द बस्सी वाले

श्री राजकुमार कोठ्यारी

श्री राजेन्द्रकुमार सेठी

प्रकाशक

श्री बाबूलाल सेठी

मानद मंत्री

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ, जयपुर

प्राप्ति स्थान:

कार्यालय : श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ,
महावीर भवन, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302003 ☎ 313202

❁

साहित्य विक्रय केन्द्र,
वर्धमान कॉम्प्लेक्स जौहरी बाजार, जयपुर

❁

जैन विद्या संस्थान,
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी,
भट्टारक जी की नसियां, रामबाग रोड जयपुर

❁

साहित्य विक्रय केन्द्र,
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी
श्री महावीर जी (करोली-राज.)

❁

मैनेजर कार्यालय : दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा (बाड़ा)
पो. पद्मपुरा (जयपुर राज)

❁❁❁

मूल्य : 100/- रुपये मात्र

❁❁❁

मुद्रक :
जैन कम्प्यूटर्स,
मंगलधाम-107
डी 179, मंगलमार्ग, बापूनगर, जयपुर-302015

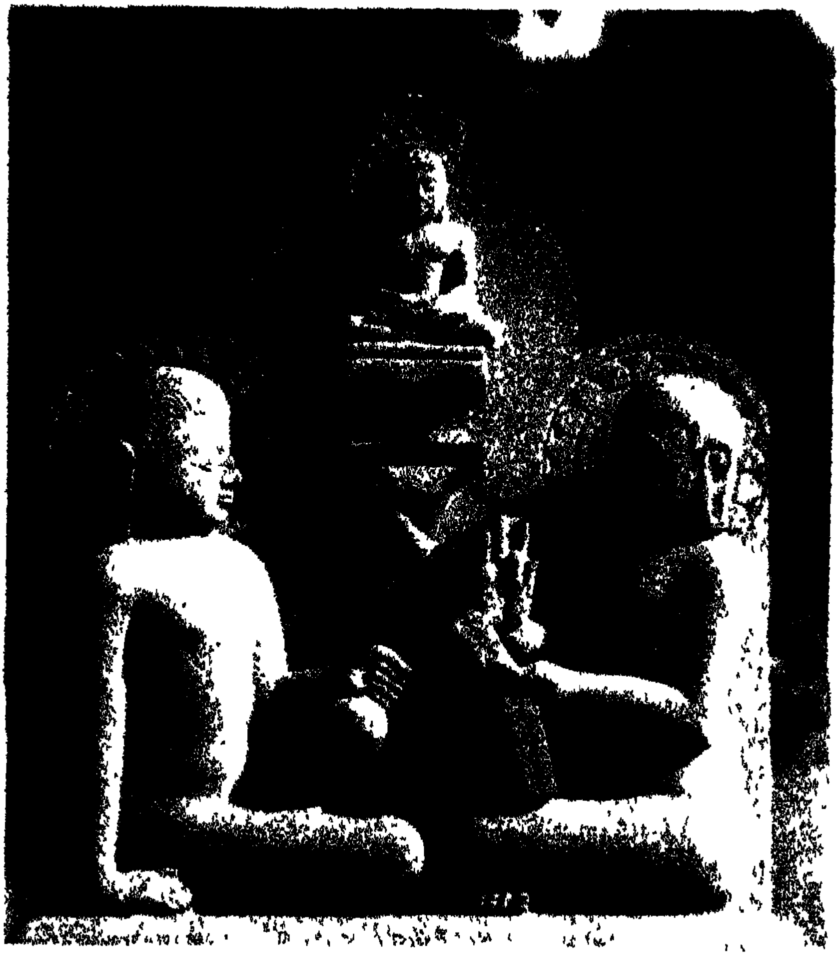

आचार्य कुन्दकुन्द अपने शिष्य मुनिराज उमास्वामी को पढ़ाते हुए

प्रथम खण्ड

शुभाशीर्वाद
एवं
संदेश
शुभकामनाएँ

卐 भगवान महावीर का दिव्य सन्देश 卐

1- राग और द्वेष ही संसार के जनक हैं। इनकी निवृति ही संसार से छूटने के उपाय है।

2- शरीर अनित्य है, वैभव शाश्वत नहीं है। मृत्यु समीप में है। अतः धर्म का संग्रह करना श्रेयस्कर है।

3- यदि यह आत्मा परावलम्बन को छोड़कर अपनी आत्म-ज्योति की ओर दृष्टि करले तो यह अनाथ न रह कर त्रिलोकीनाथ बन जावे।

4- कषाय क्रोधादि विकारों पर विजय प्राप्त करना ही चारित्र है।

5- जिसके हृदय में निर्मल आत्मा का वास नही होता, उसे शास्त्र, पुराण एवं तपश्चर्या निर्वाण प्रदान नही कर सकती है।

6- यह आत्मा ही तो परमात्मा है। कर्मोदय के कारण यह आराध्य के स्थान पर आराधक बनता है।

7- इस आत्मा का प्राण "ज्ञान" है जो अविनाशी रहने के कारण कभी भी विनष्ट नहीं होता –इस कारण आत्मा का भी कभी मरण नहीं होता।

8- जो व्यक्ति कष्ट को सबसे बुरी चीज मानता है, वह वीर नही हो सकता तथा जो सांसारिक सुख को सर्वश्रेष्ठ मानता है, वह संयमी नहीं बन सकता।

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा प्रसारित

आचार्य आर्यनंदी मुनि

तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर
मधुवन
दिनांक - 26.12.97

स्वर्गेमर्त्यंतरिक्षे गिरिशिखर ह्रहे स्वर्नदीनीर पूरे।
शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने भूरुहाणां निकुंजे।।
ग्रामेऽरण्येवनेवा, स्थलजलविषमेदुर्ग मध्येभिसंधे।
श्रीमत्तीर्थकराणां प्रतिदिवसे महंतम् चैत्यानिवन्दे।।

''दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ मन्दिरों एवं शास्त्र-भंडार, कलाकृति आदि की रक्षा एवं विकास का जो कार्य कर रहा है, वह सराहनीय है। आपका संघ शतसः धन्यवाद के लिये पात्र है। आज के युग मे भगवान का मंदिर समवशरण है जो मोक्षमार्ग का साधन है। 'यः भगवान भजिष्यति, सः भगवान भविष्यति' यह कार्य अत्यन्त पुण्य-प्रद है। शास्त्र भंडार की रक्षा के साथ जो शास्त्र पूर्वाचार्यो ने भव्यों के अमृतपान करने के लिए लिख रखे जो अप्रकाशित हैं उन्हे प्रकाशित एवं प्रसिद्ध करने का कार्य अत्यन्त परोपकारी है, दृष्टि-क्षेप में यह भी रखना उचित होगा।। ॐ ।।''

- *मुनि आर्यनंदी*

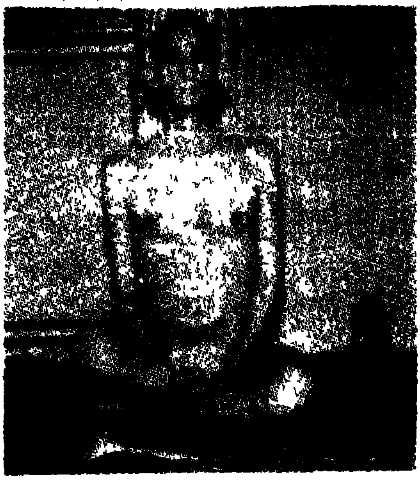

आचार्य सन्मति सागर

टीकमगढ़ (म.प्र.)
दिनांक - 15 दिसम्बर, 1997

"जयपुर जैन नगरी कही जाती रही है। इस क्षेत्र मे अरहत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, जिन-चैत्य, जिन-चैत्यालय, जिनागम और जिनधर्म– ये सम्यग्दर्शन के आयतन उपलब्ध होते रहे है। वे चमत्कारिक भी रहे है। रक्षा का उत्तरदायित्व मेधावी समाज का रहा है। जिस परिपाटी का आज भी निर्वाह किया जा रहा है।"

"प. पू. मुनि कुंजर समाधि सम्राट आचार्य श्री आदिसागर जी महाराज अंकलीकर कहते है कि प्राचीन आयतनो की सुरक्षा करने से सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की उत्पत्ति मे वृद्धि होती है।"

वर्तमान मे श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ यह प्रकाशन मन्दिरो के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व को ध्यान मे रखते हुये, उनमे विराजित प्रतिमाओं, ग्रंथ-भण्डारो तथा अन्य कलाकृतियो की जानकारी जनसाधारण को सुगम कराने हेतु एवं संदर्भ ग्रन्थ के रूप मे संग्रहीत कर रहा है। यह कार्य तो बहुत बड़ा है, परन्तु मनीषी वर्ग अपने ज्ञान के माध्यम से सुगम कर लेते हैं। वास्तव मे वे बड़े-बड़े कार्यो को साधते है, इसीलिये वे महान हैं। उनका यह महान कार्य सुगम सानन्द एवं निर्विघ्न रूप से हो इसी भावना से श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ को मेरा मंगलमय शुभाशीर्वाद है।"

- *आचार्य सन्मति सागर*

आचार्य विद्यानंद मुनि

भट्टारकजी की नसियां
जयपुर

दिनांक - 13.11.1997

"यह जानकर हमे प्रसन्नता हुई कि जयपुर का श्री दिगम्बर जैन मंदिर महासंघ जयपुर जिला के ग्रामीण अंचल मे स्थित 192 गांवो मे स्थित लगभग 269 दिगम्बर जैन मंदिरों का प्रामाणिक इतिहास, उनमे स्थित कलाकृतियाँ, हस्तलिखित ग्रंथ, भित्तिचित्र आदि हमारी सांस्कृतिक धरोहर का कलात्मक निदर्शनों के चित्र सहित एक स्मारिका प्रकाशित कर रहा है। ऐसे धार्मिक एवं सांस्कृतिक शुभ कार्य मे हमारा सदा ही आशीर्वाद है।"

"इस स्मारिका के प्रकाशन से ग्रामीण अंचल में छुपी पुरा-सम्पदा एवं सामाजिक तथा धार्मिक स्थिति की जन साधारण को जानकारी उपलब्ध होगी तथा इसका उपयोग देश विदेश के विद्वान एवं सर्वसाधारण कर सकेंगे।"

शुभाशीर्वाद!

- *आचार्य विद्यानन्द मुनि*

आचार्य भरत सागर

तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर
मधुवन

दि. 27.12.1997

"आपने जयपुर व जयपुर जिला के ग्रामीण अंचलों में स्थित दिगम्बर जैन मन्दिरो के परिचय-सम्बन्धित स्मारिका-पुस्तिका प्रकाशन करने का निर्णय लिया है, यह कार्य उत्तम है। इस शुभ कार्य के लिये मेरा आपको शुभाशीर्वाद है।"

- *आचार्य भरत सागर*

उपाध्याय ज्ञान सागर मुनि

बुढ़ाना
मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

दि. 11.2.97

"आपने जिस कार्य की योजनाएँ बनाई हैं, अति-उत्तम है। निश्चित ही स्मारिका जन सामान्य को जैन मन्दिरों का परिचय करायेगी।"

- *उपाध्याय ज्ञान सागर*

मुनि अमित सागर

तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर
मधुवन
दिनांक:- 27.12.97

''मंदिर हमारी धर्म संस्कृति के संस्कारो को संरक्षण देने वाले आस्था के केन्द्र हैं।''

''श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ, जयपुर द्वारा जो जयपुर जिले के दिगम्बर मन्दिरों का परिचय प्रकाशित करने का उपक्रम किया जा रहा है वह ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है।''

''इस परिचय से युवा पीढ़ी को प्राचीनता का गौरव एवं महत्व समझ में आयेगा। छुट्टियो में ऐसे वैभवपूर्ण मन्दिरों के दर्शन का पूजन का भाव भी जाग्रत होगा।''

''अत: कमेटी को हमारा पूर्ण आशीर्वाद है।''

–मुनि अमित सागर

गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर
कैम्प - नई दिल्ली

दिनांक - 1 जनवरी,

''मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि दिगम्बर जैन मन्दिर, महासंघ जयपुर, जयपुर जिले के ग्रामीण अंचलों में स्थित दिगम्बर जैन मन्दिरो के परिचय से सम्बन्धित एक स्मारिका-पुस्तक का प्रकाशन कर रहा है। ऐतिहासिक व सांस्कृतिक महत्व की दृष्टि से यह प्रकाशन अत्यन्त प्रशंसनीय है, क्योंकि इस स्मारिका के माध्यम से इन दिगम्बर जैन मन्दिरो मे विराजमान जिनप्रतिमाओ एवं प्राचीन ग्रन्थ भंडारो व कलाकृतियों की विस्तृत जानकारी जन-मानस तक पहुंचकर जैन धर्म की प्राचीनता, ऐतिहासिकता, सांस्कृतिक महत्व व ग्रामीण अंचलो मे भी दिगम्बर जैन मन्दिर की स्थापना की प्राचीनता को दर्शाएगी।''

''साथ ही इस स्मारिका के माध्यम से जन-जन को सुशिक्षाओ व कल्याणकारी सन्देशों को पहुंचाकर उनमें एक नई चेतना जागृत करने का यह सुविचार है। यह स्मारिका अपने उद्देश्यो को पूर्ण करते हुए जैन धर्म की प्राचीनता व ऐतिहासिकता का दिग्दिगन्त व्यापी प्रचार-प्रसार करे यही मंगल आशीर्वाद है।''

–गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

माँ श्री कौशल

ऋषभांचल ध्यान एवं योग केन्द्र
गाजियाबाद (उ.प्र.)

दि. 30.7.97

"परम हर्ष की बात है कि श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ जयपुर अपने जिले के ग्रामीण अञ्चलो मे स्थित दिगम्बर जैन मन्दिरो की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अमूल्य सम्पदा श्री जिन प्रतिमाओ, ग्रंथ भण्डारो तथा अन्य कलाकृतियो की जानकारी जनसाधरण को सुलभ कराने एवं एक संदर्भ ग्रंथ के रुप मे संग्रह हेतु एक संदर्भ स्मारिका पुस्तक शीघ्र ही प्रकाशित कर रहा है। पूरा राजस्थान मूर्ति व शास्त्र भण्डारों का गढ़ है। इस प्रकार की संदर्भ पुस्तिका पहले भी प्रकाशित की गई है उसी क्रम मे यह संकलन कार्य अत्यन्त श्लाघनीय है। मेरा इस मंगल कार्य हेतु शुभाशीर्वाद!"

– माँ श्री कौशल

भट्टारक चारूकीर्ति स्वामीजी

मूडबिद्री (दक्षिण कर्नाटक)
दि. 11.3.97

"हमें यह जानकर अत्यंत हर्ष हुआ कि दिगम्बर जैन मंदिर महासंघ जयपुर, जयपुर जिला के ग्रामीण अंचलो मे स्थित दिगम्बर जैन मंदिरों के प्रतिष्ठा परिचय से सम्बन्धित एक सन्दर्भ स्मारिका पुस्तक का प्रकाशन कर रहा है।"

"इस प्रकाशन की सफलता के लिये हम शुभ कामना करते हैं। आपका यह स्तुत्य कार्य भगवान श्री पार्श्वनाथ स्वामी तथा कूष्मांडिनी देवी की कृपा कटाक्ष से निर्विघ्न सुसंपन्न हो।"

'भद्रं भूयात् वर्द्धतां जिनशासनम्' शुभाशीर्वाद सहित!

– भट्टारक चारूकीर्ति स्वामीजी

अध्यक्ष
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
नई दिल्ली

जनवरी 29, 1997

अशोककुमार जैन

"यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ जयपुर द्वारा जयपुर जिला के ग्रामीण अंचलों में स्थित दिगम्बर जैन मन्दिरो के सम्बन्ध मे विस्तृत जानकारी देते हुए एक स्मारिका प्रकाशित की जा रही है। जयपुर को जैन नगरी कहा जाता है और वहां कई सौ की संख्या में विशाल और भव्य दिगम्बर जैन मन्दिर हैं जिनका इतिहास और परिचय जयपुर से एक सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप मे पहले प्रकाशित हुआ था जो अत्यन्त उपयोगी रहा। अब महासंघ ने ग्रामीण अंचलों में बने प्राचीन दिगम्बर जैन मन्दिरों के साथ-साथ वहां स्थित ग्रन्थ भण्डारों एवं कलाकृतियों का सम्पूर्ण परिचय देने का जो उपक्रम किया है, वह सराहनीय है। वास्तव में श्रमण-संस्कृति के अवशेष जिनका पुरातत्व की दृष्टि से बहुत महत्व है, देश के अनेक भागों में बिखरे हुए हैं। इन सब के बारे में जानकारी प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए मन्दिर महासंघ द्वारा जो कदम उठाया गया है, मैं उसका स्वागत करता हूँ और उसकी सफलता के लिए शुभ कामनाएँ करता हूँ।"

– *अशोककुमार जैन*

निर्मलकुमार जैन

अध्यक्ष
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन
(धर्मसंरक्षिणी) महासभा,
ऐशबाग, लखनऊ
दिनांक - 5.2.97

"यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि दिगम्बर जैन मंदिर महासंघ जयपुर, जयपुर जिले के ग्रामीण अंचलों में स्थित दिगम्बर जैन मंदिरों के प्रतिष्ठा परिचय से सम्बन्धित एक संदर्भ स्मारिका पुस्तक का शीघ्र ही प्रकाशन कर रहा है, यह एक महत्वपूर्ण कार्य है। इस कार्य की सफलता के लिए हमारी ओर से हार्दिक शुभ कामनाएँ। आशा है कि आपका यह प्रयास अवश्य ही सफल होगा। हार्दिक शुभ कामनाओं सहित।" शेष शुभ!

- निर्मलकुमार जैन

पद्मश्री बाबूलाल पाटोदी

64/3, मल्हारगंज
इन्दौर-2
दि. 28.1.97

"जयपुर तो प्राचीनतम जैन नगर है। इस नगर ने भारतवर्ष को जैन स्थापत्य कला एवं अनुपम गौरव को जिस प्रकार प्रदर्शित किया है, वह वंदनीय है। जयपुर जिले के ग्रामीण अंचलो मे भी जिन मंदिर अपनी विशेषताओं को लिये हुए हैं, मुझे तो कुछ ही मंदिरों की वंदना एवं दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं नि:संकोच कह सकता हूँ कि बेजोड़ मूर्तिकला का प्रदर्शन जो गाँव-गाँव मे जिन भक्तो ने किया, आज के इस अर्वाचीन युग मे इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। मंदिर एवं मूर्ति की कला एवं सौंदर्य तो इतना रहता है कि मन रम जाता है, वहाँ से हटने को मन नहीं करता। जयपुर तो राजधानी है, पर जिले में भी जैन जनों ने अद्‌भुत कृतियाँ निर्मित की है।"

"श्री दिगम्बर जैन मंदिर महासंघ द्वारा उठाया गया यह कदम अत्यन्त प्रशसंनीय है, इससे एक तो हमारी प्राचीनता, दूसरा अलभ्य जिनवाणी की पांडुलिपियों की जानकारी प्राप्त होगी, तीसरे हम हमारे लक्ष्य की ओर पहुँच सकेंगे कि जैन धर्म किसी की शाखा नहीं, अपितु स्वतंत्र एवं सार्वभौम धर्म है, जो अनादि निधन है। वर्तमान युग में हमारे ही कुछ विद्वान जो मात्र एक विषय अथवा किसी शिक्षण शिविर के पंडित बन गये हैं, उनके सामने भी जिनधर्म, जैन स्थापत्य कला, जिन चैत्य, जिनवाणी का वास्तविक स्वरूप प्राप्त होकर उन्हे भी मार्ग-दर्शन प्राप्त होगा।"

"मैं आपकी संस्था द्वारा उठाये गये कदम की हृदय से सराहना करता हूँ और समस्त समाज से अपील करता हूँ कि ऐसे कार्य को हर स्थान पर किया जावे, ताकि हमारा प्राचीन वैभव जनाभिमुख हो सके।"

–बाबूलाल पाटोदी

देवकुमार सिंह कासलीवाल *50, शीतलामाता बाजार*
इन्दौर

दिनांक - 6.2.97

''यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व को ध्यान में रखते हुए उनमें विराजित प्रतिमाओं, ग्रंथ भण्डारों तथा अन्य कलाकृतियों की जानकारी हेतु प्रतिष्ठा परिचय से संबंधित एक सन्दर्भ स्मारिका पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है।''

''यह बहुत ही प्रसन्नता की बात है कि इसके प्रकाशन से मंदिरों से संबंधित पूर्ण जानकारी उपलब्ध हो सकेगी। आपके नेतृत्व में होने वाले इस ऐतिहासिक कार्य के लिए आपको अनेकानेक शुभकामनाएं एवं बधाई।''

'शुभकामनाओं सहित।'

- देवकुमार सिंह कासलीवाल

डॉ. दरबारीलाल कोठिया *बीना*
सागर (म.प्र.)
20 फरवरी, 1997

''यह अवगत कर प्रसन्नता हुई कि आप जयपुर जिले के विभिन्न गांवों मे निर्मित हुए दिगम्बर जैन मंदिरों की परिगणना और उनका संक्षिप्त परिचय तैयार कर रहे हैं।

''यह ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत उत्तम है और सराहनीय है। जैन मन्दिरों के निर्माताओं को धन्यवाद देता हूँ कि मन्दिरो के रूप में दिगम्बर जैन संस्कृति की सुरक्षा की है। जयपुर नगर और आसपास का वह भाग निश्चय ही बड़े-बड़े मन्दिरों के लिये विश्रुत है। आप आज उनकी परिगणना तथा संचित सांस्कृतिक इतिहास पुस्तक के रूप में लिख रहे हैं, इसके लिये बधाई एवं धन्यवाद है।''

-दरबारीलाल कोठिया

नीरज जैन

शान्ति सदन, कम्पनी बाग,
सतना (म.प्र.)
दिनांक - 28.2.97

"मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता है कि जयपुर का दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ अपने नगर और ग्रामीण अञ्चल में स्थित दिगम्बर जैन मन्दिरों की एक परिचय-पुस्तिका प्रकाशित कर रहा है।"

"अनेक सुन्दर और महत्वपूर्ण मन्दिर, आवागमन की असुविधा के कारण हमारी दृष्टि में नहीं आ पाते। मुझे विश्वास है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हमारी ऐसी अनमोल धरोहर का भी सचित्र परिचय हमें मिलेगा।"

"प्रकाशन की सब प्रकार सफलता की कामना करते हुए मैं प्रकाशित प्रति की प्रतीक्षा करता हूँ।"

–नीरज जैन

डॉ. गोपीचन्द वर्मा

रामा निवास
2636, रास्ता खजानेवालान, जयपुर
दिनांक - 15.2.1997

"जयपुर जिले के दिगम्बर जैन मन्दिरों में विराजित प्रतिमाओं, ग्रन्थ भण्डारों तथा कलाकृतियों की जानकारी पर एक सन्दर्भ ग्रन्थ शीघ्र प्रकाशित कर रहे हैं, यह वास्तव में अत्यन्त प्रसन्नता की बात है। इससे जन साधारण तथा पूजार्थियों के लिए न केवल इन देवालयों का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व ही बढ़ेगा बल्कि ऐसा सन्दर्भ ग्रन्थ शोधार्थियों के लिए अपूर्व निधि भी सिद्ध होगा।"

"मैं आपके इस प्रकाशन की सफलता के लिए अपनी हार्दिक मंगल एवं शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।"

–डॉ. गोपीचन्द वर्मा

संहितासूरि, विद्यावाचस्पति,	*मार्तण्ड भवन*
प्रतिष्ठा दिवाकर	*ऋषभदेव (केशरियाजी)*
प्रतिष्ठाचार्य पं. मोतीलाल मार्तण्ड	*जिला-उदयपुर (राज.)*

"यह ज्ञात कर प्रसन्नता हुई कि दि. जैन मन्दिर महासंघ जयपुर, जयपुर जिले के ग्रामीण अञ्चलों मे स्थित दि. जैन मन्दिरो के प्रतिष्ठा परिचय से सम्बन्धित एक संदर्भ स्मारिका पुस्तक का प्रकाशन कर रहा है।"

"इस प्रकार के प्रकाशन से मन्दिरो के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व को समझने में समाज को सरलता रहेगी। मन्दिरो मे विराजमान प्रतिमाओ, ग्रंथ भण्डारों तथा अन्य कलाकृतियों की जानकारी हेतु सन्दर्भ ग्रंथ के रूप में संग्रह जन साधारण के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। जैन जगत में विद्यमान सभी मन्दिरों के विवरण की एक संग्रह के रूप में नितान्त आवश्यकता है। आपके सम्पादन मे यह जयपुर जिले का संग्रह उस श्रृंखला में महत्वपूर्ण कदम होगा। प्रकाशन हेतु शुभकामना व्यक्त करते हैं। आपका प्रयास अभिनंदनीय है।"

धन्यवाद !

— मोतीलाल मार्तण्ड

बलिराम भगत

सत्यमेव जयते

राज भवन, जयपुर

सन्देश

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ जयपुर द्वारा जयपुर जिले के ग्रामीण अञ्चलो मे स्थित जैन मन्दिरों के प्रतिष्ठा परिचय से सम्बन्धित एक सन्दर्भ स्मारिका के प्रकाशन को सुनकर मुझे प्रसन्नता हुई।

महासंघ द्वारा जैन मन्दिरो के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व को दृष्टिगत रखते हुए उनमे विराजित प्रतिमाओ, ग्रन्थ भण्डारो तथा अन्य कलाकृतियो की जानकारी जन-साधारण को उपलब्ध कराने हेतु सन्दर्भ पुस्तक का प्रकाशन अच्छा कदम है।

मुझे विश्वास है कि महासंघ द्वारा प्रकाश्य सदर्भ पुस्तक मे प्रकाशित सामग्री उपयोगी होगी।

मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

बलिराम भगत

दिनांक 4 फरवरी, 1998 *राज्यपाल राजस्थान*

भैरोंसिंह शेखावत

राज भवन, जयपुर

सन्देश

माननीय मुख्यमंत्री महोदय को यह जानकर प्रसन्नता है कि श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ, जयपुर द्वारा जयपुर जिले के ग्रामीण अञ्चलो मे स्थित दिगम्बर जैन मन्दिरों के प्रतिष्ठा परिचय से सम्बन्धित एक सदर्भ पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

हमारे प्राचीन आध्यात्मिक एव ऐतिहासिक स्थलो की महत्ता को प्रकाशमान करना एक अच्छी परम्परा है तथा इससे उनके पुरातात्त्विक एवं आध्यात्मिक उपादेयता का ज्ञान होता है। इस दृष्टि से महासंघ का प्रयास सामयिक है।

मुख्यमंत्री महोदय को विश्वास है कि प्रकाशन उपयोगी एवं उद्देश्यपूर्ण होगा।

कृपया मुख्यमंत्री महोदय की ओर से शुभकामनाएँ स्वीकार करें।

दिनांक 21 फरवरी, 1998

ह.
(के. एल. कोचर)
प्रेस सलाहकार, मुख्यमंत्री

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ संस्था के उद्देश्य

1. दिगम्बर जैन मन्दिरों जिसमे चैत्यालय व नसियाँ भी सम्मिलित है, के सर्वांगीण विकास, संचालन व उनकी निधियों के संरक्षण हेतु समयानुकूल मार्गदर्शन देना तथा उनकी कार्यान्विति में सक्रिय सहयोग प्रदान करना।
2. दिगम्बर जैन मन्दिरों से सम्बन्धित समय-समय पर उत्पन्न होने वाली समस्याओं के निराकरण हेतु नीति निर्धारण करना एवं आवश्यक कार्यवाही करना।
3. दिगम्बर जैन मन्दिरो के ग्रंथ भण्डारो का सुनियोजित ढंग से संरक्षण करना एवं कराना तथा जैन वाङ्मय के प्रचार-प्रसार व प्रकाशन में सहयोग प्रदान करना, शोध कार्य कराना एवं उस हेतु छात्रवृत्ति देना।
4. दिगम्बर जैन मन्दिरों के जीर्णोद्धार व उनकी विभिन्न गतिविधियो के सम्यक् संचालन हेतु आवश्यकतानुसार आर्थिक संरक्षण व सहयोग प्रदान करना।
5. किसी भी दिगम्बर जैन मन्दिर, चैत्यालय जिसका समुचित प्रबन्ध न हो अथवा जिसके पंच या व्यवस्थापक उस मन्दिर का प्रबन्ध महासंघ के अधीन देना चाहें उसका अधिग्रहण कर सुव्यवस्थित करना। ऐसे दिगम्बर जैन मन्दिरों के हित में चल व अचल सम्पत्ति क्रय व विक्रय करना, किराये पर देना व लेना या हस्तान्तरित करना।
6. संगोष्ठी, सम्मेलन, प्रकाशन, प्रदर्शनी धार्मिक उत्सव आदि का आयोजन करना।
7. उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु दान देना या लेना या ऋण देना व ऋण लेना।
8. वे समस्त कार्य जो अपने उद्देश्यों की पूर्ति में प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप में सहायक हों, करना।

द्वितीय खण्ड

卐

प्रकाशकीय

❋

अध्यक्ष की कलम से

❋

सम्पादकीय

❋

आभार

❋

महासंघ परिचय

卐 श्री महावीराय नमः 卐

With Best Compliments From :

जिनमन्दिर स्वर्ग का प्रथम सोपान है और क्रमशः मुक्ति श्री का प्रदायक है।

卐

KASLIWAL TUBES LTD.

Regd. Office

253/3 A Shahpur Jat, Panchsheel, Delhi- 16

Head Office :

1201, Maniharon Ka Rasta, Jaipur (Raj.)

Sales Office :

128, M.G.D. Market, Jaipur (Raj.)

Phone:

(O) 321651, 317761 (R) 605559, 46227, 47429

Fax :

0141-315426

Distributors :

Jindal T.T. Swastik, R.T.L. Steel Tubes/Pipes & Fitting

हमारे यहाँ ½" से 14" की साइज के
काले एवं जी. आई. पाइप हर समय तैयार मिलते हैं।

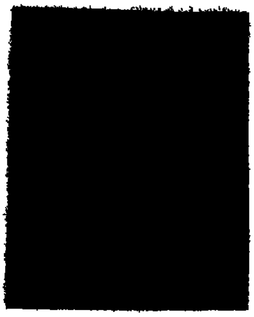

प्रकाशकीय

मन्दिर — धर्म एवं सामाजिक संस्कृति के आधार स्तम्भ हैं। इसलिये इन्हें सुरक्षित रखने के प्रति जागरूकता लाने और इनके संबंध में जन साधारण को जानकारी कराने के उद्देश्य से मन्दिर महासंघ ने प्रथम चरण में जयपुर शहर के मन्दिरों का सर्वेक्षण कार्य किया तथा सर्वेक्षण में संकलित सामग्री का विश्लेषण एवं लिपिबद्ध कर मुख्य तथ्यों का पुस्तक रूप में "जयपुर दिगम्बर जैन मन्दिर परिचय" के नाम से प्रकाशन वर्ष 1990 में किया। इसका सर्वत्र स्वागत हुआ और महासंघ का उत्साह बढ़ा। यह प्रकाशन सन्दर्भ पुस्तक के रूप में उपयोग में आने लगा। इसमें निहित सामग्री का समाचार पत्रों ने भी उपयोग किया जिससे प्रचार-प्रसार हुआ। इससे इसकी उपादेयता स्वयं-सिद्ध है।

दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ ने द्वितीय चरण में जयपुर जिले के ग्रामीण अञ्चल में स्थित दिगम्बर जैन मन्दिरों की जानकारी का सर्वेक्षण कार्य हाथ में लिया। इस हेतु महासंघ के प्रतिनिधि व्यक्तिशः गांवों में जाकर मन्दिरों के प्रबन्धकों/प्रभारियों से मिले और जानकारी एकत्र की। इस श्रम एवं कष्टसाध्य कार्य मे सर्वश्री कुबेरचन्द काला, महेन्द्रकुमार पाटनी, रतनलाल झागवाले, राजमल छाबड़ा, श्री पूनमचन्द छाबड़ा, अनूपचन्द न्यायतीर्थ, प्रकाशचन्द ठोलिया ने गांव-गांव भ्रमण कर जानकारी प्राप्त की है। उन सबका मैं अत्यन्त आभारी हूँ। सर्वेक्षण जानकारी मे प्राप्त सामग्री को लिपिबद्ध किया और प्रस्तुत प्रकाशन में श्री अनूप चन्द न्यायतीर्थ, प्रधान सम्पादक और श्री कुबेरचन्द काला सम्पादक ने अथक् परिश्रम से सम्पादन कर संजोया है। सम्पादक मण्डल के अन्य सदस्यों ने भी समय-समय पर मार्ग-दर्शन कर सहयोग दिया है। मैं इन सब के प्रति हृदय से अपना आभार प्रकट करता हूँ।

सम्बन्धित मन्दिरों के समस्त प्रबन्धकों के प्रति जिन्होंने अपने-अपने मन्दिरों के सम्बन्ध में परिचय सामग्री उपलब्ध करायी है तथा सर्वेक्षण के दौरान हमारे प्रतिनिधियों को पूर्ण सहयोग दिया है। महासंघ की ओर से आभार प्रकट करता हूँ।

हमारे उन आचार्यों एवं मुनियों के प्रति, जिन्होंने लिखित अथवा मौखिक शुभाशीर्वाद प्रदान किया जिसके फलस्वरूप इस महत्वपूर्ण प्रकाशन को आपके सम्मुख प्रस्तुत करने में महासंघ सफल हुआ है, श्रद्धावनत हूँ। इस धार्मिक सांस्कृतिक निधि की महत्ता एवं इससे सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं पर भी विचार मंथन करना आवश्यक समझा गया। इस हेतु मूर्धन्य विद्वानों एवं लेखकों का जिन्होंने अमूल्य समय निकाल कर अपनी मौलिक रचनाओं को हमें प्रेषित कर इस प्रकाशन के महत्वपूर्ण कलेवर को निर्मित किया है, सभी साधुवाद के पात्र हैं।

किसी भी वस्तु की पूर्ण रूप से जानकारी लेख द्वारा पूर्ण होना सम्भव नहीं, जबकि चित्र द्वारा उसकी जानकारी सहज रूप से साक्षर निरक्षर, बाल युवा व वृद्ध को हो जाती है। अतः जिन मन्दिरों की विशिष्टताओं के जो चित्र उपलब्ध हो सके, सचित्र खण्ड में उन्हें स्थान

देकर प्रकाशन को आकर्षक बनाया गया है। चित्र खण्ड के प्रकाशन मे सर्व श्री कुबेरचन्द काला, महेन्द्रकुमार पाटनी, हरकचन्द सौगानी, रतनलाल झागवालों ने सहयोग दिया है। मैं इस हेतु भी उनका आभारी हूँ।

बिना आर्थिक सहयोग के किसी भी प्रकार का प्रकाशन कार्य सम्भव नहीं है। इस कार्य में श्री महेन्द्रकुमार पाटनी, श्री भागचन्द बस्सीवाले व अर्थ समिति के अन्य सहयोगियों ने अथक् प्रयास किया है। उनके प्रति भी मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। समिति के सदस्य श्री कपूरचन्द पाटनी का, जिनका स्वर्गवास इस दौरान हो गया उनके प्रति अपनी श्रद्धांजली अर्पित करता हूँ। ''विज्ञापन दाताओं'' का भी आभारी हूँ जिन्होंने अपने संस्थानों का विज्ञापन देकर इसके प्रकाशन में आर्थिक सहयोग दिया है।

अनेकों महानुभावों ने प्रकाशन हेतु आर्थिक सहयोग प्रदान किया, उनके प्रति भी मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

इस प्रकाशन की समस्त प्रक्रिया में प्रधान सम्पादक श्री अनूपचन्दजी न्यायतीर्थ ने पाण्डुलिपि तैयार करने का परिश्रम किया तथा महासंघ के अध्यक्ष श्री रामचन्द्रजी कासलीवाल व उपाध्यक्ष सर्व श्री ज्ञानचन्दजी खिन्दूका एवं कुबेरचन्दजी काला से जो मार्ग दर्शन मिला उससे यह प्रकाशन आकर्षक एवं उपयोगी बन सका है। अत: मैं उनके प्रति भी अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। महासंघ की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों एवं अन्य महानुभावो से प्रत्यक्ष एव अप्रत्यक्ष रूप से जो सहयोग मिला है, उनका भी मैं अत्यन्त आभार प्रकट करता हूँ।

इस प्रकाशन के मुद्रण कार्य में मै0 जैन कम्प्यूटर्स के मालिक श्री रमेशचन्द जैन शास्त्री जिन्होंने लगन के साथ कार्य कर प्रकाशन को साकार रूप दिया है, वे भी साधुवाद के पात्र हैं।

उपलब्ध सूचनाओं के आधार पर परिचय प्रकाशन मे पूर्ण सावधानी रखी गई है फिर भी त्रुटिया रहना सम्भव है। यदि किन्हीं के पास अतिरिक्त सामग्री उपलब्ध हो या इसे श्रेष्ठ बनाने के सुझाव हो तो पाठकों से अनुरोध है कि वे हमें उन्हें भिजवायें ताकि आगामी प्रकाशनो मे तथा हमारे रेकार्ड में सुधार कर सकें।

हमारे धर्म व सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा, सुव्यवस्था एवं विकास में सभी की रुचि में वृद्धि हो एवं इस हेतु यह प्रकाशन उपयोगी सिद्ध हो, इसी मंगल भावना के साथ।

— बाबूलाल सेठी
मानद मन्त्री
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ

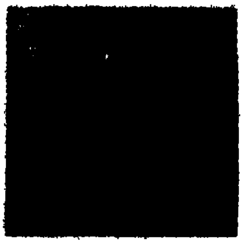

अध्यक्ष की कलम से

दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ जयपुर ने मन्दिर सर्वेक्षण योजना के द्वितीय चरण में जयपुर जिला के ग्रामीण अञ्चल में स्थित दिगम्बर जैन मन्दिरों के निर्माण काल, प्रतिमाओ, यन्त्रों, शास्त्र भण्डार, भित्ति-भाव चित्रों, आम्नाय, अचल सम्पत्ति, प्रबन्ध व्यवस्था आदि का विवरण उपलब्ध कराने के लिये प्रपत्र भेजा और तत्संबंधी कार्य महासंघ के प्रतिनिधियों ने गांव-गांव भ्रमण कर जानकारी प्राप्त की। मन्दिर सर्वेक्षण योजना के पहले चरण में जयपुर व उप नगरों में स्थित 116 जैन मन्दिरो की परिचय पुस्तक "जयपुर दिगम्बर जैन मन्दिर परिचय" स्मारिका निकाल चुका है। जिसकी भूरि-भूरि प्रशंसा हुई है। इससे महासंघ का उत्साह बढ़ा है।

महासंघ ने अब जयपुर जिला के ग्रामीण अञ्चल में स्थित दिगम्बर जैन मन्दिरों का परिचय निकालने का निर्णय लेकर एक कदम और बढ़ाया है।

जयपुर जिला (ग्रामीण अञ्चल) के प्रस्तुत प्रकाशन में मन्दिरों से सम्बन्धित जिस महत्वपूर्ण सामग्री का संकलन किया है उसका सम्पूर्ण श्रेय सर्वश्री पं श्री अनूपचन्द न्यायतीर्थ, कुबेरचन्द काला, महेन्द्रकुमार पाटनी, पूनमचन्द छाबड़ा, रतनलाल झागवाले एवं राजमल छाबड़ा तथा बाबूलाल सेठी को है, जिन्होंने इस कठिन एवं श्रमसाध्य कार्य को लगन से गांव-गांव भ्रमण करके और प्रबन्धको से सम्पर्क करके आवश्यक सन्दर्भ सूचनाएं एकत्र कर पूरा किया है। यह एकत्र सामग्री जन साधारण के समक्ष प्रस्तुत हो इसके लिये "द्वितीय प्रकाशन" के रूप में दिगम्बर जैन मन्दिर परिचय जिला जयपुर (ग्रामीण अञ्चल) स्मारिका आपके हाथों मे देते हुये अपार हर्ष है । इसमे जयपुर जिला की 10 तहसीलो के 192 गांवो के 269 मन्दिरों का परिचय प्रस्तुत है। महासंघ ने विज्ञापनों के माध्यम से तथा मन्दिरो से सहायता स्वरूप राशि लेकर आर्थिक साधन जुटाने का कार्य प्रारम्भ किया, किन्तु महासंघ के मन्त्री श्री बाबूलाल सेठी एवं संयुक्त मन्त्री श्री अनूपचन्द न्यायतीर्थ के अस्वस्थ हो जाने और श्री कपूरचन्द पाटनी, संयोजक अर्थ समिति के आकस्मिक निधन के कारण स्मारिका के प्रकाशन मे हुये विलम्ब के लिये क्षमा प्रार्थी हूँ।

मैं सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यों, मुख्य रूप से प्रधान संपादक श्री अनूपचन्द न्यायतीर्थ, सम्पादक श्री कुबेरचन्द काला, प्रकाशक मन्त्री श्री बाबूलाल सेठी, विज्ञापन समिति के प्रमुख श्री महेन्द्रकुमार पाटनी, श्री भागचन्द बस्सी वाले, विज्ञापन दाताओं, मन्दिरों के प्रबंधको तथा आर्थिक सहायता प्रदाताओं आदि सभी का अत्यन्त आभारी हूँ।

मैं उन विद्वान लेखकों का भी हृदय से आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने अपने महत्वपूर्ण लेख प्रकाशनार्थ उपलब्ध कराये हैं।

मैं मन्दिर महासंघ की कार्यकारिणी समिति के सभी सदस्यों एवं पदाधिकारियो का भी आभारी हूँ जिनके सहयोग से यह कार्य सम्पन्न हुआ है ।

इस अवसर पर मैं श्री कपूरचन्द पाटनी को भी नहीं भुला सकता जिनके अमूल्य सुझावों एवं योगदान से महासंघ आगे बढ़ा है और अब उनके इस योगदान हेतु महासंघ भविष्य के लिये वंचित हो गया।

अन्त में उन सभी का भी मैं आभार प्रदर्शित करता हूँ जिनका प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से सहयोग प्राप्त हुआ है।

मैं स्मारिका के सुन्दर मुद्रण के लिये जैन कम्प्यूटर्स को भी धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता। पाठकों से विनम्र निवेदन है और आशा है कि वे हमें अपने अमूल्य सुझाव भेजकर अनुगृहीत करेंगे।

आशा है हमारा यह प्रयास पाठकों को रुचिकर लगेगा तथा समाज के लिये उपयोगी होगा।

धन्यवाद !

- रामचन्द्र कासलीवाल
अध्यक्ष
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ

सम्पादकीय

यह गौरव की बात है कि जयपुर तथा जयपुर जिला का नाम दिगम्बर जैन मन्दिरों की बहुलता एवं विशालता की दृष्टि से सर्वोपरि गिना जाता है। जयपुर नगर व उप नगर सहित जयपुर जिला की 10 तहसीलों में लगभग 442 मन्दिर, चैत्यालय एवं नसियाँ हैं। मन्दिरों से ही हमारी धर्म, संस्कृति, साहित्य और सामाजिक एकता सुरक्षित है। मन्दिर हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं, आध्यात्मिक उन्नति के केन्द्र हैं जहां से हमें भली प्रकार जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। मन्दिर केवल पूजा-स्थल ही नहीं हैं, अपितु राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक साहित्यिक एवं ऐतिहासिक जानकारी के स्रोत भी हैं।

मन्दिरों का विस्तृत परिचय जानने के लिये स्थानीय एवं बाहर से आने वाले दर्शनार्थी उत्सुक व जिज्ञासा दिखाते हैं, लेकिन मन्दिरों के संबंध में कोई उपयुक्त पुस्तक उपलब्ध नहीं होने से यह अभाव खटकता रहता है।

दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ ने इस दिशा में पहल की और मन्दिर सर्वेक्षण योजना के अन्तर्गत जयपुर नगर के दिगम्बर जैन मन्दिरों का सर्वेक्षण कर विस्तृत जानकारी प्राप्त की। उसे लिपिबद्ध कर सन् 1990 मे जयपुर दिगम्बर जैन मन्दिर परिचय स्मारिका का प्रथम प्रकाशन पं. अनूपचन्द न्यायतीर्थ के प्रधान सम्पादकत्व में प्रकाशित किया। जिसकी सभी ओर प्रशंसा हुई।

यह स्मारिका एक सन्दर्भ ग्रंथ के रूप में मानी गई तथा शोधार्थियों के लिये उपयोगी रहने के साथ श्रद्धालु यात्रियों एवं पर्यटकों के लिये भी मार्ग-दर्शक सिद्ध हुई है।

मन्दिर महासंघ ने जयपुर जिला के ग्रामीण अञ्चल में स्थित दिगम्बर जैन मन्दिरों की परिचय पुस्तिका के प्रकाशन का भी निर्णय लिया और महासंघ के सम्माननीय सदस्यों ने ग्रामीण अञ्चल में जाकर सर्वेक्षण योजनान्तर्गत मन्दिरों के प्रबन्धकों से सम्पर्क कर उनके सहयोग से मन्दिरों की विभिन्न दृष्टियों से इतिहास, कलाशास्त्र भण्डार, प्रतिमाओं तथा यंत्रो की प्राचीनता एवं उनकी संख्या, आम्नाय, शिलालेख, भित्ति-चित्र एवं व्यवस्था संबंधी तथ्यात्मक सन्दर्भ सूचना प्राप्त की।

इस सन्दर्भ सामग्री को लिपिबद्ध कर जन साधारण की जानकारी हेतु दिगम्बर जैन मन्दिर परिचय स्मारिका जिला जयपुर (ग्रामीण अञ्चल) द्वितीय प्रकाशन के रूप में समाज के समक्ष प्रस्तुत करते हुये मन्दिर महासंघ जयपुर के सभी सदस्यों को हर्ष अनुभव हो रहा है।

यह तो निश्चित है कि ग्रामीण अञ्चल में स्थित मन्दिर प्राय: 300-400 वर्ष या इससे भी अधिक प्राचीन हैं, किन्तु इस सम्बन्ध में कोई प्रमाणित दस्तावेज उपलब्ध नहीं है। इसके दो

मुख्य कारण हो सकते हैं— एक तो यह कि प्रबन्धकों ने कभी यह जानने की कोशिश ही नहीं की कि मन्दिर किसने और कब बनाया। प्राय: उस ग्राम की दिगम्बर जैन समाज द्वारा ही मन्दिरों का निर्माण कराये जाने की बात कही गई है। दूसरे यह कि मन्दिरो में विराजमान प्रतिमाओं के प्रतिष्ठा लेख तथा हस्तलिखित ग्रंथों की ग्रंथ तथा लेखक प्रशस्तियों को नही पढ़ा गया जबकि इनमें इस संबंधी जानकारी कभी-कभी मिल जाती है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार ग्रामीण अञ्चल में स्थित मन्दिरों के सम्बन्ध में हमने निम्न प्रकार विवरण देने का प्रयास किया है:—

उल्लेखित मन्दिर जिला की किस गांव व तहसील मे स्थित है, प्राय: जयपुर से कितनी दूर है तथा वहां सड़क/रेलमार्ग से कैसे पहुँचा जा सकता है। मन्दिर किसने और कब निर्माण कराया, मूलनायक प्रतिमा व अन्य प्रतिमा के नाम व प्रतिष्ठा संवत्, धातु व पाषाण तथा यन्त्रों की संख्या, प्राचीनतम प्रतिमा का संवत्, वेदी संख्या, मन्दिर की आम्नाय, शिलालेख का उल्लेख, जैन परिवारों की संख्या, प्रबन्ध का तरीका, प्रबन्धक का नाम, पंजीयन का प्रकार, अचल सम्पत्ति का विवरण, कलाकृतियों का परिचय, ग्रंथ भण्डार की जानकारी, मन्दिर की वास्तुकला तथा जीर्णोद्धार के लिये आर्थिक सहायता की आवश्यकता आदि।

जयपुर जिला की मन्दिर सर्वेक्षण योजना प्रारम्भ करते समय दौसा उप जिला भी जयपुर जिला के अन्तर्गत था, किन्तु कुछ समय पूर्व दौसा जिला अलग से बन गया । अत: प्रस्तुत प्रकाशन में जयपुर जिला के उप जिलान्तर्गत तहसीलों के 192 गांवो में स्थित 269 मन्दिरो का परिचय ही दिया गया है।

यह उल्लेखनीय है कि महाराजा सवाई जयसिंह द्वारा संवत् 1784 मे जयपुर बसाया गया तो यहां आमेर, सांगानेर, चाकसू, दूदू, मौजमाबाद, फागी, सांभर, जोबनेर, चौमूं, चूरु, विराट नगर आदि गांवों से जैन परिवार भी आकर बसने लगे। आज भी इन गांवों के नामो पर मोहल्ले बसे हुये हैं तथा मन्दिर बने हुये हैं । जयपुर नगर में सबसे प्राचीन जैन मन्दिर घी वालों के रास्ते में चाकसू का है जो संवत् 1782 का निर्मित है।

ग्रामीण अञ्चलों में मन्दिरों के नाम प्राय: तीर्थंकर या गौत्र के नाम पर अथवा बीसपंथी, तेरहपंथी, बड़ा, छोटा मन्दिर आदि के साथ हैं और उसी नाम से पुकारे जाते हैं। इन मन्दिरों की जानकारी जन साधारण तक पहुंचाने के लिये मन्दिर परिचय के साथ ही विद्वानों के उपयोगी लेख भी दिये गये हैं जो मन्दिरों में विराजमान ग्रंथ भण्डारों, भित्ति चित्र, कला एवं कलाकृतियों के महत्व पर प्रकाश डालते हैं। पुस्तक को अधिक उपयोगी बनाने के लिये जिले का मानचित्र और पूर्व प्रकाशित आमेर, सांगानेर के मन्दिरों का संशोधित परिचय भी दिया है जिससे सम्पूर्ण ग्रामीण अञ्चल के मन्दिरों का परिचय एक ही जगह उपलब्ध हो जाये।

जयपुर ग्रामीण अञ्चल में विशाल प्राचीन एवं कलापूर्ण मन्दिर तथा भव्य अतिशययुक्त विशाल प्राचीन प्रतिमाऐं हैं। इनकी जानकारी उपलब्ध चित्रों के माध्यम से चित्र खण्ड में दी गई है।

प्रस्तुत प्रकाशन योजना की तैयारी क्रियान्विति में महासंघ के अध्यक्ष, मन्त्री, उपाध्यक्ष व सदस्य महेन्द्रकुमारजी पाटनी, पूनमचन्दजी छाबड़ा, राजमलजी छाबड़ा, रतनलालजी जैन, झागवालों के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। मन्दिरों के प्रबन्धकों ने भी अपूर्व सहयोग देकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया है, उसके लिये हम उनका आभार प्रकट करते हैं। उन सभी विद्वानों का जिन्होंने अपने लेख प्रकाशनार्थ उपलब्ध कराये हैं तथा जिनके अन्यत्र प्रकाशित लेखों का उपयोग किया गया है, अत्यन्त आभारी हैं जिससे यह प्रकाशन महत्वपूर्ण बन सका है।

यह भी सुअवसर है कि इसका प्रकाशन भारत की स्वतंत्रता की पचासवीं वर्षगांठ स्वर्ण जयन्ती वर्ष में हो रहा है।

अनूपचन्द न्यायतीर्थ

कुबेरचन्द काला

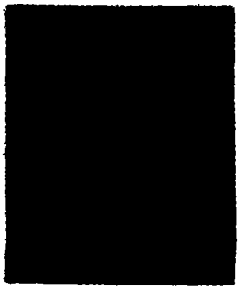

आभार

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ जयपुर का राजस्थान संस्था रजिस्ट्रीकरण अधिनियम के अन्तर्गत अगस्त, १९८२ को पंजीकरण हुआ था। महासंघ ने वर्ष १९९० में जयपुर शहर व उसकी कॉलोनीज में स्थित दिगम्बर जैन मन्दिरों की विस्तृत परिचय पुस्तिका प्रकाशित की थी। वह एक ऐतिहासिक व अभूतपूर्व प्रकाशन था। उस प्रकाशन की सभी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। महासंघ ने निर्णय लिया था कि जयपुर शहर के अतिरिक्त जयपुर जिले में जहां भी दिगम्बर जैन मन्दिर हैं, उनका सर्वेक्षण कर दूसरे प्रकाशन के रूप में उनका परिचय प्रकाशित किया जावे। महासंघ की कार्यकारिणी ने निर्णय लेकर मुझे इस सर्वेक्षण कार्य का संयोजक मनोनीत किया। इस भारी जिम्मेवरी को हमारे साथियो सर्वश्री कुबेरचन्द काला, बाबूलाल सेठी, अनूपचन्द न्यायतीर्थ, पूनमचन्द छाबड़ा, रतनलाल झागवाले, राजमल छाबड़ा ने चुनौती के रूप में स्वीकार कर रेकार्ड समय में जिले के सभी दिगम्बर जैन मन्दिरो में जाकर सर्वेक्षण का महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न किया।

मन्दिरो के सम्बन्ध में एकत्र किये गये विवरण को प्रकाशन योग्य तैयार किया श्री अनूप चन्द न्यायतीर्थ एवं श्री कुबेरचन्द काला ने।

मन्दिरों के परिचय के दूसरे प्रकाशन को छपवाने हेतु अर्थ संग्रह करने के लिए विज्ञापन एकत्रित करने का भी निर्णय लिया गया। इस कार्य के लिये मुझे सभी क्षेत्रो से पूरा सहयोग मिला।

महासंघ के अध्यक्ष श्री रामचन्द्र कासलीवाल, उपाध्यक्ष श्री कुबेरचन्द काला, मंत्री श्री बाबूलाल सेठी, संयुक्त मंत्री श्री अनूपचन्द न्यायतीर्थ कोषाध्यक्ष, श्री पूनमचन्द छाबड़ा एव श्री भागचन्द बस्सीवालों का विज्ञापन व अर्थ संग्रह में बहुत अधिक सहयोग रहा। मैं उनका अत्यन्त आभारी हूँ।

जिन-जिन विज्ञापनदाताओं ने विज्ञापन द्वारा राशि प्रदान कर, तथा उन सभी का भी जिन्होने आर्थिक सहयोग प्रदान किया, हृदय से आभारी हूँ। उनके सहयोग बिना स्मारिका का प्रकाशन असम्भव था।

जैन कम्प्यूटर्स के मालिक श्री रमेशचन्द जैन शास्त्री का भी इस अवसर पर धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता जिन्होने स्मारिका की बहुत ही सुन्दर छपाई की।

अन्त में मैं पुनः उन सभी आर्थिक सहयोगियों एवं महासंघ के पदाधिकारियों और कार्यकारिणी के सदस्यों द्वारा प्रदत्त सहयोग के लिए आभार प्रकट करता हूँ।

जय महावीर!

महेन्द्रकुमार पाटनी
प्रबन्ध सम्पादक

प्रकाशन में आर्थिक सहयोग

क्र सं.	सहयोगी	राशि
1.	श्री श्रेयांसकुमार गोधा, जयपुर द्वारा संकलित	11000=00
2.	श्री अनिलशाह चैरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर	5000=00
3.	श्री कस्तूरचन्द कटारिया, जयपुर	5000=00
4.	श्री गोपीचन्द निर्मलकुमार छाबड़ा चन्दलाई वाले	3000=00
5.	श्री भँवरलाल सरावगी, जयपुर	2500=00
6.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर छोटे दीवान जी (अमरचन्द जी), जयपुर	2500=00
7.	श्री दिगम्बर जैन नसियाँ, दीवान उदयलाल ट्रस्ट, जयपुर	2500=00
8.	श्री पदमचन्द तोतूका, जयपुर	2100=00
9.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महावीरनगर, जयपुर	1101=00
10.	श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मन्दिर, दुर्गापुरा	1100=00
11.	श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय बापूनगर, जयपुर	1000=00
12.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर चौधरियान मोदीखाना, जयपुर	301=00
13.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, भैंसलाना	251=00
14.	श्री भँवरलालजी खिन्दूका, जयपुर	251=00
15.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बाईकुशलमतिजी, जयपुर	201=00
16.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर जनकपुरी, ज्योतिनगर जयपुर	201=00

 17. जौहरीलाल नन्दलाल जैन, जयपुर 700
18. पंच [illegible] जैन मन्दिर
पाश्वंन [illegible] [illegible] 750

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ, जयपुर
परिचय

मन्दिर धर्म एवं सामाजिक संस्कृति/संगठन के आधार-स्तम्भ हैं। ये ऐसे अनूठे पावन केन्द्र हैं जहां से मानव को सुचरित्र जीवन जीने की प्रेरणा एवं आत्मशुद्धि की ओर अग्रसर होने का अवसर प्राप्त होता है, जो जीवन का परम लक्ष्य है। भौतिकता प्रधान इस वर्त्तमान युग में इनका और भी विशिष्ट महत्व है। जैन संस्कृति के प्रतीक चिन्ह ''प्रतिदिन देवदर्शन'' की अनुपालना में गिरावट से इस सामाजिक धरोहर की सुरक्षा एवं संवर्धन में बाधाएँ प्रतीत होने लगी हैं।

महासंघ संस्था की स्थापना -

धर्म एवं संस्कृति के प्रतीक एवं आत्मोन्नति के ऐसे आधार केन्द्र दिगम्बर जैन मन्दिरो, जिन-प्रतिमाओ, जिनागम एवं अन्य कलात्मक निधियो की रक्षार्थ एवं उनके समुचित संरक्षण हेतु और इन संस्थाओं को संगठित करने तथा मन्दिरो की आन्तरिक व्यवस्था में बिना किसी प्रकार के हस्तक्षेप किये राजकीय नियमों की अनुपालना में यथा-संभव सहयोग/मार्ग दर्शन देने के लक्ष्य से श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ की स्थापना 1982 में की गई। 18 अगस्त 1982 को इसका राजस्थान संस्था रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1958 के अन्तर्गत पंजीकरण कराया गया।

संस्था का अपना विधान है जिसके अनुसार इसकी कार्यकारिणी समिति मे वर्तमान में 6 संस्थापक सदस्य एवं 15 संस्था सदस्य और 3 अभ्यर्थित सदस्य है। कार्यकारिणी समिति का चुनाव प्रत्येक तीसरे वर्ष मे होता है तथा वर्तमान में महासंघ के 99 मन्दिर स्थायी संस्था सदस्य है। जबकि अनेक मन्दिर साधारण सदस्य है।

संस्था के मुख्य उद्देश्य -

1 दिगम्बर जैन मन्दिरो, नशियाँ, चैत्यालयों आदि के सर्वाङ्गीण विकास के लिये उनकी निधियों के संरक्षण हेतु समयानुकूल मार्ग दर्शन देना तथा उनकी क्रियान्विति में सक्रिय सहयोग प्रदान करना।

2. उक्त संस्थाओं के संचालन में समय-समय पर होने वाली समस्याओ के निराकरण हेतु नीति निर्धारण करना एवं आवश्यक कार्यवाही करना।

3. मन्दिरो के सुव्यवस्थित संचालन में आ रही बाधाओ के निराकरण हेतु समय-समय पर सम्मेलन, संगोष्ठी आदि आयोजित करना। जैन वाङ्मय के प्रचार प्रसार के लिये साहित्य प्रकाशित कराना।

4. मन्दिरों के जीर्णोद्धार एवं उनकी गतिविधियों के सुचारु संचालन हेतु आवश्यकतानुसार आर्थिक संरक्षण एवं सहयोग देना।

महासंघ की प्रगति के सोपान -

महासंघ ने अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये विभिन्न प्रवृत्तियाँ अपने हाथ में लीं, जिनमें निम्न मुख्य हैं -

1. 'दी एन्टी क्विटीज एण्ड आर्ट टेजर्स एक्ट' के अन्तर्गत मन्दिरों द्वारा की जाने वाली कार्यवाही के संबन्ध में संबंधित अधिकारियों से सम्पर्क कर सभी मन्दिरों को तत्सम्बन्धी आवश्यक जानकारी दी एवं उसके अनुपालना में मार्ग दर्शन दिया।

2. वर्ष 1983 में जयपुर नगर के सभी दिगम्बर जैन मन्दिरों की एक सर्वेक्षण योजना बनाई और उसके अन्तर्गत विस्तृत प्रश्नावली बना कर मन्दिरों को भेजी गई जिसमें मन्दिर निर्माणकर्ता का नाम, निमार्ण काल, प्रतिमाओं, यंत्रों, शास्त्र-भंडारों, भित्ति-भावचित्रों अन्य कलाकृतियों, अनूठी वास्तुकला, आम्नाय एवं अचल सम्पत्ति, सुरक्षा व प्रबन्ध व्यवस्था संबंधी विवरण मांगा गया। सर्वेक्षण में प्राप्त इस जानकारी का विश्लेषण एवं लिपिबद्ध कर उसका वर्ष 1990 में ''दिगम्बर जैन मन्दिर जयपुर'' नामक पुस्तक का प्रकाशन कर सर्व साधारण को सुलभ कराया, जिसका देश भर में प्रंशसात्मक स्वागत हुआ तथा इसका सन्दर्भ मुख्य पुस्तक के रूप में भी उपयोग होने लगा है।

3. सभी मन्दिरों की समुचित व्यवस्था में एकरूपता लाने की दृष्टि से एक आदर्श विधान का प्रारूप-मॉडल तैयार करके सभी मन्दिरों को उपलब्ध कराया। इसके अलावा माली/व्यास संबंधी एवं अनाधिकृत कब्जों की समस्याओं के निराकरण हेतु भी इकरारनामा एवं किरायानामा के आदर्श प्रारूप बना कर मन्दिरों में भिजवाये।

4. मन्दिरों में चोरियों से बचाव हेतु सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने के लिये आवश्यक उपायों के बारे में सुझाव एवं मार्ग दर्शन किया गया है तथ चोरी बरामद करने हेतु समय-समय पर महासंघ के तत्वाधान में महासंघ का शिष्टमण्डल मुख्यमंत्री/गृहमंत्री से मिला एवं ज्ञापन प्रस्तुत किये और शासन से इस संबंध मे कडे प्रबन्ध करने की मांग की।

5. महासंघ द्वारा दिनांक 29 मार्च 1992 को वृहद् स्तर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें दो सत्रों में ''वर्तमान में देव दर्शन, पूजा-प्रक्षाल के प्रति उदासीनता के कारण एवं निराकरण'' तथा ''मन्दिरों की व्यवस्था एवं सुरक्षा'' विषयों पर विद्वानों ने पत्रों का वाचन कर रचनात्मक सुझाव रखे।

6. मन्दिरों की सम्पत्ति बहुत ही कम मासिक किराये पर है। इस समस्या के निराकरण की दिशा में राजस्थान किराया नियंत्रण एवं बेदखली अधिनियम की धारा (2) की उपधारा (3) के अन्तर्गत जैन समाज की सार्वजनिक, पुण्यार्थ धमार्थ, शिक्षण एवं सामाजिक संस्थाओं की अचल सम्पत्तियों को किराया कानून से मुक्त करने हेतु राज्य सरकार से वांछित आवेदन कर महासंघ के तत्ववाधान में शिष्टमण्डल

मिल चुका है। यह प्रकरण शासन के विचाराधीन है और महासंघ निरन्तर प्रयासरत है। इस संबंध में राज्य सरकार ने अप्रेल 97 में सार्वजनिक न्यास की सम्पत्तियों को वही सुविधायें प्रदान की हैं जो राज्य सरकार की सम्पत्तियों को थी।

7. मन्दिरों के आधिपत्य व सम्पत्ति संबंधी अन्य विवादों को न्यायालय से परे रखकर संबंधित पक्षों से वार्ता कर सुलझाने का प्रयास किया गया है। इसमें जयपुर के काला छाबड़ान के मन्दिर का विवाद का निराकरण उल्लेखनीय है।

8. जयपुर नगरीय क्षेत्र के मन्दिरों में उपलब्ध यंत्रों का विस्तृत सर्वेक्षण कर जानकारी एकत्र की गई है। नगर व उपनगर के मन्दिरों में लगभग सौ से अधिक प्रकार के हजारों जैन यंत्र पाये गये हैं। इन यंत्रों के महत्व और उपयोगिता की सामान्य जनों को जानकारी नहीं है। अत: महासंघ ने इस दिशा में यंत्रो के वैज्ञानिक महत्व पर शोध करने का कार्य हाथ में लिया है। वर्तमान में यह शोध कार्य राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत विद्वान श्री सोहनलाल देवोत, लोहारिया (निवासी बांसवाडा) से कराया जा रहा है।

9. महासंघ के प्रतिनिधियों ने जयपुर शहर के प्रमुख मन्दिरों के शास्त्र भण्डारों का अवलोकन किया है और उन्हें समुचित एवं सुव्यवस्थित रखने के संबंध में परामर्श एवं मार्ग दर्शन किया है। इस संबंध में मन्दिर प्रबंधकों की बैठक आमंत्रित कर उसमें पुरातत्व विभाग के सहायक निर्देशक डा. कैलाश बिहारी से भी ग्रन्थों की सुरक्षा एवं उनके रख रखाव के संबंध में आवश्यक जानकारी उपलब्ध करायी गई है। इस संबंध में सरकार से प्राप्त होने वाले अनुदान के बारे मे भी जानकारी कराई गई। पुराने अभिलेखों व शास्त्र-पुस्तकें आदि को वैज्ञानिक पद्धति से सुरक्षित रखने के पुरातत्व विभाग द्वारा निर्देशित उपायों का हिन्दी मे अनुवाद करा कर सभी मन्दिरों को प्रसारित किया गया है। महासंघ के प्रतिनिधियों ने छोटे दीवानजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार को सुव्यवस्थित किया है तथा बड़ा मन्दिर तेरहपंथियान के शास्त्र भण्डार को सुव्यवस्थित किया जा रहा है।

10. धार्मिक संस्थाओं में उपयोग में लिये जाने वाले जल एवं विद्युत शुल्क व्यावसायिक दरों पर लिये जाने के विरोध में महासंघ सक्रिय हुआ एवं सरकार को इसमें संशोधन हेतु ज्ञापन दिये हैं। महासंघ के प्रयत्न से राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल ने अपनी विज्ञप्ति संख्या आरएसईबी डीसीओ, सीआईएफ-4-11-6/डी 2669 दिनांक 7.10.95 से निर्णय कर दिया है कि मन्दिरों में उपयोग में ली जाने वाली प्रतिमाह एक सौ यूनिट तक विद्युत भार 50 प्रतिशत रियायती दर पर 1 नवम्बर, 1965 से लागू किया गया। जल शुल्क भी रियायती दर से लागू करने के लिये महासंघ प्रयत्न-शील है।

11. प्राचीन दुर्लभ खण्डित प्रतिमाओं की अवमानना रोकने एवं उनके समुचित संरक्षण हेतु संग्रहालय स्थापित करने की दिशा में भी महासंघ अग्रसर है।

12. महासंघ ने मन्दिरों में विभिन्न अवसरों पर क्या तीये की बैठक के समय में उपयोग हेतु वैराग्य भावना व शांति पाठ, आदि की कैसेट का निर्माण कराया है।

13. ग्रामीण अञ्चलों के मन्दिरों के जीर्णोद्धार हेतु प्रेरणा दी है तथा मार्ग दर्शन कर जीर्णोद्धार कराया है। जिनमें सांख, ममाणा, नीमेड़ा व परतापपुरा आदि के मन्दिरों का नाम उल्लेखनीय है। महासंघ ने इस हेतु एक जीर्णोद्धार एवं व्यवस्था कोष की भी स्थापना की है जिसमे समाज का सहयोग अपेक्षित है।

14. जयपुर शहर के दिगम्बर जैन मन्दिरों के सर्वेक्षण और उसकी स्मारिका रूप में पुस्तक प्रकाशन के उपरान्त महासंघ के प्रतिनिधियों ने जयपुर जिले के ग्रामीण अञ्चलों में स्थित दिगम्बर जैन मन्दिरों की समूची जानकारी के लिये गांव-गांव भ्रमण कर सर्वेक्षण कार्य किया है। सर्वेक्षण के दौरान 192 गांवों के 269 मन्दिरों की जानकारी प्राप्त की है। सर्वेक्षण में प्राप्त जानकारी के आधार पर जयपुर जिले के ग्राम्य अञ्चल के दिगम्बर जैन मन्दिरों की परिचय पुस्तक का प्रकाशन भी सर्व साधारण को सुलभ कराने हेतु प्रस्तुत है।

15. मन्दिरों की सर्वेक्षण योजना के अन्तर्गत पत्र व्यवहार द्वारा ऋषभदेव के एक सौ किलोमीटर क्षेत्र के गांवों में अवस्थित लगभग 125 दिगम्बर जैन मन्दिरों का विवरण भी प्राप्त किया गया है। सवाईमाधोपुर जिले में स्थित मन्दिरों की सूचना भी श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी की प्रबंधकारिणी कमेटी के सहयोग से प्राप्त करने के प्रयास किये हैं। इसके अतिरिक्त दौसा जिले में दिगम्बर जैन मन्दिरों के सर्वेक्षण के प्रयास प्रारम्भ कर दिये गये हैं।

महासंघ की भावी योजनाएँ -

मन्दिर महासंघ की भावी योजनाओं में जल शुल्क में रियायती दरों हेतु प्रयत्न करना, दौसा जिले के मन्दिरों के सर्वेक्षण कार्य को पूरा करना, खण्डित प्रतिमाओं के संग्रहालय की योजना को साकार रूप देना एवं यंत्रों के वैज्ञानिक महत्व पर शोध कार्य कराना आदि प्रमुख हैं।

इस प्रकार दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ, दिगम्बर जैन धर्म संस्कृति, आगम-साहित्य एवं कला की रक्षार्थ और दिगम्बर जैन मन्दिरों के अस्तित्व को अक्षुण्ण बनाये रखने तथा इनमें प्रतिष्ठापित प्रतिमाओं, यंत्रों, शास्त्र-भण्डारों अन्य कला पूर्ण धार्मिक निधियों एवं सम्पत्तियों की समुचित सुरक्षा और संरक्षण की दिशा में मार्ग दर्शन एवं क्रियान्विति में पूर्णतया सक्रिय है और कृत-संकल्प है।

— बाबूलाल सेठी
मानद मंत्री

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ जयपुर
कार्यकारिणी समिति

*	01.	श्री रामचन्द्र कासलीवाल	अध्यक्ष
*	02.	श्री ज्ञानचन्द्र खिन्दूका	उपाध्यक्ष
	03.	श्री कुबेरचन्द काला	उपाध्यक्ष
	04.	श्री बाबूलाल सेठी	मंत्री
	05.	श्री अनूपचन्द न्यायतीर्थ	संयुक्त मंत्री
	06.	श्री पूनमचन्द छाबड़ा	कोषाध्यक्ष
*	07.	श्री डॉ. कस्तूरचन्द कासलीवाल	सदस्य
*	08.	श्री अनूपचन्द ठोलिया	सदस्य
*	09.	श्री नरेन्द्रमोहन डंडिया	सदस्य
*	10.	श्री सूरजमल वैद	सदस्य
	11.	श्री सौभागमल जैन	सदस्य
	12.	श्री राजकुमार कोठ्यारी	सदस्य
	13.	श्री भँवरलाल अजमेरा	सदस्य
	14.	श्री राजेन्द्रकुमार सेठी	सदस्य
	15.	श्री कपूरचन्द काला	सदस्य
	16.	श्री रतनलाल जैन	सदस्य
	17.	श्री ताराचन्द शाह एडवोकेट	सदस्य
	18.	श्री प्रेमचन्द बड़जात्या	सदस्य
	19.	श्री राजमल छाबड़ा	सदस्य
	20	श्री भागचन्द जैन बस्सी वाले	सदस्य
	21.	श्री ताराचन्द पाटनी	सदस्य
	22.	श्री महेन्द्रकुमार पाटनी	सदस्य
	23.	श्री डॉ. शीतलचन्द जैन	सदस्य
	24.	श्री जिनेश्वरदास मुशरफ	सदस्य

* संस्थापक सदस्य आजीवन

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ जयपुर
स्थाई संस्था सदस्यता सूची

जयपुर नगरीय
[चौकडी घाट दरवाजा, रामचन्द्रजी व विश्वेवश्वरजी]

1. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर ठोलियान
घी वालों का रास्ता

2. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर
दीवान बधीचन्दजी
घी वालों का रास्ता

3. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बैराठियो का,
मोतीसिंह भोमियो का रास्ता
पीपली महादेव के पास

4. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर फागी का
घी वालो का रास्ता

5. श्री दिगम्बर जैन मंदिर लाडीजी का
ऊचा कुआ के पास, हल्दियो का
रास्ता, (अधीनस्थ मन्दिर ठोलियान)

6. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बास गोधान
गोधों का चौक, हल्दियों का रास्ता

7. श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मन्दिर
(पांडे लूणकरणजी)
ठाकुर पचेवर का रास्ता

8. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर मुशरफों का
मुशरफ कॉलोनी
मनीरामजी की कोठी का रास्ता

9. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर चाकसू का
चाकसू का चौक, हल्दियों का रास्ता

10. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बूचरान
चाकसू का चौक, हल्दियों का रास्ता

11. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर गोधान
चोक नागोरियान, घी वालो का रास्ता

12. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर भूराजी
मोतीसिंह भोमियो का रास्ता

13. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर जीऊबाई
शिवजीराम भवन के सामने
मोतीसिंह भोमियो का रास्ता

14. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर चौबीस
महाराज, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता

15. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बड़ा तेरहपंथी
घी वालों का रास्ता

16. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बख्शीजी
रामगज बाजार, बख्शीजी का चौक

17. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर चन्द्रप्रभजी
चौधरियो का,
मोतीसिह भोमियों का रास्ता

18. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पार्श्वनाथजी
(सोनियान) खवास जी का रास्ता

19. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर विजैरामजी
पाण्ड्या, (अधीनस्थ मन्दिर
पार्श्वनाथजी) पानों का दरीबा

20. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर
कालाडेरा (महावीर स्वामी)
गोपाल जी का रास्ता

21. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर
यति यशोदानन्दजी, चौड़ा रास्ता

[चौकड़ी मोदीखाना, तोपखाना एवं पुरानीबस्ती-जयपुर]

01. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर संघीजी
महावीर पार्क रोड़

02. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर कालान
महावीर पार्क रोड़

03. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर छाबड़ान
महावीर पार्क रोड़

04. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर
बाकलीवालान
गली सिवाड़ बाकलीवालान
पंडितजी का रास्ता

05. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर
बाकलीवालान
गली सिवाड़ बाकलीवालान
पंडितजी का रास्ता

06. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर खोजान
दीवान शिवजीलाल का रास्ता

07. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर खिन्दूकान
महावीर पार्क रोड़

08. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर
बाई कुशलमतिजी चोल्कोंका रास्ता

09. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पापल्यों का
लालजी सांड का रास्ता

10. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बडे दीवानजी
मणिहारों का रास्ता

11. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पाटोदी का
मणिहारों का रास्ता

12. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर लश्कर का
पं. चैनसुखदास मार्ग

13. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर छोटे दीवानजी
(अमरचन्दजी का)
लालजी सांड का रास्ता

14. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर मेघराजजी
लुहाड़िया
सेवापथ, लालजी सांड का रास्ता

15. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर सिरमोरियों
का, आचार्यों का रास्ता

16. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर भांवसान,
लालजी सांड का रास्ता

17. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर चौधरियो का,
बोंली का कुआ के पास
गोदीकों का रास्ता

18. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर आमली का
नमक की मण्डी

19. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर जोबनेर का
खेजड़े का रास्ता, चांदपोल बाजार

20. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बेगस्यों का,
उणियारा रावजी का रास्ता,
चांदपोल बाजार

21. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, घिणोईवालान
जयलाल मुंशी का रास्ता,
पुरानी-बस्ती चांदपोल बाजार

[चौकड़ी हवाली शहर जयपुर]

01. श्री दिगम्बर जैन नसिया बगरूवालान
रेलवे स्टेशन रोड़

02. श्री दिगम्बर जैन नसियां तेरहपंथियान
रेलवे स्टेशन रोड़
(अधीनस्थ मन्दिर तेरहपंथियान बड़ा)

03. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय
हिन्द होटल गोखले मार्ग

04. श्री दिगम्बर जैन नसियां दीवान
उदयलाल ट्रस्ट,
एस.एम.एस. के सामने

05. श्री दिगम्बर जैन नसियां भट्टारकजी
नारायण सिंह का चौराहा

06. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन
चैत्यालय बापूनगर,
गणेश मार्ग, बापूनगर

07. श्री सीमंधर जिनालय
टोडरमल स्मारक भवन, बापूनगर

08. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर
सेठी कॉलोनी, आगरा रोड़

09. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर
मधुबन कॉलोनी, टोंक फाटक

10. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर लालकोठी
लालकोठी, टोंक रोड़

11. श्री दिगम्बर जैन नसियां संगहीजी
(अधीनस्थ मन्दिर संघीजी, जयपुर)
बास बदनपुरा

12. श्री दिगम्बर जैन नसियां झालरेवाली
(अधीनस्थ मन्दिर पार्श्वनाथजी, जयपुर)
बास बदनपुरा

13. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर
जग्गा की बावड़ी, जामडोली
(अधीनस्थ मन्दिर चाकसू का जयपुर)

14. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
पार्श्वनाथ चूलगिरि खानियाँ
आगरा रोड़

15. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर
ज्योति नगर जनकपुरी

16. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर दुर्गापुरा
(अधीन मन्दिर यति यशोदानन्दजी)

17. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर अम्बाबाडी
महावीर मार्ग, अम्बाबाडी

18. श्री दिगम्बर जैन नसियां संगही
हीरालालजी, खानियाँ

19. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर,
शास्त्रीनगर, जयपुर

तहसील आमेर - चौमू
[जिला - जयपुर ग्रामीण अंचल]

01. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर
इटावा भोपजी

02. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर शांतिनाथजी,
कालाडेरा

03. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर नेमिनाथजी,
कालाडेरा

04. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पद्मप्रभजी,
कालाडेरा

05. श्री दिगम्बर जैन
अतिशय क्षेत्र चन्द्रप्रभजी, बैनाड

06. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कूकस

07. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, हस्तेडा

08. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर नेमिनाथजी
(सांवलाजी) आमेर

09. श्री दिगम्बर जैन नसियां,
कीर्तिस्तम्भ आमेर

[तहसील - जमवा-रामगढ़]

01. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, सायपुरा

02. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, घावण्ड का मंढ

03. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, साईवाड़

04. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, नटाटा

05. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, लांगड़ीयावास

06. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, नेताला

07. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, जमवारामगढ़

[तहसील - चाकसू]

1. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर आदिनाथजी तेरहपंथियान, चाकसू

2. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, चंदलाई

3. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, रूपाहेड़ी

04. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा बाड़ा

[तहसील - जयपुर]

01. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, बगराणा

02. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, त्रिवेणीनगर

[तहसील - बस्सी]

01. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, पार्श्वनाथजी बस्सी

02. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, तुंगा

[तहसील - सांगानेर]

01. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, गोनेर

02. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, वरूणपथ, मानसरोवर

03. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, हीरापथ, मानसरोवर

04. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, भांकरोटा

05. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, खोह शांतिनाथजी

06. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, महावीरनगर

07. श्री महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर चित्रकूट कालोनी, सांगानेर

[तहसील दूदू - मौजमाबाद]

01. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पंचायत बाकलीवाल, साखून

02. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, पंचायत दोसी, साखून

03. श्री दिगम्बर जैन नसियां, साखून

[तहसील - फुलेरा]

01. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, भादवा

02. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, फुलेरा

03. श्री दिगम्बर जैन चैत्यालय, भादवा

04. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, भैंसलाना

'स सुखदायक है' *'सहौ सुखदायकौ'*–

'स' और 'ह' वर्ण सुखदायक हैं। 'स' और 'ह' वर्ण का प्रयोग होने से 'सोहं' का जाप सुखोत्पादक है। इसी प्रकार 'स' और 'ह' का प्रयोग होने से 'स्वाहा' भी सुखदायक है। – *अलंकार चिन्तामणि,*

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर परिचय जिला जयपुर

सम्पादक मण्डल

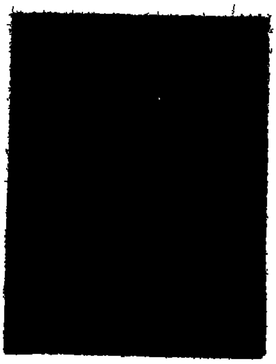

प्रधान सम्पादक
श्री अनूपचन्द न्यायतीर्थ

सम्पादक
श्री कुबेरचन्द काला

सम्पादक
श्री ज्ञानचन्द्र खिन्दूका

सम्पादक
डा. कस्तूरचन्द कासलीवाल

सम्पादक
डा. शीतलचन्द जैन

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ, जयपुर
कार्यकारिणी पदाधिकारी

अध्यक्ष
श्री रामचन्द्र कासलीवाल

उपाध्यक्ष
श्री ज्ञानचन्द्र खिन्दूका

उपाध्यक्ष
श्री कुबेरचन्द काला

मंत्री
श्री बाबूलाल सेठी

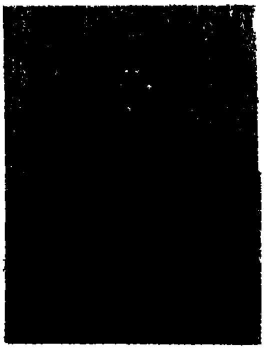

संयुक्त मंत्री
श्री अनूपचन्द न्यायतीर्थ

कोषाध्यक्ष
श्री पूनमचन्द छाबड़ा

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ, जयपुर

कार्यकारिणी सदस्य

डा. कस्तूरचन्द
कासलीवाल

श्री अनूपचन्द
ठोलिया

श्री सूरजमल वैद

श्री नरेन्द्रमोहन
डंडिया

श्री भँवरलाल
अजमेरा

श्री राजेन्द्रकुमार
सेठी

श्री कपूरचन्द काला

श्री रतनलाल जैन
झागवाले

श्री ताराचन्द शाह

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ, जयपुर
कार्यकारिणी सदस्य

श्री प्रेमचन्द
बड़जात्या

श्री राजकुमार
कोठयारी

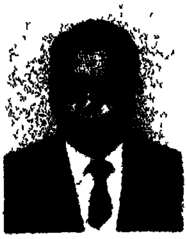
श्री राजमल छाबड़ा

श्री सौभागमल जैन

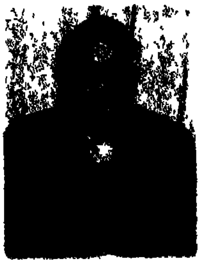
श्री भागचन्द
बस्सीवाले

श्री ताराचन्द पाटनी

श्री महेन्द्रकुमार
पाटनी

डा. शीतलचन्द जैन

श्री जिनेश्वरदास
मुशरफ

तृतीय खण्ड

卐

मन्दिर–दर्शन

1.	तहसील आमेर-चोमूं क्षेत्र के मन्दिर	01-23
2.	तहसील जमवा रामगढ क्षेत्र के मन्दिर	24-30
3.	तहसील बैराठ क्षेत्र के मन्दिर	32-34
4.	तहसील जयपुर क्षेत्र के मन्दिर	35-42
5.	तहसील बस्सी क्षेत्र के मन्दिर	43-53
6.	तहसील सांगानेर क्षेत्र के मन्दिर	54-75
7.	तहसील चाकसू क्षेत्र के मन्दिर	76-95
8.	तहसील सांभर-फुलेरा क्षेत्र के मन्दिर	96-120
9.	तहसील दूदू-मौजामाबाद क्षेत्र के मन्दिर	121-139
10.	तहसील फागी क्षेत्र के मन्दिर	140-158

With Best Compliments From

Shreeman Commercial Institute

139-140, Chaura Rasta,
Opp Gopal Ji Ka Rasta, Jaipur
Phone : 316750

- **Computer Designing (D.T.P.) (600 DPI)**
  (Letter Heads, Visiting Cards, Marriage Cards, Invitation Cards, Book Work, etc.)
- **Offset Printing (24hrs. service)**
- **Screen Printing**

ALL JOBS UNDER ONE ROOF

- **Typing Job Works**
  (Hindi & English)
- **Electronic Typing**
  (Hindi & English)
- **Cyclostyling Work**
- **Coaching in typing**
- **Lamination**
- **Any type of Binding**

- **Multi Colour Photostat**
  (रंगीन फोटोस्टेट)
- **Big Size Photostat**
  (Maps, Drawings, Statements etc.)
- **Photostat**
- **Reduction & Enlalrgement in any size**

राजस्थान के दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र

1. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी
2. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री चमत्कारजी
3. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री खंडार
4. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री केशवरायपाटन
5. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री चाँदखेड़ी
6. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री बिजोलिया
7. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री झालरापाटन
8. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री चँवलेश्वर पार्श्वनाथ
9. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री बमोतर शांतिनाथ
10. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री ऋषभदेव केशरियाजी
11. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री नागफणी पार्श्वनाथ
12. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री अन्देश्वर पार्श्वनाथ
13. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री बघेरा
14. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री सरवाड़
15. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री मौजमाबाद
16. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री नरायना
17. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री लूणवाँ
18. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री देहरा तिजारा
19. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री पार्श्वनाथ चूलगिरी
20. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री पदमपुरा (बाड़ा)
21. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री चित्तोड़गढ़
22. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री आबू
23. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री आवाँ
24. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री मालपुरा
25. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री अजमेर
26. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री लाड़नू
27. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री शेरपुर
28. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री रणथम्भौर
29. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री कालाबाबा (बसवा)
30. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री बैनाड़
31. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री संघीजी सांगानेर

जयपुर जिला (ग्रामीण अञ्चल) में स्थित मन्दिरों की सूची

क्र सं	नाम मन्दिर	ग्राम	पृष्ठ सं
तहसील - आमेर-चौमूं			1-23
01.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर सावलाजी (नेमिनाथजी)	आमेर	2
02.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर चद्रप्रभजी	आमेर	3
03.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर सगहीजी (ऊपरली नसियाँ)	आमेर	4
04.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बधीचन्दजी	आमेर	4
05.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर मुशीजी	आमेर	5
06.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर नेमिनाथजी (बाहरली आमेर)	आमेर	6
07.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर सकटहरण पार्श्वनाथजी	आमेर	7
08.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर नसियाँ कीर्तिस्तम्भ	आमेर	7
09	श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर	आलीसर	9
10.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	आष्टी	10
11.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर चद्रप्रभजी	इटावाभोपजी	10
12.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर शातिनाथजी	कालाडेरा	11
13.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर नेमिनाथजी	कालाडेरा	12
14.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पचायती का मन्दिर	कालाडेरा	13
15.	श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चन्द्रप्रभ स्वामी	कूकस	13
16.	श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ मन्दिर	खोरावीसल	14
17.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	गोविन्दगढ	15
18	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	घिणाई	15
19.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	चीथवाडी	16
20.	श्री शातिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर	चोमू	16
21.	श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन बीसपंथी मन्दिर	चोमू	17
22	श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन (तेरहपथी) मन्दिर	चोमू	18
23.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	जयरामपुरा	18
24.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	टाकरडा	19
25.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	धोबलाई	19
26.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	प्रतापपुरा (कला)	19
27.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	बगवाडा	20
28.	श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चन्द्रप्रभजी	बेनाड	20
29.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	मूण्डोता	21
30.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	राजावास	21
31.	श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर	राधाकिशन पुरा	22
32.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	रायथल	22
33.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	सामोद	23
34.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	हस्तेडा	23

क्र.सं	नाम मन्दिर	ग्राम	पृष्ठ सं
तहसील - जमवारामगढ			24- 30
01.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	जमवारामगढ	24
02.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	आंधी	25
03.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	खराणा	26
04.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	खोआ राणाजी	26
05.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	चावण्ड का मंढ	26
06.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	चावडिया	27
07.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	थौलायी	27
08.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	नटाटा	28
09.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	नीमला	28
10.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	नेतावाला (नेताला)	28
11.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	पालेडा	29
12.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	बिरासणा	29
13.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	लागडीवास	29
14.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	साईवाड़	30
15.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	साथपुरा	30
तहसील - बैराठ			32- 33
01.	श्री दिगम्बर जैन पचायत बड़ा मन्दिर	बैराठ (विराटनगर)	32
02.	श्री दिगम्बर जैन पंचायत छोटा मन्दिर	बैराठ (विराटनगर)	33
03.	श्री दिगम्बर जैन नसिया	बैराठ (विराटनगर)	34
तहसील - जयपुर			35-41
01.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर जयपुर	जयसिंहपुरा खोर	35
02.	श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर	बगराणा	36
03.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	मुकनपुरा	36
04.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	निमोडा	37
05.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	मूण्डयारामसर	37
06.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	बेगस	38
07.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	सिवार	38
08.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर (चैत्यालय)	माचवा	38
09.	श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर (न्यूलाइट कालोनी)	जयपुर	39
10.	श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर (202 त्रिवेणी नगर)	जयपुर	39
11.	श्री महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर (श्याम नगर)	जयपुर	40
12.	श्री महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर (वैशाली नगर)	जयपुर	40
13.	श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मन्दिर (शांतिनगर)	जयपुर	41
14.	श्री महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर (सिविल लाइन्स)	जयपुर	41

क्र सं	नाम मन्दिर	ग्राम	पृष्ठ सं
तहसील - बस्सी			43- 53
01.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पार्श्वनाथजी	बस्सी	43
02.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर तेरहपंथी	बस्सी	44
03.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर नसिया	बस्सी	44
04.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	काशीपुरा	45
05.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पार्श्वनाथजी	खिजूरिया	46
06.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर चन्द्रप्रभ चैत्यालय	चैनपुरा	46
07.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर चन्द्रप्रभजी	जटवाडा	47
08.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	टैटडा	48
09.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर चन्द्रप्रभजी	तुंगा	48
10.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	दणाऊकला	49
11	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	दयालपुरा	49
12	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	पील्या	50
13.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	वासखोह	50
14.	श्री दिगम्बर जैन चैत्यालय	वासखोह	52
15.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	माधोगढ	52
16.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	मोहनपुरा	52
17.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	लालगढ	53
तहसील - सांगानेर			54-75
01.	श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र मन्दिर संघीजी	सांगानेर	54
02	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर अढाई पैडी का	सांगानेर	56
03	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बधीचन्दजी	सांगानेर	57
04.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पाटनियों का	सांगानेर	58
05.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर गोदीकों का	सांगानेर	59
06	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर ठोलियों का	सांगानेर	59
07	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर लुहाडियां का	सांगानेर	60
08	श्री दिगम्बर जैन नसियाँ संघीजी	सांगानेर	60
09	श्री महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर चित्रकूट कालोनी	सांगानेर	61
10	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	केसरीचन्दजी चौधरी नगर कमला नेहरू नगर	61
11.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	कलवाडा	61
12	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर शांतिनाथजी ट्रस्ट	खोह शांतिनाथजी	62
13.	श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर	गोनेर	64

क्र सं	नाम मन्दिर	ग्राम	पृष्ठ सं
14.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	जगतपुरा	65
15.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	दहमी कलां	65
16.	श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पद्मप्रभजी	नेवटा	66
17.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	पवालिया	66
18.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	बगरू	67
19.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर नसियां	बगरू	67
20.	श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र	भांकरोटा	68
21.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर वरूण पथ	मानसरोवर	69
22.	श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर हीरापथ	मानसरोवर	70
23.	श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर अग्रवाल फार्म	मानसरोवर सैक्टर 11	70
24.	श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर अग्रवाल फार्म	मानसरोवर सैक्टर 10	71
25.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	मुहाना	71
26.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	रातल्या	72
27.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	लाकावास	72
28.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	लाखणा	72
29.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	श्री रामपुरा	73
30.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	श्योपुर	73
31.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पार्श्वनाथजी	साख	74
32.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	साजरिया	74
33.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	सिरोली	74
34.	श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर	सूर्यनगर	75

तहसील - चाकसू 76-91

01.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर सांवलाजी (पार्श्वनाथ) बालबाडी	चाकसू	76
02.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर छोटा तेरहपंथियान	चाकसू	77
03.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पार्श्वनाथजी कोट मोहल्ला	चाकसू	77
04.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर तेरहपथियान	चाकसू	78
05.	श्री दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी	चाकसू	79
06.	श्री अग्रवाल दिगम्बर जैन चैत्यालय (वार्ड न ६)	चाकसू	81
07.	श्री दिगम्बर जैन नसियाँ बड़ी शिवडूंगरी	चाकसू	81
08.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	आकोडिया	82
09.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पार्श्वनाथजी गढ का वास	कोटखावदा	83
10.	श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर बडा वास	कोटखावदा	83
11	श्री दिगम्बर जैन चैत्यालय	कोटखावदा	84
12.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	कोथूण	84
13	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	कोल्या	84

क्र सं	नाम मन्दिर	ग्राम	पृष्ठ सं
14.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर चन्द्रप्रभजी	चदलाई	85
15.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर (चैत्यालय)	टूमलीकावास	86
16.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	तामड़्या	86
17.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	थली	86
18.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	नीमोड़या	87
19.	श्री दिगम्बर जैन चैत्यालय	बगरया	87
20.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	बापूगांव	87
21.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर शांतिनाथजी	भोज्याडा	88
22.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	महादेवपुरा	88
23.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	माधोसिंहपुरा	89
24.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	रूपाहेडी	89
25.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	शिवदासपुरा	90
26.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	सांवलिया	91
27.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर अतिशय क्षेत्र पदमपुरा	पदमपुरा (बाडा)	91

तहसील - सांभर-फुलेरा 96-120

क्र सं	नाम मन्दिर	ग्राम	पृष्ठ सं
01.	श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर मण्डी	साभर	96
02.	श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर सिघाणियो का मोहल्ला	सांभर	97
03.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर समुद्र का	साभर	97
04.	श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मन्दिर बोहरान	सांभर	98
05.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	आकोदा	98
06.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	ड्योढी	99
07.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महावीर स्वामी	ढीढा	99
08.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बडा मन्दिर	नारायना	100
09.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर चन्द्रप्रभजी	नारायना	100
10.	श्री खण्डेलवाल दिगम्बर जैन मन्दिर	हिंगोनिया	101
11.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	फुलेरा	102
12.	श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ नसियाँ	फुलेरा	103
13.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	आसलपुर	103
14.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर छोटा	करणसर	104
15.	श्री दिगम्बर जैन आदिनाथजी	करणसर	104
16.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	काचरोदा	105
17.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	किशनगढ़	105
18.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	खण्डेला	105
19.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	चारणवास	106
20.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर (द्वितीय)	चारणवास	106

क्र सं	नाम मन्दिर	ग्राम	पृष्ठ से
21.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	जूनसिया	106
22.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	जैतपुरा	107
23.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर (पाण्याजी) ठोलियान	जोबनेर	107
24.	श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर	जोबनेर	108
25.	श्री दिगम्बर जैन बहत्तर जिनचैत्यालय मन्दिर	जोबनेर	108
26.	श्री दिगम्बर जैन महावीर चैत्यालय गुरुकुल	जोबनेर	109
27.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महावीर चैत्यालय नया बाजार	जोबनेर	109
28.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	छोटी डूगरी	110
29.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	बडी डूगरी	110
30.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	ढाणी-बोराज	110
31.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	परतापुरा	111
32.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	परतापपुरा	111
33.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बडा	बधाल	111
34.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महावीर स्वामी	बधाल	112
35.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	भादवा	112
36.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर (चैत्यालय)	भादवा	113
37.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	भैसलाना	113
38.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	भोजपुरा	114
39.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	मढा भीमसिह	114
40.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	मुरलीपुरा	115
41.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	रामजीपुरा (कला)	115
42.	श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर	रेनवाल	116
43.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	रोजडी	116
44.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	लूणियावास	117
45.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	सादूलपुरा	118
46	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	साग्रा का वास	118
47.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	सिणोदिया	119
48.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	हिरणोदा	119
49.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	पचकोडिया	120

तहसील – दूदू-मौजमाबाद 121-138

01.	श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय छाबडान	दूदू	121
02.	श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर	दूदू	122
03.	श्री दिगम्बर जैन नसियाँ	दूदू	122
04.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	उग्रियावास	123
05.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	उरसेवा	123
06.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	कोटजेवर	124
07.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	गागरडू	124
08.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	गुढाबैरसल	124

क्र.स	नाम मन्दिर	ग्राम	पृष्ठ सं
09.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	गंगाती कलॉं	125
10.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	छप्या	125
11.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	छिर	126
12.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	झाग	126
13.	श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर	दांतरी	126
14.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	धमाना	127
15.	श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर	धांधोली	127
16.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	पडासोली	128
17.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	पालूकलॉं	128
18.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	बोराज	128
19.	श्री दिगम्बर जैन नसियाँ	बोराज	129
20.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	ममाना	129
21.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	मरवा	130
22.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	महलॉं	130
23.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	रहलाणा	131
24.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	रामनगर	131
25.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	लदेरा	132
26.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर दोसी पचायत	साखून	133
27.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बाकलीवाल पचायत	साखून	133
28	श्री दिगम्बर जैन भट्टारकों की नसियाँ	साखून	134
29.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	सावरदा	134
30.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	साली	135
31.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	सेवा	135
32.	श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर	हरसूली	136
33.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	हरसूली	136
34.	श्री दिगम्बर जैन छोटा मन्दिर	मौजमाबाद	137
35.	श्री दिगम्बर जैन नसियाँ	मौजमाबाद	138
36.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर अतिशय क्षेत्र	मौजमाबाद	138

तहसील - फागी

140-158

01.	श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन बडा मन्दिर	फागी	140
02.	श्री १००८ चन्द्रवीर दिगम्बर जैन मन्दिर	फागी	141
03.	श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर तेरहपाथियान	फागी	141
04.	श्री १००८ मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर	फागी	142
05.	श्री दिगम्बर जैन नसियाँ सरावगियान	फागी	142
06.	श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ चैत्यालय	फागी	142
07.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	गोहन्दी	143
08.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	चकवाडा	143
09.	श्री दिगम्बर जैन नसियाँ	चकवाडा	144

क्र सं	नाम मन्दिर	ग्राम	पृष्ठ सं
10.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर चन्द्रप्रभ स्वामी	चादमां कलां	144
11.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	चितौडा	144
12.	श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर	चोरू	145
13.	श्री दिगम्बर जैन नया मन्दिर	चोरू	146
14.	श्री दिगम्बर जैन नसियाँ	चोरू	147
15.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर अतिशय क्षेत्र पद्मप्रभ जिनालय	झराणा	147
16.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	झाडला	148
17.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पार्श्वनाथजी	डाबच	148
18.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	नारेडा	148
19.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	नीमेडा	149
20.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	पीपला	149
21.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	बिसालू	150
22.	श्री दिगम्बर जैन चैत्यालय महावीर स्वामी	बिसालू	150
23.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पार्श्वनाथजी	बीचौ	151
24.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	मण्डावरी	151
25.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बीसपंथी	माधोराजपुरा	152
26.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर तेरहपंथियान	माधोराजपुरा	152
27.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर अग्रवालान	माधोराजपुरा	153
28.	श्री दिगम्बर जैन	मैदवास	153
29.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	मोहब्बतपुरा	154
30.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर नया चितौड़ा	रेनवाल (माजी)	154
31.	श्री दिगम्बर जैन चैत्यालय	रेनवाल	155
32.	श्री दिगम्बर जैन बडा मन्दिर चितौड़ा	रेनवाल	155
33.	श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मन्दिर (प्रथम)	लदाणा	156
34.	श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मन्दिर (द्वितीय)	लदाणा	156
35.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	लसाडिया	157
36.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	समेल्या	157
37.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	सुलतानिया	157
38.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर	सेवडा	158
39.	श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मन्दिर	सैदरया	158
40.	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पार्श्वनाथजी	हरसूल्या	158

जिनवर चरणं बरुहँ णंमति जे परम भक्ति रायण।
ते जम्मबेल्लि मूलं खणंति वरभाव स्त्येण।।

– श्री कुन्द कुन्द आचार्य : भावपाहुड गाथा -153

जो पुरुष परम भक्ति अनुराग से जिनवर के चरण कमलो को नमस्कार करते हैं वे श्रेष्ठ भावरूप शस्त्र से जन्म अर्थात् संसार रूप बेल के मूल जो मिथ्यात्वादि कर्म उसको नष्ट कर डालते है।

ॐ

दृष्टाष्टकस्तोत्र

जिनालय-संसारतापहर्त्ता

दृष्टं जिनेन्द्रभवनं भवतापहारि
भव्यात्मनां विभव-संभव-भूरिहेतु।
दुग्धाब्धि-फेन-धवलोज्ज्वल-कूटकोटी-
नद्ध-ध्वज-प्रकर-राजि-विराजमानम् ।।1।।

आज मैंने जो भव्य जीवों के ताप को हरने वाला है, जो अपरिमित विभव की उत्पत्ति का हेतु है और जो दूध तथा समुद्रफेन के समान धवलोज्ज्वल शिखर के कगूंरों में लगे हुए ध्वजपंक्ति से शोभायमान है, ऐसे जिनालय के दर्शन किये।

दृष्टं जिनेन्द्रभवनं भुवनैकलक्ष्मी-
धामर्द्धिवर्द्धित-महामुनि-सेव्यमानम्।
विद्याधरामर-वधूजन-मुक्तदिव्य-
पुष्पाञ्जलि-प्रकर-शोभित-भूमिभागम्।।2।।

आज मैंने जो तीन लोक की लक्ष्मी का एक आश्रय है, जो ऋद्धिसम्पन्न महामुनियो से सेव्यमान है और जहाँ की भूमि विद्याधरों और देवो की वधूजनो के द्वारा बिखेरी गई दिव्य पुष्पाञ्जलि के कारण शोभायमान हो रही है, ऐसे जिनेन्द्र-भवन के दर्शन किये।

दृष्टं जिनेन्द्रभवनं भवनादिवास-
विख्यात-नाक-गणिका-गण-गीयमानम्।
नानामणि-प्रचय-भासुर-रश्मिजाल-
व्यालीढ-निर्मल-विशाल-गवाक्षजालम्।।3।।

आज मैंने जहाँ पर भवनवासी आदि देवो की गणिकाएँ गान कर रही है और जिसके विशाल गवाक्षजाल नानाप्रकार के मणियो की देदीप्यमान कान्ति से कर्बुरित हो रहे है, ऐसे जिनेन्द्र-भवन के दर्शन किये।

दृष्टं जिनेन्द्रभवनं सुर-सिद्ध-यक्ष-
गन्धर्व-किन्नर-करार्पित-वेणु-वीणा।
संगीत मिश्रित-नमस्कृत-धारनादै-
रापूरिताम्बर-तलोरु-दिगन्तरालम्।।4।।

आज मैंने जहाँ का दिगन्तराल देव, सिद्ध, यक्ष, गन्धर्व और किन्नरों के द्वारा हाथ में वेणु निर्मित वीणा लेकर नमस्कार करते समय किये गये संगीतनाद से आपूरित हो रहा है, ऐसे जिनेन्द्र-भवन के दर्शन किये।

दृष्टं जिनेन्द्रभवनं विलसद्विलोल-
मालाकुलालि-ललितालक-विभ्रमाणम्।
माधुर्यवाद्य-लय-नृत्य विलासिनीनां
लीला-चलद्वलय-नूपुर-नाद-रम्यम्।।5।।

आज मैंने जो हिलती हुई सुन्दर मालाओं में आकुल हुए भ्रमरों के कारण ललित अलकों की शोभा को धारण कर रहा है और जो मधुर शब्द युक्त वाद्य और लय के साथ नृत्य करती हुई वारांगनाओं की लीला से हिलते हुए वलय और नूपुर के नाद से रमणीय प्रतीत होता है, ऐसे जिनेन्द्र-भवन के दर्शन किये।

दृष्टं जिनेन्द्रभवनं मणि-रत्न-हेम-
सारोज्ज्वलैः कलश-चामर-दर्पणाद्यैः।
सन्मंगलैः सततमष्टशत-प्रभेदै-
र्विभ्राजितं विमल-मौक्तिक-दामशोभम्।।6।।

आज मैंने जो मणि, रत्न और स्वर्ण से निर्मित एक सौ आठ प्रकार के कलश चामर और दर्पण आदि समीचीन मंगलद्रव्यो से शोभित हो रहा है और जो निर्मल मौक्तिक मालाओ से सुशोभित है, ऐसे जिनेन्द्र-भवन के दर्शन किये।

दृष्टं जिनेन्द्रभवनं वरदेवदारु-
कर्पूर-चन्दन-तरुष्क-सुगन्धिधूपैः।
मेघायमानगगने पवनाभिवात-
चञ्चच्चलद्विमल-केतन-तुङ्ग-शालम्।।7।।

आज मैंने जहाँ का उत्तुङ्ग शाल, उत्तम प्रकार के देवदारु, कपूर, चन्दन और तरुष्क आदि सुगन्धित द्रव्यों से बने हुए सुगन्धित धूप से निकले हुए धूम्र के कारण मानो आकाश में मेघ ही छाये हो, इस प्रकार की विचित्र शोभा को लिये हुए पवन के अभिघात से हिलते हुए पताकाओ से युक्त हो रहा है, ऐसे जिनेन्द्र-भवन के दर्शन किये।

दृष्टं जिनेन्द्रभवनं धवलातपत्र-
च्छाया-निमग्न-तनु-यक्षकुमार-वृन्दैः।
दोधूयमान-सित-चामर-पंक्तिभासं
भामण्डल-द्युतियुत-प्रतिमाभिरामम्।।8।।

आज मैंने धवल आतपत्र की छाया मे लीन हुए यक्षकुमारो के कारण जो ढुरते हुए शुक्ल चामरों की पंक्ति की शोभा को धारण करता है और जो भामण्डल की द्युति से युक्त प्रतिमाओ के कारण अत्यन्त अभिराम लग रहा है, ऐसे जिनेन्द्र-भवन के दर्शन किये।

दृष्टं जिनेन्द्रभवनं विविधप्रकार-
पुष्पोपहार-रमणीय-सुरत्नभूमि:।
नित्यं वसन्ततिलकश्रियमादधानं
सन्मंगलं सकल-चन्द्रमुनीन्द्र-वन्द्यम्।।9।।

आज मैंने नानाप्रकार के पुष्पों के उपहार के कारण जहाँ की सुन्दर रत्नभूमि रमणीय लग रही है, जो निरन्तर बसन्त ऋतु में तिलक वृक्ष की शोभा को धारण करता है, जो सर्वोत्तम मंगलरूप है और जो समस्त श्रेष्ठ मुनिगणो के द्वारा वन्दनीय है, ऐसे जिनेन्द्र-भवन के दर्शन किये।

दृष्टं मयाद्य मणि-काञ्चन-चित्र-तुङ्ग-
सिंहासनादि-जिनबिम्ब-विभूतियुक्तम्।
चैत्यालयं यदतुलं परिकीर्तितं मे
सन्मंगलं सकल-चन्द्रमुनीन्द्र-वन्द्यम्।।10।।

आज मैंने जो मणि और काञ्चन के कारण विचित्र शोभा को लिये हुए उत्तुङ्ग सिंहासन आदि विभूति से युक्त जिनबिम्ब से शोभायमान हो रहा है, जिसकी निरुपम कीर्ति गाई जाती है, जो मेरे लिए मंगलस्वरूप है और जो समस्त श्रेष्ठ मुनियो द्वारा वन्दनीय है, ऐसे जिन-चैत्यालय के दर्शन किये।

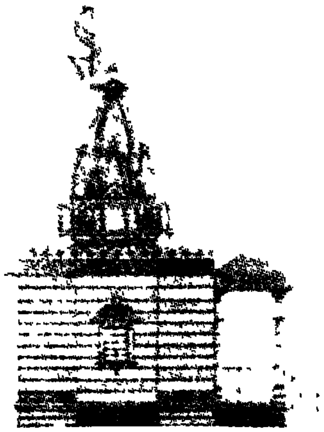

त्रिकाल चौबीसी जिनालय

त्रिकाल चौबीसी वह जिनालय होता है जिनमे भरत क्षेत्र के भूत, वर्तमान व भविष्य की 24-24 जिन-प्रतिमाये जिनालयो मे विराजमान हो।

भगवान ऋषभदेव के निर्वाण के बाद शोक मन होकर भरत चक्रवर्ती विचारने लगा कि अब तीर्थ का प्रवर्तन कैसे होगा । तब महा मुनिराज गणधर परमेष्ठी कहते है कि—

"हे चक्री ! अब धर्म का प्रवर्तन जिन-बिम्ब की स्थापना से ही सम्भव है।" तब चक्रवर्ती भरत ने मुनि ऋषभसेन महाराज का आशीर्वाद प्राप्त कर कैलाश पर्वत पर स्वर्णमयी 72 जिनालयो का निर्माण कराकर रत्न रचित 500-500 धनुष-प्रमाण 72 जिन-बिम्बो की स्थापना की।

दिगम्बर जैन मन्दिर परिचय
जिला - जयपुर
*
तहसील - आमेर-चौमू
[23 गांवों में 34 मन्दिर]

जयपुर से उत्तर की ओर 9 किलोमीटर की दूरी पर सुरम्य पहाड़ो के बीच जयपुर की पूर्व राजधानी आमेर स्थित है।

आमेर को अम्बिकापुर, आम्रपुर, आम्बेर, अमरपुरी आदि कई नामो से भी पुकारा जाता था। यहाँ के महाराजा मानसिंह (प्रथम) बादशाह अकबर के प्रमुख सेनापति थे। ऐतिहासिक दृष्टि से आमेर का बहुत महत्व है। आमेर का जयगढ़ किला, महल, शिलादेवी मंदिर, मावठा, जगत शिरोमणि मदिर, नेमिनाथ मंदिर, सागर तालाब आदि पर्यटको के लिए दर्शनीय स्थान हैं। अब आमेर जयपुर का उप नगर होने के साथ-साथ तहसील एवं उप-जिला भी है। आमेर उप-जिलाधीश कार्यालय के अन्तर्गत आमेर, चौमू और जमवा रामगढ़ तहसील आती हैं। इनमे से आमेर, चौमू तहसीलें के 23 गांवो में 34 दिगम्बर जैन मंदिर स्थित हैं।

आमेर:

आमेर में 7 दिगम्बर जैन मंदिर तथा एक कीर्ति-स्तम्भ का नसियां-मंदिर है। यहाँ का सबसे प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर नेमिनाथजी (सांवलाजी) का है, जिसमें मूलनायक प्रतिमा बाइसवें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ की सम्वत् 1120 की प्रतिष्ठित है। पूर्व में इस मंदिर में भट्टारक गद्दी थी जो सम्वत् 1815 में जयपुर स्थानान्तरित हो गई थी।

1. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर सांवलाजी (नेमिनाथजी)

यह सबसे प्राचीन एवं प्रसिद्ध मन्दिर सांवलाजी (नेमिनाथजी) का है, जिसमें मूलनायक प्रतिमा 1008 भगवान श्री नेमिनाथजी की श्याम वर्ण के पाषाण की पद्मासन 13½×17½ इंच की अवगाहना की संवत् 1120 की प्रतिष्ठित विराजमान है। यह प्रतिमा इतनी अत्यधिक मनोज्ञ एवं आकर्षक है कि घंटो देखते रहने पर भी मन नहीं भरता।

यह मन्दिर कब और किसने बनाया, इसका कोई प्रमाण अभी तक उपलब्ध नही है, किन्तु ग्रंथों की प्रशस्ति के आधार पर इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इसका निर्माण विक्रम संवत् 1600 में अर्थात् लगभग साढ़े-चार-सौ वर्ष पूर्व हो चुका था। यह मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है। यहाँ मूल सघ कुंदकुंदाचार्य सरस्वती गच्छ के भट्टारको की गद्दी रही है। इस मदिर मे प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथो का अच्छा सग्रह था, जिसकी सूची ''आमेर शास्त्र भण्डार की ग्रंथ सूची प्रथम भाग'' के नाम से अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी की ओर से डॉ. कस्तूरचन्द कासलीवाल के संपादकत्व में प्रकाशित हो चुकी है। इसी भण्डार मे विराजमान ग्रंथो की प्रशस्ति संग्रह के पत्र सं. 101 पर उल्लिखित पं. लाखू द्वारा रचित अपभ्रंश भाषा के 'जिनदत्त चरित्र' की प्रतिलिपि संवत् 1611 की है जिसकी प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि संवत् 1611 चैत सुदि 11 सोमवार को श्रवण नक्षत्र के सिद्धि नामा योग मे आम्रगढ दुर्ग (आमेर) के नेमिनाथ चैत्यालय मे राजा भारमल के शासनकाल मे हुई थी। इससे ज्ञात होता है कि सं. 1611 के पूर्व ही यहाँ शास्त्र भण्डार था। इसके अतिरिक्त संवत् 1616 की प्रशस्तियो मे भी आमेर के नेमिनाथ चैत्यालय का उल्लेख मिलता है।

यहाँ के शास्त्र भण्डार (आमेर शास्त्र भण्डार) मे संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी भाषा की अनेक प्राचीन पाण्डुलिपियाँ है जिनमे सबसे अधिक प्राचीन प्रति अपभ्रंश भाषा के महाकवि पुष्पदंत के 'उत्तर पुराण' की है जिसकी प्रतिलिपि सं 1391 मे मुहम्मद शाह के शासन काल मे योगिनीपुर (दिल्ली) मे हुई थी। यहाँ से पहिले भट्टारक-गद्दी चाकसू तथा सांगानेर में रही तथा पीछे जयपुर में रही जैसा कि निम्न तालिका से ज्ञात होता है—

1.	संवत् 1662	भ. देवेन्द्र कीर्ति, चाकसू
2.	संवत् 1691	भ. नरेन्द्र कीर्ति, साँगानेर
3.	संवत् 1722	भ. सुरेन्द्र कीर्ति, आमेर
4.	संवत् 1733	भ. जगत् कीर्ति, आमेर
5.	संवत् 1770	भ. देवेन्द्र कीर्ति, आमेर

6.	संवत् 1792	भ. महेन्द्र कीर्ति, आमेर (पट्टाभिषेक दिल्ली)
7.	संवत् 1815	भ. क्षेमेन्द्र कीर्ति, जयपुर
8.	संवत् 1822	भ. सुरेन्द्र कीर्ति, जयपुर
9.	संवत् 1852	भ. सुखेन्द्र कीर्ति, जयपुर
10.	संवत् 1880	भ. नरेन्द्र कीर्ति, जयपुर
11.	संवत् 1883	भ. देवेन्द्र कीर्ति, जयपुर
12.	संवत् 1938	भ. महेन्द्र कीर्ति, जयपुर
13.	संवत् 1974	भ. चन्द्र कीर्ति, जयपुर

आमेर गद्दी के भट्टारकों का सम्बन्ध दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी से अत्यधिक रहा है।

यह मंदिर जमीन की सतह से काफी ऊँचा पहली मंजिल में है। सामने वेदी है, ऊपर कलात्मक गुम्बज है। सामने वेदी मे भगवान नेमिनाथ की श्यामवर्ण (सांवले रंग की) प्रतिमा के अतिरिक्त 13वी तथा 16वी शताब्दी की अन्य मनोज्ञ प्रतिमाएँ भी है। सांवले रंग की प्रतिमा होने से यह मन्दिर सांवलाजी के नाम से प्रसिद्ध है।

वेदी के पीछे की ओर भी विशाल तथा प्राचीन प्रतिमाएँ है। कुछ प्रतिमाएँ वेदी के दोनो ओर तिबारों में बनी वेदियों तथा ताको मे है।

इसके अतिरिक्त यहाँ प्राचीन प्रतिमाएँ तथा यंत्र और भी है जो कभी-कभी किसी महोत्सव पर या साधु-संतो के आने पर कुछ अवधि के लिए बाहर दर्शनार्थ निकाले जाते है।

मंदिर शिखरबंध है तथा इसके पीछे की ओर बिहारी है और बगल में विशाल झालरा कुआ है जहाँ लोग पिकनिक आदि के लिये भी आते रहते है।

यह मंदिर दि. जैन मंदिर नेमिनाथजी (सांवलाजी) आमेर के प्रन्यास के नाम से पंजीकृत है और इसका प्रबन्ध सोसाइटी रजिस्ट्रेशन ऐक्ट के अन्तर्गत पंजीकृत प्रबन्धकारिणी कमेटी दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा किया जाता है, जिसके वर्तमान में अध्यक्ष श्री नरेश कुमार सेठी एवं मंत्री श्री बलभद्र कुमार जैन है।

2. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर चन्द्रप्रभजी

सांवलाजी के मंदिर के बिल्कुल बराबर मे यह मंदिर बना हुआ है तथा दोनों का एक ही रास्ता है। यह मंदिर सांवलाजी के मंदिर के बाद का निर्मित है जिसे बख्शी श्री रायचन्द जी छाबड़ा ने बनवाया।

संवत् 1861 में संगही रायचंद छाबड़ा ने एक विशाल पंच कल्याणक

प्रतिष्ठा महोत्सव, जिसमे हजारों मूर्तियां प्रतिष्ठित हुई, जयपुर में भट्टारक सुखेन्द्र कीर्ति के सान्निध्य में करवाया। संभव है कि यह मन्दिर भी उन्होंने उसी समय बनवाया हो और मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की जो संवत् 1861 की प्रतिष्ठित है, उन्ही ने यहाँ विराजमान की हो।

यहाँ सबसे प्राचीन प्रतिमा संवत् 1533 की प्रतिष्ठित धातु की चौबीसी की है।

मन्दिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा आरायिश का बना हुआ है। चौक विशाल है। यह मन्दिर भी सांवलाजी के प्रन्यास के अन्तर्गत ही है।

इसका प्रबन्ध भी दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी कमेटी के द्वारा ही किया जाता है।

3. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर संगहीजी

(ऊपरली नसियां)

आमेर के प्रसिद्ध सांवलाजी के मन्दिर से कुछ आगे चलकर पहाड़ पर ऊंचा नसियां-मन्दिर बना हुआ है जिसमे आरायिश का काम है। यह नसियां संगही-लुहाड़ियो के नाम से प्रसिद्ध है। कहते है कि यह बारहवी शताब्दी से पूर्व की है, किन्तु कोई प्रामाणिक उल्लेख नही मिलता। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि यह नसियां प्राचीन है और यहाँ सवत् 1559 में कालू संगही लुहाड़िया ने मन्दिर बनाकर प्रतिष्ठा महोत्सव कराया था। प्रतिष्ठा महोत्सव विवरण में निम्न प्रकार उल्लेख मिलता है।

"संवत् 1559 अंबावती मे कालू संगही लुहाड़िया डूंगर ऊपरि देहरो कराइ प्रतिष्ठा कराई भट्टारक जिनचन्द के बारै रुपया प्रचुर लाग्या"

यहाँ मूलनायक प्रतिमा भगवान नेमिनाथ की है।

पहाड़ पर राजमहलो के आसपास मंदिर तथा नसियों का निर्माण होना एक महत्वपूर्ण बात है। कालू सगही आमेर के महाराजा पृथ्वीसिहजी (संवत् 1559 से 1584) के प्रमुख कृपापात्रों मे रहे हो, ऐसा लगता है। उनका निवास स्थान भी वहीं महलों के पास रहा हो और उन्होने ही यह मन्दिर बनवाया हो।

मन्दिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा इसकी देख-रेख संगही (भाड़े वाला) परिवार के श्री प्रकाशचन्द संगही लुहाड़िया के संयोजन में की जाती है।

4. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बधीचन्दजी

यह मन्दिर दिगम्बर जैन मन्दिर मुंशीजी एवं सावलाजी के बीच मे स्थित है। बाबा दुलीचन्द की हस्तलिखित जैन मन्दिरो की सूची से ज्ञात होता है कि

इसके निर्माणकर्त्ता साह गोत्रीय दीवान रतनचन्द थे। उनके भाई बधीचन्द थे। साँगानेर तथा जयपुर के मन्दिर भी उन्हीं के नाम से जाने जाते हैं। दीवान रतनचन्द ने अपने नाम पर कोई मंदिर नही रखा। मंदिर गुमान पंथ आम्नाय का है जिसके प्रवर्तक पंडित टोडरमलजी के लड़के गुमानीराम थे। रतनचन्द सं. 1813 से सं. 1815 तक दीवान रहे। अत: यह माना जा सकता है कि उक्त मंदिर इसी अवधि में बना हो। मंदिर विशाल है तथा आराचिश का अच्छा काम है। जिनमंदिर में विशाल गुम्बज के नीचे समवसरण बना हुआ है जिनमे भगवान विराजमान हैं। समवसरण के दोनों ओर तिबारें हैं तथा बाहर विशाल चौक है। सांगानेर तथा आमेर का मन्दिर, गुम्बज तथा समवसरण की दृष्टि मे, एक से लगते हैं।

मंदिर की व्यवस्था जयपुर के बधीचन्दजी के मन्दिर की प्रबन्ध समिति द्वारा की जाती है।

इस मन्दिर के सामने जैन मन्दिर के खण्डहर पड़े हैं जिसे साम्प्रदायिकता का शिकार होना पड़ा था। कहते हैं इस मन्दिर के बनाने हेतु जमीन खरीदनी पड़ी थी जिसके लिये जमीन के क्षेत्रफल में झाड़शाही रुपये बिछाकर मूल्य स्वरूप दिये गये थे।

5. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर मुंशीजी

आमेर बस स्टेन्ड से उतर कर सांवलाजी के जाने वाले रास्ते मे यह सबसे पहिला मंदिर है। बाबा दुलीचन्द जी की हस्तलिखित मंदिरो की सूची के अनुसार इसके निर्माणकर्ता मुंशी श्री जयचन्दजी छाबड़ा थे। मुंशी जयचन्द जी ने यह मंदिर कब बनाया इसका कोई प्रामाणिक इतिहास उपलब्ध नहीं है। मुंशी जयचन्दजी के वंशज, मारूजी के चौक में रहने वाले, श्री तेजकरण जी छाबड़ा के अनुसार श्री जयचन्दजी खवा (दौसा) ग्राम से आये थे। वे बहुत अच्छे संगीतज्ञ थे। संगीत से प्रभावित हो महाराजा ने उन्हें दरबार में गाने को कहा किन्तु मुंशीजी ने साफ कह दिया कि मैं तो केवल भक्ति-वश गाता हूँ और वह भी जिनेन्द्रदेव की भक्ति में । इसी बात पर मंदिर बनवाया गया और उसमें राज्य की ओर से पूरा सहयोग मिला। जयचन्दजी की वंशावली निम्न प्रकार है:- मुं. जयचन्दजी, सोहनलालजी, मोतीलालजी, चुन्नीलालजी।

मुं. गोविन्दलालजी पुत्र फूलचन्दजी, हजारीलालजी, आनन्दीलालजी तथा हजारीलालजी के पुत्र कैलाशचन्दजी, प्रकाशचन्दजी, तेजकरणजी एवं आनन्दीलालजी के पुत्र बाबूलालजी, पदमचन्दजी, सोहनलालजी, ओमप्रकाशजी हैं। इस मंदिर की देखरेख उक्त सभी महानुभाव करते हैं। श्री गोविन्दलालजी मुंशी भी अच्छे संगीतज्ञ हुए हैं। यहाँ समवसरण में ऋषभदेव की मूलनायक प्रतिमा विराजमान है।

मंदिर की विशालता से ज्ञात होता है कि यहाँ पूजा विधान उत्सव आदि

होते रहे होंगे। आमेर के मेलों के समय तथा बरसात के दिनो मे जब लोग घूमने आते हैं तो सर्वप्रथम इसी मंदिर मे आकर ठहरते है।

यह मंदिर गुमानपंथ आम्नाय का है।

6. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर नेमिनाथजी

(बाहरली आमेर)

यह मंदिर आमेर के बाहर जयपुर-दिल्ली मार्ग पर स्थित है। इस मंदिर का निर्माण कब और किसने करवाया, इसका कोई उल्लेख नही मिलता, किन्तु यह मंदिर बहुत ही प्राचीन है। मंदिरजी में मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है।

यह कहा जाता है कि आमेर के किसी पुराने मंदिर मे से दो मूर्तियाँ किसी संकट काल में निकाली गई थीं। दोनों ही मूर्तियाँ बड़ी ही सुन्दर एवं मनोज्ञ थीं। उनके ले जाने की बाबत जैन धर्मावलम्बियों में मतभेद रहा। आखिर में सभी साधर्मी भाई धर्म-न्याय पर सहमत हो गए और यह निर्णय लिया गया कि दोनों ही मूर्तियो को अलग-अलग दो बैलगाड़ियो में विराजमान कर दिया जावे। बैलगाड़ियों पर कोई सारथी न बैठे और उन्हे बैलो की मर्जी पर छोड़ दिया जावे। ऐसा ही किया गया। इनमे से एक बैलगाड़ी, जिसमे भगवान श्री नेमिनाथ की पद्मासन प्रतिमा थी, इस दिगम्बर जैन नसियां के दरवाजे पर आकर खड़ी हो गई। कालान्तर में यह मंदिर ''दिगम्बर जैन मंदिर नेमिनाथजी, बाहरली आमेर'' के नाम से विख्यात हो गया।

मंदिरजी की बीच की वेदी के पार्श्व मे एक नई वेदी में भगवान श्री नेमिनाथजी की यह पद्मासन प्रतिमा जो सम्वत् 1205 की प्रतिष्ठित है, विराजमान है। प्रतिमा बहुत मनोज्ञ है, इसे देखते मन नहीं भरता। प्रतिमा के सिर पर केशगुच्छ है और भगवान की ध्यानस्थ मुद्रा की यह एक अद्‌भुत प्रतिमा है।

मंदिरजी में दीवारों पर सुन्दर प्राचीन भित्ति चित्र बने है। अन्य वेदियो में भी प्राचीन पद्मासन एवं खड्गासन प्रतिमाएँ हैं। यह मंदिर अजमेर के भट्टारकजी की आम्नाय के 6 मंदिरों में से एक रहा है।

आमेर में दिगम्बर जैनियों के परिवार न रहने के कारण इस मंदिर की पंचायत ने भादवा सुदी 3 सम्वत् 1983 को जिनमें श्री जमनालालजी चांदवाड, श्री म्होरीलालजी चांदवाड, श्री चांदूलालजी चांदवाड आमेरवाले तथा श्री लखमीचन्दजी तथा श्री बख्तावरलालजी काला नटाटा वाले प्रमुख थे, उक्त मंदिर व इसकी सम्पत्ति को सम्पूर्ण अधिकारों सहित दिगम्बर जैन मंदिरजी कालाडेरा, गोपालजी का रास्ता, जयपुर के पंचों को सम्भला दिया और तब से ही यह मंदिर दिगम्बर

जैन मंदिरजी कालाडेरा (महावीर स्वामी) गोपालजी का रास्ता, जयपुर के अधीन है और इस मंदिर की सम्पूर्ण व्यवस्था दिगम्बर जैन मंदिरजी कालाडेरा की प्रशासकीय समिति ही करती है।

कालान्तर में इस मंदिर का काफी विकास हुआ है। मंदिरजी की बीच की वेदी भगवान श्री नेमिनाथजी की वेदी के आगे से हटाकर पश्चिम में स्थापित कर दी गई है और भगवान श्री नेमिनाथजी की वेदी के पश्चिम में एक नई वेदी निर्माण कर स्थापित की गई है। मंदिरजी में साधु-सन्तों के ठहरने की समुचित व्यवस्था है। मंदिरजी के पश्चिम मे स्थित नोहरा है, जहाँ से मंदिरजी का प्रवेश द्वार है। साधर्मी भाइयों के लिए गोठ वगैरह करने के लिए रसोइयाँ तथा अन्य कमरों का निर्माण कराया हुआ है। इसके चौक मे एक कुआ भी है। मंदिरजी के बाहर जयपुर-दिल्ली मार्ग पर मंदिर जी की 12 दुकानें हैं।

7. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर ''संकटहरण पार्श्वनाथजी''

यह जिनालय श्री मोताबाई केशरलाल फागीवाला चेरिटेबिल ट्रस्ट द्वारा निर्मित बाहरली आमेर मे जयपुर-दिल्ली रोड पर स्थित है। मंदिर का शिलान्यास दि. 19 मई, 1982 ई. के शुभ मुहूर्त मे 108 आचार्यरत्न श्री देशभूषणजी महाराज के सान्निध्य में हुआ। दि. 22 से 28 मई, 1986 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा होकर 108 आचार्य श्री विमल सागरजी महाराज के सान्निध्य मे 1008 भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठित होकर विराजमान हुई और इसका ''संकट हरण पार्श्वनाथ'' नाम रखा गया।

यहाँ भगवान पार्श्वनाथ की श्याम पाषाण की 7 फुट 1 इंच की विशाल एवं भव्य प्रतिमा विराजमान है। इसके सामने श्वेत संगमरमर का 37.1 फुट ऊंचा मानस्तम्भ है जिसमे भगवान महावीर स्वामी की 4 प्रतिमाएँ विराजमान है। यहाँ एक भव्य बगीचा है जिसमे कमरे बने हुए है। दिल्ली से जयपुर तथा जयपुर से दिल्ली की ओर जाने वाले दिगम्बर जैन साधु-साध्वियो का यह विश्राम-स्थल है। इस ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री नाथूलालजी फागीवाले है।

8. श्री दिगम्बर जैन नसियां कीर्ति-स्तम्भ

आमेर से बाहर की ओर लगभग 2 किलोमीटर दूर दक्षिण की ओर खोर दरवाजे के पास यह नसियां स्थित है। इसे कब और किसने निर्माण कराया इसका तो कोई प्रामाणिक उल्लेख नहीं मिलता, किन्तु नसियां मे निर्मित भट्टारकों की चरण पादुकाओं में उल्लेखित लेखो के आधार पर यह कहा जा सकता है कि संवत् 1678 से 1691 के बीच नसियां का निर्माण हुआ है। भट्टारक नरेन्द्र कीर्ति जिनका संवत् 1691 मे पद-स्थापन हुआ, उन्होंने अपने गुरु भट्टारक देवेन्द्र कीर्ति, जो संवत् 1662 से 1691 तक थे, की चरण पादुका महाराजा जयसिंह

के शासनकाल में विराजमान की। इस सम्बन्ध में लेख निम्न प्रकार है–

"द्वितीय श्रावण सुदी 6 मंगलवार अम्बावतीनगरे महाराजाधिराज राजा जयसिंह राजप्रवर्तमाने·कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री देवेन्द्र कीर्ति पादुका भट्टारक नरेन्द्र कीर्ति स्थापित सेवक ब्र. केशवकरापित गुरु भक्ति मिति चिरंवंदतु शुभं भवतु"

संवत 1678 पौष सुदी 10 से संवत् 1746 माघ बुदी 6 तक महाराज जयसिंह आमेर के शासक रहे। इसके अतिरिक्त यह भी सुनिश्चित है कि आमेर में नेमिनाथजी (सांवलाजी) का मंदिर संवत् 1611 के पूर्व का है और वहाँ भट्टारकों का काफी प्रभाव रहा है तथा सं. 1722 में भ. सुरेन्द्र कीर्ति का पदस्थापन ही आमेर में हुआ है और उनके गुरु नरेन्द्र कीर्ति की चरण पादुका उनके शिष्य भ. जगत् कीर्ति ने यहाँ स्थापित की।

सवंत् 1771 में भ. देवेन्द्र कीर्ति ने अपने गुरु भ. जगत् कीर्ति की चरण पादुका स्थापित की। अत: उक्त नसियां में भट्टारकों की छत्रियों से यह कहा जा सकता है कि नसियां बहुत प्राचीन है।

नसियां के अहाते में चार चरण छत्रियाँ है। जिनमें भट्टारको की चरण पादुकाएँ स्थापित हैं। प्रथम छत्री में भट्टारक नरेन्द्र कीर्ति ने अपने गुरु भ. देवेन्द्र कीर्ति की पादुका द्वितीय श्रावण सुदी 6 को आमेर में महाराजा जयसिंह के शासनकाल में स्थापित की।

दूसरी चरण छत्री में भट्टारक जगत कीर्तिजी ने अपने दादा गुरु भ. नरेन्द्र कीर्ति जी की जिनका स्वर्गवास अंबावती (आमेर) में श्रावण कृष्णा अष्टमी सं. 1722 को प्रात: हुआ, चरण पादुका स्थापित की।

तीसरी चरण छत्री में लिखा है कि श्रावण सुदी 5 सं. 1733 के प्रात: भट्टारक जगत् कीर्तिजी को पद देने के पश्चात् भ. सुरेन्द्र कीर्तिजी का स्वर्गवास हुआ।

चौथी चरण छत्री में उल्लेख है कि संवत् 1770 की माह बुदी 5 को भट्टारक जगत् कीर्तिजी का स्वर्गवास हुआ तथा माह बुदी 11 के बाद ही पद दिया गया। इसके पश्चात् संवत् 1771 को मगसिर सुदी अष्टमी को भ. देवेन्द्र कीर्तिजी ने जगत् कीर्तिजी की चरण पादुका स्थापित की।

नसियां के इस मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान विमलनाथ की श्वेत पाषाण की पद्मासन सं. 1642 की प्रतिष्ठित है। इसके अतिरिक्त यहाँ अन्य प्राचीन प्रतिमाएँ सं. 1526, 1650, 1651, 1656 की भी विराजमान हैं।

यहाँ की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यहाँ का कीर्ति-स्तम्भ है जिसके नाम

से यह नसियां प्रसिद्ध है। यह स्तम्भ साढ़े 12 फीट ऊंचा है तथा इसकी गोलाई 4 फीट 7 इंच है। स्तम्भ मकराने का है। इस स्तम्भ के 10 भाग किये गये हैं। एक-एक भाग में चारों ओर भट्टारकों की 12-12 मूर्तियाँ खड्गासन/पद्मासन उत्कीर्ण हैं। इसमें खड्गासन मूर्तियों के हाथ में कमंडलू हैं। यह स्तम्भ मंदिर के ठीक सामने चबूतरे पर गुम्बज के नीचे ढका हुआ है। इसमें संवत् 4 से अर्थात भ. भद्रबाहु से लेकर संवत् 1883 में होने वाले भट्टारक देवेन्द्र कीर्ति तक 101 भट्टारकों की मूर्तियों के संवतोल्लेख हैं एवं 9वें भाग के सात कोष्ठक के आगे कोष्ठक खाली है। यह एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कीर्ति-स्तम्भ है जिसमे मूलसंघ के दिगम्बर आम्नाय के भट्टारकों का विवरण है।

इस नसियां का क्षेत्रफल 5 बीघा 14 बिस्वा है जैसा कि 4 फरवरी सन् 1939 के भट्टारक चन्द्र कीर्तिजी चेला भ. महेन्द्रकीर्तिजी, श्री महावीरजी विराजमान चांदनगाँव परगना, हिण्डौन के नाम मातमी के कागजात से पता चलता है। संवत् 1856 में यहाँ पण्डित जयचन्द सेवा पूजा करते थे और राज्य की ओर से ठाकुरजी की पूजा के वास्ते राहधारी से 2 टके रोजाना मिलते थे। सरकारी रिकार्ड में ऐसा भी उल्लेख है कि जो जमीन खोर दरवाजा के पास है वह इस जैन मन्दिर कीर्ति-स्तम्भ की नसियां के नीचे है।

संवत् 1920 में यहाँ भट्टारक देवेन्द्र कीर्तिजी ने एक विशाल मेले का आयोजन किया था जिसमे दूर-दूर के यात्री आये थे।

यह नसियां दिगम्बर जैन मंदिर नेमिनाथजी (सांवलाजी) आमेर के प्रन्यास के अन्तर्गत पंजीकृत है तथा प्रबन्ध सोसाइटीज ऐक्ट के अन्तर्गत पंजीकृत प्रबन्धकारिणी कमेटी श्री महावीरजी द्वारा किया जाता है। राजकीय प्राचीन रेकार्ड से पता चलता है कि जब यहाँ किसी भट्टारक का नाम स्तम्भ पर अंकित कराया जाता था तो समारोहपूर्वक पूजन आदि का विधान होता था तथा महाराजा (जयपुर) की ओर से भेंट आती थी। इससे इस स्तम्भ की ऐतिहासिकता तथा मान्यता का महत्व सिद्ध होता है।

9. श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, आलीसर

चौमू क्षेत्र में ग्राम आलीसर के लिए गोविन्दगढ़ होकर मार्ग है । लगभग 20 वर्ष पूर्व यहाँ दिगम्बर जैन मंदिर का निर्माण श्री जौहरीलाल जी सुन्दरलाल जी गंगवाल ने कराया था। इसमें मूलनायक प्रतिमा बिना चिन्ह की है, जो भूगर्भ से प्राप्त हुई बताते हैं। मंदिर में एक वेदी है जिसमें 1 धातु तथा 2 पाषाण की कुल तीन प्रतिमाएँ एवं दो यंत्र विराजमान है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा चैत्यालय रूप में है।

यहाँ की मूल नायक प्रतिमा जो मलिकपुर के पास भूगर्भ से प्राप्त हुई थी, उसे यहाँ लाकर विराजमान किया गया बताया। यहाँ केवल एक दिगम्बर जैन परिवार है जो मंदिर की सार-संभाल करता है।

वर्तमान मे श्री हरकचन्द जैन मंदिर के प्रबन्धक है।

10. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, आष्टी

आष्टी ग्राम (चौमू) हस्तेडा से 4 किलोमीटर दूर है। इसे आष्टी कलां भी कहते हैं। यहाँ भदाल रेलवे स्टेशन से भी पहुँचा जा सकता है। हस्तेडा तथा आष्टी कलां के बीच नदी पड़ती है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण लगभग 200 वर्ष पूर्व आष्टी के दि. जैन समाज ने कराया था। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान नेमिनाथजी की है जो सम्वत् 1861 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमें 1 धातु तथा 4 पाषाण की कुल 5 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र विराजमान है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1826 की है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा क्षेत्रपाल विराजमान है। मंदिर के बाहर कुआ भी है।

यहाँ दिगम्बर जैनों के 12 घर है जिनमे 5 आष्टी के तथा 7 बागड़ावास के हैं। मंदिर का प्रबन्ध स्थानीय दिगम्बर जैन समाज द्वारा किया जाता है।

अचल सम्पत्ति के रूप में वास (बागड़ावास) मे एक नोहरा तथा एक कमरा जीर्णशीर्ण अवस्था में है। मंदिर मे बीस हस्तलिखित ग्रन्थ साधारण है तथा 20 मुद्रित हैं। वर्तमान मे यहाँ के प्रबन्धक श्री नन्दलाल जैन है।

11. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, इटावा भोपजी

इटावा भोपजी चौमू से 13 किलामीटर दूर उदयपुरिया मोड़ से कुछ दूरी पर स्थित है। रेलवे स्टेशन चौमू से 15 किलोमीटर दूर है। यहाँ का पिन कोड नं. 303804 है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण लगभग 150 वर्ष पूर्व स्थानीय दि. जैन समाज द्वारा कराया गया था। मूलनायक प्रतिमा भगवान श्रेयांसनाथ की है। मंदिर मे एक नवनिर्मित वेदी है जिस पर गुम्बज है। वेदी मे धातु की 3 तथा पाषाण की 2 कुल 5 प्रतिमाएँ एवं 2 यंत्र है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। पाषाण की एक प्रतिमा सम्वत् 1950 की रेवासा की प्रतिष्ठित है। मंदिर का जीर्णोद्धार कराया गया है।

लगभग सात हजार की जनसंख्या वाले इस ग्राम मे 13 दिगम्बर जैन परिवार हैं जिनमें 40 पुरुष एवं 35 महिलाएं हैं। गांव लगभग 400 वर्ष पुराना है।

मंदिर का प्रबन्ध स्थानीय दिगम्बर जैन समाज द्वारा किया जाता है। मुख्य प्रबन्धक श्री चाँदमल जैन हैं। अचल सम्पत्ति के रूप मे मंदिर के सामने एक नौहरा है जिसमें कुआ भी है।

कालाडेरा:

जयपुर जिले में चौमूं तहसील के अन्तर्गत कालाडेरा अच्छा कस्बा है जो चौमूं से 9 किलोमीटर दूर है। यहाँ सभी आधुनिक सुविधाओं के अतिरिक्त उच्च शिक्षा की दिशा में डिग्री कॉलेज, संस्कृत कॉलेज, उच्च माध्यमिक विद्यालय, राजकीय औषधालय एवं अस्पताल है। यहाँ की जनसंख्या लगभग 10,000 है तथा दिगम्बर जैनियों के 60 घर हैं। कालाडेरा में 3 दिगम्बर जैन मंदिर हैं।

12. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर शांतिनाथ जी, कालाडेरा

इस मंदिर का निर्माण दिगम्बर जैन समाज कालाडेरा द्वारा सम्वत् 1658 में कराया गया बताया जाता है। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान शांतिनाथ की श्वेत पाषाण की है जो सम्वत् 1794 को मारोठ मे सम्पन्न पंचकल्याणक में प्रतिष्ठित है। मंदिर में तलघर सहित चार वेदियां है जिनमे धातु तथा पाषाण की कुल 12 प्रतिमाएँ एवं 4 यंत्र विराजमान हैं। हाल ही में मंदिर का जीर्णोद्धार भी हुआ है। मंदिर तेरहपंथ आम्नाय का है जिसका प्रबन्ध चुनी हुई कमेटी द्वारा किया जाता है।

मंदिर के अन्तर्गत अचल सम्पत्ति के रूप में एक नोहरा, तीन दुकानें तथा शांतिनाथ जैन भवन है। जैन भवन में एक स्कूल चलता है। यह भवन किराये पर दिया हुआ है।

इस मंदिर में दो बार सम्वत् 1990 मे तथा सम्वत् 2040 के आसपास चोरियां हुई, किन्तु चोरी हुई मूर्तियाँ बरामद नहीं हो सकीं।

मंदिर के शास्त्र भण्डार में लगभग 10 हस्तलिखित ग्रन्थ एवं 50 मुद्रित ग्रन्थ हैं जो स्वाध्याय हेतु सुरक्षित हैं। यहाँ के प्रबन्धकर्ता श्री सरदारमल जैन हैं।

विशेष:- यहाँ मंदिर के शास्त्र भण्डार में एक गुटका लगभग 200 पृष्ठों का है जिसमें जयपुर राज्य की वंशावली है। इसमें निम्नप्रकार उल्लेख मिलता है–

''सम्वत् 1807 पौष सुदी 10 महाराजाधिराज राजा ईसरीसिंह जी बैकुंठवास किया जिठाताई राज हुयो। माह बुदी 2 तायी राज सून्य रहयो। सम्वत् 1807 माघ बुदी 3 श्री महाराजाधिराज माधोसिंह जी रामपुरा से आया सो राज कियो चैत बुदी 4 सम्वत् 1824 का।'' यह एक ऐतिहासिक दस्तावेज है।

13. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर नेमिनाथजी, कालाडेरा

इस मंदिर का निर्माण दिगम्बर जैन समाज कालाडेरा ने एक हजार वर्ष पूर्व कराया बताया जाता है। मंदिर विशाल है एवं पुरातत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। मूलनायक प्रतिमा भगवान नेमिनाथ की सम्वत् 1883 माह सुदी 5 की प्रतिष्ठित है। यह प्रतिमा श्याम पाषाण की है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। एक ही वेदी है जिसमें धातु तथा पाषाण की 9 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र विराजमान है।

इस मंदिर के अधीन अचल सम्पत्ति के रूप मे तीन दुकाने तथा एक नोहरा पीछे की ओर है। मंदिर बाजार में स्थित है तथा आकर्षक है। मंदिर दुछत्ता बना हुआ है। मंदिर में वर्ष 1981 में चोरी हो गई थी जो वापस मिल गई। इस चोरी और उसकी बरामदगी की अजब कहानी है। मंदिर के व्यवस्थापक एवं समाज के प्रतिष्ठित प्रमुख व्यक्ति श्री बंसीधर जी जैन के अनुसार 22.2.81 को मूल वेदी में से धातु की सभी प्रतिमाएँ चोरी चली गई जिनमे 3 पार्श्वनाथ की, 2 चौबीसी सम्वत् 1163 की थी। प्रातः जब प्रक्षाल करने हेतु आये तो चोरी का पता लगा जिसकी पुलिस में रिपोर्ट की गई तथा समाज के व्यक्तियो ने णमोकार मंत्र का पाठ इस संकल्प से चालू किया कि जब तक मूर्तियाँ नही मिलेगी तब तक पाठ चालू रहेगा।

चोरों ने मूर्तियों को जयपुर नगर के बनीपार्क क्षेत्र मे ले जाकर एक सूने स्थान पर रख दी, जब आगे ले जाना चाहा तो मूर्तियाँ उठाये उठी नही। परेशान होकर चोरों ने उन्हें कपड़े से ढ़क दिया और पुलिस को टेलीफोन किया कि 'हम कालाडेरा के दिगम्बर जैन मंदिर से मूर्तियाँ चुराकर लाये थे, वे बनीपार्क में अमुक स्थान पर हैं और उठाये उठती नही हैं, अतः आप उन्हे कालाडेरा पहुँचाने की व्यवस्था करें।'

पहिले तो पुलिस ने इस कथन पर विश्वास ही नहीं किया, किन्तु दुबारा फोन आने पर एक सिपाही को मौके पर भेजा। जिसने तथ्यों की जाँच की तथा वस्तुस्थिति से अवगत कराया।

श्री पदमकुमार जी जैन मजिस्ट्रेट के सहयोग से मूर्तियाँ वापस प्राप्त हुई और पुलिस ने पूरे गाजे-बाजे के साथ कालाडेरा पहुँचाया। रास्ते मे जैनाजैन लोगो ने भाव भरी वंदना की। पुलिस अधीक्षक दल बल सहित आये और 101/- रू. भेंट चढ़ाकर वंदना की।

यह एक चमत्कारपूर्ण घटना ही कही जा सकती है।

मंदिर विशाल एवं स्वच्छ है। वर्तमान में यहाँ के प्रबन्धक श्री बंशीधर जैन हैं।

विशेष:- जयपुर के गोपालजी के रास्ते में स्थित महावीर स्वामी (कालाडेरा) के मंदिर में विराजमान मूलनायक वेदी में मूलनायक चन्द्रप्रभजी की श्वेत पाषाण की प्रतिमा इसी मंदिर से ले जाकर विराजमान की हुई है।

14. श्री दिगम्बर जैन पंचायती का मन्दिर, कालाडेरा

यह मंदिर भी लगभग 1100 वर्ष पुराना बताया जाता है जिसका निर्माण कालाडेरा के दि. जैन समाज ने कराया था। इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान पदमप्रभ जी की सम्वत् 1783 बांसखोह में प्रतिष्ठित है। मंदिर में 9 वेदियां हैं जिनमें 16 धातु तथा 19 पाषाण की कुल 35 प्रतिमाएँ एवं 14 यंत्र विराजमान हैं। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा क्षेत्रपाल जी की प्रतिमा विराजमान है। यहाँ सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1647 एवं 1783 की है।

मंदिर का क्षेत्रपाल विस्तृत है। इस मंदिर के अधीन दो बिहारी, एक जैन भवन, एक नोहरा तथा 11 दुकाने है जिनमें से कुछ जीर्ण-शीर्ण है। एक बाड़ा भी है जिसमे कुआ है। मंदिर के अन्तर्गत कृषि भूमि भी है जिसके खसरा नं. 612, 618, 619, 620, कुल 7बीघा 4 बिस्वा है। इस जमीन के साथ एक कुआ, एक पक्का मकान है जिसमे क्षेत्रपालजी भी विराजमान है जहां उनकी पूजा होती है।

पहिले मंदिर से आधा किलोमीटर दूर भट्टारकों की तीन छत्रियां भी थीं जिनमे से जीर्ण-शीर्ण अवस्था मे अब एक छत्री शेष है। यह मंदिर की ही सम्पत्ति है।

यहाँ लगभग 20 वर्ष पूर्व 13 मूर्तियां चोरी चली गई थी जिसकी रिपोर्ट पुलिस मे की गई, किन्तु कोई बरामद नहीं हुई।

मंदिर में शास्त्र भण्डार है और उनमें हस्तलिखित ग्रन्थ भी हैं।

यह पंचायती मंदिर बहुत प्राचीन है। मंदिर मे भित्ति चित्र बने हुए हैं। मंदिर की दिवार 5 फीट चौड़ी परकोटे की तरह है और मंदिर के बाहर सिंह द्वार है।

विशेष:- इस मंदिर से भगवान शांतिनाथ जी की पाषाण की धोबलाई में, चौबीसी धातु की प्रतिमा ग्राम टांकरडा मे और भगवान सुपार्श्वनाथ जी एवं चौबीसी धातु की प्रतिमाएँ बापूनगर जयपुर के दिगम्बर जैन मंदिरों में विराजमान करने हेतु ले जाई गई है। इस मंदिर के प्रबन्धक श्री बंसीधर जैन हैं।

15. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चन्द्रप्रभ स्वामी, कूकस

जयपुर-दिल्ली राजमार्ग पर आमेर से 8 किलोमीटर दूर पहाड़ियो के मध्य आमेर क्षेत्र में कूकस ग्राम है। यह पर्यटन क्षेत्र भी है। यहाँ ग्राम से 1 कि.मी.

दूर एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो लगभग 500 वर्ष पूर्व का बताया जाता है, यह मंदिर किसने कब बनाया इसका प्रामाणिक आधार प्राप्त नहीं है। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है। मंदिर में दो वेदियां हैं। जिनमें पाषाण तथा धातु की कुल 10 प्रतिमाएँ तथा 2 यंत्र विराजमान हैं। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा क्षेत्रपाल की प्रतिमा भी है।

मंदिर का प्रबन्ध चुनी हुई कमेटी द्वारा किया जाता है। इस मंदिर में नियोजित कर्मचारी की हत्या कर चोर श्याम वर्ण प्रतिमाएँ दि. 1 मार्च, 97 को चोरी कर ले गये। पुलिस में रिपोर्ट कराई किन्तु कोई सद् परिणाम नहीं मिले।

यहाँ का वार्षिक मेला कार्तिक बुदी में साईवाड के मेले के साथ ही होता है। यहाँ के मंत्री जयपुर निवासी श्री बाबूलाल बाकलीवाल है।

16. श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, खोरावीसल

खोरावीसल ग्राम आमेर जयपुर से 15 किलोमीटर जयपुर-लुहारू रेलमार्ग पर नींदड बैनाड रेलवे स्टेशन से 2 किलोमीटर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण स्थानीय दिगम्बर जैन समाज द्वारा किया गया है। मंदिर लगभग 200 वर्ष पुराना है। यहाँ मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की श्याम पाषाण की ग्यारह फणवाली है जो सम्वत् 1861 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे 3 वेदियाँ हैं जिनमें धातु तथा पाषाण की कुल 36 प्रतिमाएँ एवं 4 यंत्र हैं। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1794 की है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। मंदिर के चौक में प्रवेश द्वार पर क्षेत्रपाल है। मंदिर में एक पद्मावती की प्रतिमा भी है।

यहाँ 15 दिगम्बर जैन घर है। परम्परानुसार समस्त पंचायत मंदिर की व्यवस्था करती है, जिसके प्रमुख श्री छीतरमल जैन हैं। मंदिर के अधीन अचल सम्पत्ति के रूप में एक धर्मशाला भवन, नोहरा, कुआ तथा 500 वर्ग गज जमीन है।

मंदिर में तीन बार सन् 1961, सन् 1979 तथा सन् 1990 मे चोरी हो चुकी है, जिनकी पुलिस मे रिपोर्ट की गई है किन्तु कोई सुपरिणाम नहीं हैं।

मंदिर कलापूर्ण है। दीवारो पर भित्ति चित्र हैं तथा 16 स्वप्न अंकित हैं। सोने की चित्रकारी कला के दो प्राचीन चित्र भी मंढे हुए हैं।

स्वाध्याय के लिए लगभग 15 हस्तलिखित ग्रन्थ है जिनमे सबसे प्राचीन सम्वत् 1753 का 'श्रीपाल चरित्र' है। 15 मुद्रित पुस्तके तथा शास्त्र भी हैं।

विशेष:– यहाँ मंदिर के प्रवेश द्वार पर गणेश मूर्ति भी है।

17. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, गोविन्दगढ़

गोविन्दगढ़ जयपुर-सीकर सड़क मार्ग पर चौमू से 14 किलोमीटर है। जयपुर-लुहारू रेलवे लाइन पर गोविन्दगढ़ रेलवे स्टेशन भी है। इस दिगम्बर जैन मंदिर का निर्माण पाण्ड्या परिवार ने लगभग 200 वर्ष पूर्व कराया बताया। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान अरनाथ की सम्वत् 1861 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे कुल दो वेदियां हैं जिनमें धातु तथा पाषाण की 7 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र विराजमान हैं। मंदिर विशाल है। यह मंदिर जयपुर के दीवान बधीचन्दजी के मंदिर की तरह गुमानपंथ आम्नाय का है।

यहां केवल दो दिगम्बर जैन घर हैं। मंदिर का प्रबन्ध स्थानीय दिगम्बर समाज द्वारा किया जाता है। मंदिर के अधीन अचल सम्पत्ति के रूप में नो दुकानें तथा एक हवेली है। मंदिर मे 6-7 वर्ष पूर्व चोरी हुई थी किन्तु पुलिस में रिपोर्ट करने पर भी कोई बरामदगी प्राप्त नहीं हुई।

यहाँ शास्त्र भण्डार मे 6 हस्तलिखित तथा 10 मुद्रित ग्रन्थ हैं जिनमें सबसे प्राचीन सं. 1726 का है। यहाँ प्रतिवर्ष आसोज सुदी में मेला होता है जिसमे आसपास के जैन आते हैं। वर्तमान मे यहां के प्रबन्धक श्री घनश्याम जैन है।

18. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, घिणोई

चौमू क्षेत्र के घिणोई ग्राम कालाडेरा होते हुए पहुँचा जा सकता है। गाँव तक पक्की सड़क है। यहाँ दिगम्बर जैन मंदिर लगभग 200 वर्ष पुराना है जिसका निर्माण स्थानीय दि. जैन समाज द्वारा कराया हुआ है। इसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1861 की प्रतिष्ठित है।

यहाँ से जयपुर गये काला एवं गंगवाल गोत्री परिवारो द्वारा निर्मित पुरानी बस्ती चाँदपोल बाजार, जयलाल मुंशी के रास्ता जयपुर मे घिणोई का मंदिर है। इसमें यहाँ की प्रतिमा भी है।

जयपुर में गये प्रमुख परिवारों मे प्रसिद्ध रंग व्यवसायी सेठ रामसुखजी काला, इन्दरजी, फूलजी गंगवाल, बंधीचंदजी गंगवाल, मास्टर पाचूलालजी काला, किशनलालजी काला के परिवार हैं।

यहाँ मंदिर मे एक वेदी है जिसमे धातु की 8 तथा पाषाण की 5 कुल 13 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र विराजमान है। मंदिर का जीर्णोद्धार कराया गया है। मंदिर तेरहपंथ आम्नाय का है।

मंदिर की व्यवस्था स्थानीय दिगम्बर जैन परिवारों द्वारा होती है। यहाँ दिगम्बर जैनो के 3 परिवार हैं।

मंदिर के अधीन अचल सम्पत्ति के रूप में एक धर्मशाला भवन तथा 2 दुकाने हैं। मंदिर में स्वाध्याय हेतु 3 हस्तलिखित तथा 10 मुद्रित ग्रन्थ हैं। यहाँ के अनेक परिवार (राज्य से बाहर) प्रवास कर उद्यम करते हैं और मंदिर की सहायतार्थ आर्थिक योगदान करते रहते हैं। यहाँ के प्रबन्धक श्री कैलाशचन्द काला हैं।

19. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, चीथवाड़ी

आमेर क्षेत्र का चीथवाड़ी ग्राम जयपुर से 34 किलोमीटर दूर है। मंदिर का निर्माण लगभग 150 वर्ष पूर्व पंचायत दिगम्बर जैन समाज चीथवाडी ने कराया बताया है। मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है। मंदिर में एक वेदी है जिसमें धातु तथा पाषाण की 9 प्रतिमाएँ व 3 यंत्र विराजमान हैं। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा यहाँ एक दिगम्बर जैन घर है।

यहाँ के शास्त्र भण्डार मे 34 हस्तलिखित ग्रन्थ है। मंदिर का क्षेत्रफल लगभग 150 वर्ग गज है। यहाँ प्रतिवर्ष आसोज बुदी मे मेला भरता है। यहाँ का प्रबन्ध श्री कन्हैयालाल सेठी करते हैं।

विशेष:- जयपुर की प्रसिद्ध किराना व्यवसायी फर्म मलजी छोगालाल जी सेठी के मालिक श्री गुलाबचन्द जी गोपीचन्द जी सेठी यही के निवासी थे।

चौमू:

चौमू कस्बा जयपुर-बीकानेर राजमार्ग पर जयपुर से लगभग 35 किलोमीटर दूर है। यह कस्बा सभी आधुनिक सुविधाओं से युक्त है। चौमू पूर्व में जयपुर रियासत का ताजीमी सरदार का ठिकाना था। यहाँ हवेली, और गढ़ आदि अब भी विद्यमान हैं। चौमू की आबादी लगभग 50 हजार की है।

चौमू में एक नसियां तथा 3 दिगम्बर जैन मंदिर हैं तथा 35 दिगम्बर जैन परिवार हैं।

20. श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, चौमू

यह मंदिर नया बाजार मे स्थित है तथा इसका निर्माण वि.सं. 1995-96 के आसपास स्थानीय बीसपंथी दिगम्बर जैन समाज द्वारा कराया गया है। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान शांतिनाथ की है जो सम्वत् 1852 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में कुल 3 वेदियाँ हैं जिनमें पाषाण तथा धातु की कुल 9 पद्मासन प्रतिमाएँ तथा 4 यंत्र है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

मंदिर का प्रबन्ध पंजीकृत विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा किया जाता है, जिसके अध्यक्ष श्री प्रभुदयाल एवं मंत्री श्री पदमचन्द बड़जात्या है।

मंदिर के अधीन अचल सम्पत्ति के रूप में 8 दुकानें एवं एक चौबारा मंदिर के सामने ही है। यहाँ एक स्वर्णपालकी है तथा पूजा उपकरण व बिछायत दरियाँ आदि हैं।

यहाँ स्वाध्याय हेतु 30 मुद्रित ग्रंथ हैं। मंदिर सुन्दर है तथा वेदी में सोने की छपाई का कार्य एवं काँच में जड़े हुए भित्ति चित्र तथा आरायिश का कार्य है। मंदिर में सायंकालीन शास्त्र सभा होती है। यहाँ एक युवक मण्डल भी कार्यरत है।

21. श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन (बीसपंथी) मन्दिर, चौमू

इस मंदिर का निर्माण बीसपंथी दिगम्बर जैन समाज चौमूं ने लगभग 250 वर्ष पूर्व कराया था। इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है जो सम्वत् 1852 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में 4 वेदियाँ हैं जिनमें धातु तथा पाषाण की कुल 35 प्रतिमाएँ एवं 6 यंत्र हैं। मंदिर बीसपंथी आम्नाय का है। एक धातु की पद्मावती देवी की भी प्रतिमा है।

मंदिर का प्रबन्ध श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन बीसपंथी ट्रस्ट (रजिस्टर्ड सं. 781) द्वारा किया जाता है। ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री प्रभुदयाल पाटनी हैं।

मंदिर के अधीन अचल सम्पत्ति के रूप मे मंदिर के सामने तीन मंजिल का एक धर्मशाला भवन है, जिसमें नीचे 3 दुकाने हैं। एक हाल स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर को किराये पर दिया हुआ है। दूसरी व तीसरी मंजिल में कुल 8 कमरे व दो हाल हैं। इसके अतिरिक्त एक दुकान और है, दुकाने किराये पर है।

मंदिर मे सभी पूजा उपकरणो के साथ एक पालकी है, जिस पर सोने का झोल है। समाज के लिये बर्तन, गद्दे, रजाईयां, दरियाँ आदि भी है।

मंदिर कलापूर्ण है। संगमरमर की वेदी पर सोने की छपाई का कार्य है। वेदी पर तीन कलश है। चौक दुछत्ता है।

शास्त्र भण्डार में 20-30 हस्तलिखित ग्रन्थ हैं। सबसे प्राचीन प्रति सम्वत् 1896 की 'पाण्डु पुराण' की है। विशेष पूजा विधान उत्सव आदि होते रहते हैं। यहाँ से सामोद प्रतिवर्ष पदयात्रा जाती है।

विशेष:- सामोद के दिगम्बर जैन मंदिर का प्रबन्ध भी इसी मंदिर के अन्तर्गत है।

22. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन (तेरहपंथी) मन्दिर, चौमू

यह मंदिर भी बाजार मे दुकानों के ऊपर है। इसका निर्माण चौमू की दिगम्बर जैन तेरहपंथी समाज द्वारा 250 वर्ष पहिले कराया गया था। इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1826 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में 4 वेदियाँ है जिनमें धातु तथा पाषाण की कुल 40 प्रतिमाएँ एवं 6 यंत्र है। मंदिर तेरहपंथ आम्नाय का है। प्राय: उत्सव विधान आदि होते रहते हैं।

मंदिर का प्रबन्ध स्थानीय कासलीवाल तथा पापड़ीवाल परिवार द्वारा किया जाता है। मुख्य प्रबन्धक श्री मांगीलाल जैन कासलीवाल हैं।

मंदिर के अधीन अचल सम्पत्ति के रूप मे एक दुकान और दो खाली भूखण्ड (प्लाट) हैं। एक दुकान और एक प्लाट के सम्बन्ध मे मुकदमा चल रहा है।

मंदिर कलापूर्ण है। वेदी मे समवसरण (पाण्डूशिला) मे सुन्दर चित्रकारी है। बारहदरी मे भी सुन्दर भित्ति चित्र है।

ग्रन्थ भण्डार में लगभग 70 हस्तलिखित ग्रन्थ हैं तथा 30 मुद्रित ग्रन्थ हैं। प्राचीन प्रति सम्वत् 1895 का 'आदिपुराण' की है तथा अन्य ग्रन्थ सम्वत् 1924-25 के लिखे हुए भी हैं।

23. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, जयरामपुरा

जयरामपुरा (आमेर) जयपुर से नीदड़ होते हुए तथा जयपुर-सीकर रेलमार्ग पर भट्टों की गली रेलवे स्टेशन से पहुँचा जा सकता है।

यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो कहते है लगभग 200 वर्ष पूर्व जैन समाज द्वारा निर्मित है। इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की श्वेत पाषाण की सम्वत् 1728 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में 2 वैदियां हैं जिनमे धातु तथा पाषाण की कुल 7 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र है।

मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा क्षेत्रपाल की प्रतिमा विराजमान है। वेदी मे 3 भामण्डल चित्रित हैं तथा काली स्याही से लिखा हुआ सम्वत् 1924 मिती वैशाख सुदी 12 बुधवार का एक लेख है जिसमे लिखा है कि "अजमेर से मंगवाकर चन्द्रप्रभ स्वामी विराजमान किया है तथा जयरामपुरा में मंदिर की प्रतिष्ठा कराकर देवकरण के पुत्र मोहनलाल ने प्रतिमा विराजमान कराई।" इससे स्पष्ट है कि सम्वत् 1924 मे मंदिर बना तथा उसमे सम्वत् 1728 की प्रतिष्ठित प्रतिमा अजमेर से लाकर विराजमान की गई। इसीलिये यह मंदिर अजमेर के भट्टारकजी की परम्परा का बताया जाता है।

यहाँ वर्तमान में 4 दिगम्बर जैन परिवार हैं जो झांझरी गोत्रीय है। मंदिर की व्यवस्था भी इन्हीं परिवार के सदस्यों द्वारा की जाती है, जिनमे श्री नन्दलाल श्री नेमीचन्द प्रमुख हैं। अचल सम्पत्ति के रूप में मंदिर के अधीन 3 दुकानें हैं। मंदिर परिसर में एक कुआ भी है जिसे बन्द कर रखा है।

24. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, टांकरडा

चौमू क्षेत्र का टांकरडा ग्राम चौमू से 3 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यहाँ दिगम्बर जैनों के 3 घर हैं। यहाँ का दिगम्बर जैन मंदिर लगभग 400 वर्ष पूर्व का बताया जाता है। इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान विमलनाथ की है जो सम्वत् 1861 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में एक वेदी है जिसमें धातु तथा पाषाण की कुल 6 प्रतिमाएँ एवं 9 यंत्र हैं। यंत्रो मे 2 यंत्र सम्वत् 1590 के प्रतिष्ठित हैं। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। यहाँ सम्वत् 1515 की प्रतिष्ठित पद्मावती देवी की प्रतिमा भी विराजमान है। मंदिर का प्रबन्ध यहाँ के दिगम्बर समाज द्वारा किया जाता है।

मंदिर की अचल सम्पत्ति मे एक धर्मशाला, एक नोहरा तथा दुकाने है। मंदिर की अचल सम्पत्ति के एक भवन में राजकीय विद्यालय चलता है।

मंदिर में वैसे तो उत्सव विधान होता रहता है, किन्तु आसोज के कृष्ण पक्ष में अवकाश के दिन वार्षिक मेला होता है। मंदिर दुछत्ता है।

यहाँ का प्रबन्ध तथा मंदिर की देखरेख श्री भंवरलाल छाबड़ा एवं श्री नेमीचन्द छाबड़ा करते हैं।

25. श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, धोबलाई

धोबलाई (चौमू) के दिगम्बर जैन मंदिर का निर्माण बड़जात्या परिवार ने लगभग 35 वर्ष पूर्व कराया था। यहाँ मूलनायक प्रतिमा भगवान शांतिनाथ की है जो कालाडेरा के मंदिर से लाई हुई है। एक वेदी है जिसमे एक धातु तथा एक पाषाण की कुल दो प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। मंदिर में एक कुआ भी है।

मंदिर में दो बार चोरी हो चुकी है, किन्तु कोई चीज वापस प्राप्त नही हुई। यहाँ 5 दिगम्बर जैन परिवार हैं।

यहाँ की प्रबन्ध व्यवस्था श्री मूलचन्द जैन बड़जात्या देखते हैं।

26. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, प्रतापपुरा कलां

प्रतापपुरा कलां (आमेर) जयपुर से 35 किलोमीटर दूर रामपुरा - डाबडी प्रतापपुरा-चौमूं रोड़ पर स्थित है। यहाँ पर चौमूं या भट्टों की गली रेलवे स्टेशन से भी (10 किलोमीटर) पहुँचा जा सकता है।

यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण श्री धूनीलाल जी पहाड़िया ने लगभग 150 वर्ष पूर्व कराया बताया। इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान पद्मप्रभ की सम्वत् 1861 की प्रतिष्ठित है। यह प्रतिमा सन् 1957-58 के आस-पास जयपुर के संघीजी के मंदिर से लाई हुई बतलाई जाती है। मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है। मंदिर मे केवल एक वेदी है जिसमे धातु तथा पाषाण की कुल 5 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र है। सन् 1992 मे यहाँ वेदी प्रतिष्ठा कराई गई थी। यहाँ की पूरी बस्ती लगभग 500 घरों की है जिनमें केवल 2 परिवार जैनो के पहाड़िया गोत्रीय है। अन्य लोग झोटवाड़ा तथा जयपुर मे रहते हैं।

मंदिर की व्यवस्था श्री पांचूलाल पहाड़िया करते हैं। जयपुर में प्रसिद्ध पं. मिलापचन्द जी शास्त्री (स्वदेशी वस्त्र भण्डार) इसी गांव के थे।

27. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, बगवाड़ा

बगवाड़ा (आमेर) जयपुर से सीकर मार्ग पर हरमाड़ा (चुंगी) चौकी से आगे पूर्व दिशा में जयपुर से लगभग 30 किलो मीटर दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण बगवाड़ा दि. जैन समाज ने कब करवाया ज्ञात नहीं। कहते हैं मंदिर 150 वर्ष पुराना है। मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान अरनाथ की श्वेत पाषाण की है जो सम्वत् 1826 की प्रतिष्ठित है। मदिर मे एक वेदी है जिसमे पाषाण तथा धातु की कुल दो प्रतिमाएँ एवं दो यंत्र विराजमान हैं। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

मंदिर का क्षेत्रफल 41×35 फीट है। इसकी देखरेख श्री कपूरचन्द जैन करते हैं तथा व्यवस्था प्रभारी श्री नरेश जैन, श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, श्री रतन लाल जैन एवं श्री मोहन लाल जैन है। ये सभी परिवार बगवाड़ा के है और गंगवाल पार्क जयपुर में रहते है।

बगवाड़ा ग्राम में पहिले अनेक जैन परिवार थे, किन्तु अब एक भी परिवार निवास नही करता। इसी कारण पूजा प्रक्षाल की निर्यमित व्यवस्था नही है।

28. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चन्द्रप्रभजी, बैनाड़

बैनाड़ (आमेर) ग्राम जयपुर-सीकर राजमार्ग तथा जयपुर-बीकानेर रेलवे लाइन पर जयपुर से 12 किलोमीटर दूर बेनाड रेलवे स्टेशन के पास एक छोटी सी पहाड़ी तलहटी में जयपुर से झोटवाड़ा कमानी फैक्ट्री के पास से खोरबीसल जाने वाली सड़क पर है। दिगम्बर जैन समाज द्वारा निर्मित यह क्षेत्र गत 60 वर्षो से अधिक प्रकाश मे आया है। मंदिर पुराना है। इसके अतिरिक्त पहाड़ी पर पुराने तीर्थंकर चरण-चिन्ह भी बताये जाते हैं। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की श्वेत पाषाण की है जे सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है। मंदिर

में एक वेदी तथा एक आल्या है जिनमें एक धातु तथा 7 पाषाण की कुल 8 प्रतिमाएँ एवं 8 यंत्र विराजमान हैं।

भगवान बाहुबली एवं पंचबालयति तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ मनोज्ञ हैं। क्षेत्र बीसपंथ आम्नाय का है, जहाँ क्षेत्रपाल तथा पदमावती जी की प्रतिमाएँ भी विराजमान है।

यहाँ का प्रबन्ध विधानानुसार चुनी हुई कमेटी करती है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री गुलाबचन्द पाण्ड्या एवं मंत्री श्री छीतरमल जैन हैं। यहाँ यात्रियो को ठहरने के लिए अच्छी धर्मशाला भी है। पानी तथा बिजली की व्यवस्था है। यहाँ पर पहिले चोरी हो गई थी, पुलिस मे रिपोर्ट की गई, किन्तु कोई नतीजा नहीं निकला।

यहाँ आसोज मास के कृष्ण पक्ष में वार्षिक मेला भरता है। मुनि श्री 108 श्री सुधासागरजी महाराज की प्रेरणा से सन् 1997 मे पहाड़ी पर बाहुबली भगवान की प्रतिमा विराजमान की गई। चरण तथा जिनमंदिर का नवनिर्माण कार्य हो रहा है।

29. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, मूण्डोता

आमेर क्षेत्र का मूंडोता ग्राम जयपुर-कालवाड़ सड़क पर कालवाड़ से 4 किलोमीटर है। यहाँ का रेलवे स्टेशन धानक्या है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण जैन समाज द्वारा कराया गया है। कहते है जब से ग्राम बसा तभी से यह मंदिर है।

मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान ऋषभदेव की सम्वत् 1935 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में एक वेदी है जिसमें धातु तथा पाषाण की कुल 6 प्रतिमाएँ एवं 3 यंत्र विराजमान है। सबसे प्राचीन प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की धातु की सम्वत् 1455 की है। मंदिर कलापूर्ण है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। यहाँ दिगम्बर जैनों के 5 परिवार है।

मंदिर का प्रबन्ध एवं देखभाल समाज के व्यक्तियों द्वारा की जाती है। मंदिर के मुख्य प्रबन्धक श्री हनुमानप्रसाद छाबड़ा है।

30. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, राजावास

राजावास (आमेर) जयपुर-चौमू सड़क पर जयपुर से करीब 8 किलोमीटर की दूरी पर है। यहाँ दिगम्बर जैनो के 8 घर हैं। प्राय: सभी छाबड़ा गोत्र के हैं। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो दूसरी मंजिल पर कमरे मे ही चैत्यालय के रूप में बना है। इसका निर्माण श्री छोटीलाल जी छाबड़ा के पूर्वजो ने लगभग 200 वर्ष पूर्व कराया था।

मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान शांतिनाथ की है जो सम्वत् 1826 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में एक वेदी है जिसमें धातु की तथा पाषाण की कुल 5 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। मंदिर का प्रबन्ध समाज द्वारा किया जाता है। मंदिर की अचल सम्पत्ति के रूप में एक साल व एक कमरा है।

यहाँ के मुख्य प्रबन्धक श्री छोटीलाल छाबड़ा हैं।

31. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, राधाकिशनपुरा

राधाकिशनपुरा (आमेर) जयपुर से रामपुरा होते हुए 42 किलोमीटर तथा रेलवे स्टेशन भट्टों की गली से 17 किलोमीटर दूर है। लगभग 150 वर्ष पूर्व पंचायत जैन समाज राधाकिशनपुरा द्वारा इस मंदिर का निर्माण कराया गया था। इसमें मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ की मनोज्ञ प्रतिमा है। मंदिर में एक वेदी है जिसमें पाषाण की सात प्रतिमाएँ एवं 4 यंत्र हैं। वेदी पर तीन शिखर तथा गुम्बज है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। क्षेत्रपाल प्रतिमा भी विराजमान है। इसका प्रबन्ध समाज द्वारा किया जाता है। यहाँ दिगम्बर जैन समाज के 3 घर है।

मंदिर का क्षेत्रफल लगभग 250 वर्ग गज है। मंदिर के अधीन अचल सम्पत्ति में दो दुकानें तथा एक मकान है। मंदिर में एक बार चोरी हो गई थी जिसकी रिपोर्ट पुलिस में की गई, किन्तु अभी तक कोई परिणाम नहीं मिले।

मंदिर में 2 हस्तलिखित एवं 10 मुद्रित ग्रन्थ है तथा भित्ति चित्र भी है। साधारणतया यहाँ का प्रबन्ध श्री राजकुमार काला करते हैं।

32. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, रायथल

रायथल ग्राम (आमेर) की आबादी 5000 है। सड़क मार्ग से रामपुरा व जालसू - प्रतापपुरा होते हुए पहुँचा जा सकता है। भट्टो की गली रेलवे स्टेशन से 20 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो श्री जीवणलाल जी लुहाड़िया द्वारा 125 वर्ष पूर्व बनवाया गया था। मंदिर छोटा किन्तु सुन्दर है। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की सम्वत् 1861 की प्रतिष्ठित हैं। मंदिर में एक वेदी है जिसमें धातु की तीन प्रतिमाएँ एवं 4 यंत्र हैं। मंदिर की आम्नाय तेरहपंथी है।

यहाँ दिगम्बर जैनों के 4 परिवार हैं। मंदिर की व्यवस्था श्री मूलचन्द एवं श्री मदनलाल लुहाड़िया करते हैं।

33. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, सामोद

जयपुर राज्य का सामोद एक प्रसिद्ध जागीरदार ठिकाना रहा है। यहाँ के जागीरदार जयपुर नरेश के छुटभैयाओ में से एक थे। सामोद चौमूं से करीब 10 किलोमीटर दूर है। सामोद के महल किले में है। किले के ठीक नीचे पश्चिम की ओर एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान शांतिनाथ की श्वेत पाषाण की खड्गासन है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है जिसमे एक वेदी में एक धातु तथा एक पाषाण की कुल दो प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र है। यह चौमू क्षेत्र मे है।

यहाँ कोई जैन परिवार निवास नहीं करता। मंदिर का प्रबन्ध चौमू के दिगम्बर जैन मंदिर बीसपंथ के अधीन ही होता है।

34. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, हस्तेडा

हस्तेडा (चोमू) रेलमार्ग से गोविन्दगढ़ होकर तथा जयपुर-चौमू सड़क मार्ग से पहुँचा जा सकता है। मंदिर प्राचीन है जिसका जीर्णोद्धार हुआ है। यहाँ मूलनायक प्रतिमा भगवान मुनिसुव्रतनाथ की है जो सम्वत् 1209 की प्रतिष्ठित बताई जाती है। प्रतिमा पर चिन्ह अस्पष्ट है। चन्द्रप्रभ की भी कही जाती है। यहाँ कुल 5 वेदियाँ हैं जिनमे दो वेदियों की प्रतिष्ठा होना है। तीन मे श्रीजी विराजमान हैं जिनमे धातु तथा पाषाण की कुल 37 प्रतिमाएँ एवं 8 यंत्र है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1411 की है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

यहाँ 5 दिगम्बर जैन परिवार हैं। मंदिर का प्रबन्ध हस्तेडा जैन समाज द्वारा किया जाता है। मंदिर के नीचे अचल सम्पत्ति के रूप मे एक मकान, नोहरा तथा 7 दुकानें हैं। मंदिर में प्राचीन शास्त्र भण्डार है। मंदिर में शास्त्र सभा होती है। मंदिर की वेदी कलापूर्ण है तथा पच्चीकारी का काम है।

वर्तमान में यहाँ का प्रबन्ध श्री रतनलाल जैन करते है।

जीवो चरित्तदंसणणाणठिदो तं हि ससमयं जाणे।
पोग्गलकम्मपदेसट्ठिदं च तं जाण परसमयं।।२।।

जो जीव दर्शन–ज्ञान–चारित्र मे स्थित है उसे निश्चय से स्व–समय जानो और जो जीव पौद्‌गलिक कर्म–प्रदेशो मे स्थित है उसको पर–समय जानो।

- निर्ग्रन्थ प्रवचन, पृष्ठ-3

तहसील - जमवा रामगढ़

[15 गांवों में 15 मन्दिर]

जमवा रामगढ़ जयपुर जिले की प्रसिद्ध तहसील है। यह जयपुर से उत्तर पूर्व में लगभग तीस किलोमीटर दूरी पर है। यहाँ से 6 किलोमीटर पर्यटन स्थल रामगढ़ बान्ध है जो जयपुर नगर की जलापूर्ति का मुख्य स्रोत है। रामगढ़ आमेर से पूर्व राजधानी था। यहाँ पहिले मीणों का राज्य था। जिसे मीणों को युद्ध में हराकर कछवाहा वंश के राजपूतो ने अपनी राजधानी बनाया। रामगढ़ बान्ध के नीचे कुलदेवी ''जमवा माता'' का मंदिर है। कहते हैं रामगढ़ लगभग 1000 वर्ष पुराना है। पहाड़ पर किले के भग्नावशेष अब भी देखें जा सकते हैं। तहसील मुख्यालय होने के कारण यह ग्राम सभी सुविधायुक्त है। ऐशिया खेलों के समय यहाँ की रामगढ़ झील मे नौकायान की प्रतिस्पर्धा हुई थी और उसी समय रामगढ़ का नाम विश्व के मानचित्र पर उभर गया था।

जमवा रामगढ़:

जमवा रामगढ़ तहसील के अन्तर्गत लगभग 240 ग्राम हैं, जिनमें से 15 गांवों में 15 दिगम्बर जैन मंदिर हैं। रामगढ़ में पहिले काफी जैन घर रहे हैं, किन्तु अब एक भी जैन घर नहीं है।

1. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, जमवा रामगढ़

जमवा रामगढ़ में एक प्राचीन कलात्मक शिखरबंध दिगम्बर जैन मंदिर है जो पुराने गढ़ के पास है। कहते हैं इस मंदिर का निर्माण दीवान रामचन्द्र छाबड़ा के पूर्वजों ने कराया था जिसके वंशज 'भूखे दीवानो' के नाम से प्रसिद्ध हैं और जिनकी हवेली वर्तमान मे जयपुर में बोरड़ी के रास्ते मे है। उनके वंशजो में श्री सौभागमल जी और श्री भागचन्द जी दीवान मौजूद हैं। दीवान रामचन्द्र के पिता का नाम विमलदास था जो जाटों के साथ युद्ध में काम आये। लालसोट के पास उनकी छत्री अब भी मौजूद है। विमलदास के नाम पर रामगढ़ मे ''विमलपुरा'' नाम का पूरा मोहल्ला था। दीवान रामचन्द्र ने आमेर और जमवा रामगढ़ के बीच ग्राम साईवाड मे भी संवत् 1747 में एक जैन मंदिर बनवाया था। दीवान रामचन्द्र महाराजा जयसिंह के (सम्वत् 1747 से 1778 तक) दीवान रहे।

जमवा रामगढ़ के दिगम्बर जैन मंदिर में 3 वेदियाँ हैं जिनमे धातु तथा पाषाण की कुल 16 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र है। मूल वेदी मे भूगर्भ से प्राप्त

श्वेत पाषाण की लगभग 12वीं शताब्दी की पद्मासन प्रतिमाएँ हैं। मंदिर मे सम्वत् 1484 से 1861 तक की प्रतिष्ठित प्रतिमाएँ है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। यह मंदिर दिगम्बर जैन मंदिर नेमिनाथ जी (सांवलाजी) आमेर के प्रन्यास के अधीन पंजीकृत है तथा इसका प्रबन्ध दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी की प्रबन्धकारिणी कमेटी द्वारा किया जाता है।

मंदिर सुरम्य पहाड़ की तलहटी में एक अहाते में बना हुआ है। मंदिर के बाहर कमरे भी बने हुए हैं। यहाँ कभी-कभी मेलों का आयोजन भी होता है।

विशेष:- मंदिर में विराजमान श्वेत पाषाण की तीन प्रतिमाएँ मिती कार्तिक बुदी 9 शनिवार सम्वत् 1986 तदनुसार 26 अक्टूबर,1926 को रामगढ़ मे दक्षिण की तरफ भोम्याजी के टीबे के पास चांवड माताजी के खेजड़े के बराबर भूगर्भ से प्राप्त हुई थी। प्रतिमाओं को तत्कालीन श्री भंवरलाल नवीसंदा, मुंशी चिरंजीलाल मोहर्रिर कलेक्ट्री व पंच महाजन, ब्राह्मण पटेल पटवारी सभी लोग एकत्रित होकर गाजे बाजे के साथ गांव में लाये और जैन मंदिर मे विराजमान किया। उस समय इस समारोह में 1/- कलश बंधाई, 1/- गाजे बाजे का इनाम तथा दो आना टीबे की खुदाई। इस तरह 2/- रु0 दो आना खर्च हुआ बताया जाता है। इन्ही मूर्तियो की प्राप्ति के उपलक्ष्य मे तत्कालीन जयपुर के प्रसिद्ध रत्न व्यवसायी स्व सेठ गोपीचन्द जी ठोलिया के सहयोग से एक विशाल मेले का आयोजन भी किया गया, जिसमे जयपुर तथा आस-पास के गांवों के हजारों जैन बंधुओ ने भाग लिया।

2. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, आंधी

आंधी ग्राम रामगढ़ से दौसा जाने वाली सड़क पर जयपुर से वाया रामगढ़ 45 किलोमीटर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो लगभग 150 वर्ष पुराना बताया जाता है। मंदिर में एक वेदी है जिसमें एक ही मूलनायक पद्मासन भगवान चन्द्रप्रभ की पाषाण की प्रतिमा है। मंदिर जैन समाज आंधी द्वारा निर्मित है। आंधी में पहिले 10-20 जैन परिवार रहते थे, किन्तु अब एक भी जैन परिवार वहाँ निवास नहीं करता।

पहिले यहाँ अधिक प्रतिमाएँ थीं, किन्तु चोरी में प्रतिमाएँ तथा सामान चला गया और अब केवल एक ही प्रतिमा बची है।

यहाँ जैन परिवार न होने से समुचित सार-संभाल और पूजा-प्रक्षालन नियमित नहीं है। कभी-कभी श्री कपूरचन्द सौगानी नीमलावाले करते हैं।

3. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, खराणा

खराणा रामगढ़-दौसा सड़क मार्ग पर रामगढ़ से लगभग 15 किलोमीटर और जयपुर से लगभग 50 किलोमीटर दूर है। यहाँ खोआ राणीजी से कच्चा रास्ता है और यहाँ का पोस्ट ऑफिस खोआ राणीजी है। खराणा मे एक प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर तीन शिखर का है जो कहते हैं लगभग 700 वर्ष पुराना है। यह मंदिर सोनी परिवार द्वारा निर्माण कराया हुआ बताया जाता है। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है। मंदिर मे दो वेदियां हैं, जिनमें 14 प्रतिमाएँ तथा 2 यंत्र हैं। यहाँ संवत् 1545 तथा 1826 की प्रतिष्ठित प्रतिमाएँ है, किन्तु सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1317 की एक पाषाण प्रतिमा है जो एक फुट ऊंची है। यह प्रतिमा थोलाई ग्राम से जो यहाँ से 3 मील दूर है, लाई हुई है। पहिले थोलाई मे जैन परिवार थे तथा जैन मंदिर था पर अब नही है।

यहाँ का मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। एक धातु निर्मित पद्मावती देवी की प्रतिमा भी है। कहते है सम्वत् 1500 मे यहाँ 100 जैन परिवार निवास करते थे। अब केवल सोनी गोत्रीय चार परिवार है।

यह प्राचीन मंदिर लगभग एक हजार वर्ग में विस्तृत है। मंदिर कलापूर्ण एवं तीन शिखर का है। मंदिर का प्रबन्ध श्री कपूरचन्द व श्री भागचन्द सोनी करते हैं।

4. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, खोआ राणीजी

खोआ राणीजी रामगढ़ - दौसा सड़क पर है, जो जयपुर से वाया रामगढ़ लगभग 48 किलोमीटर दूर है। खोआ राणीजी महाराणी जी का जागीरी गाँव रहा है और यहाँ पोस्ट-ऑफिस है।

यहाँ पहिले एक दिगम्बर जैन मंदिर शिखरबन्ध था जिसे देवस्थान विभाग से सेवा पूजा हेतु आर्थिक सहायता मिलती थी, किन्तु मंदिर पर अतिक्रमण हो जाने के कारण अब मंदिर नहीं रहा। इस सम्बन्ध मे 4-5 वर्ष पूर्व थाना मे रिपोर्ट भी दर्ज कराई गई, किन्तु कोई कार्यवाही नही हुई। मन्दिर का भवन मात्र है।

यहाँ के मंदिर की देख-रेख श्री भागचन्द सोनी खराणा, पो0 खोआ राणीजी करते हैं।

5. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, चावंड का मंढ

चावंड का मंढ जयपुर-जमवा रामगढ़ सड़क पर जयपुर से 14 किलोमीटर दूरी पर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो दूर ही से नजर आता है। मंदिर

प्राचीन है और एक वेदी में तीर्थंकर प्रतिमाएँ विराजमान हैं। मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। यहाँ एक जैन घर है। प्रबन्ध चुनी हुई कमेटी द्वारा होता है जिसके प्रबन्धक श्री प्रकाशचन्द बाकलीवाल हैं। मंदिर देवस्थान विभाग राजस्थान के अन्तर्गत पंजीकृत है। इसका क्षेत्रफल 4046 फीट है। अचल सम्पत्ति के रूप में 13500 वर्गफीट की जमीन है जिस पर कच्चा डोला बना हुआ है।

यहाँ 7.8.93 को मंदिर मे चोरी हो गई थी जिसमें 5 मूर्तियां चोर ले गये थे। इसकी आमेर थाना मे रिपोर्ट की गई थी और चोर भी पकड़े गये थे और उनसे 4 मूर्तियां पुलिस ने बरामद की थी जिनमें से एक मूर्ति खण्डित मिली। वर्तमान में मंदिर जीर्ण-शीर्ण अवस्था मे है। 3 मूर्तियां विराजमान है, जिनमें 2 चन्द्रप्रभ की तथा 1 आदिनाथ की है। पुलिस से प्राप्त मूर्तियों में से एक मूर्ति अभी विराजमान नहीं है।

6. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, चावंडिया

चावंडिया ग्राम जयपुर-दौसा रोड़ पर दूधली मोड़ से तथा झर रेलवे स्टेशन से 5 किलोमीटर कच्चे रास्ते पर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसके निर्माणकर्ता श्री नाथूलाल जी पुत्र श्री पन्नालाल जी वैद चावंडिया निवासी थे। मंदिर प्राचीन है। पहिले ग्राम रामपुरा तथ चैनपुरा के जैन बन्धु यहाँ ही दर्शन करने आते थे। अब चैनपुरा तहसील बस्सी में चैत्यालय स्थापित हो गया है।

इस मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है। मंदिर में दो वेदियाँ है जिनमें धातु तथा पाषाण की कुल 8 प्रतिमाएँ एवं 4 यंत्र हैं। मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है। क्षेत्रपाल भी विराजमान है। मंदिर दूसरी मंजिल पर है। मंदिर की वेदी पर गुम्बज भी है।

मंदिर के अधीन अचल सम्पत्ति के रूप मे एक दुकान है। यहाँ के मुख्य प्रबन्धक श्री फूलचन्द जैन है।

7. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, थौलायी

थौलायी ग्राम रामगढ़-दौसा मार्ग पर रामगढ़ से 18 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर था जिसमें सम्वत् 1317 की प्रतिष्ठित पाषाण की एक प्रतिमा थी जो थौलायी में जैन परिवार नहीं होने के कारण खराणा के मंदिर में स्थानान्तरित कर दी गई है तथा वहाँ विराजमान है। थौलायी में पहिले काफी जैन परिवार थे। अब वहाँ न कोई मंदिर है और न जैन परिवार। अब मात्र मन्दिर का भवन है।

8. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, नटाटा

साईवाड़ तथा आमेर के बीच मे नटाटा ग्राम स्थित है। जयपुर से आमेर होते हुए साईवाड़ जाने वाली सड़क पर नटाटा जयपुर से करीब 13 किलोमीटर दूर है। बीच में नदी पड़ती है। यहाँ एक जैन चैत्यालय है जो एक दुकान में स्थित है। इसमें एक ही प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है। चैत्यालय की स्थापना लगभग 300 वर्ष पूर्व श्री लिखमीचन्द बख्तावरलाल जी काला के पूर्वजों ने की बतलाई। कहते हैं यहाँ प्रतिमा बाहरली आमेर के श्री नेमिनाथ जी के मंदिर से लायी गई थी। चैत्यालय बीसपंथ आम्नाय का है। यहाँ अब कोई जैन परिवार निवास नही करता जिससे नियमित पूजा प्रक्षाल नही होती।

यहाँ कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष में साईवाड़ के मेले के समय बसों से दर्शनार्थी आते हैं।

मंदिर की अचल सम्पत्ति में भूखण्ड पर निर्माण की योजना विचाराधीन है। यहाँ पहिले चोरी हो चुकी है, किन्तु पुलिस मे रिपोर्ट के बावजूद कोई परिणाम नहीं निकला।

यहाँ की देख-रेख मास्टर श्री अशोककुमार बाकलीवाल लांगड़ीवास वाले करते हैं।

9. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, नीमला

नीमला ग्राम दौसा से 21 किलोमीटर दूर दौसा-सैंथल सड़क पर स्थित है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो लगभग 150 वर्ष पुराना है जिसके निर्माणकर्त्ता श्री कजोड़ीलाल जी सौगाणी के पूर्वज थे। कहते हैं यहाँ पहिले भी एक मंदिर था। मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1531 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में एक वेदी है जिसमे धातु तथा पाषाण की कुल 8 प्रतिमाएँ एवं 2 यंत्र हैं। मंदिर तेरहपंथ आम्नाय का है।

मंदिर सौगाणी परिवार का होने से इसका प्रबन्ध श्री कपूरचन्द सौगाणी करते हैं। कुछ दिनों पूर्व चोरी भी हो चुकी है, किन्तु कोई पता नही लगा।

10. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, नेतावाला (नेताला)

नेतावाला (नेताला) दौसा जिले के सैंथल ग्राम के नजदीक है। यह गांव दौसा से बस द्वारा 20 किलोमीटर सैंथल रोड़ पर स्थित है।

यहाँ का पूरा पता गांव नेतावाला, पो0 नीमला, पिन कोड़-303507 है।

यहाँ एक जैन मंदिर है जो श्री दिगम्बर जैन आदिनाथ चैत्यालय नेतावाला के नाम से जाना जाता है। इसकी स्थापना श्री मगनलाल जी बिरधीचन्द जी

पाण्ड्या ने माह फरवरी, 1987 में की थी। मूल नायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की श्वेत पाषाण की पदमासन सन् 1967 की ही प्रतिष्ठित है। चैत्यालय में एक वेदी है जिसमे धातु तथा पाषाण की कुल तीन प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र विराजमान है। मंदिर तेरहपंथ आम्नाय का है। चैत्यालय की व्यवस्था श्री बिरधीचन्द जैन करते हैं। यहाँ एक ही जैन परिवार निवास करता है।

11. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, पालेड़ा

जयपुर-रामगढ़ सड़क पर 15 किलोमीटर की दूरी पर ढूंढ नदी के पहिले पालेड़ा ग्राम स्थित है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो लगभग 100 वर्ष से अधिक प्राचीन है। प्रतिमा पहिले भोलीलाल जी बाकलीवाल के मकान मे ही एक कमरे मे विराजमान थी, किन्तु अब कुछ वर्षों पूर्व 15×18 गज के क्षेत्रफल मे एक मंदिर बन गया है। इसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है जो सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमें धातु तथा पाषाण की 2 प्रतिमाएँ एवं दो यंत्र है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

यहाँ 5 दिगम्बर जैन परिवार निवास करते हैं जिनमे श्री कन्हैयालाल पटवारी का प्रमुख हैं। श्री दयालचन्द पाटनी मंदिर की देख-रेख करते हैं। यहाँ कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष मे साईवाड़ के मेले के साथ ही वार्षिक उत्सव मनाया जाता है।

12. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, बिरासणा

बिरासणा जमवा रामगढ़ से 15 किलोमीटर दूर है तथा वहाँ तक पक्की सड़क है एवं पोस्ट ऑफिस है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण लगभग 100 वर्ष पूर्व श्री भौंरीलाल जी बड़जात्या ने करवाया था। मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है। मंदिर मे 3 वेदियां हैं जिनमे धातु तथा पाषाण की 5 प्रतिमाएँ एवं 5 यंत्र विराजमान हैं। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

यहाँ बड़जात्या परिवार के दो घर हैं।

मंदिर की व्यवस्था श्री गोपीचन्द बड़जात्या देखते है। मंदिर का क्षेत्रफल लगभग एक हजार वर्ग गज है तथा अचल सम्पत्ति के रूप मे 2 दुकाने भी हैं। मंदिर में स्वाध्याय हेतु लगभग 50 मुद्रित धार्मिक पुस्तके हैं।

13. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, लांगडीवास

लांगडीवास जयपुर जमवा रामगढ़ रोड़ पर जयपुर से 15 किलोमीटर दूर है। सूकली नदी पर से ही नायला की तरफ इसकी पक्की सड़क जाती है। जयपुर से पुराना रामगढ़ मोड से बस सेवा उपलब्ध है। यहाँ एक दिगम्बर जैन चैत्यालय

है जो एक हवेली के नीचे वाले कोठे में स्थापित है। इसकी स्थापना लगभग 115 वर्ष पूर्व श्री सुन्दरलाल जी पटवारी ने की थी। इसमे एक ही धातु की भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा है जो सम्वत् 1500 के आस-पास की है। यहाँ एक ही जैन परिवार श्री गुलाबचन्द बाकलीवाल लांगड़ीवास वालों का है। चैत्यालय-मंदिर की सार-संभाल श्री मोतीलाल करते हैं। चैत्यालय बीसपंथ आम्नाय का है।

विशेष:- कहते हैं यहाँ की प्रतिमा चावण्ड के मंढ से लाई हुई है। मंदिर के नव-निर्माण की योजना भी विचाराधीन बताई गई है।

14. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, साईवाड़

साईवाड़ जयपुर से आमेर नटाटा होते हुए तथा जमवा रामगढ़ रोड़ पर सायपुरा होते हुए 15 किलोमीटर दूर स्थित है। जयपुर से बस की सुविधा उपलब्ध है। यहाँ एक शिखरबंध दिगम्बर जैन मंदिर है, जिसे दीवान रामचन्द्र छाबड़ा ने सम्वत् 1747 में बनवाया था। इसका आधार यहां तिबारे के एक खम्बे पर उत्कीर्ण शिलालेख है जो पुता हुआ है। मंदिर पहली मंजिल पर है तथा प्रवेश द्वार पर गुम्बज है। बीच मे चौक, दुछत्ता तथा तीनों ओर तिबारे हैं। जिनमंदिर मे जाने हेतु तीन प्रवेश द्वार हैं। सामने मूलवेदी मे भगवान शांतिनाथ की श्वेत पाषाण की मनोज्ञ प्रतिमा है जो सम्वत् 1861 की प्रतिष्ठित है। कुल आठ वेदियां हैं जिनमें धातु तथा पाषाण की कुल 20 प्रतिमाएँ एवं 4 यंत्र हैं। मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है जिसकी व्यवस्था समाज की चुनी हुई कमेटी द्वारा की जाती है। मुख्य प्रबन्धक श्री राजमल कासलीवाल हैं। मंदिर के बाहर क्षेत्रपाल जी स्थापित हैं। यहां 8 दिगम्बर जैन परिवार निवास करते हैं।

मंदिर का क्षेत्रफल लगभग 400 वर्ग गज है। मंदिर की अचल सम्पत्ति के रूप में मंदिर के बराबर धर्मशाला तथा पीछे की ओर नोहरा है। बाहर कुआ है। मंदिर में आवश्यक उपकरण पालकी, बिछायतें, दरी, पर्दे आदि उपलब्ध हैं।

यहाँ लगभग 25 हस्तलिखित साधारण ग्रन्थ हैं और करीब 30 मुद्रित ग्रन्थ हैं। मंदिर का जीर्णोद्धार होता रहता है।

यहाँ प्रतिवर्ष कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष में मेला होता है जिसमे काफी संख्या में जयपुर के जैन बंधु खोर, चांवड का मंढ, सायपुरा, रामगढ़, साईवाड़, नटाटा, कूकस, आमेर आदि के मंदिरों के दर्शन करते हुए जयपुर जाते हैं।

15. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, सायपुरा

जयपुर से रामगढ़ जाने वाली सड़क पर 12 किलोमीटर दूरी पर सायपुरा ग्राम स्थित है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण सम्वत् 1997

में स्व. श्री मुंशी लादूराम जी अजमेरा वकील ने करवाकर वेदी प्रतिष्ठा करवायी थी। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान महावीर स्वामी की है एवं कुछ प्रतिमाएँ जयपुर के बूचरों के मंदिर से लाई हुई हैं। मंदिर में एक वेदी है जिसमें धातु तथा पाषाण की कुल 7 प्रतिमाएँ तथा एक यंत्र विराजमान है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। मंदिर पर "श्रीमती बच्चा देवी ध. पं. श्री लादूराम जी वकील" के नाम का शिलालेख भी है। यहाँ पहिले 4 दिगम्बर जैन परिवार थे, किन्तु अब एक ही है।

मंदिर लादूरामजी, गोपीचन्दजी अजमेरा परिवार का है जिसका वर्तमान में प्रबन्ध जयपुर निवासी श्री गोपीचन्द अजमेरा तथा श्री हरिश्चन्द्र अजमेरा वकील कर रहे है। मंदिर का क्षेत्रफल 200 वर्गगज है। मंदिर मे पन्द्रह व्यक्तियों के लिए एक साथ पूजा करने हेतु केशरिया वस्त्र व पूजा के उपकरण बर्तन व बिछायत चौकियां उपलब्ध हैं। प्रतिदिन की पूजन सामग्री की व्यवस्था भी अजमेरा परिवार द्वारा की जा रही है। मंदिर पूरी तरह आधुनिक सुविधाओ से युक्त है।

यहाँ कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष मे साईवाड़ के मेले के समय ही वार्षिक मेला उत्सव होता है। वर्ष 1995 को मुनि श्री दर्शन सागर जी महाराज के ससंग सान्निध्य में मन्दिर में दो दिवसीय कलाषाभिशेक समारोह हो चुका है। भाद्रपद मास मे भी अनन्तचर्तुदशी पर यहाँ अजमेरा परिवार के साथ अन्य लोग भी एकत्रित होकर पूजा करते हैं। पूरी व्यवस्था अजमेरा परिवार द्वारा की जाती है।

मन्दिर जी में संगमरमर व कोटा स्टोन का कार्य कराकर अजमेरा परिवार ने जीर्णोद्धार एवं नवीनीकरण सन् 1995 मे कराया है जिसमें मन्दिर जी की मुख्य वेदी में स्वर्ण-कार्य एवं गुम्बज के भीतरी भाग मे दीवारों पर बनी हुई कलाकृतियों को पुन: नए रंगो से चित्रित किया गया है। पद्मावती माता की वेदी का भी नवनिर्माण कराया गया है। जीर्णोद्धार के कार्य सम्पन्न होने पर 25.9.95 को शुभ मुहुर्त पर मुख्य वेदी व नवनिर्मित वेदियो की शुद्धि का कार्य विधिपूर्वक धार्मिक पद्धति से कराकर भगवान शान्तिनाथ एवं चौबीसो भगवान की प्रतिमा एवं क्षेत्रपाल को स्थापित कराया गया है। इस अवसर पर जलयात्रा एवं सामूहिक शान्ति विधान की पूजा एवं कलषाभिशेक भी कराया गया, जिसमें समस्त अजमेरा परिवार के सदस्य व अन्य गणमान्य व्यक्तियो ने इस उत्सव पर यहाँ सम्मिलित होकर धर्मलाभ प्राप्त किया।

धम्मो वत्थुसहावो, खमादिभावो य दसविहो धम्मो।
रयणत्तय च धम्मो, जीवाणं रक्खणं धम्मो।।

वस्तु का स्वभाव धर्म है। क्षमादि परिणाम भी दस प्रकार का धर्म है। तीन रत्नो का समूह भी धर्म है तथा जीवो की रक्षा करना भी धर्म है। — ***णिग्गंठ पवयणं***

तहसील - बैराठ (विराटनगर)

[1 गांव में 2 जैन मन्दिर व 1 नसियाँ]

जयपुर जिला के कोटपूतली उपखण्ड के अन्तर्गत बैराठ (विराटनगर) अच्छा कस्बा है। यहाँ तहसील हैडक्वार्टर है। बैराठ बहुत प्राचीन नगर है, जिसे विराटनगर भी कहते हैं। यह भी कहा जाता है कि प्राचीन काल मे कुन्ती सहित पांचों पाण्डव अज्ञातवास में यहाँ आकर रुके थे। इसी कारण इसे ऐतिहासिक स्थान भी कहा जाता है। बैराठ तहसील के अन्तर्गत ९५ गांव हैं जिनमें से दिगम्बर जैन मंदिर केवल बैराठ में ही है। कोटपूतली उपखण्ड की तहसील कोटपूतली तथा शाहपुरा के गांवों में कोई जैन मंदिर नहीं है।

बैराठ:

बैराठ (विराटनगर) में 35 दिगम्बर जैन घर हैं। दो दिगम्बर जैन मंदिर तथा एक नसियां है। इस प्रकार यहाँ तीन दिगम्बर जैन मंदिर हैं।

जयपुर से बैराठ जयपुर-अलवर सड़क मार्ग पर 90 किलोमीटर दूर है। बस स्टेण्ड से मंदिर एक किलोमीटर दूर गांव में है। यहाँ जैन परिवारों में अग्रवाल जैन समाज का बाहुल्य है। कितने ही परिवार जयपुर तथा अन्य जगह चले गये हैं जो बैराठी कहलाते हैं।

1. श्री दिगम्बर जैन पंचायत बड़ा मन्दिर, बैराठ (विराटनगर)

यह मंदिर बड़ा मंदिर कहलाता है। मंदिर का बाहरी दृश्य बहुत सुन्दर है। इस मंदिर का निर्माण दि. जैन समाज बैराठ ने कब कराया कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। यह मंदिर चौधरियो की पंचायत का है जो काफी प्राचीन है। मूलनायक प्रतिमा भगवान महावीर स्वामी की है जो सम्वत् 1994 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे 3 समवसरण तथा 2 वेदी कुल 5 वेदियां हैं जिनमें 7 धातु तथा 27 पाषाण की कुल 34 प्रतिमाएँ एवं 5 यंत्र विराजमान हैं। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1548 की है।

मंदिर की आम्नाय तेरहपंथी है, किन्तु क्षेत्रपाल प्रतिमा भी स्थापित है। मंदिर का प्रबन्ध समाज द्वारा निर्वाचित कमेटी करती है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री धूपी लाल जैन हैं। मंदिर का क्षेत्रफल 800 वर्गगज है। अचल सम्पत्ति के रूप में 15 दुकानें तथा एक धर्मशाला दुमंजिली है। मंदिर में टैन्ट, बरतन, कुर्सियां, शामियाना, विवाह आदि का सामान किराये पर देने को भी है।

मंदिर कलापूर्ण है। समवसरण मे कुराई का अच्छा काम है। छत भी

कलात्मक है। समवसरण की गुम्बज में 16 स्वप्न, अष्ट मंगल द्रव्य, अष्ट प्रातिहार्य आदि के भित्ती चित्र हैं जिनमंदिर तथा बाहर का चौक विशाल है। दोनों ओर तिबारे हैं।

कहा जाता है कि यहाँ पहिले हस्तलिखित ग्रंथो का अच्छा संग्रह था, किन्तु भट्टारकजी के उत्तराधिकारियों की अव्यवस्था से वह खुर्द-बुर्द हो गया। यहाँ भट्टारकजी की गद्दी भी रही थी। यहाँ भाद्रमास में शास्त्र सभा होती है।

वर्ष में 3 बार मेले- महावीर जयन्ती, अनन्त चतुर्दशी तथा क्षमावाणी पर्व पर होते हैं। मंदिर साफ सुथरा है। मंदिर के पीछे की तरफ भी बिहारी में होकर बाहर जाने का दरवाजा है। मुख्य द्वार पूर्व की ओर है।

विशेष:- यहाँ 'लाटी संहिता' की हस्तलिखित प्रति है, जो वि. सं. 1641 की है। इसके अनुसार छोटे मंदिर के निर्माणकर्ता श्री भारूमल संघी है। यहाँ कुमार सेन भट्टारक की परम्परा है।

2. श्री दिगम्बर जैन पंचायत छोटा मंदिर, बैराठ (विराटनगर)

यह मंदिर बड़े मंदिर के पीछे है। इसका निर्माण दिगम्बर जैन समाज बैराठ के संघी परिवार ने करवाया है। यद्यपि प्राचीन है किन्तु निर्माण कब करवाया गया कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है जो सम्वत् 1994 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में 3 वेदियाँ है जिनमे 27 धातु तथा 11 पाषाण की प्रतिमाएँ एवं 11 यंत्र है। सबसे प्राचीन प्रतिमा आदिनाथ की है जो पपोरा क्षेत्र की प्रतिष्ठित है। मंदिर तेरहपथ आम्नाय का है। क्षेत्रपाल भी स्थापित है।

मंदिर का क्षेत्रफल 200 वर्ग गज का है। यहाँ के दोनों मन्दिर तथा नसियाँ का प्रबन्ध दिगम्बर जैन पंचायत द्वारा चुनी हुई एक ही कमेटी द्वारा किया जाता है, जिसके प्रबन्धक श्री धूपी लाल जैन हैं। अचल सम्पत्ति भी यहाँ के दोनो मंदिरों की ही है। इस मंदिर में 1994 मे चोरी हुई थी जिसमे 6 छोटी प्रतिमाएँ चोरी गयी थीं।

मंदिर में संगमरमर की सुन्दर वेदी है तथा कलात्मक भित्ति चित्र है। मंदिर कलापूर्ण है। मंदिर दुछत्ता है।

मंदिर की सीढियों के पास सम्वत् 2003 में मंदिर के जीर्णोद्धार होने सम्बन्धी शिलालेख है। मंदिर की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ है।

विशेष:- बड़े मंदिर में उपलब्ध 'लाटी सहिंता' की सम्वत् 1641 की प्रति के आधार पर संघी श्री भारूमल इस छोटे मंदिर के निर्माण कर्ता हैं। जयपुर के पं. नानूलाल जी शास्त्री, नारायण सहाय जी बैराठी आदि संघियो के पंचायती मंदिर से ही सम्बन्धित थे।

3. श्री दिगम्बर जैन नसियाँ, बैराठ (विराटनगर)

यह नसियाँ बैराठ से बाहर उत्तर की ओर डेढ़ किलोमीटर दूर है। नगर से नसियां तक पक्की सड़क है। नसियां में करीब 12 बीघा पक्की भूमि है तथा तीन कोठियां हैं जिनमें से केवल एक में पानी है।

नसियां संघी परिवार द्वारा निर्मित है तथा मुगलकालीन शैली की है। जिनमंदिर चबूतरे पर चढ़कर एक अष्टकोणी बुर्ज में स्थित है। मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की श्वेत पाषाण की है जो सम्वत् 1881 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में एक वेदी है जिसमें एक प्रतिमा तथा एक यंत्र विराजमान है। मंदिर तेरहपंथ आम्नाय का है।

नसियां का प्रबन्ध बैराठ की दिगम्बर जैन पंचायत की चुनी हुई कमेटी द्वारा (दोनों मंदिर व नसियां की) किया जाता है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री धुपी लाल जैन है।

नसियां कलापूर्ण है। नसियां के प्रांगण मे कभी सुन्दर बगीचा रहा होगा। चारो ओर पक्के धोरे तथा क्यारियाँ बनी हुई है।

जिनमंदिर जिस चबूतरे पर है उसके नीचे तहखाने है। जिनमंदिर वाली अष्टकोणी बुर्ज पर आठ ही झरोकियाँ बनी हुई हैं, जिन पर स्तूप हैं और उन पर कलश हैं।

नसियां के बाजू में अहाते के बाहर 3 छत्रियाँ है। एक छत्री मे सं. 1930 का शिलालेख है जिसमें पं. ऋषभदास का उल्लेख है। छत्रियो के पास एक विशाल कुआ है जिसके आठ ढाणे हैं। उनके नीचे भी तहखाने हैं। एक तहखाने मे से कुए में सीढ़ियां जाती हैं। कुआ जाल से ढका हुआ है और विशेष वास्तु कला का है। ऐसा कुआ अन्य जगह देखने मे नही आया। अन्य छत्रियाँ भट्टारकजी की बताते हैं।

मंदिर के सामने एक तीन मंजिला महल है जो जीर्ण अवस्था में है। सारा निर्माण मुगल शैली का है। नसियां के अहाते के ठीक सामने कुछ दूर पर एक महल है। कहते हैं यह तोतूका परिवार का बनाया हुआ है। अहाते के बाहर भी नसियां की भू-सम्पत्ति के अधीन कई नीम के पेड़ हैं।

इस ऐतिहासिक नसियाँ का जीर्णोद्धार अपेक्षित है। कुओ मे पानी हो जाय और बाग-बगीचों का रख-रखाव भी किया जावे तो ऐसी नसियाँ राजस्थान में एक ही होगी।

तहसील - जयपुर

[8 गांव तथा उपनगरी क्षेत्र मे 14 मन्दिर]

जयपुर तहसील के अन्तर्गत आने वाली चार-दीवारी के अन्दर की चौकड़ियाँ तथा चौकड़ी हवाली शहर एवं अन्य उपनगरीय स्थित दिगम्बर जैन मंदिरों का परिचय पूर्व में प्रकाशित पुस्तक में दिया जा चुका है।

अब जयपुर तहसील के गांवों मे स्थित एवं शेष उपनगरीय मंदिरों का परिचय निम्न प्रकार हैं-

1. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, जयसिंहपुरा खोर

जयपुर-रामगढ़ रोड़ पर बंध की घाटी के नीचे से 2 कि.मी दूर जयपुर तहसील का जयसिंहपुरा खोर ग्राम है जिसकी आबादी लगभग दस हजार होगी। यह एक जागीरदार का प्राचीन ग्राम था जहाँ परकोटे के भीतर जनाने मर्दाने महल, बाग-बगीचे आज भी मौजूद है। इस गढ़ या कोटड़ी के बाहर खुला मैदान है। बगल में बावड़ी तथा ग्राम के बाहर सुन्दर कुण्ड है। ग्राम सभी आधुनिक सुविधाओं से युक्त है।

यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो श्रेयांसनाथ जैन मंदिर गोधान के नाम से प्रसिद्ध है। इस मंदिर का निर्माण विक्रम सम्वत् 1780 ज्येष्ठ शुक्ला तृतीया रविवार को आमेर के महाराजा सवाई जयसिंह जी के शासन काल मे आमेर के भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति की आम्नाय मे आचार्य चन्द्रकीर्ति के उपदेश से खण्डेलवाल श्री नाथू जी गोधा गोत्रीय के वंशज श्री कंवरपाल ने कराया। मंदिर के चौक में तिबारे मे उक्त आशय का शिलालेख लगा है।

मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान श्रेयांसनाथ की है जो सम्वत् 1664 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में एक वेदी तथा 5 आल्या है जिनमे 12 पाषाण की प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र हैं। सबसे प्राचीन प्रतिमा भगवान आदिनाथ की सम्वत् 1492 की प्रतिष्ठित है। अन्य प्रतिमाएँ सम्वत् 1525, 1651, 1664, 1741, 1783 तथा 1794 की प्रतिष्ठित हैं।

मंदिर की अचल सम्पत्ति के रूप मे जयपुर में एक मकान है। मंदिर के बाहर 5 दुकानें तथा बगल में जमीन है। मंदिर में सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध है।

जयपुर से जयसिंहपुरा खोर के लिये रेलवे स्टेशन, बड़ी चौपड़ रूट नं.2 से बस सेवा उपलब्ध है।

मंदिर के पीछे पहाड़ी पर पानी की टंकी है। ऊपर की ओर श्रेयांसनाथ भगवान के चरण विराजमान करने की योजना विचाराधीन है।

मंदिर कलापूर्ण है, शिखरबंध है। मंदिर दो चौक का है। पहिले चौक से सीढियाँ चढ़कर दूसरे चोक में प्रवेश के बाद निज मंदिर मे प्रवेश होता है। सामने सुन्दर वेदी है।

मंदिर के प्रबन्धक श्री लल्लूलालजी गोधा जयपुर वाले हैं जिनके अथक प्रयास से मंदिर को पर्यटन स्थल की श्रेणी में ले लिया गया है।

2. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, बगराणा

बगराणा ग्राम आगरा रोड़ पर ढूंढ नदी के पहिले उत्तर की ओर एक माइल अन्दर है। यह ग्राम जयपुर के श्री मोतीलाल जी दारोगा के पूर्वजो की जागीर मे था। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो जयपुर के दिगम्बर जैन मंदिर दरोगा स्वरूपचन्द जी ऊँचा कुँआ जयपुर के अधीनस्थ है। इस मन्दिर का निर्माण दारोगा परिवार ने कब कराया कुछ ज्ञात नहीं। मंदिर मे एक शिलालेख भी है जो अस्पष्ट है, पढ़ने में नही आता।

मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान शांतिनाथ की है जो सम्वत् 1861 की प्रतिष्ठित है। एक प्रतिमा आदिनाथ स्वामी की सम्वत् 1826 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में एक वेदी है जिसमे 2 धातु तथा 3 पाषाण कुल 5 प्रतिमाएँ है। यंत्र नहीं है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

बगराणा में कोई जैन घर नही है। प्रतिदिन पूजा-प्रक्षाल नही होता। रविवार को जयपुर से कुछ लोग जाते हैं वे पूजा-प्रक्षाल करते है। मंदिर की चाबी माली के पास रहती है। माली का मकान सड़क उतरते ही पश्चिम मे है।

मंदिर का प्रबन्ध ट्रस्ट दारोगाजी का जैन मंदिर हल्दियो का रास्ता, जयपुर द्वारा किया जाता है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री जोरावरमल पाटनी है।

अचल सम्पत्ति के रूप मे एक नोहरा है, जिसमे दो कमरे हैं बिजली फिटींग है तथा बोरिंग लगा हुआ है।

प्रतिवर्ष आश्विन शुक्ला पूर्णिमा (शरद पूर्णिमा) का मेला होता है।

3. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, मुकनपुरा

मुकनपुरा ग्राम की 100 घरो की बस्ती तथा लगभग 1000 की आबादी है। जयपुर से यह गांव अजमेर रोड़ पर भांकरोटा होते हुए 18 कि. मी. दूरी पर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण लगभग 150-175 वर्ष पूर्व का

बताया जाता हैं। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा 1008 श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की पद्मासन श्वेत पाषाण की है। मंदिर में एक वेदी हैं जिसमे 4 धातु तथा 3 पाषाण की कुल 7 प्रतिमाएँ एवं 3 यंत्र विराजमान हैं। मंदिर शुद्ध वीतराग आम्नाय का हैं। यहाँ पांच दिगम्बर जैन परिवार है जिनकी व्यक्ति संख्या 35 है।

मंदिर के मुख्य प्रबंध श्री जमनालाल सेठी हैं।

मंदिर दुमंजिला हैं वि. सं. 2017 में मंदिर का जीर्णोद्धार होकर प्रतिमाएँ ऊपर की मंजिल में विराजमान की गई हैं। जीर्णोद्धार सम्बन्धी शिलापट्ट भी लगा हैं।

4. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, निमेडा

निमेडा ग्राम जयपुर से 25 किलोमीटर दूर पश्चिम की ओर है। यहाँ जयपुर से बस द्वारा तथा धानक्या रेलवे स्टेशन से पहुंचा जा सकता है।

यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो 250 वर्ष पुराना बताया जाता है। मंदिर का निर्माण दिगम्बर जैन समाज निमेडा के बाकलीवाल परिवार द्वारा कराया गया है। मूलनायक प्रतिमा 1008 भगवान चन्द्रप्रभ की श्वेत पाषाण की पद्मासन मुद्रा मे संवत् 1889 की प्रतिष्ठित विराजमान है। मंदिर में एक वेदी है जिसमें 7 धातु व 4 पाषाण की कुल 11 प्रतिमा एवं 4 यंत्र विराजमान है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है मंदिर के बाहर क्षेत्रपाल जी की प्रतिमा है। यहाँ 250 घरों की बस्ती है तथा लगभग 2500 की जनसंख्या है। ग्राम मे 5 दिगम्बर जैन परिवार हैं जिसकी लगभग 30 सदस्य संख्या है।

मंदिर के चोक पर दुछता है। मंदिर का प्रबन्ध समाज द्वारा किया जाता है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री मानमल बाकलीवाल है। अचल सम्पत्ति के रूप में दो दुकाने है जो किराये पर हैं।

5. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, मूण्डया-रामसर

मूंडया-रामसर ग्राम निमेडा के पास है तथा जयपुर से 19 किलोमीटर दूर है। स्टेशन धानक्या से 2 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण मूण्डया-रामसर जैन समाज ने कब कराया कोई पता नहीं। यहाँ एक वेदी है जिसमें 5 धातु तथा 2 पाषाण की कुल 7 प्रतिमाएँ है। यंत्र नही है। मूलनायक प्रतिमा 1008 भगवान पार्श्वनाथ की श्याम पाषाण की पद्मासन सवत् 1826 की प्रतिष्ठित है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। बाहर क्षेत्रपाल जी है।

ग्राम की जनसंख्या लगभग 3000 है, यहाँ एक जैन परिवार है जिसकी सदस्य संख्या 7 हैं। मंदिर के मुख्य प्रबन्धक श्री लक्ष्मणलाल काला हैं।

6. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, बेगस

मूंडयारामसर के पास ही बेगस ग्राम है जो जयपुर से बस द्वारा 28 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो दि. जैन समाज बेगस द्वारा 200-250 वर्ष पूर्व निर्माण कराया गया था। इसमें मूलनायक प्रतिमा 1008 भगवान शांतिनाथ की श्वेत पाषाण की पद्मासन मुद्रा में विराजमान है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमें 2 धातु की 6 पाषाण की कुल 8 प्रतिमा एवं 2 यंत्र हैं। पद्मावती जी की 2 प्रतिमाएँ अलग है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। यहाँ एक जैन घर है जिसमे 5 सदस्य है।

मंदिर की कोई अचल सम्पत्ति नही है। मंदिर जीर्ण-शीर्ण अवस्था मे है।

मंदिर मे एक हाल है तथा ऊपर गुम्बज है।

मुख्य प्रबन्धक श्री कैलाशचन्द जैन हैं।

7. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, सिवार

जयपुर से पश्चिम की ओर 25 किलोमीटर दूर सिवार ग्राम स्थित है जिसकी जनसंख्या लगभग 2000 है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका जीर्णोद्धार सन् 1990-91 में श्री नाथूलाल जी गंगवाल सिवार निवासी ने कराया था। यह मंदिर पहिले एक कच्चे मकान मे था अब पक्का बनाया गया है। इसमे मूलनायक प्रतिमा 1008 भगवान पार्श्वनाथ की श्वेत पाषाण की पद्मासन मुद्रा में विराजमान है। प्रतिमा प्राचीन प्रतीत होती है।

मंदिर में एक वेदी है जिसमे 1 प्रतिमा तथा 1 यंत्र है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। ग्राम में 1 दिगम्बर जैन परिवार के केवल 2 सदस्य हैं। मंदिर के प्रबन्धक श्री नाथूलाल गंगवाल है जो धानक्या रेलवे स्टेशन पर रहते हैं तथा प्रतिदिन वहाँ से सिवार प्रक्षाल करने हेतु आते हैं।

यहाँ धानक्या रेलवे स्टेशन से तथा जयपुर से बस द्वारा पहुँचा जा सकता है।

8. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर (चैत्यालय), माचवा

जयपुर से कालवाड रोड पर 18 किलोमीटर दूर माचवा ग्राम है। यहाँ ढहर का बालाजी स्टेशन से भी पहुँचा जा सकता है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर (चैत्यालय) है जिसका निर्माण माचवा के लुहाड़िया परिवार ने कब कराया ज्ञात नहीं।

मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है जो सम्वत् 1861 की प्रतिष्ठित

है। चैत्यालय के रूप में एक आल्या में एक ही प्रतिमा विराजमान है। कोई यंत्र नहीं है। चैत्यालय बीसपंथ आम्नाय का है। माचवा में केवल तीन जैन परिवार है। प्रबन्धक श्री राजूलाल लुहाड़िया है। कोई अचल सम्पत्ति नहीं है।

9. श्री नेमीनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर,

न्यूलाइट कॉलोनी (जयपुर)

जयपुर-टोंक राजमार्ग पर वसुन्धरा कॉलोनी के सामने न्यूलाइट कॉलोनी है, जहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है। इस मंदिर का निर्माण स्थानीय दिगम्बर जैन समाज ने सन् 1994 ई में करवाया था। यहाँ मूलनायक प्रतिमा 1008 भगवान नेमिनाथ की श्याम पाषाण की पद्मासन है, जो संवत् 1826 की प्रतिष्ठित है। यह प्रतिमा जयपुर के दिगम्बर जैन मंदिर लश्कर से लाई हुई है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमें 6 धातु एवं एक पाषाण की कुल 7 प्रतिमाएँ एवं 1 यंत्र है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा क्षेत्रपाल पद्मावती की प्रतिमाएँ भी है। कॉलोनी में 60 दिगम्बर जैन परिवार है। उक्त कॉलोनी में हिम्मतनगर, इन्दिरा नगर, प्रताप नगर, जवाहरनगर, अनिता कॉलोनी, एम.आर.एफ.सी. स्टाक कॉलोनी एवं ओ.टी.एस. स्टाफ कॉलोनी शामिल है।

यहाँ के मुख्य प्रबन्ध श्री कपूरचन्द जैन छाबड़ा, खैरवाल वाले हैं।

विशेष:- इस कॉलोनी की विशेषता यह है कि दिगम्बर-श्वेताम्बर समाज दोनों के मंदिर एक ही परिसर मे है। जो ''णमोकार भवन'' के नाम से जाना जाता है, इसमें उपाश्रय भी है, सम्मिलित रूप से एक हौम्योपेथिक दवाखाना एवं पुस्तकालय भी संचालित है।

जयपुर विकास प्राधिकरण बनाम वर्धमान जैन साधना समिति के नाम से यहाँ का विवाद न्यायालय में चल रहा है।

10. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर

202 त्रिवेणी नगर (जयपुर)

जयपुर के आस-पास बसे उपनगरो मे त्रिवेणी नगर भी एक है जो जयपुर से दक्षिण की ओर गोपालपुरा बाईपास से 1 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण मई,1996 मे प्रारम्भ हुआ और अब भी निर्माणाधीन है। इसका निर्माण दिगम्बर जैन समिति त्रिवेणी नगर जयपुर ने कराया है। यहाँ मूलनायक प्रतिमा पद्मासन मुद्रा में भगवान पार्श्वनाथ की श्याम वर्ण के पाषाण की संवत् 1660 की प्रतिष्ठित हैं। यहाँ 1 पाषाण तथा 2 धातु की कुल 3 प्रतिमाएँ हैं तथा 2 यंत्र हैं। जो वेदी निर्माणाधीन होने के कारण बेसमेंट में ही विराजमान हैं। सबसे प्राचीन प्रतिमा संवत् 1531 की धातु की

चौबीसी की तथा संवत् 1655 की भगवान पार्श्वनाथ की धातु की है। मंदिर तेरहपंथ आम्नाय का है।

त्रिवेणी नगर तथा आस-पास की कॉलोनी मे 50 दिगम्बर जैन परिवार हैं जिनमें लगभग 250 व्यक्ति हैं।

मंदिर का प्रबन्ध विधानानुसार चुनी हुई कमेटी द्वारा किया जाता हैं जिसके मुख्य प्रबन्धक (अध्यक्ष) श्री धनराज पांड्या हैं। मंदिर देवस्थान विभाग में पंजीकृत है, पंजीयन संख्या 468/जे.पी./1995-96 है।

मंदिर में नियमित पूजा-प्रक्षाल होती हैं तथा शास्त्र सभा भी चलती है। मंदिर सैन्ट्रल पार्क के पास है।

11. श्री महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर,

श्यामनगर (जयपुर)

श्यामनगर जयपुर नगर की ही एक उपनगरीय कॉलोनी है, जो जयपुर से 8 कि.मी. दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो कृष्णा मार्ग पर स्थित है। इसका निर्माण श्री नरेन्द्र कुमार जैन बड़जात्या श्यामनगर वालों ने सन् 1993 में कराया है।

मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान महावीर स्वामी की है जो वि सं 2053 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमें 4 धातु तथा एक पाषाण की पद्मासन कुल 5 प्रतिमाएँ, चाँदी के पाँच मेरू तथा 8 यंत्र है। मंदिर तेरहपंथ आम्नाय का है।

श्याम नगर में, जिसमे जमनानगर, श्यामनगर, ऐक्सटैंशन ओर विद्युतनगर शामिल है, 200 दिगम्बर जैन परिवार हैं। वैसे मंदिर श्री नरेन्द्र कुमार का निजी है, किन्तु व्यवस्था दिगम्बर जैन समाज श्यामनगर करता है।

श्री नरेन्द्र कुमार जी ने दिनांक 13.10.97 को इस मंदिर का लोकार्पण दिगम्बर जैन समाज श्याम नगर को कर दिया तथा मंदिर की सब सम्पत्ति आदि समाज के मंत्री श्री प्रसन्नकुमार को संभला दी।

12. श्री महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर,

वैशाली नगर, (जयपुर)

वैशाली नगर जयपुर के चांदपोल बस स्टेण्ड से 6 किलोमीटर तथा जयपुर रेलवे स्टेशन से 4 किलोमीटर दूर पश्चिम की ओर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मन्दिर है जिसका निर्माण दिगम्बर जैन समाज वैशाली नगर ने दिनांक 13 अप्रेल,

सन् 1995 (महावीर जयन्ती) को कराया है। इसमें मूल नायक प्रतिमा भगवान महावीर स्वामी की धातु की पद्मासन वीर निर्वाण संवत् 2521 की प्रतिष्ठित है। मन्दिर में एक वेदी में (मुख्य वेदी निर्माणाधीन) 3 धातु की प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र है। प्राचीन प्रतिमा मूल-नायक ही है। मन्दिर तेरहपंथ आम्नाय का है।

यहाँ 80 दिगम्बर जैन परिवार हैं जिनकी सदस्य संख्या लगभग 400 है।

प्रबन्ध समाज द्वारा चुनी हुई प्रबन्धकारिणी समिति द्वारा किया जाता है जिसके अध्यक्ष श्री शांतिलाल बोहरा एवं मंत्री श्री महेशचन्द्र छाबड़ा हैं।

मन्दिर का क्षेत्रफल 205.48 वर्ग गज है तथा मन्दिर निर्माणाधीन है। पूजा प्रक्षाल हेतु लगभग 15 व्यक्ति आते हैं। शास्त्र सभा भी होती है। स्थापना दिवस पर वार्षिक उत्सव मनाते हैं। निर्माण की योजना अनुमानित 10 लाख की है।

सम्पर्क सूत्र: महेशचन्द छाबड़ा, डी-118, वैशाली नगर, जयपुर-302001

13. श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मन्दिर,
शांतिनगर (जयपुर)

शान्ति नगर जयपुर का एक उप नगर है जो टोंक रोड पर गोपालपुरा एवं दुर्गापुरा रेलवे फाटक के मध्य में दुर्गापुरा रेलवे स्टेशन के सामने स्थित है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो ''चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर'' के नाम से जाना जाता है। इसका निर्माण दिगम्बर जैन समाज शान्ति नगर द्वारा दिनांक 1-4-96 (महावीर जयन्ती) को कराया गया है। इसमे मूल नायक प्रतिमा 1008 भगवान चन्द्रप्रभ जी की पद्मासन श्वेत पाषाण की सं. 2053 वीर निर्वाण सं. 2522 की प्रतिष्ठित है। मन्दिर मे एक वेदी है जिसमे 2 धातु तथा 1 पाषाण की कुल 3 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र है। मन्दिर बीसपंथ आम्नाय का है।

शान्ति नगर मे पन्द्रह दिगम्बर जैन परिवार है जिनकी सदस्य संख्या 85 के लगभग है। यहाँ का प्रबन्ध चुनी हुई कमेटी द्वारा किया जाता है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री कल्याणमल ठोलिया है।

मन्दिर छोटा ही है और अभी निर्माणाधीन है।

14. श्री महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर,
सिविल लाइन्स (जयपुर)

यह मन्दिर जयपुर नगर के सिविल लाइन्स क्षेत्र मे जयपुर-अजमेर रोड पर हरिमार्ग में स्थित है। इसके निर्माण-कर्ता श्री धर्मचन्द मित्तल, साडी स्टोर एवं उनका परिवार है। अप्रेल सन् 1980 में निर्माण करवा कर वेदी प्रतिष्ठा करायी तथा प्रतिमा स्थापित की गई है। मूलनायक प्रतिमा 1008 भगवान महावीर

स्वामी की है। मन्दिर मे 3 धातु तथा 3 पाषाण की कुल 6 प्रतिमाएँ है। मन्दिर में एक ही वेदी है।

मन्दिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा इसका प्रबन्ध पंजीकृत ट्रस्ट द्वारा किया जाता है जिसकी प्रधान ट्रस्टी श्रीमती राधा देवी मित्तल ध. प. श्री धर्मचन्द जी मित्तल हैं। ट्रस्ट में 6 पदाधिकारी तथा 6 सदस्य हैं। मंत्री श्री गुलाबचन्द चांदवाड़ हैं। प्रारम्भ मे मन्दिर की व्यवस्था समाज ही करता था, किन्तु अब समाज को समर्पित कर एक ट्रस्ट का गठन कर प्रबन्ध उसे सोंप दिया गया है।

वर्तमान में आस-पास के दिगम्बर जैन परिवारों की संख्या 80 से अधिक है।

अचल सम्पत्ति के रूप में मन्दिर परिसर में एक ट्यूब वेल है तथा चांदी के उपकरण है। ट्रस्ट द्वारा संचालित एक होम्योपैथिक चिकित्सालय है तथा शीतकाल मे आवश्यकतानुसार वस्त्र बांटे जाते है। ग्रीष्मकाल शिक्षण शिविर भी चलाया जाता हैं। समय-सयम पर धार्मिक आयोजन व विधानादि होते रहते है।

यहाँ 108 आचार्य सन्मति सागर जी महाराज व आर्यिका विजयमती माता जी ससंघ पधार चुके हैं।

जिनालय
ये विशाल देवालय
चैत्यालय और शास्त्रालय
होते है किसलिये?
इसलिये कि
हम अपने अदर झॉक सके
स्वय को टटोल सके
और सन्मार्ग पर ले जा सके आत्मा को।
ये अनुपम सुन्दर अलौकिक/ समुदर जैसी गभीर
जिनेन्द्र प्रतिमा देती है दिव्य सदेश।
मौन उपदेश और मुक्ति पथ पर बढने का आदेश
अत अब अर्न्तमन मे झॉको,
अपने को ऑको, और अब मत भागो
तो हे चेतन हो जायेगा फासला कम, अब मत करो अह
शीघ्र हो जायगा अतर कम प्रभु और हमारे बीच का।

– *क्षु. विनिर्भय सागर*

तहसील - बस्सी
[14 गांवों में 17 मन्दिर]

जयपुर जिलान्तर्गत बस्सी (वीदावती - बसई) एक अच्छा कस्बा है जो जयपुर-आगरा राष्ट्रीय राजमार्ग पर जयपुर से 26 किलोमीटर दूर है। यह तहसील मुख्यालय है। जयपुर-दिल्ली रेल मार्ग पर बस्सी रेलवे स्टेशन भी है जहाँ से गांव 1 किलोमीटर दूर है। मुख्य सड़क से गांव 2 किलोमीटर दूर है। यहां दूध की डेयरी और पशु अनुसंधान केन्द्र भी है। बस्सी तहसील के 14 गांवो में 15 दिगम्बर जैन मंदिर, एक नसियां तथा एक चैत्यालय सहित कुल 17 मंदिर हैं। बस्सी में 2 मंदिर तथा एक नसियां है। नसियां गांव से बाहर एक किलोमीटर दूर दक्षिण की ओर है। यहाँ दिगम्बर जैनो के 25 घर हैं।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि बस्सी तहसील के अन्तर्गत तूंगा में मराठा और जयपुर महाराजा का भीषण युद्ध हुआ था, जिसमे अंग्रेज भी शामिल थे। उस समय के युद्ध की तोप का एक गोला गांव से बाहर दिगम्बर जैन नसियां के अहाते में अभी भी है। जब युद्ध के दौरान गोला यहाँ पड़ा था तो गोले से नसियां का अहाता टूट गया था। बस्सी एक अच्छा कस्बा एवं व्यापारिक मंडी स्थल है।

बस्सी:

1. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पार्श्वनाथजी

यह पार्श्वनाथ मंदिर अत्यन्त प्राचीन है जैसा कि तीन शिखरों से प्रतीत होता है। मंदिर विशाल एवं कलापूर्ण है। इस मंदिर का निर्माण दिगम्बर जैन समाज बस्सी द्वारा कब कराया गया कोई प्रमाण उपलब्ध नही है। मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है। जो सम्वत् 1783 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे कुल 14 वेदियां हैं जिनमें 6 धातु की और 48 पाषाण की कुल 54 प्रतिमाएँ एवं 7 यंत्र हैं। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है। एक प्रतिमा सं. 1575 की भी है जो काष्ठासंघी है। श्वेत पाषाण की 2×1/4 फीट बड़ी प्रतिमा पर सं. 1783 का पूरा लेख है तथा अंत मे लिखा है ''बिंब बसई देहुराजी को छे - श्री नरेन्द्रकीर्तिस्तत् शिष्य आचार्य श्री कनककीर्तिस्तत् शिष्य लि.प. सदारामजी''

मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। धरणेन्द्र की पाषाण की प्रतिमा के अतिरिक्त क्षेत्रपाल की प्रतिमा तथा एक चरण चौकी है।

मंदिर का चौक विशाल है जिसमें आमने-सामने वेदियाँ बनी हुई हैं। मंदिर की मुख्य वेदी के तीनों ओर वेदियां हैं। तीन प्रवेश द्वारों के आगे चौक है तथा सामने तिबारे में वेदियां है। चौक दुछत्ता है।

मंदिर के मंत्री श्री मदनलाल जैन के अनुसार पूर्व मे इस मंदिर का प्रवेश द्वार दक्षिण में था, किन्तु जयपुर में हुई व्यास गद्दी के समय दरवाजे के बाहर शिवपिंडी स्थापित कर दी गई, जिससे वह दरवाजा बन्द करके उत्तर की ओर द्वार निकाला। किन्तु उत्तर की ओर भी शिवलिंग स्थापित कर दिया गया। अब उसके बराबर से पश्चिम देखता हुआ द्वारा निकाला गया है:

मंदिर का क्षेत्रफल लगभग 1000 वर्ग फीट है। अचल सम्पत्ति के रूप में 13 दुकानें हैं तथा एक धर्मशाला है। बर्तन, दरियाँ, बिछायतो के अतिरिक्त यहाँ एक रथ था। जिसे पदमपुरा क्षेत्र को भेंट स्वरूप दे दिया गया है। मंदिर में 1992 मे कुछ चोरी हुई किन्तु पुलिस में रिपोर्ट करने पर भी कोई बरामदगी नहीं हुई।

मंदिर के शास्त्र भण्डार मे लगभग 25 हस्तलिखित ग्रन्थ हैं जो सब अधूरे हैं। नित्य स्वाध्याय के ही है। 40 से भी अधिक छापे के ग्रन्थ है। सूची बनी हुई है।

मंदिर की आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक है। इसी मंदिर के तहत दूसरा तेरहपंथी मंदिर एवं नसियां है। भाद्रपद मास मे शास्त्र सभा होती है। यहां दिगम्बर जैनों के 25 परिवार है। वर्तमान मे संस्था के अध्यक्ष श्री प्रेमचन्द जैन तथा मंत्री श्री मदनलाल जैन हैं।

2. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर तेरहपंथी

बस्सी का दूसरा दिगम्बर जैन मंदिर तेरहपंथी मंदिर है, जिसका निर्माण दिगम्बर जैन तेरहपंथी समाज बस्सी ने लगभग 30 वर्ष पूर्व कराया था। यहाँ मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है, जो सम्वत् 1660 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में तीन वेदियां हैं जिनमें 9 प्रतिमाये एवं एक यंत्र है। मंदिर तेरहपंथ आम्नाय का है।

मंदिर का क्षेत्रफल लगभग 1200 वर्ग गज है। अचल सम्पत्ति के रूप मे दो नोहरे है। मंदिर प्राचीन ढग का है। मंदिर की व्यवस्था पार्श्वनाथ मंदिर की प्रबन्ध समिति द्वारा ही की जाती है।

3. श्री दिगम्बर जैन नसियां

बस्सी ग्राम से बाहर दक्षिण की ओर एक किलोमीटर दूर यह नसिया स्थित है। नसियां में एक मंदिर तथा चार चरण-चिन्ह छत्रियां हैं। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1783 की बांसखोह की

प्रतिष्ठित है। निज मंदिर के द्वार के बाहर एक आल्या में एक शिलालेख है जिससे ज्ञात होता है कि यह नसियां भोपतजी संघी की है जिसमें भगवान शांतिनाथ का मंदिर था। लेख के अनुसार सम्वत् 1/50 की विजय दशमीं के दिन आमेर के महाराजा बिशनसिंह के शासन में आमेर गादी के मूल संघी भट्टारक नरेन्द्रकीर्ति जी की परम्परा में भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति जी के शिष्य आचार्य कनककीर्ति जी व उनके शिष्य सदाराम टेकचन्द व मलूकचन्द की प्रेरणा से बसई (वीदावती) के समस्त पंचों ने यहां भगवान पार्श्वनाथ का देवरा बनवाया। यह लेख आचार्य कनककीर्ति जी द्वारा लिखाया हुआ है।

मंदिर में एक वेदी है जिसमें धातु की तथा पाषाण की 16 प्रतिमायें एवं 2 यंत्र हैं। सबसे प्राचीन प्रतिमा पद्मावती जी की है जो सम्वत् 1593 की प्रतिष्ठित है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा इसकी व्यवस्था श्री दिगम्बर जैन मंदिर पार्श्वनाथ जी बस्सी की प्रबन्ध समिति द्वारा ही की जाती है। जिन मंदिर के बाहर चौक में बीच में एक छत्री भी है।

मंदिर के बाहर सामने की ओर चार चरण-चिन्ह छत्रियाँ हैं जिनमें से 2 में लेख हैं तथा 2 खाली हैं। एक में भट्टारक (आचार्य) कनककीर्ति जी के चरणचिन्ह तथा सम्वत् 1750 मे मंदिर निर्माण का उल्लेख है। इसमे उनके शिष्य सदाराम ने सम्वत् 1781 में चरण चिन्ह विराजमान करवाये थे। दूसरी छत्री में सं. 1828 में आचार्य महीचन्द्र के देवलोक होने का उल्लेख है तथा इसे उनके शिष्य गुमानीराम ने बनवाया था। मंदिर का क्षेत्रफल लगभग 200 वर्ग गज है तथा नसियां की अचल सम्पत्ति के रूप में 52 बीघा पक्की कृषि भूमि है जिसकी खातेदारी समाज के निम्नांकित 4 व्यक्तियों के नाम पर है, किन्तु वे सभी इसे नसियां की ही सम्पत्ति मानते हैं तथा सभी आय मंदिर मे जमा होती है। 1. श्री गोपीचन्द बाकलीवाल 2. श्री प्रेमचन्द अजमेरा 3. श्री भंवरलाल भौंच 4. श्री भैरूलाल भौंच।

यहाँ माली से नसियां मे रहने सम्बन्धी जमीन का विवाद भी है।

कहते हैं कि नसियां के क्षेत्र मे काले-गोरों का युद्ध हुआ था तथा गोला-बारी में गिरा लोहे का गोला यही रखा है। इससे नसियां का डोला क्षति ग्रस्त हो गया था। यह युद्ध तूंगा में महादानी सिंधिया एवं जयपुर महाराजा में हुआ बताया जिसमें महादानी की हार हुई थी। इसमें गोला-बारी हुई थी और अंग्रेज भी शामिल थे।

4. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, काशीपुरा

काशीपुरा एक अच्छा गांव है, जहाँ बस्सी या कोटखावदा होकर पहुंचा जा सकता है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण स्थानीय जैन समाज द्वारा हुआ है। ग्रन्थ प्रशस्तियों के आधार पर इसका निर्माण सम्वत् 1891

के पूर्व का है। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1548 बैशाख सुदी 13 की प्रतिष्ठित है। मंदिर सुन्दर कलात्मक तथा संगमरमर का है। इसमें तीन वेदियो मे 9 धातु की तथा 12 पाषाण की कुल 21 प्रतिमाएँ एवं 3 यंत्र विराजमान हैं। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

काशीपुरा में 12 दिगम्बर जैन परिवार है तथा मंदिर की व्यवस्था एक चुनी हुई कमेटी द्वारा की जाती है। श्री कल्याणमल पाटनी मंदिर के अध्यक्ष हैं। मंदिर के तहत एक धर्मशाला है जिसमें 2 कमरे तथा 2 हाल है।

मंदिर में शामियाना व दरियां आदि सभी आवश्यक सामान उपलब्ध है। यहाँ सम्वत् 2007 में चोरी हुई थी, किन्तु कोई बरामदगी नही हुई।

यहाँ करीब 25 हस्तलिखित ग्रन्थ है। प्रमुख रूप से नित्य स्वाध्याय के ग्रन्थ ही है। सबसे प्राचीन ग्रन्थ 'पार्श्वनाथ पुराण' की प्रति सम्वत् 1891 की है जो काशीपुरा के वास्ते लिखी गई थी। मंदिर के उत्सव कार्यक्रम समाज के सहयोग से सब सम्पन्न होते हैं।

अष्टान्हिका पर्व में विशेष रूप से उत्सव विधानादि होते रहते है, जिससे युवकों में चेतना है।

5. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, खिजूरिया

खिजूरिया ग्राम जयपुर से 25 किलोमीटर दूर जयपुर-आगरा रोड़ पर कानोता से दाहिनी ओर मुड़कर सड़क से एक किलोमीटर कच्चे मे है। इसे ब्राह्मणों का खिजूरिया भी कहते है। यहां एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो श्री दिगम्बर जैन मंदिर पार्श्वनाथ, खिजूरिया के नाम से प्रसिद्ध है। इसे लगभग 100 वर्ष पूर्व श्री झांझूलालजी रामकुमार जी निगोत्या ने बनवाया था। यहां मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1757 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमें 5 धातु तथा 2 पाषाण की कुल 7 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र हैं। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। यहाँ एक ही दिगम्बर जैन घर है।

प्रबन्ध श्री कस्तूरचन्द निगोत्या करते है। मंदिर की स्थिति सामान्य है। यहाँ धार्मिक साहित्य मे 1-2 जीर्ण-शीर्ण गुटके हस्तलिखित हैं।

6. श्री दिगम्बर जैन चन्द्रप्रभ चैत्यालय, चैनपुरा

चैनपुरा जयपुर-आगरा रोड़ पर जयपुर से 18 किलोमीटर तथा मोहनपुरा से एक किलोमीटर आगे है। रेलवे स्टेशन झर से 2 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक जैन चैत्यालय है जिसकी स्थापना श्री फूलचन्द जी जैन ने 5 जुलाई, 1970

को की थी। इस चैत्यालय मे छोटी वेदी है जिसमे मूलनायक प्रतिमा चन्द्रप्रभ स्वामी की है जो वि. सं. 2027 की प्रतिष्ठित है। चैत्यालय मे धातु तथा पाषाण की कुल दो प्रतिमाएँ एवं तीन यंत्र है। यह चैत्यालय नोहरे पर है तथा बीसपंथ आम्नाय का है। यहां क्षेत्रपाल जी भी विराजमान है।

यहाँ दिगम्बर जैनों के तीन परिवार हैं, किन्तु चैत्यालय की व्यवस्था श्री फूलचन्द जैन के परिवार द्वारा की जाती हैं।

7. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर चन्द्रप्रभ जी, जटवाड़ा

जटवाड़ा ग्राम जयपुर-आगरा रोड़ पर जयपुर से 40 किलोमीटर तथा जयपुर-दिल्ली रेलवे लाईन पर जटवाड़ा स्टेशन से 2 किलोमीटर दूर है।

यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो लगभग 200 वर्ष पुराना है। यह मन्दिर दिगम्बर जैन समाज जटवाड़ा द्वारा निर्मित है। मंदिर विशाल एवं स्वच्छ है। यहां मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है जो सम्वत् 1826 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे कुल चार वेदियां हैं जिनमें मूलनायक वेदी के पीछे की ओर तीन अन्य वेदियां हैं। इनमें बीच की वेदी मे भगवान चन्द्रप्रभ की प्रतिमा है जो सम्वत् 1783 की प्रतिष्ठित है। मंदिर वाले इसको भी मूलनायक ही मानते हैं। यहां सबसे प्राचीन प्रतिमा भगवान आदिनाथ की सम्वत् 1553 की प्रतिष्ठित है। चारों वेदियों में 25 धातु तथा 11 पाषाण की कुल 36 प्रतिमाएँ एवं 3 यंत्र है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा क्षेत्रपाल की प्रतिमा भी है। इनमे से पाषाण की 3 प्रतिमा खण्डित हैं।

पहिले यहां 60-70 जैन परिवार थे, किन्तु अब केवल 5 दिगम्बर जैन परिवार हैं। इन्हीं के द्वारा मंदिर की व्यवस्था की जाती है। वर्तमान मे श्री महावीर प्रसाद जैन तथा शिखर चन्द जैन वैद इसके मुख्य प्रबन्धक हैं।

मंदिर विशाल है और प्रवेश द्वार पर गुम्बज है। मंदिर की अचल सम्पत्ति के रूप में 6 दुकानें तथा कुछ जमीन है। जो समाज के व्यक्तियो के पास व्यक्तिगत हैं जिसकी आय वे मंदिर को देते है।

मंदिर में लगभग 20 हस्तलिखित ग्रन्थ है। प्राचीन ग्रन्थो में सम्वत् 1851 की लिखित अढ़ाई द्वीप पूजा की प्रति है। मंदिर की आर्थिक स्थिति सामान्य है।

मंदिर के गर्भ गृह एवं प्रवेश द्वार पर छत्रियां बनी हुई हैं। कहते हैं मंदिर पहिले नदी के किनारे पर था जो बाद में सम्वत् 1948 मे यहां नया मंदिर बना है।

विशेष:– मंदिर की दुकानो मे से 3 दूकानें खण्डेलवाल महाजनों तथा 3 जैन परिवारों के अधीन हैं।

8. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, टैटड़ा

टैटड़ा ग्राम जयपुर-आगरा राजमार्ग पर जयपुर से 40 किलोमीटर दूर 3 किलोमीटर भीतर जटवाड़ा से आगे स्थित है। जटवाड़ा रेलवे स्टेशन से 3 किलोमीटर दूरी पर है।

यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका सम्वत् 1948 में जैन समाज जटवाड़ा ने जीर्णोद्धार कराया था। मंदिर कब का बना है यह नही कहा जा सकता। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान विमलनाथ की है जो सम्वत् 1651 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमें 17 धातु तथा 4 पाषाण की कुल 21 प्रतिमाएँ एवं 9 यंत्र विराजमान है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा बाहर क्षेत्रपाल की प्रतिमा है।

यहाँ पहिले 15 दिगम्बर जैन परिवार थे किन्तु अब केवल 5 परिवार हैं। मंदिर का प्रबन्ध समाज द्वारा चुनी हुई कमेटी द्वारा होता है, जिसके प्रबन्धक श्री कल्याणमल बोहरा, श्री प्रेमचन्द, श्री रमेशचन्द पाटोदी एवं श्री पदमचन्द बोहरा हैं।

मंदिर स्वच्छ एवं सुन्दर है। प्रवेश द्वार तथा वेदी पर गुम्बज है। अचल सम्पत्ति के रूप मे जैन मंदिर के पास कुछ जमीन थी, किन्तु इस पर अन्य का अधिकार किया हुआ है जिसका कोर्ट मे विवाद चल रहा है।

मंदिर में पहिले चोरी हुई थी जिसमे मूर्तियां व सामान चोरी गया था किन्तु कोई बरामदगी नहीं हुई।

स्वाध्याय हेतु साधारण ग्रन्थ एवं प्रकाशित पुस्तके है। पर्यूषण पर्व तथा अष्टान्हिका मे शास्त्र सभा होती है।

मंदिर की आर्थिक स्थिति संतोषजनक है और लोगों में यद्यपि आपस में प्रेम और सद्भाव है किन्तु पूजा प्रक्षाल तथा अन्य धर्म कामो मे पूर्ण सहयोग नहीं मिलता, जो अपेक्षित है।

9. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर चन्द्रप्रभ जी, तूंगा

तूंगा ग्राम जयपुर-दौसा रोड़ पर स्थित है। श्री महावीरजी जाने वाला पदयात्री संघ तूंगा होकर जाता है।

यहां एक जैन मंदिर है। मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है। मंदिर का निर्माण जैन समाज तूंगा द्वारा ही कराया गया है किन्तु निर्माण कब हुआ कोई पता नहीं। मंदिर में एक वेदी है जिसमें कुल 21 प्रतिमाएँ एवं 12 यंत्र हैं। प्रतिमाओं में 16 धातु एवं 5 पाषाण की प्रतिमाएँ हैं। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। यहाँ 6 दिगम्बर जैन परिवार हैं।

मंदिर का प्रबन्ध देवस्थान विभाग मे रजिस्टर्ड प्रन्यास द्वारा किया जाता है। प्रन्यास का पंजीयन दिसम्बर, 1988 में हुआ है। प्रन्यासी श्री रेवड़मल जैन हैं।

मंदिर की अचल सम्पत्ति के रूप मे 8 दुकाने, एक धर्मशाला तथा 5 दुकानों पर कमरे बने हुए हैं। मंदिर मे 3 बार चोरी हुई और पुलिस मे रिपोर्ट की गई किन्तु परिणाम शून्य है।

मंदिर मे शास्त्र भण्डार भी है जिसमें 40 हस्तलिखित ग्रन्थ एवं 10 मुद्रित ग्रन्थ हैं। मंदिर की आर्थिक स्थिति ठीक है। वर्तमान में मंदिर के मंत्री श्री प्रकाशचन्द जैन हैं।

विशेष:- यह प्राचीन समय मे युद्धस्थल भी रहा है। जैनो के घर पहाड़ी के पास ही हैं। यहाँ जयपुर तथा मराठाओ का भीषण युद्ध हुआ था जिसमें मराठाओं की बुरी तरह हार हुई थी। इससे मंदिर भी प्रभावित हुआ था।

10. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, दणाऊ कलां

दणाऊ ग्राम जयपुर से 40 किलोमीटर दूर काशीपुरा के पास है। यहां एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो लगभग दो सौ वर्ष पूर्व पुराना बताया जाता है। इसका निर्माण दिगम्बर जैन समाज दणाऊ ने ही कराया था। यहाँ मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ की सम्वत् 1826 की प्रतिष्ठित प्रतिमा है।

मंदिर का जीर्णोद्धार भी हुआ है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमे 6 धातु तथा 2 पाषाण की कुल 8 प्रतिमाएँ एवं दो यंत्र विराजमान है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1664 एवं यंत्र सम्वत् 1593 का प्रतिष्ठित है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा क्षेत्रपाल की प्रतिमा है। यहां चार दिगम्बर जैन परिवार है तथा चुनी हुई कमेटी द्वारा मंदिर की व्यवस्था की जाती है। मंदिर का क्षेत्रफल लगभग 100 वर्ग गज है।

मंदिर में 4-5 स्वाध्याय के लिये ग्रन्थ है। मंदिर की आर्थिक स्थिति सामान्य है। मंदिर कमेटी के अध्यक्ष श्री नाथूलाल बैद एवं मंत्री श्री रतनलाल कासलीवाल है।

11. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, दयालपुरा

दयालपुरा, जयपुर-आगरा रोड़ पर खैरवाल मोड़ से 2 किलोमीटर अन्दर हैं। यहाँ का पोस्ट हंसमहल है।

यहां एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण यहां के निवासी एक ही परिवार ने कराया था। यहाँ केवल एक ही दिगम्बर जैन घर है। मंदिर मे एक ही वेदी है जिसमें 9 धातु तथा 1 पाषाण की कुल 10 प्रतिमाएँ विराजमान हैं। मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है जो सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है और प्राचीन है।

मंदिर की स्थिति साधारण है तथा एक ही व्यक्ति द्वारा प्रबन्ध किया जाता है। प्रबन्धक श्री महावीर प्रसाद जैन हैं।

12. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, पील्या

दणाऊ के पास पील्या ग्राम है जो जयपुर से लगभग 40 किलोमीटर दूर है तथा बस्सी रेलवे स्टेशन से 10 किलोमीटर दूर है। यहां एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण लगभग 250 वर्ष पूर्व जैन समाज पील्या द्वारा कराया गया था। मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान महावीर स्वामी की है जो सम्वत् 1861 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में चार वेदियां हैं जिनमे 4 धातु तथा 13 पाषाण की कुल 17 प्रतिमाएँ एवं यंत्र हैं। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

यहां 7 दिगम्बर जैन परिवार है। मंदिर का प्रबन्ध समाज द्वारा ही किया जाता है। मुख्य प्रबन्धक श्री कन्हैयालाल है। मंदिर के बाजू मे एक पक्का कुआ है जिसमे पानी की कमी है।

मंदिर सामान्य दुछत्ती है तथा मूल वेदी पर तीन स्वर्ण कलश है। ऊपर गुम्बज है तथा बाहर के प्रवेश द्वार पर गणेश मूर्ति है तथा गुम्बज है।

मंदिर मे 3-4 हस्तलिखित ग्रन्थ है जिसमे सम्वत् 1865 का लिखित 'पुण्यस्त्राव कथा' कोष भी है।

मंदिर मे भगवान पार्श्वनाथ की पाषाण की एक सहस्त्रफणी मूर्ति अत्यन्त आकर्षक है।

13. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, बांसखोह

बांसखोह जयपुर-आगरा राष्ट्रीय राजमार्ग पर जयपुर से 35 किलोमीटर दूर है। जयपुर-दिल्ली रेलवे लाईन पर बांसखोह रेलवे स्टेशन से 3 किलोमीटर दूर है। यहां एक 3 शिखरवाला प्राचीन विशाल दिगम्बर जैन मंदिर है जो स. 1736 वर्ष पूर्व का है। इसका निर्माण बांसखोह दि. जैन समाज द्वारा कराया गया, किन्तु कब कराया इसका कोई ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नही है। इसी मंदिर में उपलब्ध ''चेतन चरित्र'' की हस्तलिखित प्रति के आधार पर, जिसकी प्रतिलिपि पं0 सालगराम भट्ट ने सम्वत् 1736 मे बांसखोह के मंदिर के लिये की थी, कहा जा सकता है कि सम्वत् 1736 के पूर्व यह मंदिर था। सम्भव है यह मंदिर सम्वत् 1783 मे बनकर तैयार हुआ हो, क्योंकि जयपुर बसने के एक वर्ष पूर्व सम्वत् 1783 की बैशाख सुदी अष्टमी को यहां एक विशाल पंचकल्याणक महोत्सव संघी हृदयराम लुहाड़िया ने कराया था। जिसमे हजारो की

संख्या में मूर्तियां प्रतिष्ठित हुई थीं। आज भी भारत के कौने-कौन में सम्वत् 1783 की प्रतिष्ठित प्रतिमाएँ मिलती हैं। इस पंचकल्याणक महोत्सव के प्रतिष्ठाचार्य आमेर के भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्ति जी (सम्वत् 1771 से 1792) थे।

कहते हैं इस मंदिर के निर्माण में छना हुआ पानी लगा था तथा उसी दिन का तैयार किया मसाला कारीगर बेलदार नहा धोकर शुभ मुहूर्त में निर्माण कार्य में लगते थे। यह विशाल मंदिर सीढ़ियां चढ़कर दूसरी मंजिल मे स्थित है। जिन मंदिर में वेदी के दोनों ओर दो गह के तिबारे तथा बाहर बड़ा चौक एवं तिबारे हैं। सीढ़ियों के बाहर एक चौमुखा है जिस पर सम्वत् 1783 का शिलालेख अंकित है, किन्तु खराब हो जाने के कारण पढ़ने में नहीं आता।

मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है जो सम्वत् 1861 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमे 3 धातु की तथा 9 पाषाण की प्रतिमाएँ एव एक यंत्र है। इनके अतिरिक्त एक नंदीश्वर प्रतिमा पाषाण की और है। यहाँ सम्वत् 1783 मे यहां सम्पन्न पंचकल्यणक की एक भी प्रतिमा नहीं है। दो बार में सब चोरी चली गई बताई, जिनकी पुलिस मे रिपोर्ट हुई किन्तु अब तक बरामद नही हुई।

मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। यहाँ पहिले 150 दिगम्बर जैन घर थे किन्तु अब केवल 6 घर है। मंदिर का प्रबन्ध समाज द्वारा किया जाता है। जिसके प्रबन्धक श्री प्रकाशचन्द जैन एवं श्री कस्तूरचन्द बाकलीवाल हैं।

मंदिर के एक तिबारे की करीब 20 पट्टियां टूटी हुई है तथा एक ओर की दीवार भी टूट गई है। जीर्णोद्धार की अत्यन्त आवश्यकता है। अचल सम्पत्ति के रूप मे इस विशाल मंदिर के अन्तर्गत केवल दो दुकाने है। मंदिर का क्षेत्रफल लगभग 1000 वर्ग गज का है। मंदिर के पास ही पहाड़ी है। बांसखोह संतरो की खेती के लिये प्रसिद्ध है।

विशेष:- यह भी कहा जाता है कि यहां एक मंदिर दूसरे स्थान पर था। फिर यह मंदिर बना तथा हृदयराम लुहाड़िया ने मंदिर निर्माण कराकर सम्वत् 1783 में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराई।

राजस्थान पत्रिका के 20 दिसम्बर, 1995 के अंक मे ''नगर परिक्रमा स्तम्भ मे प्रकाशित'' टिप्पणी के अनुसार इस मंदिर का निर्माण सम्वत् 1737 है। इस मंदिर की प्रतिष्ठा सम्वत् 1783 में हृदयराम लुहाड़िया ने कराई थी जिसने सम्वत् 1773 मे धूलेट मे भी पंचकल्याणक महोत्सव कराया था। सम्वत् 1783 की प्रतिष्ठा के समय बांसखोह के ठाकुर चूहड़सिंह थे तथा आमेर के महाराजा सवाई जयसिंह थे।

14. श्री दिगम्बर जैन चैत्यालय, बांसखोह

बांसखोह में तीन शिखर वाले विशाल दिगम्बर जैन मंदिर के अतिरिक्त एक चैत्यालय और है। जिसका निर्माण कुछ वर्ष पूर्व श्री कपूरचन्द बांसखोह वालो ने करवाया था। यह चैत्यालय एक दुकान के ऊपर बना हुआ है। इसमे एक वेदी है जिसमें भगवान चन्द्रप्रभ की प्रतिमा विराजमान है।

15. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, माधोगढ़

माधोगढ़ बस्सी तहसील का एक अच्छा गांव है जो नल, बिजली, तार, टेलीफोन आदि सभी सुविधाओ से युक्त है। यहां के लिए घाटगेट जयपुर से सीधी बस सेवा उपलब्ध है तथा बस्सी से भी बसे उपलब्ध है। यहां एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका जीर्णोद्धार सन् 1942 मे समाज द्वारा कराया गया था। यहाँ पहिले जो मंदिर था उसमे जयपुर रियासत मे व्यास गद्दी के समय शिवपिण्डी स्थापित कर दी गई थी तथा प्रतिमाओं को एक कौने मे विराजमान कर दिया गया था। मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1826 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे एक वेदी तथा वेदी के पीछे की ओर तीन खिड़कियाँ है जिनमे 19 धातु तथा 14 पाषाण की 33 प्रतिमाएँ एव 16 यंत्र है। सबमे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1517 की तथा दशलक्षण धर्म यंत्र सम्वत् 1471 का प्रतिष्ठित है।

मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा क्षेत्रपाल विराजमान है। मदिर की व्यवस्था स्थानीय दो दिगम्बर जैन परिवारो द्वारा ही की जाती है जिनमे प्रमुख प्रबन्धक श्री चांदमल जैन हैं। वर्तमान मे मास्टर सूरजमल जैन रुचि लेकर इसकी व्यवस्था देखते है। मंदिर के जीर्णोद्धार-कार्य और विशेष अवसर पर यहां के दोनो परिवार ही खर्चा वहन करते है।

यहाँ कुछ हस्तलिखित ग्रन्थ थे जो बरसात मे भीग गये थे तथा उनके पत्र चिपक गये थे कुछ अधूरे ग्रन्थ भी थे। मास्टर सूरजमल ने ऐसे लगभग 15 ग्रन्थ मंदिर महासंघ को जयपुर ले जाकर जैन विद्या सस्थान को पहुँचाने दिये है। उनका यह कार्य सराहनीय एवं अन्य मंदिर वालो के लिए अनुकरणीय है। ये सभी ग्रन्थ जैन विद्या संस्थान, नसियां भट्टारकजी, जयपुर मे दे दिये गये है जहां सुरक्षित है।

16. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, मोहनपुरा

जयपुर - आगरा राष्ट्रीय मार्ग पर बस्सी से 3 किलोमीटर आगे मोहनपुरा ग्राम है। यहां एक दिगम्बर जैन मंदिर है। जयपुर से सड़क मार्ग से 27 किलोमीटर दूर है। इस मंदिर का निर्माण सम्वत् 1783 के आसपास का बताया जाता है।

मंदिर में 3 वेदियां हैं जिनमे मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है जो सम्वत् 1852 की प्रतिष्ठित है। वेदियों में 2 धातु तथा 4 पाषाण की कुल 6 प्रतिमाएं एवं 4 यंत्र हैं। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा क्षेत्रपाल की प्रतिमा भी है।

यहाँ वर्तमान मे केवल एक ही दिगम्बर जैन घर है। यहां का प्रबन्ध बस्सी के बीसपंथी मंदिर की प्रबन्ध समिति के द्वारा किया जाता है जिसके अध्यक्ष श्री प्रेमचन्द जैन अजमेरा बस्सी वाले हैं।

मंदिर अच्छा है प्रवेश द्वार पर सुन्दर गुम्बज है। जिन मंदिर में वेदी तथा ऊपर गुम्बज है। इस मंदिर का जीर्णोद्धार महावीर पद यात्रा संघ द्वारा श्री ताराचन्द वैद ने करवाया था।

अचल सम्पत्ति के रूप मे मोहनपुरा गांव में एक हवेली, तीन चोक की दुमंजिली है जो श्री कपूरचन्द दीवान भौच (जयपुर) के अधीनस्थ बताई गई है।

17. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, लालगढ़

लालगढ़ जयपुर से 54 किलोमीटर दूरी पर पूर्व मे तूगा रोड़ पहाड़ी की तलहटी मे बसा हुआ है। यहां एक दिगम्बर जैन मंदिर पहाड के पास है जिसके आगे चबूतरा है तथा चबूतरे के आगे से नाला बहता है। वर्षा ऋतु में यहां का दृश्य दर्शनीय है। मंदिर लगभग 300 वर्ष प्राचीन बताया जाता है जिसका निर्माण जयपुर वाले किन्हीं दीवान जी ने कराया था, ऐसा कहा जाता है। मंदिर विशाल है। काफी बड़ा चौक है तथा चौक में दोनो ओर तिबारे है। सामने निज मंदिर है तथा मंदिर में एक ही चंवरी (वेदी) है जिसमे 3 पाषाण की प्रतिमाएँ एवं 2 यंत्र विराजमान है। मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है।

यहाँ केवल दो दिगम्बर जैन परिवार ही है। श्री लक्ष्मीनारायण जैन बिलाला इसके प्रमुख प्रबन्धक है।

मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान श्रेयांसनाथ की है। जो सम्वत् 1861 की प्रतिष्ठित है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1548 की है। मंदिर विशाल है तथा इसकी अचल सम्पत्ति के रूप में 5 बीघा 15 बिस्वा पक्की जमीन मय कोठी के है जिसका खसरा नम्बर 332 व 333 है। इसके अतिरिक्त मंदिर के पीछे 5 बीघा कच्ची जमीन और है जिसमे लगभग आधी पर दूसरो का अधिकार है।

मंदिर में दरियाँ, टंकी, चंदवा, सिंहासन चांदी का, वेदी पीतल की आदि सभी सामान उपलब्ध है। मंदिर मे दो बार चोरी हुई है। अब तक बरामद नही हो पाई। मंदिर की आर्थिक स्थिति सामान्य है। मंदिर के पीछे की ओर एक धर्मशाला है जो श्री कंवरलाल बिलाला की स्मृति मे बनवायी गयी है।

यहाँ पहिले जैनों के 20-25 घर थे किन्तु अब केवल दो घर ही है।

तहसील - सांगानेर
[22 गांवों में 34 मन्दिर]

जयपुर जिलान्तर्गत जयपुर उपखण्ड का सांगानेर एक बहुत प्राचीन एवं बड़ा कस्बा है। यह जयपुर से दक्षिण की ओर जयपुर-टोक राजमार्ग तथा जयपुर मालपुरा रोड़ पर 14 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। जयपुर-दिल्ली रेलवे लाईन के सांगानेर (जगतपुरा) स्टेशन से 4 किलोमीटर एवं जयपुर-सवाईमाधोपुर रेलवे लाईन के सांगानेर टाऊन रेलवे स्टेशन से 2 किलोमीटर दूर है। सांगानेर तहसील हैडक्वार्टर है तथा यहाँ पर हवाई अड्डा है। सांगानेर देशी सांगानेरी कागज एवं कपड़े पर सांगानेरी छपाई (सांगानेरी-प्रिन्ट) के लिये भी प्रसिद्ध है। सांगानेर कस्बे (टाऊन) में कुल सात दिगम्बर जैन मंदिर एवं एक नसियाँ है। यहाँ का संघीजी का जैन मंदिर सर्वाधिक प्राचीन एवं वास्तुकला की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है जिसे देखने प्रतिवर्ष काफी संख्या में विदेशी पर्यटक भी आते हैं। इसी मंदिर मे भट्टारक गद्दी चाकसू से स्थानान्तरित हुई तथा सम्वत् 1691 में भट्टारक नरेन्द्रकीर्तिजी हुए और इसके पश्चात् भट्टारक गद्दी आमेर एवं जयपुर स्थानान्तरित हुई।

प्राप्त जानकारी के अनुसार सांगानेर तहसील के 22 गावो मे 34 मदिर हैं, जिनमें 2 नसियाँ हैं। सांगानेर के लिये जयपुर से हर 5 मिनिट मे बस व टैम्पो आदि उपलब्ध है।

<u>*सांगानेर:*</u>

1. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र मन्दिर संघीजी

सांगानेर के इस प्राचीन प्रसिद्ध संघीजी के दिगम्बर जैन मंदिर को 108 आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के सुयोग्य शिष्य परमपूज्य मुनिराज श्री सुधासागर जी महाराज ने महिमा मण्डित कर सन् 1997 मे दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र मंदिर संघीजी घोषित किया है।

इस मंदिर का निर्माण कब और किसने कराया यह तो प्रामाणिक रूप से नहीं कहा जा सकता, किन्तु इतना अवश्य है कि यह संवत् 1000 के आस-पास निर्मित हो गया था जैसा कि मंदिर के दूसरे चौक की बीच की कलापूर्ण वेदी के तोरण द्वार पर अंकित निम्न लेख से ज्ञात होता है:- ''सं. 1011 लिखित पं. तेजा शिष्य आचार्य पूरणचन्द।'' यह लेख आचार्य पूरणचन्द के शिष्य पं. तेजा ने सं. 1011 मे लिखवाया। लेख से लगता है कि मंदिर इससे पूर्व बन गया था।

यह मंदिर अपनी स्थापत्य एवं वास्तुकला के लिये भारत भर मे प्रसिद्ध है। कला के आधार पर पुरातत्त्ववेत्ता एवं ऐतिहासिक विद्वानो की दृष्टि से भी यह 11वीं शताब्दि का होना कहा जाता है।

मंदिर के कलापूर्ण उन्नत-शिखर दूर से ही यात्रियों को आकर्षित करते हैं। कुल 24 शिखर हैं। 8 बड़े तथा 16 छोटे जो देवरियों पर है। शिखरों में पद्मासन प्रतिमाएँ भी हैं। मंदिर का बाह्य-दृश्य भी आकर्षक है। मंदिर के उत्तरी भाग की बाह्य दीवार पर ढोलामारू की आकृतियाँ उत्कीर्ण हैं तथा नीचे क्षेत्रपाल का स्थान है।

मंदिर परिसर का मुख्य द्वार पश्चिमाभिमुखी है जो लाल पाषाण का कलापूर्ण एवं विशाल है एवं अभी निर्माणाधीन है। मंदिर परिसर में यात्रियों के लिये सभी सुविधायुक्त 40 कमरे हैं तथा नि:शुल्क आवास एवं भोजन की व्यवस्था है।

मंदिर का मुख्य प्रवेश द्वार पूर्वाभिमुखी है जिसमे मंदिर परिसर से कुण्डलाकार लाल पाषाण की सीढ़ियों से पहुंचा जाता है। यह द्वार कलापूर्ण है तथा द्वार में गणेश मूर्ति उत्कीर्ण है। यह मंदिर दो चौक का है तथा पहली मंजिल पर स्थित है। पहिले चौक मे दक्षिणी बाजू के तिबारे मे तीन वेदियाँ नयी बनी है जिनमे श्वेत पाषाण की प्रतिमाएँ हैं तथा इसी तिबारे मे नीचे नया तलघर है जिसमें भूगर्भ से प्राप्त 3 विशाल प्रतिमाएँ है। उत्तरी ओर के तिबारे मे चित्र- दीर्घा तथा जैन साहित्य बिक्री केन्द्र है। उत्तरी-पूर्वी कौने मे तलघर है। इसमे प्रतिमाएँ विराजमान है।

दोनो तिबारों की छतो पर 24 जिनालयो का निर्माण कार्य चालू है। तिबारो मे लाल पाषाण के सुन्दर एवं कलापूर्ण तोरण द्वार है एवं छज्जो के नीचे खंभो पर वाद्य बजाती एवं नृत्य करती किन्नर देवियाँ है। दूसरे चौक का प्रवेश द्वार भी कलापूर्ण है। द्वार के बाहर दीवार पर जैन प्रतिमाएँ तथा ढोलामारू की आकृतियाँ उत्कीर्ण हैं।

दूसरे चौक में चारों ओर देवरियाँ हैं जिनमे प्रतिमाएँ विराजमान है तथा बीच मे अत्यन्त कलापूर्ण वेदी हैं जिसमे पाषाण की विशाल प्रतिमाएँ है। वेदी 3 शिखर की है जिसके आगे चबूतरा है तथा चार खंभो की चवरी बनी है। खंभों के बीच में तोरणद्वार है तथा छज्जों के नीचे टोडियो पर नृत्य करती 13 अप्सराएँ हैं। वेदी में पत्थर की कुराई का इतना सुन्दर कार्य अन्यत्र दुर्लभ है। वेदी मे भगवान पार्श्वनाथ की विशाल प्रतिमाएँ सं. 1664 की प्रतिष्ठित है।

देवरियों के बाहर तीन कोणों मे चतुर्मुखी प्रतिमाएँ तथा एक में नंदीश्वर द्वीप प्रतिमा विराजमान की गयी है। इस बीच की वेदी के पीछे की ओर तिबारे में स्वर्ण चित्रित वेदी में 'भगवान आदिनाथ' की गहरे भूरे रंग के पाषाण की

चमत्कारिक मूलनायक प्रतिमा विराजमान है जो 'सांगानेर के बाबा' के नाम से प्रसिद्ध है। इस पर कोई संवतोलेख नहीं है।

इसके अतिरिक्त प्रथम चौक के दक्षिणी ओर वाले तिबारे में पूर्व की लाइन में एक तलघर (भौंहरा) और है जिसमे पाषाण, धातु एवं प्रथ प्रकार की अनेक प्राचीन प्रतिमाएँ एवं यंत्र हैं। इसमें से किसी खास महोत्सव पर या साधु संतों के आने पर उन्हीं के द्वारा कुछ निश्चित अवधि के लिये प्रतिमाएँ बाहर निकाली जाती हैं। इसे ''तलघर चैत्यालय'' के नाम से पुकारा जाता है।

मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा चाकसू के पश्चात् यहाँ भट्टारक गद्दी रही है। संवत् 1691 में यहाँ भट्टारक देवेन्द्रकीर्तिजी के शिष्य नरेन्द्रकीर्तिजी का पदस्थापन हुआ। इसके पश्चात् भट्टारक गद्दी आमेर स्थानान्तरित हो गई और उनके शिष्य भट्टारक सुरेन्द्रकीर्तिजी का पट्टाभिषेक संवत् 1722 मे आमेर में हुआ। भट्टारक नरेन्द्रकीर्तिजी की चरण पादुका इनके प्रशिष्य भ. जगत्कीर्तिजी ने आमेर में कीर्ति-स्तंभ की नसियाँ में विराजमान की।

मंदिर मे सबसे प्राचीन प्रतिमा संवत् 1185 एवं 1202 की हैं। यह मंदिर प्राचीन एवं कलात्मक होने से पर्यटको के लिये भी आकर्षण का केन्द्र है।

सांगानेर साहित्यिक गतिविधियों का भी केन्द्र रहा है। हरिवंश पुराण के भाषा रचनाकार खुशालचंद काला एवं सम्यक्त्व कौमुदी के कथाकार जोधराज गोदीका यहीं के निवासी थे। जोधराज के पुत्र अमरा भौंसा ने यहीं सामाजिक क्रांति का बिगुल बजाया था तथा तेरहपंथ की नींव डाली थी।

यहाँ प्रतिवर्ष आश्विन मास मे मेला भरता है, रात्रि में जागरण एवं दिन मे पूजा तथा अभिषेक होता है। साधु-संतों का निरन्तर आवागमन तथा महोत्सव आदि होते रहते हैं।

पूर्व में यहाँ की व्यवस्था जयपुर के पंचायती मंदिर चाकसू तथा बाद मे दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी की प्रबन्धकारिणी कमेटी द्वारा की जाती थी। अब वर्तमान मे यहाँ की व्यवस्था स्थानीय दिगम्बर जैन समाज की सुविधानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा की जाती है जिसके अध्यक्ष श्री धनकुमार पांड्या एवं मंत्री श्री निर्मलकुमार कासलीवाल है।

यह दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम के अन्तर्गत (रजिस्टर्ड सं. 326/1971) पंजीकृत है।

2. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर अढ़ाई पैडी का

सांगानेर का यह मन्दिर त्रिपोलिया के पास है। इसे कब और किसने बनाया यह तो नही कहा जा सकता किन्तु किंवदन्ती ऐसी है कि किसी महिला से अधिक पैडीवाले मन्दिर मे ऊपर नहीं चढ़ा गया तो उसे यह ताना मारा गया

कि नहीं चढ़ा जाता है तो कम सीढ़ियों वाला मन्दिर बनवा लो, इसी तीख पर यह अढ़ाई पैडी का मन्दिर बनवाया गया।

यहाँ मूलनायक प्रतिमा भगवान नेमिनाथ की है। तलघर में विराजमान प्रतिमाओं के अतिरिक्त अनेक प्राचीन प्रतिमाएँ भी दर्शनीय हैं। यहाँ एक प्रतिमा 12वीं शताब्दी की भी है। यहाँ साधारण पत्थर में ही कुराई का अच्छा कार्य है।

यह शिखर-बंध मन्दिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा यहाँ क्षेत्रपाल की प्रतिमा है। एक ओर दीवार में हाथी की आकृत्ति भी है। यह दो चौक का विशाल मन्दिर स्थापत्य कला का उत्कृष्ट नमूना है।

यहाँ की व्यवस्था प्रबन्ध समिति दिगम्बर जैन मन्दिर गोधान चौक नागोरियान, जयपुर द्वारा की जाती है।

3. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बधीचन्दजी

यह मन्दिर सांगानेर के त्रिपोलिया दरवाजे के पास स्थित है। मन्दिर के चारों ओर अहाता है तथा अहाते का द्वार उत्तर की ओर है। अहाते के बीच में सीढ़ियाँ चढ़कर ऊंचा विशाल मंदिर बना हुआ है। चारों ओर खाली जमीन है तथा कमरे बने हुए हैं। यह मन्दिर बधीचन्दजी के नाम से विख्यात है तथा पंडित टोडरमलजी के पुत्र के नाम पर चलाये गये गुमान पंथ आम्नाय का है। यह मन्दिर कब बना इसका कोई प्रामाणिक उल्लेख नहीं है किन्तु इतना अवश्य कहा जाता है कि इसके निर्माणकर्ता लाला हरसुखरायजी सुगनचन्द जी जैनाग्रवाल दिल्ली निवासी के गुमाश्ता देवालाजी साह थे।

मन्दिर की गुम्बज अति विशाल एवं मनोज्ञ है जिसके नीचे समवसरण में भगवान आदिनाथ की प्रतिमा विराजमान है।

यह मंदिर पूर्वमुखी है। सामने तथां बगलों से सीढ़ियां चढ़कर प्रथम प्रवेश द्वार है, जो छोटा किन्तु कलापूर्ण है। द्वार पर गणेश मूर्ति भी उत्कीर्ण है। यह मंदिर दो चौक का है। प्रथम चौक में दोनों ओर तिबारे हैं जिनमें लाल पाषाण के कलापूर्ण तोरणद्वार हैं एवं छज्जों के नीचे खम्भों पर वाद्य बजाती तथा नृत्य-गान करती किन्नर देवियाँ है।

दूसरे चौक का प्रवेश द्वार भी कलापूर्ण एवं दर्शनीय है। दोनों ओर ढोलामारू के चित्र उत्कीर्ण हैं तथा जैन प्रतिमाएँ हैं। इस द्वार पर भी अन्य कलाकृतियों के साथ गणेश मूर्ति है। दूसरे चौक के बीच में पत्थर की कलापूर्ण भव्य वेदी है जिसमें पाषाण की विशाल पद्मासन प्रतिमाएँ विराजमान हैं। यह तीन शिखरयुक्त वेदी है, जिसके आगे चबूतरा है तथा चार खम्भों की चवरी बनी है। खम्भों के बीच में तोरण द्वार तथा छज्जों के नीचे टोडियों पर नृत्य करती 13 अप्सराएँ हैं। वेदी के शिखर तथा गुम्बज मे खुदाई का काम इतना सुन्दर है कि देखते ही बनता है। इस वेदी में भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा सं.

1664 तथा एक अन्य प्रतिमा संवत् 1224 की प्रतिष्ठित है।

इस चौक में चारो ओर देवरियाँ बनी है जिनमें प्रतिमाएँ विराजमान हैं। दक्षिण की ओर तिबारे की बीच की वेदी में भगवान शांतिनाथ की श्वेत पाषाण की खड्गासन प्रतिमा सं. 1185 की प्रतिष्ठित एवं अन्य दो विशाल पद्मासन प्रतिमाएँ हैं। वैसे ही उत्तर की ओर की वेदी में चन्द्रप्रभ भगवान की खड्गासन एवं पाषाण की नंदीश्वर द्वीप प्रतिमाएँ एवं यंत्र हैं।

इस मंदिर में मूलनायक प्रतिमा हल्के लाल वर्ण की पाषाण की भगवान आदिनाथ की है जो पश्चिमी तिबारे की वेदी मे विराजमान है। यह प्रतिमा प्राचीन है पर संवतोल्लेख नहीं है।

बाहर के चौक में उत्तरी-पूर्वी कौने में एक तलघर है जिसमे पाषाण की 14 विशाल प्रतिमाएँ हैं। इनमे से तीन प्रतिमाएँ भूगर्भ से प्राप्त है।

दूसरा भौंहरा (तलघर) दक्षिण की ओर वाले तिबारे मे पूर्व की लाइन में है जिसे किसी महोत्सव या साधु संतो के आने पर विशेष रूप से खोलकर प्रतिमाएँ दर्शनार्थ कुछ अवधि के लिये बाहर निकाली जाती हैं। इसे ''चैत्यालय'' के नाम से पुकारा जाता है तथा इसमे धातु तथा पाषाण की अनेक छोटी-बड़ी प्रतिमाएँ एवं यंत्र हैं।

मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा चाकसू के पश्चात् यहाँ भट्टारक गद्दी रही है। संवत् 1691 में यहाँ भट्टारक देवेन्द्रकीर्तिजी के शिष्य नरेन्द्रकीर्तिजी का पदस्थापन हुआ। इसके बाद भट्टारक गद्दी आमेर स्थानान्तरित हो गई और उनके शिष्य भ. सुरेन्द्रकीर्तिजी का पट्टाभिषेक संवत् 1722 मे आमेर मे हुआ। भ. नरेन्द्रकीर्ति जी की चरण पादुका इनके शिष्य भ. जगत्कीर्तिजी ने आमेर की कीर्ति-स्तम्भ की नसियाँ में विराजमान की।

इस मंदिर की व्यवस्था बधीचन्दजी के मन्दिर, जयपुर की प्रबन्ध समिति द्वारा की जाती है तथा जयपुर के मन्दिर का सामान डेरे, छोलदारी, कनाते, शामियाने, यही रखे जाते थे। यहाँ रखा जाने वाला बड़ा रथ अब दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र लूणवा को भेट कर दिया गया है।

विशेष:- बाबा दुलीचन्द की हस्तलिखित सूची में इसके निर्माणकर्ता का नाम हरसुखराय सुगनचंद अग्रवाल दिल्ली के खजांची तथा जयपुर वाले दीवान अमरचंद व इन दोनों का ''अग्रवाल खण्डेलवाल पाटनी'' दिया हुआ है।

4. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पाटनियों का

तेरहपंथ की स्थापना के पश्चात् किसी पाटनी परिवार के द्वारा इस मन्दिर का निर्माण कराया गया है। ऐसा कहा जाता है।

सांगानेर का यह मंदिर काफी विशाल है एवं जमीन से ऊपर पहली मंजिल

पर बना हुआ है। इस मन्दिर में एक तलघर है जिसमें प्रतिमाएँ है जिन्हें साधु-सन्तों के आगमन तथा विशेष महोत्सवों पर निकाला जाता है। इसमे छोटी-छोटी प्रतिमाएँ व यंत्र हैं। यह मन्दिर तेरह पंथ आम्नाय का है तथा इसकी व्यवस्था एवं प्रबन्ध दिगम्बर जैन मन्दिर बड़ा तेरहपंथियान, जयपुर की प्रबन्ध समिति के द्वारा किया जाता है।

मन्दिर के पिछवाड़े में एक काफी बड़ा मैदान है जो समयानुसार मेले एवं उत्सवों के उपयोग मे आता रहता है।

5. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर गोदीकों का

यह मन्दिर तीन आकर्षक शिखरो का है तथा जमीन से काफी ऊंची पहली मंजिल में बना हुआ है। प्रवेश द्वार के तीनों ओर तिबारे, बीच मे चौक तथा एक ओर निज मंदिर है। इसमें मूलनायक भगवान चन्द्रप्रभ की श्वेत पाषाण की अति प्राचीन प्रतिमा है संगमरमरी वेदी में कुराई का काम अत्यन्त बारीक व अच्छा है। मूल वेदी के पीछे तथा दोनों ओर की वेदियों में भी प्रतिमाएँ विराजमान हैं।

इस मन्दिर के प्रवेश द्वार पर घुसते ही एक शिलालेख भी लगा है, परन्तु कालान्तर में हुई असावधानी के कारण अब पढ़ने मे नही आता। यह कहा जा सकता है कि सांगानेर मे भट्टारक नरेन्द्रकीर्तिजी के शासन काल में संवत् 1695 में तेरहपंथ की स्थापना हुई। अत: इस मन्दिर का निर्माण संवत् 1700 के आस-पास का ही माना जा सकता है।

मन्दिर तेरहपंथ आम्नाय का है तथा इसका प्रबन्ध जयपुर के दिगम्बर जैन मन्दिर बड़ा तेरहपंथीयान की प्रबनध समिति द्वारा किया जाता है।

6. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर ठोलियों का

यह मंदिर सांगानेर शहर के बीच बाजार मे स्थित है। इस मंदिर के उन्नत तीन शिखर दूर से ही यात्रियो को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। मंदिर मे पुराने दरवाजे की तरफ से ऊंची सीढ़ियाँ चढ़कर मंदिर में प्रवेश करना पड़ता है। प्रथम चौक में दक्षिण की ओर उत्तराभिमुखी तीन द्वार हैं जिनके अन्दर उत्तराभिमुखी वेदी में श्रीजी विराजमान हैं। ठीक इसी प्रकार दूसरे चौक मे भी उत्तराभिमुखी वेदी में श्रीजी विराजमान हैं। दूसरे चौक के उत्तरी-पश्चिमी कौने में एक कमरे में प्राचीन प्रतिमाएँ विराजमान हैं। बाजार की ओर दुकानें हैं। मन्दिर का नया दरवाजा बाजार में खुलता है। मन्दिर के बराबर में बिहारी है जहाँ साधु-सन्तों के ठहरने एवं चौका आदि बनाने के लिए व्यवस्था है। इस बिहारी व मन्दिर के बीच चौक है जिसमें एक वृद्ध-आश्रम बनाने की योजना है।

यह मंदिर कब और किसने बनाया यह तो नही कहा जा सकता किन्तु इतना अवश्य है कि मंदिर प्राचीन है। मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है जो गोधा (ठोलिया) परिवार का बनाया हुआ है और सम्भव है उनमे से कुछ लोग जयपुर जाकर बस गये हों। मंदिर की व्यवस्था प्रबन्ध समिति दिगम्बर जैन मंदिर ठोलियान, घी वालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर द्वारा की जाती है।

7. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर लुहाड़ियों का

यह मंदिर संघीजी एवं ठोलियों के मंदिर के बीच मे स्थित है। बाबा दुलीचंदजी की हस्तलिखित सूची के अनुसार इसके निर्माणकर्ता श्री नेमीचन्द लुहाड़िया थे। यह मंदिर कब बना इसका कोई उल्लेख नही मिलता।

मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा पहिली मंजिल में ही बना हुआ है जहाँ पूर्वाभिमुखी वेदी में भगवान चन्द्रप्रभ की मूलनायक प्रतिमा विराजमान है।

मंदिर का प्रबन्ध एवं देख-रेख जयपुर के चाकसू के चौक के निवासी स्व. श्री गुलाबचंद जी लुहाड़िया के परिवार वाले करते हैं। संभव है नेमीचंद जी लुहाड़िया इनके पूर्वज हों।

8. श्री दिगम्बर जैन नसियाँ संघीजी

सांगानेर टाउन के दक्षिणी की ओर करीब 3 किलोमीटर दूर यह नसियाँ स्थित है। नसियाँ के अहाते मे एक मंदिर है तथा मंदिर के बाहर एक छत्री बनी हुई है। यह नसियाँ किसने और कब बनवाई इसका कोई प्रामाणिक उल्लेख नहीं है। वेदी में तीन प्रतिमाएँ हैं जिनमें मूलनायक भगवान शांतिनाथ की श्वेत पाषाण की संवत् 1746 की प्रतिष्ठित है। एक धातु की चौबीसी सं. 1554 की है। इसके अतिरिक्त एक प्रतिमा भगवान शांतिनाथ की श्वेत पाषाण की सं. 1861 की भी है। एक चरण चौकी तथा एक यंत्र भी है।

नसियाँ में बगीचा है व कृषि भूमि है तथा कुए मे बिजली लगी हुई है। मंदिर के पीछे की ओर एक नहर भी है।

इस नसियाँ का प्रबन्ध भी पहिले श्री महावीरजी क्षेत्र की प्रबन्धकारिणी कमेटी द्वारा ही किया जाता था किन्तु अब स्थानीय दिगम्बर जैन समाज के द्वारा ही किया जाता है। यह नसियाँ मंदिर संघीजी के अधीनस्थ है।

नसियाँ के बराबर ही 108 मुनि सुधासागरजी की प्रेरणा से ''अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान'' के अन्तर्गत् दिगम्बर जैन छात्रावास भवन बनकर तैयार हो गया है तथा चालू है। छात्रावास के पास ही दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय भवन बनाने की योजना स्वीकृत हो चुकी है।

9. श्री महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर,
चित्रकूट कॉलोनी (सांगानेर)

यह नई कालोनी बनी है जो सांगानेर एयरपोर्ट सर्किल, जयपुर-302011 पर है। यहाँ एक नया दिगम्बर जैन मंदिर सन् 1988-89 मे ही स्थापित हुआ है जिसका निर्माण दिगम्बर जैन समाज चित्रकूट कालोनी ने करवाया है। यहॉ मूलनायक प्रतिमा भगवान महावीर स्वामी की है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमे धातु की 3 प्रतिमा पद्मासन एवं 2 यंत्र है। कालोनी मे 70 दिगम्बर जैन परिवार रहते हैं। मंदिर का क्षेत्रफल 470 वर्ग गज है तथा यहाँ का प्रबन्ध चुनी हुई कमेटी द्वारा होता। जिसके पहिले अध्यक्ष डॉ. प्रभाकर सेठी 1994 में थे वर्तमान मे श्री कैलाश चन्द जैन अध्यक्ष एवं श्री भविष्यकुमार गोधा मंत्री मनोनीत है।

यहाँ 108 मुनि सुधासागर जी के सानिध्य में एक वेदी की प्रतिष्ठा और हुई थी। मंदिर सुन्दर है तथा यह तेरहपंथी आम्नाय का है। यहाँ पूजन एवं स्वाध्याय हेतु लगभग 200 पुस्तके उपलब्ध है।

यहाँ दिन मे तीन बार शास्त्र प्रवचन होता है। प्रति वर्ष महावीर जयन्ती को वार्षिक मेले के रूप मे मनाते है। मंदिर मे पूजन व हवन सम्बन्धी बर्तन तथा अन्य आयोजन हेतु सभी सामान मौजूद है। इस मन्दिर की स्थापना एवं विकास में श्री चांदमल जैन बज का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

10. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, केसरीचंद चौधरी नगर

केसरी चन्द चौधरी नगर (कमला नेहरू नगर) अजमेर रोड पर जयपुर से 12 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण दिगम्बर जैन समाज केसरी चन्द चौधरी नगर (कमला नेहरू नगर) ने आठ वर्ष पूर्व (सन् 1988) मे कराया था। इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो पद्मासन मुद्रा मे श्याम पाषाण की वीर निर्माण संवत् 2516 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे तीन वेदियाँ है जिनमे 2 धातु की तथा 3 पाषाण की कुल 6 प्रतिमाएँ एवं 5 यंत्र है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

यहाँ 18 दिगम्बर जैन परिवार है जिनकी सदस्य संख्या 100 है।

मंदिर की व्यवस्था चुनी हुई कमेटी द्वारा की जाती है जिसके अध्यक्ष श्री कपूरचन्द छाबड़ा एवं मंत्री श्री टीकमचन्द जैन है।

मंदिर में दिसम्बर, 95 के आसपास चोरी हुई थी जिसमें 6 प्रतिमाएँ एवं दानपात्र को चोर ले गये। पुलिस मे रिपोर्ट की पर कुछ नहीं हुआ।

11. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कलवाडा

कलवाड़ा ग्राम में एक दिगम्बर जैन मंदिर है। कहते हैं इसका निर्माण यहाँ

की दिगम्बर जैन समाज ने ही लगभग 250 वर्ष पूर्व कराया था। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा किन तीर्थंकर की है और कब की प्रतिष्ठित है, लेख नही। मंदिर मे 2 वेदियाँ हैं जिनमें 7 धातु की तथा 8 पाषाण की कुल 15 प्रतिमाएँ एवं 2 यंत्र विराजमान हैं। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा क्षेत्रपाल की मूर्ति विराजमान है। यहाँ 3 जैन घर हैं। स्थानीय लोग ही इसकी व्यवस्था करते हैं।

यहाँ मंदिर में सन् 1983-84 मे चोरी हो गई थी जिसमे प्रतिमाएँ एवं यंत्र चोरी चले गये थे जिसकी पुलिस में रिपोर्ट कर दी गई थी किन्तु कोई नतीजा नहीं निकला।

मन्दिर के जीर्णोद्धार की आवश्यकता है। आर्थिक स्थिति कमजोर होने से आर्थिक सहायता की अपेक्षा है।

मन्दिर के प्रबन्धकर्ता श्री माणकचन्द जैन कलवाडा वाले है, जो 46 तख्तेशाही रोड़ देवी पथ, जयपुर रहते है।

सम्पर्क सूत्र- श्री पदम चन्द जैन, मकान नं. 956, शर्मा रेस्टोरेन्ट के पास, बगरूवालो का रास्ता, जयपुर

12. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर शांतिनाथजी ट्रस्ट

(खोह नागोरियान)

जयपुर-आगरा रोड पर खानियाँ से आगे ही दक्षिण में 4 कि.मी. जयपुर-गोनेर रोड पर खोह नागोरियान पहाड़ की कदराओ मे प्राचीन ऐतिहासिक स्थान है जहाँ नरवर (ग्वालियर) से आकर कछवाहा वंश के राजपूतो ने ग्यारहवी शताब्दी मे ढूँढार प्रान्त मे राज्य जमाया। सर्वप्रथम यहाँ राजधानी स्थापित हुई तथा उसके पश्चात् दौसा, रामगढ़, आमेर तथा जयपुर स्थानान्तरित हुई। अत· खोह लगभग एक हजार वर्ष पुराना गांव है।

यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो मंदिर शांतिनाथ जी की खोह के नाम से प्रसिद्ध है। कहते हैं यह मंदिर भी खोह के बसने के समय का ही है किन्तु कोई प्रमाण उपलब्ध नही है। महावीर जयन्ती स्मारिका 1972 मे प्रकाशित ''जयपुर के जैन दीवान'' शीर्षक लेख मे स्व0 पं0 भंवर-लाल जी न्यायातीर्थ के अनुसार इस मंदिर का निर्माण, सुखराम के पुत्र दीवान भगतराम बगड़ा ने जो सम्वत् 1842 से 1885 तक दीवान रहे, कराया था। मंदिर के अतिरिक्त उन्होंने एक बावड़ी भी सम्वत् 1864 मे बनवायी थी जिसका शिलापट्ट आज भी बावड़ी पर मौजूद है:-

''सम्वत् 1864 साके 1729 मिती बैशाख सुदी 3 रविवासरे अमल महाराजाधिराज सवाई जगतसिंहजी बावड़ी भगतराम भाँवसा (बगड़ा) वासी खोह का हालवासी सवाई जयपुर का कराई। सुभं भवत्''

सम्भव है दीवान भगतराम के समय में मंदिर का जीर्णोद्धार हुआ हो।

मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान शांतिनाथ की श्वेत पाषाण की सम्वत् 1826 की प्रतिष्ठित है जो चमत्कारिक है। मंदिर मे 3 वेदियाँ है जिनमे 4 पाषाण की प्रतिमाएँ एवं 2 यंत्र है। मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है।

मंदिर में चारों ओर अहाता है। मंदिर की जमीन का लगभग 7000 वर्ग गज का क्षेत्रफल है। यहाँ वर्तमान मे एक भी जैन घर नही है। पूजा प्रक्षाल की व्यवस्था ट्रस्ट की ओर से की जाती है।

चूलगिरि क्षेत्र के नजदीक होने के कारण यहाँ साधु-संत भी आते रहते है। यहाँ आचार्य वीरसागरजी, देशभूषणजी, विद्यानन्दजी, विमलसागरजी, कल्याणसागरजी, आनन्दसागरजी आदि ससंघ आ चुके है। पद्मपुरा क्षेत्र पर जाने वाले पैदल यात्री संघ खोह होकर जाते है।

यहाँ लगभग 15 वर्ष पूर्व चोरी हो गई थी जिसकी पुलिस मे रिपोर्ट की गई थी किन्तु कोई नतीजा नही निकला।

मंदिर स्वच्छ एवं सुन्दर है। क्षेत्र नल, बिजली, गटर आदि आधुनिक सुविधाओ से युक्त है। बरसात के दिनो में तो यह एक पिकनिक स्थल बन जाता है। चूलगिरि से आगे पुराने आगरा रोड़ पर 4 कि.मी. दूर मोड से दक्षिण की ओर खोह जाने की पक्की सड़क है जो आगे जाकर जगतपुरा पर मिल जाती है।

यहाँ प्रतिवर्ष पोष अथवा माघ के शुक्ल पक्ष मे वार्षिक मेला होता है जिसमे रात्रि-जागरण तथा दूसरे दिन कलशाभिषक होते है।

श्री भौंरीलाल जी के पितामह श्री भूरामलजी चौधरी करीब एक सौ पचास वर्ष पूर्व यात्रा करते हुए ग्राम खोह नागौरियान मे आये और यहाँ स्थित दिगम्बर जैन मंदिर की जीर्ण-शीर्ण अवस्था देखकर द्रवित हो गये। भगवान शांतिनाथ के दर्शन कर वे कृतकृत्य हुए और मंदिर की सार-संभाल का बीड़ा उठाया। मंदिर का जीर्णोद्धार कराया और पूजा-प्रक्षाल की व्यवस्था की। श्री भूरामलजी की मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र स्व. श्री छगनलालजी चौधरी तथा उनके पश्चात् उनके पुत्र श्री भौरीलालजी चौधरी ने भवन आदि बनवाकर नवनिर्माण मे काफी सहयोग प्रदान किया। उक्त मंदिर की व्यवस्था एवं विकास कार्य तब से चौधरी परिवार द्वारा ही होते रहे और हो रहे हैं। श्री भौंरीलालजी चौधरी ने भगवान श्री शांतिनाथ के मंदिर की व्यवस्था भविष्य में सुचारू रूप से चलाने एवं उद्देश्यो की पूर्ति हेतु दिनांक 10 दिसम्बर, 1979 को एक ट्रस्ट की स्थापना की ओर नियमानुसार पंजीकरण कराया।

मन्दिर का प्रबन्ध श्री दिगम्बर जैन मन्दिर शान्तिनाथ खोह ट्रस्ट द्वारा होता

है जिसकी स्थापना स्व. श्री भौंरीलाल चोधरी पाटनी की धर्मपत्नी श्रीमती उमराव देवी चौधरी की स्मृति में हुई थी। समय-समय पर ट्रस्ट द्वारा मन्दिर का जीर्णोद्धार होता रहता है।

ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री कैलाशचन्द चौधरी पुत्र स्व. श्री भंवरलाल जी चौधरी पाटनी हैं।

13. श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, गोनेर

गोनेर एक प्रसिद्ध गांव है जो जयपुर-टोंक राष्ट्रीय राजमार्ग पर सांगानेर से 10-12 किलोमीटर दूर है एवं चूलगिरि व पदमपुरा के मध्य है। गोनेर जगदीश मंदिर के लिए प्रसिद्ध है जहाँ काफी दर्शनार्थी पहुँचते हैं। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है जो संवत् 1891 की प्रतिष्ठित है। मंदिर का निर्माण किसी कासलीवाल गोत्रीय परिवार ने सम्वत् 1546 के पूर्व ही कराया था। सीढ़ियां चढ़कर दूसरी मंजिल पर शिखरबन्ध मंदिर है। सांगानेर के जैन मंदिरों की तरह विशाल शिखर है जो दूर से ही दर्शनार्थियो को आकर्षित करता है। प्रथम प्रवेश द्वार से चौक में तथा दूसरे प्रवेश द्वार से निज मंदिर में पहुँचा जाता है जहाँ कुल 3 वेदियों में 8 धातु तथा 13 पाषाण की कुल 21 प्रतिमाएँ एवं 22 यंत्र विराजमान हैं। कुछ प्राचीन प्रतिमाएँ सं. 1548 की तथा मारोठ एवं सवाईमाधोपुर की प्रतिष्ठित भी है। पहिले मंदिर की प्रवेश द्वार की चोखट दणाऊ के पत्थर की कलात्मक थी किन्तु सन् 1965 मे मंदिर का जीर्णोद्धार हुआ जिसमें चारों ओर संगमरमर के पत्थर लगाये गये है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा निज मंदिर के प्रवेश से पहले पद्मावतीजी सं. 1826 की तथा एक चक्रेश्वरी देवी की प्रतिमा भी है।

यहाँ वर्तमान में 6 दिगम्बर जैन परिवार हैं जिनमें 4 सेठी, 1 पाटनी तथा 1 छाबड़ा हैं। छाबड़ा परिवार जयपुर आ गया जिसके मुखिया पं0 गुलाबचन्द जी जैनदर्शनाचार्य हैं।

मंदिर का प्रबन्ध समाज द्वारा किया जाता है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री कैलाशचन्द सेठी हैं।

जयपुर से पदमपुरा तथा श्री महावीरजी जाने वाले पैदल यात्री संघ यहाँ रात्रि विश्राम करते हैं जिससे यहाँ का काफी महत्व है। पदमपुरा यहाँ से 6 किलोमीटर दूर है। मंदिर जुडी हुई धर्मशाला है। अचल सम्पत्ति के रूप में एक धर्मशाला है तथा गोनेर के गढ़ के पीछे की ओर 3 बीघा 17 बिस्वा जमीन है।

मंदिर में दो-तीन बार चोरी हुई किन्तु पुलिस मे रिपोर्ट करने पर भी कोई कार्यवाही नहीं हुई। बाद की चोरी में दो प्रतिमाओं में एक अष्ट धातु की चौबीसी प्रतिमा व एक पार्श्वनाथजी चोरी चली गई।

मंदिर मे हस्तलिखित ग्रन्थ काफी संख्या मे थे जिन्हे जयपुर के लूणकरण जी पाण्ड्या के मंदिर में भेजे गये बताये है। ग्रन्थो की कोई सूची बनाई हुई नहीं है।

मंदिर की आर्थिक स्थिति कमजोर है और धर्मशाला तथा मंदिर के लिये जीर्णोंद्धार हेतु अर्थ सहयोग अपेक्षित है।

14. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, जगतपुरा

जगतपुरा सांगानेर हवाई अड्डे से 2 किलोमीटर दूर जयपुर-दिल्ली रेलमार्ग पर सांगानेर टाउन के रेलवे स्टेशन पर बसा हुआ है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है। इसका निर्माण जयपुर-दिल्ली तथा जयपुर-सवाईमाधोपुर वाया पुराना सांगानेर टाउन स्टेशन, रेलवे लाईन प्रारम्भ होने पर हुआ बताया जाता है। सांगानेर तथा आस-पास के व्यापारी जिनमे कितने ही जैन थे सांगानेर स्टेशन पर बाहर से आया हुआ अपना माल लेने जाते थे तो कभी रात व दिन को ठहरना पड़ता था। अत: जैनो ने अपनी सस्कृति कायम रखने हेतु वहाँ एक मंदिर बनाया जो सम्भवत: सांगानेर के दिगम्बर जैन मंदिर बधीचन्दजी दीवान की देख-रेख मे बना था। वर्तमान मे इस मंदिर तथा सांगानेर के दिगम्बर जैन मंदिर दीवान बधीचन्दजी की व्यवस्था प्रबन्धकारिणी कमेटी दिगम्बर जैन मंदिर बधीचन्दजी दीवान घी वालो का रास्ता, जयपुर द्वारा की जाती है तथा पूजा- प्रक्षाल की व्यवस्था. बापूनगर जयपुर के दिगम्बर जैन युवा संघ द्वारा की जाती है।

मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान शांतिनाथ की सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमे 2 धातु तथा 1 पाषाण की कुल 3 प्रतिमाएँ एवं 2 यंत्र हैं। प्राचीन प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की सम्वत् 1502 की है। यह शुद्ध तेरहपंथी (गुमानपंथ) आम्नाय का मंदिर है। यहाँ एक जैन घर है।

15. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, दहमी कलां

दहमी कलां अजमेर रोड़ पर जयपुर से 28 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसमें भगवान आदिनाथ की पाषाण की पद्मासन मूलनायक प्रतिमा है। मंदिर का निर्माण कब और किसने कराया कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। मंदिर में एक वेदी है जिसमें पाषाण की एक ही प्रतिमा विराजमान है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

वर्तमान में यहाँ कोई जैन परिवार नही है। मंदिर की देख-रेख व पूजा-प्रक्षाल का कोई प्रबन्ध नहीं है।

16. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पद्मप्रभजी, नेवटा

नेवटा ग्राम काफी पुराना है जो सांगानेर से मुहाणा जाने वाली सड़क पर आगे जयपुर से 30 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो ''दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पद्मप्रभ नेवटा'' के नाम से जाना जाता है मंदिर का निर्माण कब और किसने कराया इसका कोई उल्लेख नही मिलता किन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि मंदिर प्राचीन है। कहते हैं कि जयपुर मे सभी खिन्दूका, पाटनी, मुखरफ परिवार नेवटा से आकर बसे है। वर्तमान मे यहाँ एक भी जैन परिवार नही है। श्री बिरधीचन्द कटारिया पूजा-प्रक्षाल करते हैं।

मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान पद्मप्रभ की है जो सम्वत् 1861 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे तलघर सहित 3 वेदियाँ है जिनमे 3 धातु तथा 8 पाषाण की कुल 11 प्रतिमाऐं एवं 2 यंत्र है। धातु की पंचमेरू भी है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1632 की है जो 17.2.1979 को भूगर्भ से प्राप्त हुई थी। मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है। यहाँ प्राचीन भित्ति चित्र भी है।

मंदिर परिसर मे एक कुआ भी है किन्तु उसमे पानी नही है। हैण्डपम्प लगा हुआ है। मंदिर मे एक तलघर भी है जिसमे एक प्रतिमा विराजमान है। अचल सम्पत्ति के रूप मे मदिर के आगे व पीछे जमीन है। बाजार मे 2 दुकान है तथा पूजा-प्रक्षाल की व्यवस्था हेतु 351/- रुपया के आजीवन सदस्य बनाने की योजना चालू है।

उक्त मंदिर की व्यवस्था दिगम्बर जैन मंदिर खिन्दूकान, जयपुर की प्रबन्धकारिणी कमेटी ही करती है। आश्विन मास मे वार्षिक उत्सव का आयोजन होता है। अजमेर रोड़ से महापुरा-खटवाड़ा होते हुए पक्की सड़क से भी यहाँ पहुँचा जा सकता है।

17. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, पंवालिया

पंवालिया जयपुर-मालपुरा रोड़ पर मांजी की रेनवाल के पास है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण श्री म्होरीलाल जी, केशरलाल जी व श्री फूलचन्द जी जैन ने सम्वत् 1958 मे कराया था। मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान नेमिनाथ की है जो सम्वत् 1787 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे एक ही वेदी है जिसमे पाषाण की एक प्रतिमा तथा एक यंत्र विराजमान है। मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा इसका प्रबन्ध यहाँ के जैन परिवार द्वारा किया जाता है। गांव मे केवल एक ही दिगम्बर जैन परिवार है। मंदिर मे स्वाध्याय के लिये 1 हस्तलिखित ग्रन्थ तथा 10 छापे के ग्रन्थ हैं।

मंदिर के प्रबन्धकर्ता वर्तमान मे श्री फूलचन्द जैन (पो पंवालिया, वाया रेनवाल मांजी की, जिला जयपुर-303904) हैं।

बगरू :

बगरू एक प्राचीन एवं सभी आधुनिक सुख सुविधा सम्पन्न ग्राम है। जो अजमेर रोड़ पर जयपुर से 30 किलोमीटर दूर दक्षिण की ओर 2 किलोमीटर अन्दर स्थित है। अजमेर जाने वाली कुछ गाड़ियाँ बगरू होकर भी जाती है। सांगानेर के समान ही बगरू भी अपनी कपड़े पर छपाई की कला के लिये प्रसिद्ध है।

18. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, बगरू

यहाँ एक मंदिर तथा एक नसियाँ है। मंदिर का निर्माण बगरू जैन समाज ने ही लगभग 300 वर्ष पूर्व कराया बताया। मंदिर मे तलघर सहित 7 वेदियाँ है जिनमें 19 धातु तथा 29 पाषाण की कुल 48 प्रतिमाएँ तथा 12 यंत्र विराजमान है। मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है जो सम्वत् 1664 की प्रतिष्ठित है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1548 की है। धातु की 16 प्रतिमाओ मे एक पदमावती देवी तथा 3 सिद्ध भगवान की है। मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा क्षेत्रपाल विराजमान है।

यहाँ 18 दिगम्बर जैन घर हैं तथा मंदिर की व्यवस्था समाज की चुनी हुई एक कमेटी द्वारा की जाती है जिसके अध्यक्ष श्री महेन्द्रकुमार पाण्ड्या चौधरी एवं मंत्री श्री नाथूलाल पाटनी है।

अचल सम्पत्ति के रूप मे 9 दुकाने बाजार मे तथा 2 हवेलियाँ हैं। इसके अतिरिक्त एक धर्मशाला (महावीर भवन) है जिसमे 8 कमरे तथा 2 हाल हैं। जैन भवन में एक भोजनशाला भी है जिसमे 3 कमरे है। जैन भवन मे पानी की समस्या के निराकरण हेतु बोरिंग भी लगा हुआ है।

मंदिर में सभी आवश्यक सामान उपलब्ध है तथा समाज का पूर्ण सहयोग है। मंदिर मे लगभग 25 हस्तलिखित ग्रन्थ तथा एक सौ मुद्रित ग्रन्थ हैं। सबसे प्राचीन ग्रन्थ सम्वत् 1823 का पदमपुराण है। सूची बनी हुई है।

मंदिर कलापूर्ण एवं भव्य है तथा अनेक भित्ति चित्र है। चौक दुछत्ता बना हुआ है तथा एक तलघर है। गर्भगृह के तीन प्रवेश द्वार अत्यन्त कलापूर्ण हैं। मंदिर की आर्थिक स्थिति संतोषजनक हैं।

19. श्री दिगम्बर जैन नसियाँ, बगरू

इस जैन नसियाँ का निर्माण लगभग 300 वर्ष पूर्व बगरू दि. जैन समाज ने ही कराया बताया। नसियाँ परिसर में एक मंदिर है जिसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान नेमिनाथ की सम्वत् 1648 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में एक वेदी है जिसमें

1 धातु तथा 4 पाषाण की कुल 5 प्रतिमाएँ एवं 1 यंत्र है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। नसियाँ परिसर मे ही भट्टारको की चार चरण चिन्ह छत्रियाँ बनी हुई है इससे ज्ञात होता है कि बगरू मे भट्टारको एवं पांड्याओं (पंडितों) का काफी प्रभाव रहा है। पण्डित निहाल जी, दयाचन्द जी, डूँगरसीदास जी, श्योजीराम जी आदि बगरू में ही थे।

नसियाँ की अचल सम्पत्ति के रूप में साढ़े पाँच बीघा कृषि भूमि है जिसमें कुआ भी है। कुए में पानी नहीं है। नसियों की कृषि भूमि श्री कन्हैयालाल काला के नाम पर है जो नसियाँ के मंत्री हैं।

आसोज बुदी एकम को प्रतिवर्ष उत्सव मनाया जाता है जिसमें सम्पूर्ण बगरू जैन समाज उपस्थित होता है।

20. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, भांकरोटा

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र भांकरोटा का मंदिर अति प्राचीन मंदिरो में से एक है। यह मंदिर जयपुर से 14 किलोमीटर दूर पश्चिम की ओर अजमेर रोड़ पर स्थित है। मंदिर तक पहुंचने के लिए हर पांच मिनट के अन्तराल पर जयपुर से मिनी बसे, टैम्पो एवं राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की बसे उपलब्ध हैं।

मंदिर का निर्माण जयपुर शहर की स्थापना से पूर्व पाटनी परिवार के श्री शंकरलाल जी, श्री केसरलाल जी, श्री मीठालाल जी के पूर्वजों ने कराया था। करीब तीन सौ वर्ष पुराने मंदिर की दीवारो पर आज भी रंगीन चित्रों एवं कलात्मक कारीगरी का बेजोड नमूना देखा जा सकता है।

मंदिर मे दो वेदियाँ है जिनमें 17 प्रतिमाये विराजमान हैं। इसमे से भगवान पार्श्वनाथ की 8, चन्द्रप्रभु की 3, आदिनाथ, महावीर, नेमीनाथ, जिनबिम्ब, चौबीसी तथा सिद्ध प्रभु की एक-एक प्रतिमाये स्थापति हैं। मुख्य वेदी मे भगवान पार्श्वनाथ की मूल नायक प्रतिमा विराजमान है। कृष्ण पाषाण वाली सर्प चिन्ह की सवा फुट ऊंचाई की यह प्रतिमा आकर्षक एवं चमत्कारी होने के साथ लगभग 500 वर्ष पुरानी है। चन्द्र चिन्ह वाली श्वेत पाषाण की चन्द्रप्रभु जी की प्रतिमा सम्वत् 1482 की प्रतिष्ठित है। इसके पृष्ठ भाग में आलेख अंकित है। मुख्य वेदी में श्वेत पाषाण वाली भगवान पार्श्वनाथ व नेमिनाथ की प्रतिमाएँ है तथा पर अन्य प्रतिमाएँ पीतल की हैं। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। यहाँ चार जैन परिवार है।

जैन समाज के सहयोग से मंदिर का जीर्णोद्धार एवं परिसर में विकास कार्य निरन्तर चालू है। मंदिर परिसर मे मुनि संघों के सुविधा पूर्वक विश्राम की व्यवस्था है। मंदिर का धार्मिक मेला प्रतिवर्ष आश्विन मास में आयोजित होता

है। इस मेले में दूर-दूर से जैन धर्मावलम्बी हजारों की संख्या में भाग लेने आते हैं और मंदिर की शोभा बढ़ाते हैं।

मंदिर का प्रबन्ध निर्वाचित प्रबन्ध कार्यकारिणी समिति द्वारा किया जाता है। वर्तमान में कार्यकारणी के मंत्री श्री सुरेन्द्र काला, ई-55, चितरंजन मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर हैं।

मानसरोवर:

सांगानेर तहसील की मानसरोवर एक ऐसी बस्ती है जो एशिया की सबसे बड़ी नयी बस्ती की गणना मे आती है। यह जयपुर का एक उपनगर है जो सांगानेर से 3 किलोमीटर एवं जयपुर से 12 किलोमीटर की दूरी पर सभी आधुनिक सुविधाओं से युक्त है। यहाँ 4 दिगम्बर जैन मंदिर है। यहाँ करीबन 250 दिगम्बर जैन परिवार हैं।

21. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, वरुणपथ

इस मंदिर का निर्माण दिगम्बर जैन समाज समिति मानसरोवर ने 2 चरणो में कराया है। यह मंदिर दिनांक 25.7.88 से दिनांक 14.2.92 तक किरण पथ 38/84 में स्थापित रहा फिर वहाँ से दिनांक 15.2.92 को वरूण पथ पर स्थानान्तरित कर दिया गया। किरण पथ पर मन्दिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की रही जो सम्वत् 1852 की प्रतिष्ठित थी तथा इसके पश्चात् वरूण पथ पर मन्दिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान महावीर की है जो वी.नि.सम्वत् 2047 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में एक वेदी है जिसमें 5 धातु की प्रतिमाएँ एवं 3 यंत्र विराजमान हैं।

मंदिर का प्रबन्ध चुनी हुई कमेटी द्वारा किया जाता है जिसके अध्यक्ष श्री राजमल गोधा हैं।

मंदिर का क्षेत्रफल एक हजार वर्ग गज है। इसकी अभी तक कोई अचल सम्पत्ति नहीं है। मंदिर में दिनांक 13.4.1993 को चोरी हुई जिसमे 3 प्रतिमाएँ चोरी गई। पुलिस में रिपोर्ट की गई, किन्तु अभी तक कोई बरामदगी नहीं।

मंदिर विकास की अवस्था में है। प्रतिवर्ष 16 फरवरी (स्थापना दिवस) को वार्षिक उत्सव मनाया जाता है। मंदिर की आर्थिक स्थिति संतोषजनक नहीं है अत: निर्माण हेतु समाज के सहयोग की आवश्यकता है।

यहाँ के मंत्री श्री संतोषचंद बाकलीवाल 31/70 वरूणपथ, मानसरोवर हैं। (फोन नं. 391023)

22. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, हीरापथ

इस मंदिर का निर्माण भी सन् 1991-92 मे ही हुआ है। यह मंदिर प्लाट में स्थित है। इसका निर्माण दिगम्बर जैन मंदिर समिति (ट्रस्ट) मानसरोवर द्वारा कराया गया है। इसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो श्वेत पाषाण की पद्मासन सम्वत् 1572 की प्रतिष्ठित है तथा सांगानेर के दिगम्बर जैन मंदिर संघीजी से लायी हुई है। दिनांक 1.4.1996 (महावीर जयन्ती) को एक धातु की प्रतिमा जैतपुरा ग्राम से और लायी गयी है।

मंदिर मे एक वेदी है जिसमे 3 धातु तथा 1 पाषाण की कुल 4 प्रतिमाएँ एवं दो यंत्र है। एक प्रतिमा धातु की भगवान महावीर स्वामी की जो सम्वत् 1861 की प्रतिष्ठित है जयपुर के दिगम्बर जैन मंदिर छाबड़ान, महावीर पार्क रोड़ से लायी हुई है। एक प्रतिमा चांदी की महावीर स्वामी की वर्ष 1996 मे बापूलाल जी आंधीका ने विराजमान की हैं। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

मंदिर का क्षेत्रफल 90 वर्ग मीटर का है। कोई अचल सम्पत्ति नही है। मंदिर एक मकान मे ही है। बड़ा मंदिर बनाने की योजना न्यास के विचाराधीन है। प्रतिवर्ष 27 जनवरी (स्थापना दिवस) को वार्षिक उत्सव मनाया जाता है।

मंदिर का पूरा पता- 63/171, हीरा पथ, मानसरोवर कोलोनी, जयपुर है तथा इसकी व्यवस्था चुनी हुई कमेटी द्वारा की जाती है जिसके कोषाध्यक्ष श्री हरिश्चन्द्र छाबड़ा टांकरड़ा वाले है।

23. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर अग्रवाल फार्म

[सैक्टर-11, मानसरोवर, जयपुर-30202]

यह मंदिर मानसरोवर कॉलोनी मे आकाश द्वीप स्कूल के पीछे स्थित है। इस मंदिर का निर्माण अक्टूबर,1995 में श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर समिति मानसरोवर ने कराया था। इसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की पद्मासन मुद्रा मे विराजमान है जो ज्येष्ठ शुक्ला 12 सोमवार की वी.नि. संवत् 2520 की प्रतिष्ठित है।

मंदिर में वर्तमान में केवल एक वेदी हैं जो निर्माणाधीन हैं। यहाँ केवल दो प्रतिमाएँ एवं दो यंत्र हैं जो धातु के है। मन्दिर बीसपंथ आम्नाय का हैं। धरणेन्द्र पद्मावती की प्रतिमाएँ भी है।

मंदिर का प्रबन्ध एक चुनी हुई कमेटी द्वारा किया जाता हैं जो राजस्थान सरकार के रजिस्ट्रार संख्या द्वारा पंजीकृत हैं। (558/जयपुर/91-92) इसके अध्यक्ष श्री मूलचन्द जैन हैं।

मंदिर मे प्रतिदिन लगभग 200 व्यक्ति पूजा-प्रक्षाल करते हैं। 13 अगस्त को स्थापना दिवस पर उत्सव मनाया जाता हैं। मंदिर निर्माणाधीन है।

24. श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, अग्रवाल फार्म

इस मंदिर का निर्माण श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन समिति, सैक्टर-10/103 अग्रवाल फार्म मानसरोवर, जयपुर-20 ने 4 फरवरी सन् 1996 को कराया। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण का पद्मासन मुद्रा में विराजमान हैं। जो माघ शु. 15 सं. 2052 महावीर नगर जयपुर की प्रतिष्ठित हैं। मंदिर में एक वेदी हैं जिसमे 1 पाषाण व 4 धातु की कुल 5 प्रतिमाएँ व 3 यंत्र हैं। मंदिर तेरहपंथ आम्नाय का है।

मंदिर का प्रबन्ध विधानानुसार चुनी हुई कार्यकारिणी द्वारा किया जाता है जिसके अध्यक्ष श्री बाबूलाल सौगाणी हैं। विधान सोसायटी एक्ट के अन्तर्गत पंजीकृत हैं। मंदिर का निर्माण राजस्थान सरकार के आवासन मण्डल से रु.1,29,319 मे जमीन खरीद कर कराया गया है। इसका क्षेत्रफल 500 + 157.5 = 657.5 वर्गमीटर है।

यहाँ वार्षिक उत्सव प्रतिवर्ष 2 फरवरी को स्थापना दिवस के रूप मे आयोजित किया जाता है।

विशेष:- निर्माणाधीन मंदिर मे वेदी शिलान्यास सम्बन्धी शिलालेख भी उपलब्ध है, जो निम्न प्रकार हैं:-

''स्वस्ति श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द आम्नाय मूलसघ सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे दिगम्बर जैन धर्मावलम्बी श्री राजेन्द्रकुमार पाटनी (मुशरफ) सुपुत्र श्री भंवरलाल मुशरफ जयपुर निवासी ने मिती फाल्गुन शुक्ला सप्तमी विक्रम संवत् 2052 रविवार दिनांक 25.2.96 को मानसरोवर कॉलोनी के सैक्टर 10 में स्थित नवनिर्माणाधीन श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर एवं वेदी का शिलान्यास सम्पन्न किया। इस मंदिर मे सदैव दिगम्बर जैन धर्म शुद्ध आम्नाय की प्रवृति रहेगी। प्रबन्धकर्ता, श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन समिति, मानसरोवर, जयपुर

25. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, मुहाना

मुहाना सांगानेर-मालपुरा रोड़ पर 3 किलोमीटर के बाद मुहाना रोड़ पर स्थित है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान शांतिनाथ की सम्वत् 1658 की प्रतिष्ठित है। यह प्रतिमा अष्टधातु की है। मंदिर कब और किसने बनाया कोई विवरण उपलब्ध नहीं है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। इसमें 2 वेदियाँ हैं जिनमें 12 धातु तथा 3 पाषाण की कुल 15 प्रतिमाएँ एवं 2 यंत्र हैं। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है।

मुहाना में पहिले जैन घर थे किन्तु अब एक भी नहीं है। अत: मंदिर

में पूजा प्रक्षाल आदि की कोई व्यवस्था नहीं है। सफाई नहीं होती। मंदिर की मरम्मत की आवश्यकता है। श्री प्रवीण चन्द पाटनी, टोंक रोड़, जयपुर की देख-रेख है।

26. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, रातल्या

सांगानेर तहसील का गांव रातल्या सांगानेर से 10-12 कि.मी. दूर मालपुरा रोड़ पर लाखणा के पास स्थित है। यहाँ पहिले दिगम्बर जैन परिवार एवं मंदिर था। आजीविका के अभाव में जैन घर बाहर चले गये तथा मंदिर भी उठ गया और प्रतिमाएँ अन्यत्र ले गए। केवल मन्दिर भवन ही यहाँ है।

27. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, लाकावास

[पोस्ट अजयराजपुरा, तहसील सांगानेर]

अजमेर रोड़ पर बगरू से 8 किलोमीटर दूर पूर्व की ओर कच्चे में लाकावास गांव है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण लगभग 200 वर्ष पूर्व लाकावास के खण्डेलवाल दिगम्बर जैन बिन्दायक्या गोत्रीय परिवार ने कराया था। मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की पाषाण की पद्मासन विराजमान है। मंदिर मे केवल एक वेदी है जिसमे 3 पाषाण की प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा द्वार पर क्षेत्रपाल की प्रतिमा विराजमान है।

लाकावास मे वर्तमान में कोई जैन परिवार नहीं है। बिन्दायक्या परिवार अब बगरू में रहता है। मंदिर की व्यवस्था श्री केशरलाल मोहनलाल बिन्दायक्या, बगरू ही करते हैं। नियमित पूजा-प्रक्षाल नही हो पाती।

28. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, लाखणा

लाखणा ग्राम सांगानेर फागी रोड पर सांगानेर से लगभग 8 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण लाखणा के दिगम्बर जैन बन्धुओं ने लगभग 100 वर्ष पूर्व कराया बताया। यहाँ दिगम्बर जैन खण्डेलवाल बोहरा गोत्रीय एक ही घर है जो अब जयपुर आ गया है।

मंदिर मे एक वेदी है जिसमे 1 धातु तथा 2 पाषाण की कुल 3 प्रतिमाएँ एवं 1 यंत्र है। मंदिर पर गुम्बज बना हुआ है। मूलनायक प्रतिमा श्वेत पाषाण की भगवान आदिनाथ की है जो सम्वत् 1948 की प्रतिष्ठित बतलायी जाती है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

यहाँ का बोहरा परिवार बहुत प्रसिद्ध था। इनके यहाँ एक बार डकैत भी आये थे और काफी माल लूटकर ले गये थे। गांव में सभी के कच्चे मकान

थे अब पक्के बनने लगे हैं। अब वहाँ से जैन परिवार उठकर जयपुर आ गया जिसके प्रमुख श्री राजमल रतनलाल आदि लाखणा वाले हैं।

वर्तमान में मंदिर मे पूजा-प्रक्षाल की भी व्यवस्था नहीं है। मंदिर के जीर्णोद्धार की आवश्यकता है।

29. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, श्रीरामपुरा

श्री रामपुरा सागानेर - फागी रोड़ पर सांगानेर से 7 किलोमीटर दूर है। यह गांव लाखणा जाने वाले मार्ग में ही पड़ता है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर था जिसका निर्माण लगभग 100 वर्ष पूर्व हुआ होगा। इसका निर्माण श्री लादूलाल जी बोहरा के पिता श्री वृद्धिचन्द जी ने कराया बताया। श्री वृद्धिचन्द जी लाखणा से गोद आये थे।

श्री लादूलाल जी बोहरा की मृत्यु के पश्चात् उनके सुपुत्र श्री माणकचन्द जी बोहरा मंदिर की व्यवस्था देखते थे किन्तु श्री माणकचन्द जी के जयपुर आ जाने के पश्चात् वहाँ पूजा-प्रक्षाल का प्रबन्ध नहीं रहा तथा मंदिर पर अजैनों ने अतिक्रमण कर अधिकार कर लिया। वहाँ की एक मात्र प्रतिमा चन्द्रप्रभ धातु की श्री माणकचन्द जी जयपुर ले आये तथा मालवीय नगर के सैक्टर 10 वाले मंदिर मे विराजमान कर दी। अतिक्रमण सम्बन्धी विवाद चल रहा है। वर्तमान में श्री रामपुरा में कोई जैन घर तथा मंदिर नहीं है।

विशेष:- कुछ वर्षों पहिले वहाँ एक पाषाण के पद्मप्रभ भगवान की 9 इंच की पद्मासन प्रतिमा भी खण्डित कर दी गई थी।

30. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर चन्द्रप्रभ जी, श्योपुर

श्योपुर जयपुर-टोंक राजमार्ग पर जयपुर से 14 किलोमीटर पर गौशाला के सामने सड़क से 4 किलोमीटर पूर्व में है।

यहाँ एक दिगम्बर जैन मन्दिर है जिसका निर्माण कब और किसने कराया यह तो प्रामाणिक रूप से नहीं कहा जा सकता किन्तु यह अवश्य है कि इसका निर्माण जयपुर बसने के पूर्व ही हो चुका था। इस मंदिर की देख-रेख सांगानेर के दिगम्बर जैन मंदिर अढ़ाई पैडी के अन्तर्गत थी। वर्तमान मे इसकी तथा अढ़ाई पैडी के मंदिर की व्यवस्था जयपुर के श्री दिगम्बर जैन मंदिर गोधान्, चौक नागोरियान की प्रबन्धकारिणी कमेटी द्वारा की जाती है।

मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है जो सम्वत् 1783 की बांसखोह की प्रतिष्ठित है। मंदिर में एक वेदी है जिसमे 3 प्रतिमाएँ पाषाण की एवं एक यंत्र है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

वार्षिक उत्सव होता है। यहाँ कोई जैन घर नही है।

31. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पार्श्वनाथजी, सांख

सांख सांगानेर टोक रोड़ पर गोनेर से 4 किलोमीटर पूर्व की ओर है। यहाँ जाने को कानोता पुलिया के पास से भी कच्ची सड़क बनी हुई है।

यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है। कहते हैं इस मंदिर का निर्माण श्री विजयलाल जी पाटनी के पूर्वजों ने कराया था जिनके वंशज श्री ताराचन्द पाटनी आज भी जयपुर मे लालजी सांड के रास्ते में रहते हैं। मंदिर कब बनाया इसका कोई उल्लेख नहीं है।

मंदिर में एक वेदी है जिसमे 9 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

सांख मे अब कोई जैन परिवार नही रहता। मन्दिर बन्द ही रहता है। पूजा-प्रक्षाल की कोई व्यवस्था नही है। मंदिर मे कई हस्तलिखित ग्रन्थ भी बतलाते है।

32. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, सांजरियाँ

सांजरिया जयपुर-अजमेर रोड़ पर वाया ठीकरिया 24 किलोमीटर दूर स्थित है। सांजरिया ग्राम तक डामर रोड है तथा चाँदपोल बस स्टेण्ड से रोड़वेज की बसें जाती हैं। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण लगभग 500 वर्ष पूर्व ठीकरिया तथा सांजरिया की दिगम्बर जैन समाज ने कराया बताया। ठीकरिया में मंदिर नहीं है, यहाँ के लोग भी दर्शनार्थ सांजरिया ही जाते है। यहाँ मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है।

मंदिर में एक वेदी है जिसमे 1 धातु तथा 6 पाषाण की कुल 7 प्रतिमाएँ है। यंत्र नहीं है। इस प्राचीन मंदिर का जीर्णोद्धार होकर पुनः वेदी प्रतिष्ठा दिनाक 4 मार्च से 6 मार्च, 1994 तक हुई तथा श्रीजी विराजमान किये गये। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। क्षेत्रपाल विराजमान है। सांजरिया मे 4 तथा ठीकरिया मे 3 इस प्रकार दोनो जगह में मिलाकर 7 दिगम्बर जैन घर है। मंदिर का प्रबन्ध श्री भंवरलाल ठीकरिया वाले तथा श्री हरकचन्द सांजरिया वालो द्वारा किया जाता है। मंदिर की स्थिति सामान्य है।

विशेष:- प्यारेलाल जी सेठी पापड़ मंगोड़ी वाले तथा भैरवलाल जी सेठी श्री महावीरजी वाले यहाँ से ही गये हुए हैं। सन् 1994 मे वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव श्री प्यारेलाल जी सेठी की पुण्य स्मृति स्वरूप कराया गया बताया।

33. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, सिरोली

सिरोली गोनेर से 3 किलोमीटर दूर है। जयपुर से वाया चूलगिरि गोनेर वाली सड़क पर 17 कि.मी. दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है। मंदिर

का निर्माण समाज द्वारा कब कराया गया कोई उल्लेख नहीं मिलता। मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है। मंदिर में 2 वेदियाँ है जिनमें 4 धातु की तथा 9 पाषाण की कुल 13 प्रतिमाएँ एवं 9 यंत्र विराजमान हैं। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1466 की सफेद पाषाण की है तथा एक सम्वत् 1548 की है। गांव मे केवल 2 दिगम्बर जैन परिवार हैं जो मंदिर की व्यवस्था देखते हैं। कहते हैं यहाँ पहिले 300 दिगम्बर जैन परिवार थे।

मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा इसके नीचे कोई अचल सम्पत्ति नहीं है। स्वाध्याय हेतु 5 हस्तलिखित ग्रन्थ हैं।

मंदिर के द्वार पर गणेश प्रतिमा भी है। मंदिर की मरम्मत की आवश्यकता है। मंदिर के मुख्य प्रबन्धक श्री महावीरप्रसाद वैद श्री दिगम्बर जैन मंदिर सिरोली, पो गोनेर, जिला जयपुर (राज) हैं।

34. श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, सूर्यनगर

सांगानेर तहसील के अन्तर्गत जयपुर-टोंक राजमार्ग पर अजमेरी गेट से 10 कि.मी. दूर तारों की कूंट पर सूर्यनगर एक नयी कॉलोनी है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मन्दिर है जिसका निर्माण सन् 1990 मे सूर्यनगर दिगम्बर जैन समाज ने करवाया है। मन्दिर में एक वेदी है जिसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान शांतिनाथ की पद्मासन धातु की है जो जयपुर के दिगम्बर जैन मन्दिर संघीजी, महावीर पार्क रोड जयपुर से दिनांक 15.06.1997 को लाकर विराजमान की गई है।

यहाँ 26 दिगम्बर जैन परिवार है जिनमें लगभग 100 व्यक्ति है। सूर्य नगर लगभग 600 घरों की कालोनी है।

यहाँ के मुख्य प्रबन्धक श्री प्रकाशचन्द जैन हैं। प्रतिदिन लगभग 50 लोग पूजा-प्रक्षाल करते हैं। मंदिर निर्माणाधीन हैं।

इनके अतिरिक्त निम्न गांवो में भी जैन घर तथा दिगम्बर जैन मंदिर थे किन्तु अब वहाँ न घर हैं और न मंदिर हैं:-

1. दांतली- गोनेर के पास सांगानेर टोंक रोड़ पर
2. ठीकरिया- जयपुर-अजमेर रोड़ पर; यहाँ के जैन बन्धु साजरिया दर्शन हेतु जाते हैं।
3. अजराजपुरा- जयपुर-अजमेर रोड़ पर है। यहाँ के मंदिर में आग लग जाने के कारण प्रतिमाएँ खण्डित हो गई तथा वेदी आदि ध्वस्त हो गई।

तहसील - चाकसू
[19 गांवों में 27 मन्दिर]

चाकसू जयपुर से टोंक जाने वाली सड़क पर 45 किलोमीटर दूरी पर एक पुराना कस्बा है। चाकसू तहसील मुख्यालय है। चाकसू बहुत पुराना नगर है। ग्रन्थों में इसका चम्पावती, चाटसू आदि नामो से भी उल्लेख मिलता है। जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह जी के नवरत्नों मे से एक राव कृपाराम जी पाण्ड्या थे जो चाकसू के ही निवासी थे। आज भी आमेर रोड़ पर कच्चे बन्धे के पास राव कृपाराम जी का घर है और वहाँ उनकी हवेली में दो चैत्यालय हैं। गलता तीर्थ की डूंगरी पर जो सूर्य मंदिर बना हुआ है वह राव कृपाराम जी का ही बनवाया हुआ बताया जाता है। उनकी हवेली पर चाँदी का सूर्य रथ आज भी देखा जा सकता है। वे सूर्योपासक थे। चाकसू मे कोट मोहल्ला में इनकी खण्डहर हवेली है। चाकसू में जैनों का अच्छा प्रभुत्व रहा है। जयपुर के चाकसू के चौक में पंचायती बीसपंथी दिगम्बर जैन मंदिर चाकसू के राव कृपाराम जी का ही बनवाया हुआ है। इस मंदिर का निर्माण सं. 1782 में हुआ था।

चाकसू में वर्तमान में दिगम्बर जैनो के 50 (35 खण्डेलवालो एवं 15 अग्रवालों के) परिवार हैं। यहां 4 दिगम्बर जैन मंदिर, एक चैत्यालय तथा 2 नसियां है।

चाकसू में दिगम्बर जैन भट्टारको का काफी प्रभुत्व रहा है। पहाड़ी पर स्थित बड़ी नसियाँ (शिव डूंगरी) में उपलब्ध शिलालेखो से ज्ञात होता है कि यहाँ सम्वत् 1593 की माघ सुदी 7 को प्रतिष्ठा हुई थी। इससे पूर्व सं. 1135 मे खोवाल बाकलीवाल ने चाकसू में प्रतिष्ठा कराई। जयपुर से पहिले भट्टारक गद्दी आमेर, सांगानेर तथा चाकसू में थी। सम्वत् 1662 में भट्टारक देवेन्द्र कीर्ति जी चाकसू गद्दी पर थे। भट्टारक गद्दी सं. 1691 मे सांगानेर, सम्वत् 1722 मे आमेर तथा सं. 1815 में जयपुर आयी।

प्रसिद्ध दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा (बाड़ा) भी तहसील चाकसू मे ही है। चाकसू तहसील के 19 गांवो मे 27 दिगम्बर जैन मंदिर हैं।

चाकसू:

1. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर सांवलाजी (पार्श्वनाथजी) बालबाड़ी

उक्त मंदिर का निर्माण कब और किसने कराया यह तो ज्ञात नहीं, किन्तु कहा जाता है कि यह मन्दिर दि. जैन समाज चाकसू द्वारा ही निर्मित है। यहाँ मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है। मंदिर मे कुल 6 वेदियाँ है जिनमें

54 धातु तथा 11 पाषाण की कुल 65 प्रतिमाएं एवं 4 चरण चौकी तथा यंत्र विराजमान हैं। दो मूर्तियाँ पद्मावती जी की धातु की हैं तथा एक क्षेत्रपाल जी की पाषाण की खड्गासन है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

मंदिर देवस्थान विभाग में पंजीकृत है तथा विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा इसका प्रबन्ध किया जाता है। मंदिर प्राचीन एवं विशाल है तथा अचल सम्पत्ति के रूप में एक हवेली, बीस दुकानें, एक नोहरा कुआ सहित तथा एक नोहरा अलग से है।

यद्यपि मंदिर में हस्तलिखित ग्रन्थ भी हैं पर सूची बनी हुई नहीं है। मंदिर में शास्त्र सभा होती है जिसमें पं. प्रदीपकुमार जी शास्त्री प्रवचन करते हैं। वर्तमान में अध्यक्ष श्री वीरेन्द्रकुमार अजमेरा एवं मंत्री श्री बाबूलाल कोटखावदा वाले हैं।

2. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर छोटा तेरहपंथियान

इस मंदिर का निर्माण दिगम्बर जैन समाज चाकसू ने करवाया, किन्तु कब करवाया कोई प्रामाणिक आधार नही। यहाँ मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है जो सम्वत् 1783 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे चार वेदियाँ हैं जिनमे 1 धातु तथा 11 पाषाण की कुल 12 प्रतिमाऍं एवं 4 यंत्र विराजमान है। मंदिर तेरहपंथ आम्नाय का है, जैसा कि मंदिर के नाम से ज्ञात हो जाता है। मंदिर देवस्थान विभाग मे पंजीकृत है तथा विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा इसका प्रबन्ध किया जाता है।

इस मंदिर तथा सांवलाजी के मदिर का प्रबन्ध एक ही प्रबन्ध समिति द्वारा किया जाता है तथा अचल सम्पत्ति दोनो मंदिरो की सम्मिलित एक ही है, अलग-अलग नही है।

मंदिर के वर्तमान मे अध्यक्ष श्री वीरेन्द्रकुमार अजमेरा एवं मंत्री श्री बाबूलाल जैन कोटखावदा वाले है।

3. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पार्श्वनाथजी कोट मोहल्ला

यह मंदिर कोट मोहल्ले मे स्थित है जहाँ राव कृपाराम जी की खण्डहर हवेली है। मंदिर बहुत प्राचीन एवं विशाल है किन्तु इसका निर्माण चाकसू दिगम्बर जैन समाज ने कब करवाया कोई प्रमाण उपलब्ध नही है।

मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान सम्भवनाथ की है जो सम्वत् 1610 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे 10 वेदियाँ है जिनमे 162 धातु तथा 21 पाषाण की कुल 183 प्रतिमाएँ एवं 6 चरण चौकी तथा 65 यंत्र है। इनमें एक यंत्र काष्ठ

का प्रतीत होता है। एक प्रतिमा पद्मावती जी तथा एक क्षेत्रपाल जी की है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। राजस्थान पब्लिक ट्रस्ट के अन्तर्गत पंजीकृत है तथा विधानानुसार प्रबन्ध समिति के चुनाव होते है।

मंदिर काफी प्राचीन एवं विशाल है और इसके नीचे 13 बीघा जमीन है तथा एक कोठी है। यहाँ रथयात्रा हेतु रथ है, पालकी तथा उत्सव विधानादि के लिये शामियाने आदि भी हैं।

यह भट्टारकीय बीसपंथी बड़ा मंदिर है। यहाँ सम्वत् 1662 मे भट्टारक देवेन्द्र कीर्ति जी विराजते थे। इसके पश्चात् भट्टारक गादी यहाँ से साँगानेर तथा फिर आमेर और जयपुर स्थानान्तरित हुई। मंदिर की प्राचीनता के सम्बन्ध में श्री कस्तूरचन्द बड़जात्या ने बताया कि उनके पिताजी कहा करते थे कि यहाँ 13 बार पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हो चुकी है। यह भी कहा जाता है कि इस मंदिर से लेकर बड़ी नसियाँ (शिवडूँगरी) तक एक सुरंग भी है।

यहाँ प्राचीन शास्त्र भण्डार भी है। भाद्रपद मास मे शास्त्र सभा होती है जिसमें श्री चौथमल जैन प्रवचन करते है।

मंदिर में लगभग 10 वर्ष पूर्व चोरी हुई थी, जिसकी पुलिस मे रिपोर्ट की गई थी किन्तु कोई नतीजा नहीं निकला। बड़ा मंदिर होने के कारण सार-संभाल हेतु माली को मंदिर के बाहर स्थान दे रखा है।

वार्षिक उत्सव आसोज बुदी 2 तथा महावीर जयन्ती के अवसर पर किये जाते है। वर्तमान मे मंदिर के मंत्री श्री चौथमल जैन है।

विशेष:- मंदिर कलापूर्ण है। चौक मे एक ओर तिबारे मे वेदियाँ है तथा चौक मे बीच मे एक छत्री बनी है। सामने की ओर खाली वेदियाँ है। चौक में एक भाग मे प्राचीन मंदिर है जिसमें मूलनायक वेदी मे भगवान संभवनाथ एवं पुष्पदंत विराजमान हैं जबकि मंदिर पार्श्वनाथ मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है।

4. श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर तेरहपंथियान

इस मंदिर का निर्माण लगभग 250 वर्ष पूर्व श्री नानूराम चौधरी एवं उनके वंशजो ने कराया था। इसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है। जो सम्वत् 1883 की प्रतिष्ठित है। यहाँ दो वेदियाँ है जिनमे 28 धातु तथा 3 पाषाण की कुल 31 प्रतिमाएँ एवं 10 यंत्र विराजमान है। मंदिर तेरहपंथ आम्नाय का है जैसा कि नाम से ही प्रतीत होता है। श्री नानूराम जी एवं राव कृपाराम जी पाण्ड्या दोनों भाई चौधरी परिवार के थे। श्री नानूराम जी बड़े भाई थे जिनकी खण्डहर हवेली आज भी बड़ी हवेली के नाम से प्रसिद्ध है।

समीप ही राव कृपाराम जी की हवेली भी है जो 40-50 वर्ष पूर्व स्व0 सेठ श्री बकीचंदजी गंगवाल जयपुर को बेच दी गई।

मंदिर देवस्थान विभाग में पंजीकृत है तथा विधानानुसार बनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा इसका प्रबन्ध किया जाता है। प्रबन्ध समिति के प्राय: सभी सदस्य जयपुर के है। यहाँ की प्रबन्ध व्यवस्था आदि मंत्री श्री मोतीलाल चौधरी देखते हैं।

अचल सम्पत्ति के रूप में मंदिर के सामने एक मंजिल की धर्मशाला, धर्मशाला के चारो ओर 152×87½ फीट जमीन है, मंदिर के उत्तर में 15 पूर्व में 20 तथा दक्षिण में 35 फीट जमीन और है। बाजार मे 5 दुकानें है। मंदिर में दरियाँ, जाजम, पाटे, चौकी आदि भी काफी मात्रा में है।

मंदिर में दो बार सन् 1984 मे तथा 1987 में चोरी हो चुकी है, जिसकी पुलिस में रिपोर्ट की गई थी, किन्तु आज तक कोई माल बरामद नहीं हुआ है। पुन: 12.5.92 को एक धातु की पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा चोरी चली गयी, जिसकी भी रिपोर्ट पुलिस मे दर्ज कराई है।

शास्त्र भण्डार मे 30-35 हस्तलिखित ग्रन्थ है, ग्रन्थ सुरक्षित है तथा 100-125 वर्ष के प्राचीन हैं।

समय-समय पर मंदिर का जीर्णोद्धार हुआ है और अब भी अचल सम्पत्ति की सुरक्षा हेतु दीवार आदि बनाने की आवश्यकता है, किन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा नहीं हो रहा। दुकानों के किरायेदार पुराने हैं, अत: न खाली करते हैं और न ही किराया बढ़ाते है। मंदिर की आर्थिक स्थिति संतोषजनक नही कही जा सकती।

मंदिर कलापूर्ण एवं विशाल है। मंदिर में महराबो पर चारों ओर रंगीन पेन्टिग भित्ति चित्र हैं।

वर्तमान मे प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्री कपूरचन्द राव (जयपुर) एवं मंत्री श्री मोतीलाल चौधरी (चाकसू) है।

5. श्री दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी

जयपुर की तरह चाकसू मे भी भट्टारकजी की नसियाँ है जो जयपुर टोंक रोड़ पर शिव डूँगरी व चाकसू के बीच मे सड़क से आधा किलोमीटर दूरी पर है। चारों ओर अहाता है तथा बीच मे मंदिर तथा मंदिर के सामने की ओर भट्टारक सुखेन्द्र कीर्ति जी की चरण छत्री बारहदरी के ऊपर है एवं पास मे ही विशाल बावडी है। छत्री में भट्टारक सुखेन्द्र कीर्ति जी के चरण विराजमान हैं जो सम्वत् 1886 में उनके निधन के पश्चात् उनकी परम्परा के प्रशिष्य भट्टारक देवेन्द्र कीर्ति जी द्वारा विराजमान किये गये थे। भट्टारक सुखेन्द्र कीर्ति जी का यहाँ ही स्वर्गवास हुआ था।

नसियाँ का निर्माण कब हुआ और किन भट्टारकजी ने करवाया यह ज्ञात

नहीं है, किन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इसका नि र्माण सम्वत् 1886 से काफी पूर्व हो चुका था; क्योंकि सम्वत् 1886 मे तो भट्टारक सुखेन्द्र कीर्ति जी की चरण छत्री बनी थी। सम्वत् 1662 मे चाकसू में भट्टारक देवेन्द्र कीर्ति जी के समय में भी इसका बनना सम्भव है।

मंदिर उत्तराभिमुखी है जिसमें तीन वेदियाँ मे 5 धातु तथा 5 पाषाण की कुल 10 प्रतिमाएँ एवं 8 यंत्र हैं। मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है जो सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है।

मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा क्षेत्रपाल जी विराजमान हैं। मंदिर देवस्थान विभाग मे पंजीकृत है तथा विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा इसका प्रबन्ध किया जाता है।

नसियाँ का क्षेत्रफल काफी है, अचल सम्पत्ति के रूप मे 5 दुकानें, कृषि भूमि तथा 2 हाल हैं। नसियाँ के जीर्णोद्धार की अत्यन्त आवश्यकता है ताकि इस धरोहर की सुरक्षा हो सके।

यहाँ कोई शास्त्र भण्डार आदि नही है, सम्भव है नगर के मंदिर में स्थानान्तरित हो गया हो।

यहाँ प्रतिवर्ष आश्विन बुदी 2 को वार्षिक उत्सव होता है। यहाँ के मुख्य प्रबन्धक श्री महेन्द्र कुमार बड़जात्या है।

विशेष :- पीछे की वेदी मे एक प्रतिमा बड़ी नसियाँ (शिव डूँगरी) से लाई हुई बतलाते हैं जो सम्भवत: सम्वत् 1752 की प्रतिष्ठित बतलाई जाती है। पहिले नसियाँ के पश्चिम की ओर बने मुख्य द्वार के बाहर से चाकसू आने की मुख्य सड़क थी।

भट्टारक श्री सुखेन्द्र कीर्ति जी की चरण छत्री का लेख निम्न प्रकार है-

चरण छत्री बारहदरी के ऊपर निर्मित है। श्वेत पाषाण के चरण हैं:-

'लेख चरण छत्री भट्टारक सुखेन्द्र कीर्ति जी चाकसू'

लेख :- ''श्री गुरवेनम: 11 संवत्सरे रस 6 वसु 8 सिद्धिन्दुमिते। 1886 मृंगसिर सुदि 2 शनिवासरे ढुढाहड़ देशे चंपावती नगरे श्री मन्महाराजाधिराज महाराज श्री 'सवाई जयसिंह जिद्राज्य प्रवर्त्तमाने श्री मूल संघे-नंद्याम्नाये बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक शिरोशेखर भट्टारक जिच्छ्री सुरेन्द्र कीर्ति स्ततपट्टोदयाद्रि दिन मणि भट्टारक श्री सुखेन्द्र कीर्ति स्तत्पट्टे भट्टारक नरेन्द्र कीर्ति स्तत्पट्टे शैलदिन मणि समविनयता भट्टारक देवेन्द्र कीर्ति ना भट्टारक सुखेन्द्र कीर्ति गुरो महा महोत्सव कृत्वा चरण युगल प्रस्थाय प्रतिष्ठितं जगतां शमयतु।।''

चरण 9 इंच के हैं, कमल पर विराजमान हैं, सीधे चरण नाखून युक्त

हैं। एक ओर पिच्छी दूसरी ओर कमण्डलु तथा सामने की ओर माला है। छत्री ठीक मंदिर के सामने बनी है। छत्री बारादरी पर है तथा पास में विशाल बावड़ी है।

6. श्री अग्रवाल दिगम्बर जैन चैत्यालय, (वार्ड नं.6)

इस चैत्यालय का निर्माण सम्वत् 2046 तदनुसार दिनांक 12 फरवरी, 1990 को अग्रवाल दिगम्बर जैन समाज ने करवाया। यहाँ तीन वेदियाँ हैं जिनमे 1 धातु तथा 4 पाषाण की कुल 5 प्रतिमाएँ एवं 5 यंत्र हैं। मूलनायक प्रतिमा भगवान महावीर स्वामी की है। चैत्यालय बीसपंथ आम्नाय का है।

समाज ने वर्ष 1989 में अचानक चैत्यालय निर्माण का विचार किया और तुरन्त 50,000/- की राशि एकत्रित कर इसका निर्माण कराया।

यहाँ प्रतिदिन शास्त्र सभा होती है जिसमें श्री गुलाबचन्द बजाज प्रवचन करते हैं। इसके अध्यक्ष श्री रामगोपाल बजाज एवं मंत्री श्री गुलाबचन्द बजाज हैं।

7. श्री दिगम्बर जैन नसियाँ बड़ी, शिव डूँगरी

यह नसियाँ बड़ी नसियाँ के नाम से प्रसिद्ध है, यह जयपुर-टोंक रोड़ पर चाकसू से 3 किलोमीटर पहिले ही आ जाती है। यह नसियाँ शीतला माता की डूँगरी के सामने की ओर सड़क से 1 किलोमीटर दूरी पर डूंगरी पर स्थित है। इसका निर्माण कब हुआ और किसने कराया, इस सम्बन्ध में कुछ ज्ञात नहीं है किन्तु उक्त नसियाँ में डूँगरी पर उपलब्ध शिलालेखों से यह पता चलता है कि यह नसियाँ सम्वत् 1593 से पूर्व की है। यहाँ शिलालेखो के रूप मे चौमुखे है जो 37 सैंटीमीटर चौड़े तथा 127 सैंटीमीटर लम्बे हैं तथा मोटाई लगभग 9 इंच की है। इन चौमुखों में लेख के ऊपर भट्टारको की खड़गासन मुद्रायें हैं, जिनके हाथ में पीछी कमण्डलु है तथा उनके ऊपर दिगम्बर प्रतिमाएँ पद्मासन मुद्रा में अंकित हैं।

शिलालेख जैसा पढ़ने मे आता है निम्न प्रकार है-

''सम्वत् 1593 वर्षे माघ सुदी 7 दिने श्री मूल संघे नंद्याम्नाये बलात्कार गणे श्री कुंदकुंदाचार्यन्विये भट्टारक श्री पदमनंदितत्पट्टे भ0 श्री शुभचन्द्र तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्र तत्पट्टे भ0 श्री प्रभाचन्द्रस्तत् शिष्य भ0 श्री धर्म चन्द्र स्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये बाकलीवालगोत्रे सा0 मालू ......'' [इसके आगे यद्यपि लेख और है किन्तु पढ़ने में नहीं आता।]

आमेर के दलाराम के बाग के संग्रहालय तथा रामनिवास बाग के म्यूजियम में भी चाकसू से लाये गये शिलापट्ट एवं मूर्तियाँ हैं जो सम्भवत: इसी नसियाँ से सम्बन्धित हैं।

वर्तमान में डूँगरी की तलहटी में तिबारा, कुआ तथा छत्री बनी है तथा एक बावड़ी है। पहाड़ी पर चढ़ने के लिये कुछ सीढ़ियाँ भी है जो खण्डहर हैं। ऊबड़-खाबड़ रास्ते से ही चढ़ा जा सकता है। नसियाँ का प्रथम प्रवेश द्वार पार करते ही दूसरे द्वार पर मठोठ के स्थान पर दो शिलालेख वाले चौमुखे आडे लगा रखें हैं। कुछ आगे चलकर मंदिर के अहाते का प्रवेश द्वार है। अहाते के तीनों कोनों पर छत्रियाँ हैं, सम्भव है चौथे कोने की छत्री गिर गयी है। अहाते के बीच में शिखरबंध मंदिर है पीछे की ओर छत्री है, सामने दालान खुला हुआ है तथा बीच मे एक छत्री है। मंदिर के तीनों ओर दो-दो गह के तिबारे हैं जिनके नीचे तलघर है। मंदिर के ठीक सामने के तिबारे में से बाहर निकलकर एक छत्री है जिसके तीनों कोनो मे शिलालेख वाले चार चौमुखे पड़े है। छत्री खण्डहर है।

यह नसियाँ जो दिगम्बर जैन समाज की है, ज्ञात नहीं कब साम्प्रदायिकता का शिकार हुई और शिव मंदिर मे परिवर्तित हुई। आजकल इस 'जैन नसियाँ डूँगरी' को 'शिव डूँगरी' के नाम से जाना जाता है।

मंदिर का ढांचा पूर्णत: दिगम्बर परम्परा का है। जिन मंदिर के द्वार पर जैन प्रतिमा है। भित्ति चित्र है जो जैन संस्कृति के प्रतीक हैं। गर्भ गृह में कोई वेदी आदि नही है। गर्भ गृह के बीच मे शिवपिंडी है।

मंदिर के अहाते के बाहर एक पानी का टाँका है। टाँके के बराबर ही ''माइक्रोवेव लाईन'' की ऊंची टावर लगी है।

नसियाँ का रास्ता दुर्गम होने के कारण यहाँ न जैन पहुँचते है और न अजैन। कभी मंदिर की कोई सार संभाल नही करता।

इस ओर जैन समाज का ध्यान जाना आवश्यक है।

8. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, आकोडया

इस ग्राम मे दिगम्बर जैन मंदिर का निर्माण यहाँ की दि. जैन समाज ने लगभग सम्वत् 1926 मे कराया था। इसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1861 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमें 5 धातु तथा एक पाषाण की कुल 6 प्रतिमाएँ एवं 2 यंत्र विराजमान हैं। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

मंदिर के सम्बन्ध में बताया गया कि वर्तमान मे इस मंदिर के पास एक शिवजी का मंदिर है जो पहले जैन मंदिर था, व्यास की गद्दी के समय जैन मंदिर में शिवपिंड स्थापित कर शिव मंदिर बनाया गया। कई वर्षों तक जिन प्रतिमाएँ किसी दुकान में रही। बाद में सम्वत् 1926 मे नया मंदिर बनवाकर

उसमें विराजमान की गई। मंदिर का प्रबन्ध समाज द्वारा ही किया जाता है। यहाँ तीन दिगम्बर जैन परिवार है। मंदिर के नीचे दो दुकाने हैं जो खाली पड़ी हैं। अर्थाभाव के कारण मंदिर का जीर्णोद्धार नही हो पा रहा है। अन्य कोई आय का स्रोत नहीं है। आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है।

यहाँ का प्रबन्ध श्री सूरजमल जैन करते हैं।

विशेष:- कहते हैं आसपास में आकड़ा के पेड़ों की अधिकता के कारण गाँव का नाम आकोडया पड़ा है।

कोटखावदा:

, यह तहसील चाकसू का एक अच्छा कस्बा है जो चाकसू से सड़क से जुड़ा हुआ है। यहाँ दिगम्बर जैनों के 21 परिवार हैं तथा 2 दिगम्बर जैन मंदिर एवं एक चैत्यालय है। जैनों की परिवार संख्या तथा प्राचीन मंदिरों से ऐसा प्रतीत होता है कि पहिले यहाँ काफी जैन घर होंगे।

9. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पार्श्वनाथजी, गढ़ का वास

पार्श्वनाथ मंदिर गढ़ का वास, कोटखावदा के नाम से प्रसिद्ध है। यह मंदिर लगभग 600 वर्ष पूर्व चांदवाड़ एवं अजमेरा परिवार द्वारा निर्माण कराया हुआ बताया जाता है। मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है। एक वेदी है जिसमे 5 धातु तथा 7 पाषाण की कुल 12 प्रतिमाएँ एवं 2 यंत्र हैं। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

निर्माण सम्बन्धी कोई शिलालेख आदि उपलब्ध नही है। मंदिर का प्रबन्ध समाज द्वारा चुनी हुई कमेटी द्वारा किया जाता है, जिसके वर्तमान में अध्यक्ष श्री कपूरचन्द अजमेरा एवं मंत्री श्री कपूरचन्द चांदवाड़ हैं। रंग सफेदी एवं जीर्णोद्धार होता रहता है।

10. श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, बड़ावास

यह मंदिर बड़ावास कोटखावदा के नाम से प्रसिद्ध है। इसका निर्माण कब और किसने कराया कोई सूचना उपलब्ध नहीं है। लगता है यह मंदिर भी प्राचीन ही होगा क्योंकि दूसरा मंदिर 600 वर्ष पुराना है। इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की सम्वत् 1548 की ही प्रतिष्ठित है। मंदिर मे तीन वेदियाँ है जिनमें 14 धातु तथा 15 पाषाण की कुल 29 प्रतिमाएँ एवं 16 यंत्र हैं। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा क्षेत्रपाल की प्रतिमा है।

इस मंदिर की व्यवस्था दिगम्बर जैन समाज द्वारा चुनी हुई कमेटी के

माध्यम से की जाती है, जिसके अध्यक्ष श्री हरकचन्द जैन एवं मंत्री श्री महावीरकुमार अजमेरा हैं।

अचल सम्पत्ति के रूप मे दो दुकाने, एक कमरा तथा दो धर्मशालाएँ हैं। मंदिर में ग्रन्थ भण्डार है।

11. श्री दिगम्बर जैन चैत्यालय, कोटखावदा

कोटखावदा के इस चैत्यालय का निर्माण विक्रम सम्वत् 2016 में श्री छगनलाल कपूरचन्द जैन ने कराया और मूलनायक प्रतिमा सम्वत् 1780 की प्रतिष्ठित भगवान पार्श्वनाथ की विराजमान की।

चैत्यालय में एक वेदी है जिसमें एक धातु तथा एक पाषाण की दो प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र विराजमान है। चैत्यालय बीसपंथ आम्नाय का है।

इसकी व्यवस्था श्री कपूरचन्द जैन करते हैं। आर्थिक स्थिति संतोषजनक नहीं है। जीर्णोद्धार की आवश्यकता है।

12. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कोथूण

कोथूण ग्राम तहसील चाकसू के अन्तिम छोर का ग्राम है। यह निवाई से लालसोट जाने वाले मार्ग पर पड़ता है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसमे एक वेदी में मूलनायक पाषाण की भगवान चन्द्रप्रभ की एक ही प्रतिमा तथा एक ही यंत्र विराजमान है। यह मूलनायक प्रतिमा सम्वत् 1861 की प्रतिष्ठित है। मंदिर का निर्माण यहाँ की स्थानीय समाज ने कब कराया कोई प्रमाण नही है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

ग्राम में वर्तमान मे एक भी जैन घर नहीं है, अत· यहाँ की व्यवस्था दिगम्बर जैन मंदिर चनाणी की प्रबन्ध समिति करती है। मुख्य प्रबन्धक श्री रतनलाल सौगाणी चनाणी वाले मु0पो0 चनाणी, तहसील निवाई, जिला टोंक है।

यहाँ मंदिर की सीढ़ियो के पास ही एक शिलालेख भी है जो पढ़ने मे नही आता। मंदिर साधारण है। चनाणी जैन समाज आसोज सुदी में यहाँ एक बार एकत्र होती है।

13. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कोल्या

कोटखावदा के पास ही कोल्या ग्राम है जहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है। इसकी स्थापना कुछ वर्ष पूर्व कोटखावदा के छगनलाल कपूरचन्द चांदवाड़ ने की थी।

मंदिर में एक ही वेदी है जिसमे भगवान पार्श्वनाथ की एक प्रतिमा है। कोई यंत्र नहीं है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। कोल्या ग्राम मे वर्तमान में कोई जैन परिवार नहीं है। यहाँ का प्रबन्ध श्री कपूरचंद चांदवाड़ कोटखावदा वाले ही करते हैं। मंदिर की कोई अचल सम्पत्ति नहीं हैं। सन् 1988 में मंदिर मे चोरी हो गई थी जिसमें धातु की प्रतिमाएँ चोरी चली गई थी, पुलिस मे रिपोर्ट कर दी गई थी किन्तु अभी तक प्राप्त नहीं हुई है। पूजा-प्रक्षाल यदा-कदा कोटखावदा वाले ही करते हैं

14. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर चन्द्रप्रभ जी, चंदलाई

तहसील चाकूस में दूसरा बडा कस्बा चंदलाई है, जो जयपुर से लगभग 32 किलोमीटर दूर टोंक रोड पर शिवदासपुरा के सामने की ओर मुख्य सडक से 3 किलोमीटर पश्चिम में है। गांव तक पक्की सडक है तथा जयपुर चाकसू से रेलमार्ग व सडक मार्ग दोनो से जुड़ा हुआ है। जयपुर सवाई माधोपुर रेलवे लाईन पर स्टेशन शिवदासपुरा से भी यहां पहुंचा जा सकता है यहां दो बंधे अर्थात् जलाशय हैं जिसमे एक गांव के बाहर तथा दूसरा गांव के बीच है।

चंदलाई ग्राम मे दिगम्बर जैनो के लगभग 20-25 परिवार हैं, जिनमें मुख्यत: काला एवं छाबड़ा परिवार गोत्र के है तथा सोनी व भोच गोत्र के एक-एक परिवार है। यहां के जाने माने प्रमुख कार्यकर्ता एवं समाज सेवी स्व. मीठालाल जी छाबड़ा तथा स्व. श्री आनन्दीलाल जी काला विशिष्ट व्यक्ति थे।

यहाँ का दिगम्बर जैन मंदिर लगभग 350 वर्ष पुराना बताया जाता है। कहते है यह मंदिर चाकसू के पौद्दार परिवार द्वारा बनावाया गया था। इसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की जो सम्वत् 1826 की प्रतिष्ठित है। सम्वत् 1548 की प्राचीन प्रतिमाओ के अतिरिक्त सम्वत् 1664,1783,1826 तथा 1861 की अनेक प्रतिमाएँ है। यहाँ 3 वेदियो मे 31 धातु तथा 26 पाषाण की कुल 57 प्रतिमाएँ एवं 18 यंत्र हैं। मंदिर का प्रबन्ध समाज द्वारा चुनी हुई कमेटी द्वारा किया जाता है।

मंदिर विशाल एवं शिखरबन्ध है, एक मंजिल ऊंचा उठाकर बना हुआ है व दुछत्ता है। मंदिर का क्षेत्रपल 310 वर्ग गज है। समय-सयम पर मंदिर का जीर्णोद्धार होकर श्वेत संगमरमर की वेदियां, सीढियाँ आदि का निर्माण हुआ है। सीढ़ियों के ऊपर प्रथम प्रवेश द्वार पर ही गुम्बज है जिसमे सुन्दर भित्ती चित्र अंकित हैं। मंदिर प्राचीन एवं कलापूर्ण है। बीसपंथ आम्नाय का होने के कारण क्षेत्रपाल विराजमान हैं।

मंदिर मे दो से अधिक बार चोरियां हुई जिसमें एक बार चांदी की पालकी

चोरी गई वह अभी तक बरामद नहीं हुई। पुन: मार्च, 1989 में चोरी हुई। उसकी बरामदगी तो हुई किन्तु माल मिला नहीं।

यहाँ 14 हस्तलिखित तथा करीब 50 छापे के ग्रन्थ है। सभी स्टील की आलमारियों में सुरक्षित हैं। ग्रन्थों के अतिरिक्त कपड़े पर 5 मण्डल चित्र भी हैं।

भाद्रपद मास के पश्चात् यहाँ से लोग एक दिन शिवदासपुरा, एक दिन थली के मंदिर में जाकर पूजा एवं अभिषेक आदि करते हैं। इस प्रकार का क्रम कई वर्षों से चल रहा है। यहाँ के अध्यक्ष श्री गोपीचन्द छाबड़ा है।

15. श्री दिगम्बर जैन चैत्यालय (मन्दिर), टूमली का वास

इस चैत्यालय (मंदिर) का निर्माण सम्वत् 1788 मे श्री म्होरीलाल जी सौगानी ने करवाया था। इसमें एक वेदी में 1 धातु तथा 1 पाषाण की कुल दो प्रतिमाएँ है, जिसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है।

मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। यह मंदिर यद्यपि तहसील चाकसू मे है किन्तु इसकी देखरेख अब तक श्री दिगम्बर जैन मंदिर चनाणी, तहसील निवाई, जिला टोंक द्वारा की जाती है। यहां केवल एक दिगम्बर जैन परिवार है। मुख्य प्रबन्धक श्री श्रवणलाल सौगानी टूमली का वास वाले है।

मंदिर मे जीर्णोद्धार की आवश्यकता है। यहां आश्विन कृष्णा अष्टमी से दशमी के बीच किसी एक दिन वार्षिकोत्सव होता है।

16. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, तामडया

यहाँ एक दिगम्बर जैन चैत्यालय (मंदिर) है। चैत्यालय में एक वेदी मे एक चौबीसी प्रतिमा विराजमान है। तामडया मे एक जैन घर है। इस चैत्यालय का निर्माण श्री लखमीचन्द जी गंगवाल ने करवाया था, साल सम्वत् का पता नही। चैत्यालय बीसपंथ आम्नाय का है।

यहां का प्रबन्ध श्री लादूलाल गंगवाल तामडया वाले वार्ड नं. 7, कोट का मोहल्ला, चाकसू करते हैं। वे चाकसू से ही पूजा-प्रक्षाल करने आते हैं।

17. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, थली

थली एक छोटा गांव है जो चंदलाई से करीब 5 कि.मी. है। यहां एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1861 की प्रतिष्ठित है। मंदिर का निर्माण कब हुआ ज्ञात नही। मंदिर मे एक वेदी है जिसमे एक धातु तथा दो पाषाण की कुल तीन प्रतिमाएं एवं

एक यंत्र है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1548 की है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

पहिले यहां एक जैन घर था किन्तु अब कोई दिगम्बर जैन परिवार नही है। यहाँ की व्यवस्था दिगम्बर जैन पंचायत चंदलाई द्वारा की जाती है। प्रतिवर्ष आसोज बुदी 5 को मेला भरता है।

मुख्य प्रबन्धक श्री मिलापचन्द जैन काला चंदलाई वाले हैं।

18. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, नीमोडया

यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है। इस मंदिर का निर्माण नीमोडया दिगम्बर जैन समाज द्वारा लगभग 300 वर्ष पूर्व कराया बताया जाता है। यहाँ मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ जी की है जो सम्वत् 1861 की प्रतिष्ठित है। मंदिर विशाल है इसमें 6 वेदियाँ है जिनमे 12 धातु तथा 14 पाषाण की कुल 26 प्रतिमाएं एवं 9 यंत्र हैं। सबसे प्राचीन प्रतिमा भगवान धर्मनाथ की है जो सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है। यहाँ दिगम्बर जैनो के 8 घर हैं। मंदिर का प्रबन्ध समाज द्वारा चुनी हुई कमेटी करती है जिसके अध्यक्ष श्री मूलचन्द गंगवाल एवं मंत्री श्री पारसमल बाकलीवाल हैं।

अचल सम्पत्ति के रूप में मंदिर के नीचे 5 दुकाने हैं जो सभी किराये पर हैं। मंदिर के सामने कुआ है जिस पर सम्वत् 1726 के निर्माण काल का शिलालेख है। मंदिर की ही समाज द्वारा निर्मित एक धर्मशाला है। मंदिर मे बर्तन, दरी-पट्टियाँ बिछायत आदि है। दो तीन हस्तलिखित एवं 20 छापे के ग्रन्थ हैं।

19. श्री दिगम्बर जैन चैत्यालय, बगरया

बगरया एक छोटा-सा ग्राम है जहाँ एक दिगम्बर जैन चैत्यालय है। इसका निर्माण लगभग 150 वर्ष पूर्व श्री धन्नालाल बाकलीवाल बगरया निवासी ने करवाया था। मंदिर मे एक वेदी है जिसमें 4 धातु तथा 1 पाषाण की कुल 5 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र है। मूलनायक प्रतिमा भगवान मुनिसुव्रतनाथ की सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा यहाँ एक दिगम्बर जैन परिवार है।

यहाँ की प्रबन्ध व्यवस्था श्री भगनलाल बाकलीवाल, जैन किराना स्टोर, मु.पो. अचलपुरा, तहसील चाकसू करते हैं।

20. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, बापू गांव

बापू गांव छोटा ग्राम है जो नीमोडया के पास है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है। इस मंदिर का निर्माण श्री कल्याणमल बाकलीवाल बापू गांव वालों

ने करीब 80 वर्ष पूर्व करवाया था। मंदिर मे एक वेदी है जिसमें भगवान नेमिनाथ की प्रतिमा ही मूलनायक प्रतिमा के रूप में है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। ग्राम मे वर्तमान में एक भी जैन घर नहीं है। अत: पूजा-प्रक्षाल भी 15-20 दिन में एक बार श्री नेमिचन्द बाकलीवाल नीमोडया वाले करते हैं। वे ही वहाँ का प्रबन्ध देखते हैं। मंदिर की अचल सम्पत्ति के रूप मे मंदिर के पिछवाड़े की ओर एक पक्का बाड़ा बना हुआ है।

यहाँ प्रतिवर्ष आश्विन कृष्णा मे उत्सव होता है जिसमे पूजन आदि होती है।

21. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर शांतिनाथ जी, भोज्याडा

यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है। कहते है इसका निर्माण 500 वर्ष पूर्व यहां की दि. जैन समाज द्वारा ही कराया गया था। कब और किसने कराया कोई प्रमाण उपलब्ध नही है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमे धातु की 5 तथा पाषाण की 7 कुल 12 प्रतिमाएँ एवं 1 यंत्र है। मूलनायक प्रतिमा भगवान शांतिनाथ की है। एक प्रतिमा सम्वत् 1586 की फागुण सुदी 10 की किन्ही अजमेरा गोत्र वालो की प्रतिष्ठा कराई हुई है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। वेदी मकराने की बनी हुई है। इसका पोस्ट आफिस टूंटोली है।

मंदिर के नीचे कोई अचल सम्पत्ति नहीं है। दस वर्ष पूर्व मंदिर मे करीब 3 बार चोरी हो चुकी है और पुलिस मे रिपोर्ट भी की गई है, किन्तु कोई नतीजा नहीं निकला।

यहाँ तीन दिगम्बर जैन घर है। यहाँ के प्रबन्धकर्ता श्री प्रेमचन्द जैन है।

22. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, महादेवपुरा

महादेवपुरा, तूंगा (तहसील बस्सी) होकर पहुँचा जा सकता है। यहाँ दो दिगम्बर जैन घर हैं तथा एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो कहा जाता है 500 वर्ष का प्राचीन है। इसका निर्माण महादेवपुरा के ही पांड्या, सोनी एवं सेठी परिवार ने करवाया था। इसमे एक वेदी है जिसमे 3 धातु तथा 1 पाषाण की कुल 4 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र है। मूलनायक प्रतिमा पाषाण की चौबीसी है जिसमें मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ है। चौबीसी प्रतिमा सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

मंदिर का जीर्णोद्धार कार्य हो रहा है, आर्थिक सहयोग अपेक्षित है।

मंदिर का प्रबन्ध श्री प्रेमचन्द सेठी करते है। आसोज कृष्ण पक्ष मे एक दिन वार्षिकोत्सव होता है।

23. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, माधोसिंहपुरा

इस मंदिर का निर्माण सम्वत् 1943 के आस-पास कोटखावदा निवासी श्री हीरालाल जी अजमेरा ने करवाया था। इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की खड्गासन है जो सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमें 2 धातु तथा 3 पाषाण की कुल 5 प्रतिमाएँ हैं। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। ग्राम में एक भी जैन परिवार नहीं है। स्थानीय प्रबन्धक श्री छीतरमल महाजन (विजयवर्गीय) है। वे ही पूजा प्रक्षाल करते हैं। यह मंदिर चाकसू के दिगम्बर जैन मंदिर कोट की पंचायत के अन्तर्गत है।

मंदिर निर्माण का संक्षिप्त इतिहास निम्न प्रकार है:-

''श्री हीरालाल जी अजमेरा कोटखावदा का किसी बात पर वहाँ के ठाकुर साहब से झगड़ा हो जाने के कारण श्री हीरालाल जी तथा अन्य जातियो के कुछ लोग गांव छोड़कर चले गये और चाकसू आ गये। चाकसू मे महाराजा सवाई माधोसिंह जी की सवारी निकल रही थी। उन्होंने अपनी पीड़ा महाराजा माधोसिंह जी को सुनाई। महाराजा ने द्रवीभूत हो चाकसू से 3 किलोमीटर दूर पश्चिम की ओर रहने की जगह बता दी। फलत: माधोसिंहपुरा बस गया और उसके दो साल बाद सम्वत् 1943 मे श्री हीरालाल जी ने इस मंदिर का निर्माण कराया।''

आसोज बुदी 5 से 10 के बीच किसी एक दिन वार्षिकोत्सव भी होता है।

24. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, रूपाहेड़ी

रूपाहेड़ी (रूपाड़ी) एक प्रसिद्ध ग्राम है। जहाँ 19 दिगम्बर जैन परिवार हैं तथा एक दिगम्बर जैन मंदिर है। मंदिर में चार वेदियाँ है जिनमें 7 धातु तथा 20 पाषाण की कुल 27 प्रतिमाएँ एवं 9 यंत्र हैं। मंदिर ऊंची कुर्सी पर बना हुआ है तथा साफ सुथरा है। मंदिर तेरहपंथ आम्नाय का है जिसका प्रबन्ध समाज द्वारा चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा किया जाता है। मंदिर कब और किसने बनवाया इसका कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो वीर निर्वाण सम्वत् 2477 की प्रतिष्ठित है। मूलनायक प्रतिमा पहिले भी भगवान पार्श्वनाथ की थी जिसके आंगोपांग घिस जाने के कारण उसे अलग रख दी गयी और उसके स्थान पर दूसरी पार्श्वनाथ की ही प्रतिमा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में प्रतिष्ठित कराकर विराजमान की गई है। पहिले वाली प्रतिमा उसी वेदी में अलग से है। पीछे वाली एक वेदी अभी खाली ही है।

मंदिर की अचल सम्पत्ति के रूप में 3 दुकानें, 1 कुआ, 14 बीघा पक्की कृषि भूमि (समाज के नाम पर)। धर्मशाला, 1 पक्का कुआ तथा 1 भूखण्ड 30×60 का है।

मंदिर की आर्थिक स्थिति संतोषजनक है जिसके कारण जीर्णोद्धार कार्य चलते ही रहते है। मंदिर में एक लकड़ी की पालकी, शामियाना, बिछायते तथा बर्तन आदि उपलब्ध हैं।

यहाँ लगभग चार बार चोरियाँ हो चुकी हैं, जिसकी रिपोर्ट पुलिस मे भी की गई है; किन्तु अभी तक कोई सामान नही मिला है।

मंदिर में भित्ति चित्र हैं तथा भगवान बाहुबली की प्रतिमा का मनोज्ञ चित्र भी है।

हस्तलिखित एवं छापे के ग्रन्थ भी हैं। ग्रन्थ सुरक्षित हैं।

यहाँ का प्रबन्ध मुख्य रूप से श्री पारसमल पाटनी अध्यक्ष एवं श्री मदनलाल पापड़ीवाल मंत्री देखते हैं।

विशेष:- यहाँ 30 प्रतिमाएँ और है जो अलग रख दी गई है। इनमें 7 पाषाण की एवं 23 धातु की है जो किसी कारण पूजनीय नही बताई जाती हैं। एक भूगर्भ से प्राप्त प्रतिमा भी है। रूपाहेड़ी वाले श्री प्रेमचन्द भौंच ने बताया कि बाबाजी ब्र. सूरजमल जी ने इन प्रतिमाओ की बनावट ठीक नहीं होने से अनिष्टकारी बताकर अलग रखवा दी थी। यह भी कहा गया है कि यहाँ 2-3 बार प्रतिष्ठाएँ भी हुई हैं।

25. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, शिवदासपुरा

शिवदासपुरा जयपुर से टोंक रोड़ पर लगभग 30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। जयपुर-सवाईमाधोपुर रेलवे लाईन पर शिवदासपुरा रेलवे स्टेशन है, जहाँ से ग्राम एक किलोमीटर दूर है। पदमपुरा क्षेत्र पर भी जाने का यही रेलवे स्टेशन है जो पदमपुरा (बाड़ा) के नाम से भी प्रसिद्ध है।

शिवदासपुरा में एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसमें एक वेदी में 3 धातु तथा 6 पाषाण की कुल 9 प्रतिमाएँ एवं 4 यंत्र विराजमान हैं। मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है। मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है। यहाँ 9 दिगम्बर जैन घर हैं तथा मंदिर का प्रबन्ध समाज द्वारा किया जाता है। मंदिर का निर्माण कब और किसने कराया कोई प्रामाणिक तथ्य नहीं है, किन्तु कहा जाता है कि लगभग 500 वर्ष पूर्व चाकसू के पौद्दार वंश के लोगों ने (जैसा कि चंदलाई का मंदिर) बनवाया था।

मंदिर का क्षेत्रफल लगभग 300 वर्ग गज है तथा अचल सम्पत्ति के रूप मे ग्राम शिवदासपुरा मे एक दुकान मय चौबारा जगदीशजी के मंदिर के सामने किराये पर है तथा चार दुकानें मंदिर के नीचे हैं जो जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। मरम्मत होने पर किराये पर उठ सकती हैं। मंदिर में छोटी-मोटी चोरी हुई

है किन्तु रिपोर्ट नहीं कराई गई। मंदिर मे दो चार शास्त्र हस्तलिखित और 15 छापे के ग्रन्थ हैं। जीर्णोद्धार की आवश्यकता है। इसके प्रबन्धक श्री जयकुमार जैन बाकलीवाल हैं।

26. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, सांवलिया

सांवलिया में एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका कब निर्माण हुआ तथा किसने करवाया कोई पता नहीं। भगवान नेमिनाथ की मूलनायक प्रतिमा विराजमान है जो सम्वत् 1616 की प्रतिष्ठित बताई जाती है। मंदिर मे एक वेदी मे 3 पाषाण की प्रतिमाएँ है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। यहाँ कोई जैन घर नही है। मंदिर में कोई अन्य आय का स्रोत नही है। अत: आर्थिक समस्या है। सहयोग की आवश्यकता है। यहाँ प्रतिवर्ष आसोज सुदी मे वार्षिक मेला होता है।

मंदिर का प्रबन्ध श्री माणकचन्द अग्रवाल तथा फूलचन्द, छगनलाल पांड्या करते हैं। सम्पर्क सूत्र - श्री लादूलाल ताराचन्द जैनाग्रवाल सांवलिया वाले, कपड़े की दुकान, निवाई है।

27. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा (बाड़ा)

चाकसू तहसील का बहुचर्चित यह अतिशय क्षेत्र जयपुर से 35 कि0मी0 दक्षिण की ओर जयपुर-टोंक मार्ग पर शिवदासपुरा से पूर्व की ओर 5 कि0मी0 दूरी पर है। जयपुर-सवाईमाधोपुर जाने वाली पश्चिमी रेलवे लाइन पर इसका स्टेशन है जिसका नाम ''शिवदासपुरा-पदमपुरा'' है।

इस क्षेत्र की उद्भव घटना रोचक है। वैशाख शुक्ला पंचमी संवत 2001 तदनुसार 27.4.1944 ई0 गुरुवार को एक कृषक बालक मूला जाट अपनी माता के साथ अपने मकान की नीव खोद रहा था। अचानक उसकी फावडी एक पाषाण से टकराई। गांव वाले एकत्र हुए और जमीन खोदी गयी तो पता चला कि दिगम्बर जैन प्रतिमा है। चारों ओर बिजली की तरह चर्चा फैल गई। सैकड़ो स्त्री-पुरुष दर्शनार्थ आने लगे। प्रतिमा को तत्काल एक तख्ते पर छप्पर के नीचे विराजमान किया गया। भूत-प्रेत की बाधा व पागलपन आदि आराधना से स्वत: ही मिटने लगे। चारों ओर प्रतिमा का चमत्कार फैल गया। लोग दूर-दूर से दर्शनार्थ आने लगे।

झौपड़ियों वाले इस छोटे से गांव 'बाडा' मे भगवान पद्मप्रभु क्या प्रकट हुए लोगों का भाग्योदय ही हो गया। प्रतिमा जी के दर्शन से मनोकामनाएँ पूर्ण होने लगीं और भगवान पदमप्रभु ''बाडा वाले बाबा'' के नाम से लोकप्रिय हो गये। बाड़ा ग्राम विभिन्न जन समुदाय की आस्था का केन्द्र हो गया। साम्प्रदायिक

एकता, राष्ट्रीय एकता और सम भावनाओं का स्थल हो गया। क्षेत्र में आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या प्रतिदिन बढ़ने लगी और जिनमन्दिर निर्माण और यात्रियों के विश्राम एवं आवास व्यवस्था की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी।

अतिशय क्षेत्र के उद्भव के साथ ही आवश्यक व्यवस्थाओं के लिये सर्व प्रथम जयपुर एवं आस-पास के गांवो के जैन समाज के विशिष्ठ व्यक्तियों की एक प्रबन्ध समिति का गठन किया गया और उसे मन्दिर व क्षेत्र की व्यवस्था का भार सौंपा गया। 31 सदस्यो की यह प्रथम उत्तरदायी प्रबंध कमेटी जयपुर के प्रसिद्ध सेठ श्री गोपीचन्द जी ठोलिया की अध्यक्षता मे गठित की गई और जयपुर के ही रंग व्यवसायी व पत्रकार श्री गुलाबचन्द चन्द जी काला को मंत्री तथा पं० भंवरलाल जी न्यायतीर्थ को संयुक्त मन्त्री बनाया गया। इस प्रबन्ध कमेटी ने अपने उत्तरदायित्व को पूरी तरह निभाते हुए क्षेत्र के विकास में अथक परिश्रम किया। भगवान पदमप्रभु की प्रतिमा जिस जगह पर विराजमान की गई थी वहां टिन शेड लगा कर उसे मन्दिर का रूप दिया और समीपस्थ प्रबंध कमेटी का कार्यालय कक्ष निर्मित कराकर स्थापित किया। शनैः शनै: यात्रियो के आवास और शुद्ध पेयजल के लिये धर्मशाला एवं कुओं से पेयजल की सुचारू व्यवस्था की। प्रतिमा जी के उद्भव भू-स्थल पर चरण-चिन्ह छतरी का प्रारम्भिक निर्माण कार्य भी कराया। पदमप्रभु जी के सुन्दर जिनालय निर्माण की आवश्यकता सामने आने लगी। इसके लिये भूमि प्राप्त करना जरूरी हो गया। क्षेत्र के अध्यक्ष सेठ गोपीचन्द जी ठोलिया और मंत्री श्री गुलाबचन्द जी काला एवं अन्य सदस्यो के निवेदन से प्रेरित होकर जयपुर निवासी तन्खाहदार श्री म्होरीलाल जी गोधा ने, जिनकी बाडा ग्राम से लगती हुई जमीन थी, मन्दिर निर्माण के लिये 37 बीघा 7 बिस्वा जमीन नि:शुल्क उपलब्ध करा दी। इस भूमि पर मन्दिर निर्माण हेतु शिलान्यास 14 सितम्बर, 1945 को अजमेर के सर सेठ भागचन्द जी सोनी द्वारा हुआ।

पदमप्रभु जी के इस अनुपम जिनालय के निर्माण के लिये प्रथम प्रबंध कमेटी के निर्देशन में राजस्थान के प्रसिद्ध वास्तुकार श्री गुलाबचन्द जी लुहाड़िया ने मन्दिर का मानचित्र और मॉडल बनाने का प्रशंसनीय कार्य सम्पन्न किया। मन्दिर के माडल की जयपुर के तत्कालीन प्राइम मिनिस्टर सर मिर्जा इस्माइल ने भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा क्षेत्र के विकास में काफी रुचि ली और मार्ग दर्शन भी किया जिससे क्षेत्र पर आने-जाने के लिये शिवदासपुरा से सड़क तथा बिजली और पेयजल व्यवस्था को मूर्त्त रूप मिला।

इस अनुपम मन्दिर के निर्माण के लिये प्रारम्भ में 15 लाख रूपये की लागत का अनुमान लगाया गया और इसके लिये क्षेत्र कमेटी के द्वितीय अध्यक्ष श्री राजूलाल जी गोदीका और मन्त्री श्री भंवरलालजी न्यायतीर्थ एवं सदस्यों ने

राजस्थान व आसाम प्रदेश में घूम-घूमकर अर्थ-संग्रह किया। मन्दिर शिलान्यास के लगभग 18 वर्ष पश्चात् मन्दिर के आंशिक-निर्माण होने पर वैशाख शुक्ला सप्तमी संवत 2019 (10 मई, 1962) को नवीन मन्दिर में वेदी प्रतिष्ठा करा कर भूगर्भ से प्राप्त भगवान पदमप्रभु की प्रतिमा जी को कमल पुष्प वेदी पर विराजमान करा दिया गया।

वर्तमान मे इस पुराने मंदिर में पदमप्रभुजी की अन्य श्वेत पाषाण की पद्मासन प्रतिमा रजत जडित काष्ठ-वेदी में विराजमान है। इसके निकट ही भूगर्भ से प्राप्त प्रतिमा-उद्भव स्थल पर गुम्बदाकार संगमरमर पत्थर की चरण-चिन्ह छतरी निर्मित है।

नये गोलाकार मन्दिर मे कला पूर्ण ग्यारह वेदियाँ हैं जिनमे विशाल एवं मनोज्ञ प्रतिमाएँ प्रतिष्ठापित की जाकर फरवरी सन् 1969 मे मन्दिर का पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित किया गया।

वर्तमान में मन्दिर का कलश 85 फुट ऊंचा है किन्तु गोलाकार मन्दिर का शिखर तैयार होने पर यह 125 फुट ऊंचाई पर बन सकेगा।

इसी मन्दिर के 50 हजार वर्गफुट क्षेत्र में गोलाकार मंदिर सड़क, उपवन एवं यात्रियों के लिये सुविधाओं के साथ धर्मशाला आदि से सुनियोजित विकास किया गया है और इसका क्रम जारी है। क्षेत्र के परिसर मे लगभग दो हजार वर्ग फुट क्षेत्र मे यात्रियों के लिये कमरे/फ्लेट्स, भोजनशाला, वाचनालय, बैंक सुविधा आदि उपलब्ध है। सार्वजनिक सेवा के लिए क्षेत्र की ओर से आयुर्वेदिक औषधालय कार्यरत है। राजकीय एलोपैथिक दवाखाना भी नवीन भवन में चल रहा है।

तारघर व टेलीफोन की सुविधा भी उपलब्ध है। क्षेत्र पर मीठे पानी की सुविधा भी है। यातायात व्यवस्था के अन्तर्गत रेल से आने वाले यात्रियो के लिये रेलवे स्टेशन शिवदासपुरा बाड़ा पदमपुरा लाने तक व ले जाने के लिये क्षेत्र का वाहन उपलब्ध रहता है। सड़क मार्ग से आने वाले यात्रियो के लिये प्रतिदिन जयपुर के नारायणसिंह सर्किल से राजस्थान परिवहन निगम की समय-समय पर नियमित सीधी बसें आती-जाती है।

क्षेत्र पर मुख्य मंदिर के पार्श्व भाग मे 28 फीट ऊंची भव्य मनोज्ञ पद्मप्रभु की खड्गासन प्रतिमा का पंच कल्याणक महोत्सव, फरवरी 1993 मे सम्पन्न हुआ है। खुले आकाश में स्थित इस भव्य प्रतिमा का क्षेत्र परिसर में प्रवेश करते ही दर्शन लाभ मिलता है। इस पंच कल्याणक के अवसर पर क्षेत्र पर प्रथम बार गजरथ यात्रा भी आयोजित हुई थी। इसी समारोह में मूल मन्दिर की ग्यारहवी वेदी में भगवान भरत की 11 फीट की खड़गासन प्रतिमा प्रतिष्ठा करके विराजमान की गई है।

पदमपुरा में मूल मानचित्र/माडल के अनुसार मन्दिर का प्रथम तल स्तर का निर्माण कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है। प्रथम मंजिल के चारो चैत्यालयों, स्वाध्याय कक्ष का निर्माण कार्य, सीढ़ियो का मुख्य प्रवेश द्वार एवं छतरियों के बनाने का कार्य भी अपनी गति पर है।

क्षेत्र मे वृद्धाश्रम एवं वैयावृत आरोग्यशाला के प्रस्तावित योजना को शीघ्र ही साकार रूप दिये जाने के प्रयास है। पदमपुरा मे साधर्मी बन्धुओं की सुनियोजित एक बस्ती बनाये जाने की योजना भी है।

क्षेत्र द्वारा यात्रियो की सुविधा के लिये भोजनशाला भी उपलब्ध है। इसकी व्यवस्था हेतु एक विशेष कोष की योजना चालू है।

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा मे जो अन्य विकास कार्य हो रहे हैं उनमे क्षेत्र पर निर्माणाधीन विशाल मानस्तम्भ का कार्य तीव्र गति से जारी है प्रथम एवं तृतीय कटनी पर लगने वाले मार्बल की पट्टियो पर कुराई का कार्य काफी हद तक पूर्ण हो चुका है और मानस्तम्भ पर जड़ाई का कार्य शुरु हो गया है। पूर्वी मुख्य द्वार के निर्माण का कार्य भी प्रगति पर है। मन्दिर परिसर के उत्तरी ओर कमरो का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है। क्षेत्र पर हरियाली लाने एवं वृक्षारोपण का कार्य प्रभावी रूप से किया गया है। बालोद्यान के रूप मे पूर्वी दक्षिणी क्षेत्र को विकसित किया गया है। जन सेवा के क्षेत्र मे राजकीय तथा दानदाताओ के सहयोग से नेत्र चिकित्सा शिविर आयोजित किये जाते है। आचार्य मुनि श्री दर्शनसागर जी महाराज के संघस्थ मुनि श्री नेमीसागर जी महाराज का क्षेत्र पर समाधि मरण हुआ और क्षेत्र पर उनकी छतरी का निर्माण कार्य मुनि श्री के परिवारजन के आर्थिक सहयोग से सम्पन्न हुआ है।

शिवदासपुरा मोड पर पदमपुरा जैन मन्दिर का भव्य मुख्य द्वार निर्माण करने की राजकीय स्वीकृति प्राप्त हो गई है और द्वार का कार्य आरम्भ किया जा रहा है।

भगवान पदमप्रभु की चरण-चिन्ह छतरी का जीर्णोद्धार एवं नवीन निर्माण कार्य प्रगति पर है। श्री हंसराज जैनाग्रवाल द्वारा बनाये जा रहे प्रथम मंजिल मे चारो चैत्यालयो का निर्माण कार्य काफी प्रगति पर है। मन्दिर परिसर मे पूर्वी उत्तरी एवं पूर्वी दक्षिणी और जल मन्दिर का निर्माण कराया गया है। मन्दिर परिसर के पूर्वी उत्तरी छोर पर कमरो तथा कौने मे भोजनशाला हेतु भी निर्माण कराया गया है। मन्दिर परिसर की पूर्वी और पुराने फ्लेट्स के पुनर्निर्माण का कार्य किया जा रहा है। पदम सागर के पश्चिम और मुख्य सड़क पर 9 नवीन दुकानो के निर्माण का कार्य प्रगति पर है। खड्गासन प्रतिमा जी के सामने वाले बडे हाल को भव्य प्रवचन हाल के रूप मे विकसित किया गया है।

ग्राम पदमपुरा के मेधावी छात्रों को छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जा रही हैं।

क्षेत्र कमेटी के प्रयास से गोनेर-पदमपुरा की सडक के निर्माण हेतु कृषि उपज मण्डी समिति के स्वीकृत प्रदान कर देने से इसके निर्माण की प्रक्रिया चालू कर दी गई है।

क्षेत्र के चारों परिसरों को प्रकाशमान करने हेतु सोडियम लाईटें लगाई गईं तथा उनका कनेक्शन मंदिर के जेनरेटर से भी किया गया है। इस अतिशय क्षेत्र पर प्राचीन खण्डित प्रतिमाओं का संग्रहालय स्थापित करने के भी प्रारम्भिक प्रयास किये जा रहे हैं।

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा एक पंजीकृत संस्थान है। यह राजस्थान संस्थान रजिस्ट्रेशन अधिनियम, 1958 तथा राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 के अन्तर्गत पंजीकृत है। इसके अधीन ही क्षेत्र की प्रबंध कमेटी सभी कार्य करती है। क्षेत्र का वार्षिक प्रतिवेदन एवं वार्षिक लेखा प्रतिवर्ष मुद्रित करा कर साधर्मी बन्धुओं को हस्तगत कराये जाते हैं। क्षेत्र न्यास ने आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 80 के अन्तर्गत आयकर छूट की सुविधा भी उपलब्ध कर रखी है।

क्षेत्र कमेटी का मंत्री कार्यालय जयपुर मे है। कमेटी के वर्तमान मे अध्यक्ष श्री भागचन्द जैन टोंग्या, निवाई और मानद मंत्री श्री ज्ञानचन्द जैन झांझरी, जयपुर हैं।

सम्पर्क सूत्र :- *श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, पदमपुरा*
पोस्ट बाड़ा-पदमपुरा, जयपुर-303906 (राजस्थान) फोन:225
मंत्री कार्यालय : 109, आतिश मार्केट, जयपुर फोन: 322108,519561

प्रभु दर्शन को मन्दिर जाता

सुखद सरल सुन्दर एकात, तन आनन्दित मन भी शान्त।
याद न आते सुख–दुख सारे, लगता जीवन लगा किनारे।।
मन्दिर जाता दर्शन करता, तब ही मेरा ये मन भरता।
प्रभु चरणो मे प्रीत जगी है, जिन भक्ति मे लगन लगी है।।
देखी ज्यो ही मूरत प्रभु की, याद हो आती आत्म विभु की।
मात्र दरश ही सब दुख हरता, जीवन सारा सुख से भरता।।
प्रभु दर्शन को मन्दिर जाता, याद नही फिर घर भी आता।
पाऊँ मुक्ति रूपी मन्दिर, इसीलिये मैं जाता मन्दिर।।

– प्रकाश जैन, जतारा

तहसील - सांभर-फुलेरा
[36 गांवों में 49 मन्दिर]

जयपुर का सांभर उपजिला है। जयपुर राज्य के समय से ही सांभर शामलाती कहलाता है। यहाँ जयपुर-जोधपुर जिला का शामलाती शासन है। यहाँ का तहसील हैडक्वाटर फुलेरा है। सांभर में नमक की झील सांभर लेक है जहाँ से पूरे देश को नमक भेजा जाता है। सांभर जयपुर से सड़क मार्ग से 75 किलोमीटर तथा सांभर लेक स्टेशन से 60 किलोमीटर दूर है।

सांभर अच्छा कस्बा है तथा नमक की मण्डी है। यहाँ की फीणियाँ प्रसिद्ध हैं। सांभर का देव यानी तीर्थ सब तीर्थों की नानी कहा जाता है।

सांभर-फुलेरा तहसील के 36 गांवों में 49 मंदिर हैं।

सांभर:

सांभर में 55 दिगम्बर जैन घर हैं। यहाँ चार दिगम्बर जैन मंदिर हैं जिनकी व्यवस्था दिगम्बर जैन पंचायत द्वारा की जाती है। दिगम्बर जैन पंचायत प्रन्यास देवस्थान विभाग राजस्थान से पंजीकृत है जिसकी पंजीयन सं. 60/1963 है।

1. श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर मण्डी

यह मंदिर सांभर की मण्डी मे स्थित है। इसका निर्माण वि. स. 1500 के लगभग पंचायत दिगम्बर जैन समाज सांभर ने कराया बताया। इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान शांतिनाथ की सम्वत 1548 की प्रतिष्ठित है जो समवसरण में विराजमान है। मंदिर मे 3 वेदियाँ है जिनमें 14 प्रतिमाएँ एवं 6 यंत्र है। प्रतिमाओं मे पद्मासन तथा 3 खड्गासन दोनों है। मंदिर तेरहपंथ आम्नाय का है। मंदिर का प्रबन्ध पंजीकृत विधानानुसार चुनी हुई प्रबन्ध समिति (दिगम्बर जैन पंचायत सांभर) द्वारा किया जाता है।

अचल सम्पत्ति के रूप में पंचायत के तहत 25 दुकानें, 15 मकान एक महावीर भवन तथा एक पाठशाला है। किराये से सम्बन्धित 4 मुकद्दमें चल रहे हैं। यहाँ 15 वर्ष पूर्व चोरी हुई थी, किन्तु अब तक कुछ भी वापस नहीं मिला।

मंदिर कलापूर्ण है और दूसरी मंजिल पर बना हुआ है। मंदिर मे काँच की जड़ाई का सुन्दर काम है। बीच मे समवशरण है। मंदिर के भीतर तथा बाहर

के चौक में व बरामदे में अनेक आकर्षक भित्तिचित्र है। बाहर चौक में आदिनाथ तथा बाहुबली के आदमकद बड़े भित्तिचित्र हैं। मंदिर के दो प्रवेश द्वार हैं।

मंदिर में लगभग 100 मुद्रित ग्रन्थ हैं। हस्तलिखित 86 ग्रंथ है जिनकी सूची बनी हुई है। जिसे दिनांक 20-9-71 को डा. कस्तूरचंद कासलीवाल एवं पं. अनूपचंद न्यायतीर्थ ने बनायी थी। यहाँ शास्त्र सभा महिलाओं द्वारा होती है।

मंदिर के अध्यक्ष श्री भागचन्द रावंका तथा मंत्री श्री दुलीचन्द पाटोदी हैं।

2. श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर सिंघाणियों का मोहल्ला

इस मंदिर का निर्माण सांभर के दिगम्बर जैन समाज ने लगभग 700 वर्ष पूर्व कराया था। इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो श्वेत पाषाण की है। मंदिर में एक वेदी है जिसमे 24 धातु की तथा 9 पाषाण की कुल 33 प्रतिमाएँ एवं 3 यंत्र है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1548 एवं 1660 की है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। यह भट्टारकीय मंदिर है। पहिले इसमें भट्टारकजी की गद्दी भी थी।

मंदिर की कुर्सी ऊँची है तथा दुछत्ता बना हुआ है। अचल सम्पत्ति सांभर के सभी मंदिरों की सम्मिलित रूप से एक ही है तथा प्रबन्ध भी सबका एक दिगम्बर जैन पंचायत द्वारा किया जाता है। मंदिर के मुख्य प्रबन्धक श्री भागचन्द रावंका हैं।

मंदिर मे चोरी हुई थी जिसकी रिपोर्ट पुलिस मे दर्ज है।

शास्त्र भण्डार मे हस्तलिखित 72 ग्रन्थ है, जिनकी सूची बनी है जो अलमारी में व्यवस्थित रूप से रखे है।

3. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर समुद्र का, (सांभरलेक)

यह मंदिर गलियों मे जाकर ढलान पर सांभर झील के किनारे बना है। इसीलिये इसको समुद्र का मंदिर कहते है। इस मंदिर का निर्माण सांभर के दिगम्बर जैन समाज द्वारा लगभग 900 वर्ष पूर्व कराया जाना बताते है। मंदिर प्राचीन है। इस मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है जो सम्वत् 1519 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमे 6 धातु तथा 2 पाषाण की कुल 8 प्रतिमाएँ एवं 2 यंत्र है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1519 की है। मंदिर तेरहपंथी आम्नाय का है।

अचल सम्पत्ति के रूप मे मंदिर के पास एक मकान है। इस मंदिर को सबसे अधिक प्राचीन माना जाता है। यहाँ एक भौहरा (तलघर) भी बताया जाता है जो बन्द पड़ा है। एक आल्या मे कुछेक पुरानी प्रतिमाएँ अलग से रखीं हैं जिसमें धातु तथा पाषाण दोनो प्रकार की है। इस आल्या पर पारदर्शक काँच लगाया हुआ है।

मंदिर में शास्त्र सभा चलती है। मुख्य प्रबन्धक दिगम्बर जैन पंचायत प्रमुख श्री भागचंद रावंका, अध्यक्ष एवं श्री दुलीचन्द पाटोदी, मंत्री है।

4. श्री चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन मन्दिर बोहरान, सांभर

यह मंदिर मालियों के मोहल्ले मे है। इसका निर्माण सम्वत् 1600 की साल में दिगम्बर जैन समाज सांभर ने कराया था। इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभु की है जो सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे 5 वेदियाँ हैं जिनमें 4 धातु तथा 9 पाषाण की कुल 13 प्रतिमाएँ एवं 15 यंत्र हैं। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। क्षेत्रपाल की तथा पद्मावती की प्रतिमा है।

मंदिर की अचल सम्पत्ति में जैन भवन तथा पाठशाला, भोजनशाला इसी मंदिर के पास बने हुए है जिसमें यात्रियो आदि की ठहरने की व्यवस्था है।

मंदिर मे चोरी हुई थी जिसकी रिपोर्ट पुलिस मे लिखाई थी पर कुछ नहीं हुआ। शास्त्र भण्डार में स्वाध्याय के लिये 7 हस्तलिखित ग्रन्थ हैं।

मंदिर कलापूर्ण है तथा दुछत्ता बना हुआ है। मंदिर मे आचार्य शांतिसागरजी, चन्द्रसागरजी तथा आर्यिका माता धर्ममतिजी के तैलचित्र भी सुन्दर बने हैं।

मंदिर की व्यवस्था दिगम्बर जैन पंचायत के तहत है तथा मुख्य प्रबन्धक श्री भागचन्द जैन राँवका हैं।

5. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, आकोदा

आकोदा जयपुर से बिचूण होकर 60 किलोमीटर तथा स्टेशन फुलेरा से 10 किलोमीटर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो आकोदा जैन समाज द्वारा निर्मित है तथा 200-250 वर्ष पुराना बताया जाता है। मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में एक वेदी है जिसमे एक धातु तथा 4 पाषाण की कुल 5 प्रतिमाएँ एवं 2 यंत्र है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1548 की है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। पहिले यहाँ कई जैन घर थे, किन्तु अब एक घर है।

अचल सम्पत्ति के रूप में मंदिर के नीचे दो दुकाने और दो अन्य दुकाने गांव मे है तथा एक छोटा मकान है।

मंदिर छोटा है और कलापूर्ण है। खम्भो पर काँच की जड़ाई का सुन्दर कार्य है तथा भित्ति चित्र भी सुन्दर हैं। स्वाध्याय के लिए 5-7 हस्लिखित ग्रन्थ हैं। सबसे प्राचीन ग्रन्थ 1707 के लिपिकाल का है।

आर्थिक स्थिति ठीक है। यहा का प्रबन्ध श्री धर्मचन्द लुहाड़िया करते हैं।

6. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर ड्योडी, पो. कोडी.

यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है। करीब 5 साल पूर्व जीर्ण-शीर्ण मंदिर के स्थान पर नया मंदिर जीर्णोद्धार कर बनवाया गया है। मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभजी की है जो सम्वत् 2008 की प्रतिष्ठित है। .मंदिर में एक वेदी है जिसमें 12 धातु तथा 4 पाषाण की कुल 16 प्रतिमाएँ एवं 6 यंत्र है। मंदिर तेरहपंथ आम्नाय का है जिसका प्रबन्ध समाज द्वारा किया जाता है। यहाँ चार दिगम्बर जैन घर हैं।

मंदिर की अचल सम्पत्ति के रूप में 4 बीघा काश्त भूमि और एक कुआ मंदिर के प्रक्षाल वास्ते है तथा एक नोहरा भी है।

मंदिर के वर्तमान में अध्यक्ष श्री महेन्द्रकुमार जैन है।

7. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महावीरस्वामी, ढींढा

ढींढा गॉव, जयपुर-अजमेर रोड़ पर महलां से 24 किलोमीटर तथा आसलपुर जोबनेर से 7 किलोमीटर दूर है। यहा एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण कब और किसने कराया कोई उल्लेख नहीं मिलता। मूलनायक प्रतिमा भगवान शांतिनाथ की है जो सम्वत् 1948 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में एक वेदी है जिसमें एक धातु तथा एक पाषाण की कुल दो प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1852 तथा यंत्र 1530 का है।

मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा यहाँ 3 दिगम्बर जैन परिवार है। मंदिर की व्यवस्था समाज द्वारा की जाती है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री राजेशकुमार जैन है।

नारायना:

नारायना (नरैना) जयपुर जिला के सांभर तहसील का एक कस्बा है जो जयपुर-अजमेर सड़क मार्ग से सांभर जानेवाली सड़क पर 14 किलोमीटर दूर है। फुलेरा जंक्शन से 11 किलोमीटर दूर है। पुरातत्त्व की दृष्टि से यह स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यहाँ यदा कदा भूगर्भ से प्राचीन मूर्तियाँ निकलती रहती हैं। यहाँ दो दिगम्बर जैन मंदिर हैं उनमें 90 फीसदी भूगर्भ से प्राप्त प्राचीन मूर्तियाँ होने के कारण नारायना अतिशय क्षेत्र भी कहलाता है। यह प्राचीन समय में जैन संस्कृति का केन्द्र रहा है।

कहते हैं सम्वत् 1954 की माघ सुदी 2 को नारायना के प्रसिद्ध सेठ श्री अजितमल लुहाड़िया को स्वप्न में कुछ मूर्तियाँ भूगर्भ में होने का आभास हुआ। खुदाई करने पर 11 दिगम्बर जैन मूर्तियाँ निकलीं जिनमें

से एक पर चन्द्रमा का चिन्ह था। इसके पश्चात् भी हल जोतते समय खेत में से दो-चार बार मूर्तियाँ और निकली हैं जो मंदिरों में विराजमान हैं। यहाँ 32 दिगम्बर जैन परिवार हैं।

8. श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर, नारायना

इस मंदिर का निर्माण लगभग 300 वर्ष पूर्व कराया गया था किन्तु यह ज्ञात नहीं किसने करवाया था। इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है। मंदिर में 14 वेदियाँ है जिनमें 29 प्रतिमाएँ एवं 14 यंत्र हैं। पाषाण की एक चौबीसी प्रतिमा है जिसमें तीन शासन देवियाँ भी उत्कीर्ण है। यह प्रतिमा भूगर्भ से मिली थी। एक चरण चौकी भी है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

मंदिर का प्रबन्ध चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा किया जाता है। मंदिर देवस्थान विभाग राजस्थान में सार्वजनिक प्रन्यास के अन्तर्गत् पंजीयन संख्या 379 दिनांक 4.7.74 से पंजीकृत है।

मंदिर की अचल सम्पत्ति के रूप में एक हवेली है तथा अन्य सामान मे लकड़ी का एक हाथी, पीतल का सिंहासन एक पाण्डुक शिला लकड़ी की बनी हुई है।

मंदिर में हस्तलिखित 36 ग्रंथ है, जिनकी सूची दि. 19-9-71 को डा. कस्तूरचंद कासलीवाल एवं पं. अनूप चन्द न्यायतीर्थ ने बनायी थी तथा स्वाध्याय हेतु लगभग 100 मुद्रित ग्रन्थ हैं। सबसे प्राचीन प्रति सं. 1876 की 'मूर्खशतक' की है। मंदिर कलापूर्ण है।

यहाँ भादवा तथा दीपावली पर उत्सव विधानादि होते है।

मंदिर मे भगवान बाहुबली की प्रतिमा अति मनोज्ञ है। इसमे एक बेल पर बन्दर उत्कीर्ण हैं।

मंदिर के मुख्य प्रबन्धक श्री पवनकुमार लुहाड़िया हैं।

9. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर चन्द्रप्रभजी, नारायना

यह मंदिर बड़े मंदिर से लगभग 2 फर्लांग दूर है। इसका निर्माण करीबन 100 वर्ष पूर्व श्री खाजूलाल पाटनी अजमेर वालों ने कराया था। इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभजी की है। मंदिर में आठ वेदियाँ हैं जिनमें 12 प्रतिमाएँ एवं 4 यंत्र हैं। एक श्वेत पाषाण की प्राचीन एवं कलापूर्ण सरस्वती प्रतिमा भी है जो बहुत ही मनोज्ञ है। यह प्रतिमा सम्भवत: 12 वीं शताब्दी की है।

मंदिर में धरषेणाचार्य के चरण भी विराजमान हैं। प्रतिमाएँ सभी प्राचीन एवं कलापूर्ण हैं तथा प्रायः भूगर्भ से प्राप्त हैं।

मंदिर का प्रबन्ध चुनी हुई प्रबन्ध समिति द्वारा किया जाता है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री पवनकुमार लुहाड़िया है। मंदिर की अचल सम्पत्ति के में 2 धर्मशालाएँ तथा 5 दुकाने हैं।

मंदिर में करीब 15 हस्तलिखित ग्रंथ हैं। बख़तावर लाल कृत 'प्रद्युम्न चरित्र' (सं. 1916) मे 1857 के गदर का वर्णन है। मंदिर कलापूर्ण है तथा वेदियों में सोने की कारीगरी का सुन्दर कार्य है।

कार्तिक दीपावली तथा भादवा अष्टान्हिका मे उत्सव विधानादि होते है।

10. श्री खण्डेलवाल दिगम्बर जैन मंदिर, हिंगोनिया

हिंगोनिया एक अच्छा गांव है। यह जयपुर कालवाड़ रोड़ से लालपुरा मोड़ पर जयपुर से 41 किलोमीटर दूरी पर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण दिगम्बर जैन समाज द्वारा लगभग 400 वर्ष पूर्व कराया गया बताते हैं। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठत है। मंदिर में 3 नीचे तथा एक ऊपर कुल 4 वेदियाँ हैं जिनमें 12 धातु तथा 15 पाषाण की कुल 27 प्रतिमाएँ एवं 6 यंत्र हैं। सबसे प्राचीन प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। क्षेत्रपाल प्रतिमा स्थापित है।

यहाँ दिगम्बर जैनों के 18 घर हैं। मंदिर की व्यवस्था समाज द्वारा की जाती है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री लक्ष्मीनारायण ठोलिया हैं।

अचल सम्पत्ति के रूप मे दो धर्मशालाएँ हैं। 60×60 वर्ग गज के तेरह कमरे हैं तथा 40×40 वर्ग गज में 7 कमरे बने हैं। इसके अतिरिक्त चांदी की गंधकुटी, पंचमेरू, चांदी के उपकरण, दरी, बिछायत व माइक आदि है।

जमीन के सम्बन्ध में व्यास से मुकद्दमा चल रहा है। अभी धर्मशाला में एक कमरा दे रखा है।

मंदिर कलापूर्ण है। गुम्बज विशाल है तथा प्रवेश द्वार पर एक छत्री है।

यहाँ करीब 150 हस्तलिखित ग्रन्थ हैं जिनकी सूची बनी हुई है। सायंकाल नित्य शास्त्र सभा होती है।

यहा एक जैन कन्या पाठशाला तथा जैन औषधालय भी संचालित है।

फुलेरा :

जयपुर जिलान्तर्गत सांभर उपखण्ड का फुलेरा तहसील हैड़ क्वार्टर है। यह जयपुर से 55 किलोमीटर दूर है। जयपुर-अहमदाबाद एवं दिल्ली-अहमदाबाद वाया रेवाड़ी, रींगस रेलवे लाइन का बड़ा जंक्शन रेलवे स्टेशन है। यहाँ जोधपुर, बीकानेर वाया सांभर रेलवे लाइन जाती है। जंक्शन की वजह से फुलेरा काफी प्रसिद्ध है।

यह उल्लेखनीय है कि फुलेरा में सन् 1951 (वि.सं. 2008) में विशाल पंचकल्याणक महोत्सव आचार्य मुनिश्री वीरसागर जी की प्रेरणा से हुआ था। यहाँ एक दिगम्बर जैन मन्दिर तथा एक नसियाँ है। यहाँ 60 दिगम्बर जैन परिवार हैं।

11. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, फुलेरा

यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण श्री मूलचन्द जी पाटनी लाडनूं वालो ने विक्रम सम्वत् 2008 वैशाख सुदी 5 (सन् 1951) को कराया था।

मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है जो सम्वत् 2008 बैशाख सुदी 5 की प्रतिष्ठित है। जिसकी प्रतिष्ठा पंचकल्याणक महोत्सव में फुलेरा मे ही हुई थी।

मंदिर विशाल एवं शिखरबन्ध है। इसमें कुल 13 वेदियाँ हैं जिनमें 9 नीचे तथा 4 ऊपर शिखर में है। इन वेदियो में कुल 42 प्रतिमाएँ एवं 12 यंत्र हैं। नीचे की खड्गासन प्रतिमाएँ विशाल है। कहते है पुराने मंदिर के स्थान पर नया मंदिर बना है, किन्तु प्रतिमाएँ प्राय· सम्वत् 2008 की ही प्रतिष्ठित है। यहाँ एक चरण चौकी भी है।

मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है जिसमें पद्मावती जी तथा क्षेत्रपाल जी की प्रतिमा जिन मंदिर के बाहर स्थित है। मंदिर निर्माण के सम्बन्ध में एक बड़ा शिलालेख मंदिर के चौक मे लगा हुआ है।

मंदिर की अचल सम्पत्ति के रूप मे एक दुकान, एक धर्मशाला जिसमें 12 कमरे तथा एक बड़ा हाल है, मंदिर मे एक कुआ भी है। इसके अतिरिक्त एक नोहरा 1500 वर्ग गज का दरोबस्त भी है। मंदिर में चांदी की पालकी तथा 2 शामियाना भी है। नोहरे के सम्बन्ध में मुकदमा चल रहा है।

मंदिर मे कई बार चोर चोरी करने को आये किन्तु अतिशय के कारण चोरी नहीं कर सके।

मंदिर में हस्तलिखित ग्रन्थ नहीं है किन्तु मुद्रित ग्रन्थों की संख्या लगभग 150 है। दो बार शास्त्र सभा होती है। पुरुष एवं महिलाएँ अलग-अलग शास्त्र प्रवचन करते हैं। महावीर जयन्ती के अवसर पर वार्षिक मेला एवं उत्सव होता है।

मंदिर कलापूर्ण है। दूर से ही आकर्षित करता है। मंदिर भव्य एवं विशाल संगमरमर का बना है। दो प्रवेश द्वार हैं। मंदिर की कुर्सी ऊंची है तथा एक ओर के तिबारे में लगभग 15 भित्ति चित्र है जो प्राय: 108 आचार्य शांतिसागर जी एवं उनके संघस्थ मुनि एवं आर्यिका माताओ के हैं। तीन लोक तथा अन्य तीर्थ क्षेत्रों के भी कलापूर्ण भित्ति चित्र है।

मंदिर का प्रबन्ध समाज द्वारा चुनी हुई प्रबन्ध समिति करती है जिसके अध्यक्ष श्री सौभागमल रांवका है। मंदिर साफ-सुथरा और सुन्दर है।

12. श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ नसियाँ, फुलेरा

यह नसियाँ फुलेरा से बाहर जोबनेर रोड़ पर स्थित है। इसका निर्माण 105 श्री क्षुल्लक सिद्धसागरजी महाराज की प्रेरणा से दिगम्बर जैन समाज फुलेरा ने सन् 1992 ई. में कराया था। इसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की सन् 1992 की ही प्रतिष्ठित है। इसमे एक वेदी है जिसमें एक धातु की प्रतिमा तथा एक यंत्र विराजमान है। मंदिर की आम्नाय बीसपंथ व तेरहपंथ दोनो ही है।

नसियाँ के अहाते में 108 मुनि श्री निर्वाणसागरजी महाराज की सन् 1986 मे निर्मित समाधि छतरी है। माली को दो कमरे रहने एवं सुरक्षा हेतु दे रखे है।

जून माह में प्रतिवर्ष यहाँ मेला भरता है। यहाँ के मुख्य प्रबन्धक श्री सौभागमल जैन है।

13. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, आसलपुर

आसलपुर, जयपुर-अजमेर सड़क मार्ग पर महलों से पूर्व की ओर 13 किलोमीटर दूर है तथा रेलवे स्टेशन आसलपुर जोबनेर के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो लगभग 100 वर्ष से पूर्व का है और जिसका निर्माण आसलपुर दि. जैन समाज ने कराया है। मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है जो सम्वत् 1948 की प्रतिष्ठित है। नया मंदिर पुराने मंदिर के स्थान पर बनाया गया है। मंदिर मे एक वेदी तथा दो आल्या हैं जिनमें 10 धातु तथा 3 पाषाण की कुल 13 प्रतिमाएँ एवं 11 यंत्र विराजमान हैं। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा एक पद्मावती जी की प्रतिमा भी है।

यहाँ दिगम्बर जैनों के 10 परिवार हैं। मंदिर की व्यवस्था समाज द्वारा चुनी हुई कमेटी द्वारा की जाती है।

मंदिर की अचल सम्पत्ति के रूप में 2 धर्मशालाएँ (जैन भवन) हैं। मंदिर में एक बार चोरी हुई जिसमें चांदी का एक छत्र चोरी हो गया, पुलिस में रिपोर्ट की गई किन्तु बरामदगी नही हुई है।

मंदिर कलापूर्ण है। यहाँ भित्ति चित्रो का सुन्दर चित्रांकन है। स्वाध्याय हेतु मुद्रित 10 ग्रन्थ हैं। आर्थिक स्थिति सामान्य है। मंदिर के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र कुमार जैन तथा मंत्री श्री जयकुमार पाटनी हैं।

14. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर छोटा, करणसर

करणसर ग्राम जयपुर से कालवाड़ रोड़ पर आगे 45 किलोमीटर दूर है। यहाँ दो दिगम्बर जैन मंदिर है, एक छोटा तथा दूसरा आदिनाथ का। छोटे मंदिर का निर्माण लगभग 200 वर्ष पूर्व दिगम्बर जैन समाज करणसर ने कराया था। इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1619 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में एक वेदी है जिसमें 6 धातु तथा 2 पाषाण की कुल 8 प्रतिमाएँ एवं 3 यंत्र हैं। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1619 की है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा क्षेत्रपाल जी स्थापित हैं।

यहाँ 3 जैन घर हैं। मंदिर का प्रबन्ध समाज द्वारा किया जाता है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री पदमचन्द काला है।

अचल सम्पत्ति के रूप में मंदिर परिसर के सामने ही 200 वर्ग गज जमीन है। मंदिर की आर्थिक स्थिति सामान्य है।

15. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर आदिनाथजी, करणसर

करणसर का दूसरा दिगम्बर जैन मंदिर भगवान आदिनाथजी का है। इसका निर्माण लगभग 200 वर्ष पूर्व दिगम्बर जैन समाज हिंगोणिया ने कराया बताया। श्री भंवरलाल जी न्यायातीर्थ के उल्लेखानुसार इसका निर्माण भादवा ग्राम निवासी करणसर ठिकाने के किसी जैन कामदार ने करवाया था। निर्माण सम्बन्धी पूर्ण प्रमाण कोई उपलब्ध नहीं है।

मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमें 5 धातु तथा 3 पाषाण की कुल 8 प्रतिमाएँ एवं 4 यंत्र हैं। मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है। मंदिर सुन्दर है।

मंदिर की व्यवस्था समाज द्वारा ही की जाती है जिसके प्रमुख श्री महेन्द्रकुमार पाटनी, श्री पदमचन्द काला एवं श्री सोहनलाल गंगवाल हैं।

16. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, काचरोदा

काचरोदा जयपुर से बंधे के बालाजी-बोराज होकर 5 किलोमीटर तथा फुलेरा स्टेशन से 2 किलोमीटर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो लगभग 200 वर्ष पुराना है तथा काचरोदा दि. जैन समाज द्वारा बनवाया हुआ है। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है जो सम्वत् 1826 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में दो वेदियाँ हैं जिनमें 1 धातु तथा 5 पाषाण की कुल 6 प्रतिमाएँ एवं 2 यंत्र है। एक पंचमेरू भी है।

मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। यहाँ पहिले कई जैन घर थे किन्तु अब एक भी नहीं है। पूजा-प्रक्षाल फुलेरा के श्री भागचन्द बड़जात्या एवं श्री शांतिलाल काला आकर करते हैं। मुख्य प्रबन्धक श्री भागचन्द बड़जात्या हैं।

अचल सम्पत्ति के रूप में मंदिर के नीचे 4 दुकानें उनके आगे एक भूखण्ड 22×13 फुट का है जो खाली है तथा कुआ है। दुकान के आगे भी जमीन है। इस पर अन्य का कब्जा है, जिसका मुदकमा चल रहा है। यहाँ आसोज बुदी 2 को फुलेरा की जैन समाज एकत्रित होती है और उत्सव मनाती है। काचरोदा फुलेरा से भी पहिले का गाँव है।

17. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, किशनगढ़

फुलेरा तहसील मे किशनगढ़, किशनगढ़ रेनवाल के नाम से प्रसिद्ध भी है। यह रेनवाल से करीब एक किलोमीटर है। यह पुराना ग्राम है जहाँ लगभग 700 वर्ष पुराना एक दिगम्बर जैन मंदिर है। यहाँ एक ही दिगम्बर जैन घर है। मंदिर दि. जैन समाज द्वारा निर्मित है तथा भगवान आदिनाथ की मूलनायक प्रतिमा है। मंदिर में एक वेदी है तथा एक समवसरण है जिनमें कुल 3 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र विराजमान है। मंदिर तेरह पंथ आम्नाय का है। इसका प्रबन्ध दिगम्बर जैन मंदिर रेनवाल की कमेटी द्वारा किया जाता है।

अचल सम्पत्ति के रूप में एक नोहरा है। मंदिर की आर्थिक स्थिति सामान्य है। मंदिर के मुख्य प्रबन्धक श्री गुलाबचन्द गंगवाल हैं।

18. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, खंडेल

खण्डेल, जयपुर से वाया फुलेरा व सांभर 65 किलोमीटर दूर है तथा रेलवे स्टेशन से खण्डेल एक किलोमीटर दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो दिगम्बर जैन समाज खण्डेल द्वारा लगभग 200 वर्ष पूर्व निर्माण करवाया गया था। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1948 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमे 7 धातु तथा 10 पाषाण की

कुल 17 प्रतिमाएँ एवं 5 यंत्र हैं। मंदिर में सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1826 की है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। खण्डेल मे 4 दिगम्बर जैन घर हैं।

मंदिर की अचल सम्पत्ति के रूप मे 3 दुकानें है। मंदिर कलापूर्ण है। प्रवेश द्वार तथा जिन मंदिर की वेदी पर गुम्बज है तथा उन पर कलश लगे हैं। शास्त्र भण्डार में 30 हस्तलिखित ग्रन्थ है जिनमे सबसे प्राचीन सम्वत् 1737 का है।

मंदिर की आर्थिक स्थिति ठीक है। मंदिर के मुख्य प्रबन्धक श्री लादूलाल रावंका हैं।

19. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, चारणवास

चारणवास, सांगा का वास से 2 किलोमीटर तथा जयपुर से कालवाड़ वाया हिंगोनिया करणसर 50 किलोमीटर दूर है। मु0 चारणवास, पो0 करणसर है। रेलवे स्टेशन रेनवाल है।

यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण गांव बसने के साथ ही दि. जैन समाज चारणवास ने कराया था। मूलनायक प्रतिमा सम्वत् 1683 की प्रतिष्ठित है, किन्तु चिन्ह नही ज्ञात होने से किस तीर्थकर की है पता नही लगता। मंदिर में एक वेदी है जिसमे धातु की तीन प्रतिमाएँ तथा 5 यंत्र है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1503 की है। पहिले यहाँ 3-4 परिवार थे, किन्तु अब एक ही गंगवाल गोत्रीय परिवार है।

मंदिर अच्छा बना हुआ है जिसकी व्यवस्था श्री ओमप्रकाश गंगवाल करते हैं।

20. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, चारणवास (द्वितीय)

फुलेरा तहसील का यह दूसरा चारणवास गांव है जो जोबनेर के पास ही है। यहाँ जोबनेर से जाया जा सकता है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर (चैत्यालय) है जिसका निर्माण दि. जैन समाज चारणवास ने कुछ समय पूर्व कराया है। मंदिर में एक ही वेदी है जिसमे भगवान पार्श्वनाथ की मूलनायक एक ही प्रतिमा तथा एक ही यंत्र विराजमान है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

चारणवास में एक ही जैन घर है जो चैत्यालय की व्यवस्था करता है। मुख्य व्यवस्थापक श्री रतनलाल गंगवाल हैं।

21. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, जूनसिया

जूनसिया जयपुर से सड़क मार्ग से 70 किलोमीटर दूर है। यहाँ का रेलवे स्टेशन बयाल है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो जूनसिया दिगम्बर जैन समाज द्वारा लगभग 250 वर्ष पूर्व बनाया हुआ बताते हैं। मंदिर में मूलनायक

प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है जो सम्वत् 1826 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में एक छोटी-सी वेदी है जिसमें एक धातु तथा दो पाषाण की कुल तीन प्रतिमाएँ हैं। यंत्र नहीं है। मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा वर्तमान मे दो जैन घर हैं। मंदिर जीर्ण-अवस्था में है। व्यवस्था समाज द्वारा की जाती है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री सूरजमल गंगवाल हैं।

22. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, जैतपुरा

जैतपुरा, जयपुर से वाया जोबनेर 45 कि.मी. दूर है। यहाँ का पोस्ट ऑफिस खंडेल वाया सांभर है।

यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण 200 वर्ष पूर्व दिगम्बर जैन समाज जैतपुरा ने करवाया था। इसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है जो सम्वत् 1948 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमें 2 धातु तथा 5 पाषाण की कुल 7 प्रतिमाएँ एवं 2 यंत्र है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। यहाँ खंडित प्रतिमाएँ भी हैं जिन्हें पृथक से रखा हुआ है।

जैतपुरा में 2 दिगम्बर जैन घर हैं। मंदिर के मुख्य प्रबन्धक श्री चांदमल काला है। मंदिर के बाहर एक ढ़का हुआ कुआ है। मंदिर की वेदी कलापूर्ण है। आर्थिक स्थिति ठीक है।

जोबनेर:

जयपुर जिला के सांभर उपखण्ड की फुलेरा तहसील का जोबनेर एक अच्छा कस्बा है जो सभी आधुनिक सुविधाओं से युक्त है। इसे ग्रन्थों में जोबनपुर के नाम से भी अंकित किया गया है। यह शाकंभरी प्रदेश का सुन्दर गांव है। यहाँ गढ़ भी है। यह जयपुर से झोटवाड़ा - कालवाड़ होते हुए सड़क मार्ग से 44 किलोमीटर तथा अजमेर-फुलेरा रेलवे लाइन पर आसलपुर स्टेशन से 7 किलोमीटर दूर है। यहाँ के जागीरदार ठाकुर नरेन्द्र सिंह जी अच्छे इतिहासकार थे जिन्होंने जयपुर राज्य का इतिहास भी लिखा है।

जोबनेर में 60 दिगम्बर जैन परिवार हैं। यहाँ 5 दिगम्बर जैन मंदिर हैं जिनमें एक 'महावीर चैत्यालय' गांव के बाहर दिगम्बर जैन गुरुकुल में है।

23. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पाण्ड्याजी (ठोलियान), जोबनेर

इस मंदिर का निर्माण जैन समाज जोबनेर द्वारा लगभग 200 वर्ष पूर्व कराया गया था। यह मंदिर पाण्ड्याजी उर्फ ठोलियान कहलाता है। इससे पता चलता है कि निर्माण में प्रमुख हाथ ठोलियों का हो सकता है। इसमें मूलनायक

प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है जो सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में 6 वेदियाँ हैं जिनमें 41 धातु तथा 13 पाषाण की कुल 54 प्रतिमाएँ एवं 18 यंत्र हैं। मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है। जिन मंदिर के प्रवेश द्वार के बाहर क्षेत्रपालजी स्थापित हैं। मंदिर में एक तरफ समवसरण में भी प्रतिमाएँ विराजमान हैं।

मंदिर का प्रबन्ध चुनी हुई कमेटी द्वारा किया जाता है जिसके अध्यक्ष श्री चोथमल ठोलिया एवं मंत्री श्री महावीर प्रसाद बड़जात्या कामदार है। अचल सम्पत्ति के रूप में महावीर भवन (धर्मशाला) एक, मकान दो तथा एक दुकान है। महावीर भवन मे 17 कमरें, 2 हाल, एक बरामदा, एक स्टेज तथा एक कुआ भी है।

शास्त्र भण्डार मे हस्तलिखित 59 ग्रन्थ व गुटके है जिनकी विस्तृत सूची बनी हुई है। सभी ग्रन्थ सुरक्षित हैं।

रात्रि में शास्त्रसभा होती है जिसमें श्री मोतीलाल शास्त्री प्रवचन करते है।

मंदिर की आर्थिक स्थिति संतोषजनक है। मंदिर कलापूर्ण है, प्रवेश द्वार पर छत्री बनी हुई है। द्वार सुन्दर है तथा चौक दुछत्ता है।

24. श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर, जोबनेर

इस मंदिर का निर्माण जोबनेर जैन समाज ने लगभग 300 वर्ष पूर्व कराया था। इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1950 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में 3 वेदियाँ हैं जिनमें 8 धातु तथा 8 पाषाण की कुल 16 प्रतिमाएँ एवं 4 यंत्र हैं। धातु की प्रतिमाओ में एक सिद्धों, 2 चौबीसी, एक पद्मावती तथा एक नंदीश्वर की भी है। मंदिर तेरहपंथी आम्नाय का है।

मंदिर की अचल सम्पत्ति के रूप मे 3 दुकाने, एक नोहरा तथा एक कुआ है। मंदिर मे तीन बार चोरी हुई है। एक बार चोरी का माल मिल गया। शेष दो का नहीं मिला है।

आर्थिक स्थिति संतोषजनक है। मंदिर का प्रबन्ध चुनी हुई कमेटी द्वारा किया जाता है जिसके मंत्री श्री भागचन्द गंगवाल चारणवास वाले है।

25. श्री दिगम्बर जैन बहत्तर जिन चैत्यालय मन्दिर, जोबनेर

इस मंदिर का निर्माण दि. जैन समाज जोबनेर द्वारा लगभग 250 वर्ष पूर्व कराया गया था। मूलनायक प्रतिमा भगवान शांतिनाथ की है जो सम्वत् 1935 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में 2 वेदियाँ हैं जिनमें 9 धातु तथा 8 पाषाण की कुल 17 प्रतिमाएँ एवं 5 यंत्र हैं। धातु की प्रतिमाओं में एक सर्वतोभद्र, 2 चौबीसी तथा एक सिद्धों की भी है। सबसे प्राचीन प्रतिमा तीन चौबीसी (72 जिन

चैत्यालय) की है जो सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है। इसी से यह मंदिर बहत्तर जिन चैत्यालय कहलाता है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा क्षेत्रपाल प्रतिमा स्थापित है!

आर्थिक स्थिति ठीक है। मंदिर का प्रबन्ध समाज द्वारा चुनी हुई कमेटी करती है जिसके प्रमुख श्री महावीरप्रसाद पाटनी आसलपुर वाले तथा मंत्री श्री सुरेशकुमार हैं।

26. श्री दिगम्बर जैन महावीर चैत्यालय गुरुकुल, जोबनेर

यह गुरुकुल चैत्यालय गांव से बाहर निर्मित है। आर्यिका विशुद्धमति जी माताजी की प्रेरणा से श्री सुगनचन्द जी बडजात्या एवं उनके परिवार वालो ने वीर निर्वाण सम्वत् 2503 में इसका निर्माण कराया था। गुरुकुल का निर्माण दिगम्बर जैन समाज जोबनेर ने करवाया। मूलनायक प्रतिमा भगवान महावीर स्वामी की है जो पांड्याजी के मंदिर से लायी हुई है तथा वीर निर्वाण सम्वत् 2463 की प्रतिष्ठित है।

चैत्यालय मे एक वेदी है जिसमे 4 धातु तथा एक पाषाण की कुल 5 प्रतिमाएँ एवं 5 यंत्र है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा पद्मावती जी एवं क्षेत्रपाल जी की प्रतिमाएँ भी है।

यह चैत्यालय गुरुकुल की ऊपरी मंजिल में बना हुआ है। चैत्यालय के दोनों ओर 2 बड़े कमरे हैं। नीचे गुरुकुल के बड़े हाल तथा दोनो और बरामदों में कमरे बने हैं जिनमे गुरुकुल चलता है। यहाँ एक कुआ भी है। स्थान बहुत सुन्दर है तथा बगीचा भी है।

यहाँ की व्यवस्था पांड्याजी के मंदिर की कमेटी ही करती है जिसके प्रमुख श्री महावीरप्रसाद बड़जात्या कामदार है।

27. श्री दिगम्बर जैन महावीर चैत्यालय, नया बाजार

यह चैत्यालय नया बाजार में स्थित है, इसका निर्माण श्री महावीरप्रसाद जी गंगवाल ने सन् 1986 मे कराया था। इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान महावीर की वीर निर्वाण सम्वत् 2506 की प्रतिष्ठित है। चैत्यालय में प्रतिमा एक लकड़ी की वेदी में विराजमान है। यहाँ एक प्रतिमा तथा 2 यंत्र है।

चैत्यालय बीसपंथ आम्नाय का निजी है जिसकी व्यवस्था श्री महावीरप्रसाद गंगवाल स्वयं करते हैं।

28. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, छोटी डूँगरी

कालाडेरा-रेनवाल रोड़ पर छोटी डूँगरी ग्राम है जो जयपुर जिले की फुलेरा तहसील में है। इसी के सामने बड़ी डूँगरी है। छोटी डूँगरी में एक कमरें में दिगम्बर जैन मंदिर है। लगभग 200 वर्ष पूर्व पाटनी परिवार द्वारा इसका निर्माण कराया बताया। इसमें एक वेदी है जिसमें 8 धातु तथा 3 पाषाण की कुल 11 प्रतिमाएँ एवं 4 यंत्र हैं। मूलनायक प्रतिमा भगवान सुपार्श्वनाथ की है। मंदिर बीस पंथी है। जैन समाज के दो घर है, किन्तु पूजा प्रक्षाल नियमित रूप से नहीं होती। मंदिर जीर्ण-अवस्था में है। इसके प्रबन्धक श्री केसरीमल जैन हैं।

विशेष:- यहाँ से एक डेढ़ किलोमीटर पर पाटनियों की एक सती माता का चबूतरा है जिस पर घुमटी बनी है। पाटनी परिवार के लोग यहाँ जात देने के लिए जाते हैं।

29. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, बड़ी डूंगरी

छोटी डूँगरी के सामने ही बड़ी डूँगरी है। बड़ी डूँगरी मे एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण लगभग 150 वर्ष पूर्व यहाँ की दि. जैन समाज ने कराया था। मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1861 की प्रतिष्ठित है। मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है। इसमे एक वेदी मे 2 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र है।

वर्ममान मे यहाँ का प्रबन्ध श्री मूलचन्द जैन देखते है। मंदिर का जीर्णोद्धार हुआ है।

विशेष:- बताया गया है कि मंदिर में प्रतिदिन प्रक्षाल नहीं होता, क्योकि यहाँ शुद्ध जल की समस्या है।

30. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, ढाणी बोराज

ढाणी बोराज जोबनेर से एक किलोमीटर दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसे कब और किसने बनाया कोई पता नहीं है। मूलनायक प्रतिमा भगवान महावीर स्वामी की है जो सम्वत् 1826 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमें 3 धातु तथा 9 पाषाण की कुल 12 प्रतिमाएँ है। मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है। यहाँ दिगम्बर जैनो के 7 घर है। मंदिर की व्यवस्था समाज द्वारा की जाती है।

मंदिर की अचल सम्पत्ति के रूप मे एक धर्मशाला तथा एक दुकान है। मंदिर में कुछ हस्तलिखित भी ग्रन्थ है। मंदिर सामान्य है तथा स्थिति साधारण है। मंदिर के मुख्य प्रबन्धकर्ता श्री सुरेशचन्द जैन हैं।

31. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, परतापुरा

परतापुरा मंढा भीमसिंह से आधा किलोमीटर दूर है तथा जयपुर से वाया मंढा 60 किलोमीटर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो दि. जैन समाज परतापुरा द्वारा लगभग 200 वर्ष पूर्व का बनाया हुआ है। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1826 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में एक वेदी है जिसमें एक खड्गासन तथा एक पद्मासन धातु की 2 प्रतिमाएँ हैं। मंदिर तेरहपंथ आम्नाय का है। गांव में कोइ जैन घर नहीं है। पहिले 7-8 घर थे, पर अब एक भी नही है।

यहाँ की व्यवस्था दिगम्बर जैन मंदिर मंढा भीमसिंह के अधीन है।

32. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, परतापपुरा

परतापपुरा जयपुर से वाया जोबनेर 51 किलोमीटर दूर है। इसका पोस्ट ऑफिस जोरपुरा वाया जोबनेर है। यहाँ आसलपुर रेलवे स्टेशन से भी पहुंचा जा सकता है।

यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है। जिसका निर्माण लगभग 100 वर्ष पूर्व दिगम्बर जैन समाज भोजपुरा ने कराया था। मूलनायक प्रतिमा भगवान धर्मनाथ की है जो सम्वत् 1823 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमे एक पाषाण की प्रतिमा तथा एक यंत्र विराजमान है। मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा एक ही जैन घर है। मन्दिर का जीर्णोद्धार हुआ है।

मंदिर की देख-रेख जोबनेर के श्री अशोककुमार बाकलीवाल करते हैं।

33. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बड़ा, बधाल

बधाल जयपुर से सड़क से 70 किलोमीटर तथा रेलवे से वाया रींगस 85 किलोमीटर है। यहाँ दो दिगम्बर जैन मदिर है। एक बड़ा मंदिर कहलाता है जो प्राचीन है। बड़ा मंदिर का निर्माण बधाल दिगम्बर जैन समाज द्वारा लगभग 250 वर्ष पूर्व कराया गया था। इसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1673 की प्रतिष्ठित है। इस प्राचीन प्रतिमा पर लेख निम्न-प्रकार है ''सम्वत् 1673 वर्षे मांगसर सुदी 9 श्री मूलसंघे भट्टारक श्री धरचन्द देव साह माणिकचन्द गोधा एते परणमत साह अमरगड श्री जेसिंह जी-''

मंदिर मे तीन वेदियाँ है जिनमे 7 धातु तथा 9 पाषाण की कुल 16 प्रतिमाएँ एवं 4 यंत्र है। मंदिर मे महावीर स्वामी की एक प्रतिमा 1548 की है तथा अन्य सम्वत् 1950 की रेवासा की प्रतिष्ठित है। मंदिर तेरह पथ आम्नाय का है तथा यहाँ 9 दिगम्बर जैन परिवार है।

अचल सम्पत्ति के रूप में मंदिर के नीचे ही 5 दुकानें, दो धर्मशालाएँ हैं जिनमें 10 कोटड़ियाँ व 12 कमरे हैं। एक नोहरा 30×60 फीट का है।

एक बार की चोरी में श्रीजी चोरी चले गये थे वे वापस प्राप्त हो गये। मंदिर कलापूर्ण है, अन्दर तथा बाहर सुन्दर भित्ति चित्र है। चौक दुछत्ता है। मंदिर में 20-30 हस्तलिखित ग्रन्थ हैं। पार्श्वनाथ पुराण तथा पुण्याश्रव-कथाकोष सं. 1789 की प्रतियाँ हैं। 40-50 मुद्रित ग्रन्थ हैं।

यहाँ एक खण्डित प्रतिमा भी है जो सुरक्षित रखी है। मंदिर का प्रबन्ध चुनी हुई कमेटी द्वारा किया जाता है। दोनों मंदिरों के मुख्य प्रबन्धक श्री इन्द्रचन्द्र काला ही है।

34. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महावीर स्वामी, बधाल

इस मंदिर का निर्माण बधाल दि. जैन समाज द्वारा 85 वर्ष पूर्व अर्थात् सम्वत् 1967 मे कराया गया था। यद्यपि मंदिर महावीर स्वामी के नाम से प्रसिद्ध है किन्तु मूलनायक प्रतिमा भगवान नेमिनाथ जी की है जो सम्वत् 1950 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में एक वेदी है जिसमे 2 धातु तथा 2 पाषाण की कुल 4 प्रतिमाएँ एवं यंत्र हैं। यहाँ पंचमेरू भी है। मंदिर की आम्नाय तेरहपंथ है।

इस मंदिर की तथा दूसरे बड़े मंदिर की व्यवस्था समाज द्वारा चुनी हुई एक ही कमेटी द्वारा की जाती है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री इन्द्रचन्द्र काला है।

अचल सम्पत्ति दोनों मंदिरो की ही है। मंदिर कलापूर्ण है। भित्ति चित्र अच्छे बने हुए है।

35. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, भादवा

भादवा ग्राम जयपुर से सड़क मार्ग द्वारा 70 किलोमीटर तथा रेलवे स्टेशन भैंसलाना (रीगस-फुलेरा लाइन पर) से तीन किलोमीटर दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर तथा चैत्यालय है। मंदिर का निर्माण भादवा दि. जैन समाज ने लगभग 200 वर्ष पूर्व कराया था। मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है जो सम्वत् 1861 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में तीन वेदियाँ है जिनमे 9 धातु तथा 11 पाषाण की कुल 20 प्रतिमाएँ एवं 5 यंत्र हैं। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1826 की है। मंदिर तेरह पंथ आम्नाय का है। यहाँ 20 दिगम्बर जैनों के घर है।

मंदिर की अचल सम्पत्ति के रूप में एक दुकान तथा एक जैन भवन जिसमें एक हाल तथा 6 कमरे हैं। मण्डल विधान पूजा हेतु मांडने की एक कलात्मक बारहदरी लकड़ी की है।

मंदिर के शास्त्र भण्डार मे 20 हस्तलिखित तथा 130 मुद्रित पुस्तकें एवं ग्रन्थ हैं। सबकी सूची बनी हुई है। सबसे प्राचीन ग्रंथ सम्वत् 1616 तथा 1631 की है।

मंदिर के चौक पर गुम्बज है। मूल वेदी के तीनों ओर पीतल की जालीदार सुन्दर कलात्मक किंवाड़ जोड़ियाँ है।

मंदिर की व्यवस्था समाज द्वारा की जाती है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री महावीरप्रसाद पाटोदी हैं।

विशेष:- जैन समाज के प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान स्व. पं चैनसुखदास जी न्यायतीर्थ भादवा निवासी ही थे। समाज सेवी प्रसिद्ध पं सत्यन्धर कुमार सेठी उज्जैन वाले भी भादवा के ही है।

36. श्री दिगम्बर जैन चैत्यालय (मन्दिर), भादवा

भादवा के इस दिगम्बर जैन चैत्यालय (मंदिर) की स्थापना जैन समाज भादवा द्वारा सम्वत् 1992 मे की गई। इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है जो वि.नि.सं. 2477 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमे 4 धातु तथा 3 पाषाण की कुल 7 प्रतिमाऐं एवं 5 यंत्र है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1935 की है। मंदिर तेरहपंथ आम्नाय का है।

चैत्यालय की वेदी कलापूर्ण है। सोने की छपाई का काम हो रहा है।

इस चैत्यालय की व्यवस्था श्री कुन्दनमल पांड्या करते हैं।

मदिर की अचल सम्पत्ति के रूप मे पार्श्वनाथ भवन (धर्मशाला) जिसमें 5 कमरे, खाली प्लाट मंदिर के बराबर 20×70 वर्ग फीट तथा बिहारी में 5 कमरे हैं। स्वाध्याय हेतु 3-4 हस्तलिखित ग्रन्थ है।

37. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, भैंसलाना

भैंसलाना जयपुर से सड़क मार्ग पर वाया जोबनेर तथा फुलेरा होकर 65 किलोमीटर दूर है। रीगस फुलेरा रेलवे लाइन पर भैंसलाना रेलवे स्टेशन भी है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो लगभग 200 वर्ष पूर्व भैंसलाना दिगम्बर जैन समाज द्वारा बनाया हुआ है। मंदिर में खम्बे पर एक लेख सम्वत् 1860 का भट्टारक भवनकीर्ति जी का है। मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान पदमप्रभ की है जो सम्वत् 1861 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में 3 वेदियाँ है जिनमें से दो में ही 32 धातु की तथा 15 पाषाण की कुल 47 प्रतिमाएँ एवं 15 यंत्र विराजमान हैं। तीसरी वेदी खाली है। पाषाण की प्रतिमाओं मे एक प्रस्तर खण्ड पर दो और 4-4 मूर्तियाँ हैं। धातु की प्रतिमाओं मे एक सिद्ध प्रतिमा तथा एक चौमुखी है।

प्रतिमाओं मे सबसे प्राचीन प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की सम्वत् 1548 की तथा यंत्रों मे सबसे प्राचीन यंत्र सम्वत् 1504 का है। मंदिर तेरह पंथी आम्नाय का है। यहाँ 11 दिगम्बर जैन परिवार हैं।

अचल सम्पत्ति के रूप मे एक धर्मशाला जिसमें 9 कमरें, एक नोहरा तथा एक खाली प्लाट है।

मंदिर की मूल वेदी कलापूर्ण है, कुराई का अच्छा काम है। चौक दुछत्ता है। हस्तलिखित 3-4 ग्रन्थ हैं तथा 5-7 मुद्रित है। मंदिर का प्रबन्ध समाज द्वारा किया जाता है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री नवरतनमल पाटनी हैं।

38. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, भोजपुरा

भोजपुरा जयपुर से वाया जोबनेर 48 किलोमीटर दूर है। जयपुर से हिंगोणिया होकर 40 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण दि. जैन समाज द्वारा लगभग 250 वर्ष पूर्व कराया बताते हैं। मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमे 2 धातु तथा एक पाषाण की कुल 3 प्रतिमाएँ एवं यंत्र है।

मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। यहाँ जैन समाज का वर्तमान मे कोई घर नहीं है। पूजा-प्रक्षाल यदा कदा जोबनेर से आकर ही करते हैं।

सार संभाल की व्यवस्था जोबनरे के श्री महावीरकुमार पाटनी करते है।

39. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, मंढा भीमसिंह

मंढा भीमसिंह अच्छा गांव है। यहाँ एक पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण लगभग 200 वर्ष पूर्व यहाँ की दिगम्बर जैन समाज द्वारा कराया गया है। यहाँ मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है। मंदिर मे 3 वेदियाँ है जिनमें 21 धातु, 12 पाषाण तथा एक बिल्लौर की 34 प्रतिमाएँ एवं 3 यंत्र हैं। मंदिर की आम्नाय तेरहपंथ व बीसपंथ न होकर साढ़े सोलह पंथ की (मध्य की) बतलाई गई है।

यहाँ दिगम्बर जैनो के बीस घर हैं तथा पास के गांव सलहतीपुरा में 2 घर एवं सुकालपुरा में 3 घर हैं जो इसी पंचायत क्षेत्र मे है।

मंदिर का प्रबन्ध चुनी हुई कमेटी द्वारा होता है। मंदिर का क्षेत्रफल लगभग एक हजार वर्ग गज है तथा एक जैन भवन तथा 2 दुकानें इसके अन्तर्गत हैं। मंदिर मे चांदी की एक पालकी तथा अन्य छत्र-चँवर आदि उपकरण है।

मंदिर में तीन बार चोरी हो गई और पुलिस मे रिपोर्ट दर्ज कराई गई किन्तु कोई वस्तु बरामद नहीं हुई। एक चौमुखी प्रतिमा तथा एक समवसरण का गुम्बज चोरी गया था।

मंदिर कलापूर्ण है। चौक में प्राचीन भित्ति चित्र हैं। यहाँ स्वाध्याय हेतु 15 हस्तलिखित तथा कुछ मुद्रित ग्रन्थ हैं। यहाँ धातु की एक इंच की अवगाहना की 6 प्रतिमाएँ दर्शनीय हैं। मंदिर का जीर्णोद्धार हुआ है।

वर्तमान में प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्री हंसराज गोधा एवं मंत्री श्री लादूलाल ठोलिया हैं।

विशेष:- यहाँ से 1½ किलोमीटर दूर परतापुरा का मंदिर इसी प्रबन्ध समिति के अन्तर्गत है जहाँ एक धातु की प्रतिमा है। पचकोड़िया में भी एक मंदिर भवन है पूर्व में जहाँ एक ही प्रतिमा थी, अब नही है।

40. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, मुरलीपुरा

मुरलीपुरा जयपुर से जोबनेर तथा जोबनेर से 8 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण श्री गणेशलाल जी बड़जात्या ने सम्वत् 1995 में करवाया था। मूलनायक प्रतिमा भगवान मल्लिनाथ की सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है। एक वेदी है जिसमें 3 प्रतिमाएँ तथा एक यंत्र है। यह निजी मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

यहाँ केवल एक दिगम्बर जैन घर है। मंदिर का प्रबन्ध श्री हनुमानलाल बड़जात्या करते है। वैसे यह मंदिर दिगम्बर जैन पंचायत जगमालपुरा, मुरलीपुरा के तहत है।

मंदिर एक कमरे में है तथा आगे बरामदा है। इसका क्षेत्रफल 192 वर्ग गज का है। स्वाध्याय हेतु हस्तलिखित तथा मुद्रित ग्रन्थ हैं।

41. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, रामजीपुरा कलाँ

रामजीपुरा कलाँ जयपुर से 50 किलोमीटर दूर वाया कालवाड़, हिंगोनिया, रामजीपुरा है। रेलवे स्टेशन किशनगढ़-रेनवाल है।

यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण दि. जैन समाज द्वारा लगभग 500 वर्ष पूर्व कराया गया था। मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में एक वेदी है जिसमें 8 धातु की एवं एक पाषाण की कुल 9 प्रतिमाएँ हैं। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1548 की है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

गांव में एक ही जैन घर है जो मंदिर की व्यवस्था करता है। मुख्य प्रबन्धक श्री माणकचन्द रावंका हैं।

स्वाध्याय हेतु सम्वत् 1935 का हस्तलिखित 'रत्नकरण्ड श्रावकाचार' है।

42. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, रेनवाल

फुलेरा तहसील का रेनवाल (किशनगढ़-रेनवाल) अच्छा कस्बा है। यहाँ व्यापारिक मण्डी भी है। रीगस-फुलेरा रेलवे लाइन पर किशनगढ़-रेनवाल रेलवे स्टेशन है तथा जयपुर-फुलेरा सड़क से जुड़ा हुआ है।

यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण लगभग 150 वर्ष पूर्व दिगम्बर जैन समाज किशनगढ़ (रेनवाल) ने कराया है। मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1861 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में 5 वेदियाँ तथा एक ऊपर की मंजिल मे समवसरण है। मंदिर में कुल 57 प्रतिमाएँ एवं 19 यंत्र हैं। यहाँ दिगम्बर जैनो के 57 घर है। मंदिर तेरहपंथ आम्नाय का है जिसका प्रबन्ध चुनी हुई कमेटी द्वारा किया जाता है।

मंदिर की अचल सम्पत्ति के रूप मे 5 दुकानें, एक नोहरा तथा दो भवन है जिनमे एक मे जैन विद्यालय चल रहा है तथा एक मे जैन बोर्डिग भी है।

यहाँ 125 वर्ष प्राचीन सुन्दर रथ भी है जो जिनेन्द्र रथयात्रा समारोह मे काम आता है।

शास्त्र भण्डार मे हस्तलिखित ग्रन्थ 160 तथा 275 मुद्रित पुस्तके है। प्रतिदिन रात्रि मे शास्त्र सभा होती है।

मंदिर काफी विशाल एवं कलापूर्ण है। जिन मंदिर तथा चौक मे चारो ओर सुन्दर पौराणिक आख्यानो एवं तीर्थ क्षेत्रो के भित्ति चित्र है। चौक दुछत्ता है। चौक में कम से कम 500 व्यक्ति आराम से बैठ सकते है। मंदिर का प्रवेश द्वार अत्यधिक आकर्षक है तथा प्रवेश द्वार के ऊपर वाले वाले कमरे मे काँच की जड़ाई का सुन्दर समवसरण है। काँच की जड़ाई काम के पौराणिक आख्यानो के चित्र भी है। मंदिर में तीन वेदियो मे सोने की छपाई का आकर्षक काम है इसे काँच मंदिर भी कहा जावे तो कोई अतिशियोक्ति नही होगी।

भित्ति चित्रो मे नेमिनाथ जी की बारात, षट्-लेश्या दर्शन, ससार दर्शन, 16 स्वप्न, सीता की अग्नि परीक्षा, मुनि श्री विद्यासागर जी एवं उनके गुरु आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज के भित्ति चित्र बहुत ही सुन्दर बनवाये है।

मंदिर की आर्थिक स्थिति अच्छी है तथा प्रतिवर्ष भाद्रपद मास समाप्त होने पर मेला व उत्सव होता है। यहाँ के मुख्य प्रबन्धक श्री गुलाबचन्द गंगवाल है।

43. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, रोजड़ी

रोजड़ी जयपुर से वाया बोराज 47 किलोमीटर तथा रेलवे स्टेशन हिरनोदा से 2 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो रोजड़ी दि.जैन

समाज द्वारा लगभग 250 वर्ष पूर्व बनवाया गया था। मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है जो सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में एक वेदी है जिसमें 3 धातु तथा 2 पाषाण की कुल 5 प्रतिमाएँ तथा एक यंत्र है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। पहिले कई जैन घर थे, किन्तु अब एक भी जैन घर नही है।

अचल सम्पत्ति के रूप में मंदिर के नीचे 4 दुकानें हैं। मंदिर अत्यन्त कलापूर्ण है। वेदी पर सोने की छपाई का कार्य है। बड़ा गुम्बज है तथा अनेक भित्ति चित्र है।

मंदिर का प्रबन्ध श्री भागचन्द बड़जात्या रोजड़ी वाले हाल निवासी फुलेरा ही करते है। पूजा-प्रक्षाल नियमित नहीं है जो अपेक्षित है।

44. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, लूणियावास

लूणियावास जयपुर से सड़क मार्ग से 77 किलोमीटर तथा रेलमार्ग से वाया रीगस-बघास स्टेशन से 5 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक विशाल एवं आकर्षक दिगम्बर जैन मंदिर है। जिसका निर्माण लगभग 250 वर्ष पूर्व श्री नेमीचन्द जी काला इन्दौर वालों ने कराया था। यहाँ मूलनायक प्रतिमा श्या[illegible] पाषाण की भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1850 की [illegible]ष्ठित है। मंदिर मे तीन वेदियाँ है जिनमे 2 धातु तथा 9 पाषाण की कुल [illegible]तिमाएँ एवं 4 यंत्र है। यंत्रो मे एक ऋषि मण्डल यंत्र है। मंदिर तेरहपंथ आम्नाय का है। यहाँ पहिले जैनो के कोई दस घर थे, अब केवल तीन घर है।

मंदिर के बाहर एक शिलालेख लगा है जिसमें लिखा है:-

''इस चौतरे की थलियों को कोई ऊंट, घोड़ा, भैस बांधेगा उसको [illegible]न धर्म की सौगन्ध है। जो बांधेगा थली टूटी तो 51/-रु देने होंगे। श्री दिगम्बर जैन मंदिर लूणियावास सम्वत् 2009।''

अचल सम्पत्ति के रूप मे मंदिर के नीचे 6 दुकानें, बाजार मे 4 दुकाने, एक धर्मशाला जिसमें 7 कमरे, एक कुआ (सूखा हुआ), एक 4 कमरो की हवेली जो दूसरे के कब्जे मे है।

मंदिर कलापूर्ण एवं भव्य है। दरवाजा तथा अगवार वगैरह सभी संगमरमर के बने है। तीन वेदियाँ कलापूर्ण है तथा चौक दुछत्ता है।

यहाँ लगभग 40 हस्तलिखित ग्रन्थ हैं जिनमें 'आदिपुराण' पृ.सं. 651 का सम्वत् 1824 का लिखा हुआ है। यहाँ का प्रबन्ध समाज द्वारा किया जाता है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री भंवरलाल बड़जात्या हैं।

यहाँ ज्येष्ठ कृष्णा एकम सम्वत् 1994 में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हुई थी।

मंदिर के नीचे एक तलघर भी बताते हैं। दरवाजे का पता नही कहीं आगे जाकर खुलता है। मंदिर स्वच्छ एवं सुन्दर है।

विशेष:- वि.सं. 1994 में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा आचार्य श्री शांतिसागरजी के सानिध्य में हुई थी। इस अवसर पर मुनि श्री चन्द्र सागर जी महाराज के भाषण में पिंडशुद्धि शब्द के ऊपर बड़ा विवाद हुआ था।

45. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, सादूलपुरा

सादूलपुरा फुलेरा तहसील का एक छोटा ग्राम है। यह जयपुर से सड़क मार्ग से 60 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण दीवान शिवजीलाल छाबड़ा ने करवाया था। सादूलपुरा शिवजीलाल जी को जागीर में मिला हुआ था। जब वे गांव सम्भालने जाते थे और वहाँ ठहरते थे, इसी से उन्होंने यहाँ अपनी पूजा प्रक्षाल हेतु मंदिर बनवाया था। इन्हीं दीवानजी के वंशजों की हवेली किशनपोल बाजार जयपुर में स्थित है तथा दीवान शिवजी लाल के नाम से रास्ता भी है।

मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान महावीर स्वामी की पद्मासन श्वेत पाषाण की है। मंदिर में एक वेदी है जिसमें एक धातु तथा एक पाषाण की कुल दो प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

वर्तमान में यहाँ एक भी जैन घर नही है। पूजा-प्रक्षाल की व्यवस्था नहीं है। वैसे मंदिर की व्यवस्था फुलेरा निवासी श्री संतोषकुमार छाबड़ा करते हैं तथा वे ही यदा-कदा प्रक्षाल करते हैं। सफाई कतई नहीं है। यहाँ नियमित पूजा-प्रक्षाल व सार-संभाल अपेक्षित है।

46. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, सांगा का वास

सांगा का वास जयपुर से वाया रायथल 50 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो काफी बड़ा है। मंदिर का निर्माण लगभग 400 वर्ष पूर्व यहाँ की दि. जैन समाज ने कराया बताया है। मूलनायक प्रतिमा भगवान संभवनाथ की है जो सम्वत् 1826 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में दो वेदी हैं जिनमे 2 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र है। एक वेदी ऊपर है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1651 की श्याम पाषाण की सुमतिनाथ जी की है जो सम्वत् 2009 में जमीन से निकली हुई हैं। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

यहाँ दो जैन घर हैं वे ही मंदिर की व्यवस्था करते हैं। प्रमुख व्यवस्थापक श्री रतनलाल बिलाला है।

यहाँ से लगभग 20 वर्ष पहिले हुई चोरी मे 2 प्रतिमाएँ तथा एक यंत्र चोरी में चले गये।

47. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, सिणोदिया

सिणोदिया जयपुर से वाया जोबनेर 58 किलोमीटर दूर है। फुलेरा-रेवाड़ी रेलवे लाइन पर सिणोदिया रेलवे स्टेशन है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो दि. जैन समाज द्वारा लगभग 500 वर्ष पूर्व बनाया हुआ बताते है। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान महावीर स्वामी की है जो सम्वत् 1826 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में एक वेदी है जिसमें 5 धातु तथा 6 पाषाण की कुल 11 प्रतिमाएँ एवं 1 यंत्र है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1548 की है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। यहाँ दो जैन घर है। मंदिर की व्यवस्था श्री टीकमचन्द सौगानी करते हैं। अचल सम्पत्ति के रूप मे मंदिर मे ही एक कुआ है।

मंदिर में स्वाध्याय हेतु 50-60 छपी हुई पुस्तकें हैं। मंदिर कलापूर्ण है। भित्ति चित्र बने हुए है तथ पांच कलशयुक्त वेदी है।

48. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, हिरणोदा

फुलेरा तहसील मे हिरणोदा एक अच्छा कस्बा है यहाँ की आबादी लगभग 1800 की है। जयपुर से सड़क मार्ग से 45 किलोमीटर तथा रेलमार्ग से 48 किलोमीटर है। फुलेरा के पास ही हिरणोदा रेलवे स्टेशन है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो लगभग 100 वर्ष पहिले का बताया जाता है। इसका किसने और कब निर्माण कराया, कोई पता नहीं। मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की पद्मासन मुद्रा मे हरे पाषाण (ग्रेनाइट) की संवत् 1548 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे 3 वेदियाँ हैं जिनमें 5 धातु तथा 11 पाषाण की कुल 16 प्रतिमाएँ एवं 5 यंत्र हैं। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। क्षेत्रपाल प्रतिमा स्थापित है।

हिरणोदा मे 2 दिगम्बर जैन परिवार हैं। मंदिर का प्रबंध समाज द्वारा किया जाता है। मुख्य प्रबंधक श्री राजेन्द्रकुमार छाबड़ा है।

अचल सम्पत्ति के रूप में मंदिर के सामने तिबारा एवं खाली जमीन है। लगभग तीन-चार सौ वर्ग गज जमीन है। जीर्णोद्धार कार्य हुआ है।

मंदिर कलापूर्ण है। तिबारे मे रंगीन भित्ति चित्र है तथा जिन मंदिर मे वेदी के उपर गुम्बज में अच्छी चित्रकारी है।

यहाँ हस्तलिखित ग्रंथ भी हैं किन्तु उनके पृष्ठ बिखरे हुए हैं। उन्हें एकत्रित कर व्यवस्थित करने का महासंघ के सदस्यो ने प्रयास किया। मुद्रित ग्रंथ भी अव्यवस्थित हैं।

मंदिर के प्रवेश द्वार वाले गुम्बज पर निम्न प्रकार लेख अंकित है जो उल्लेखनीय है:-

"ई गुम्बज पर लाग्या दो कारीगरा का दिन 104, प्रथम वैशाख सुदी 15 बिसपतवार सम्वत् 1972 के दिन दो मई, गुम्बज तैयार किया। बड़ा गुम्बज में दो कारीगर का दिन लाग्या 108"

49. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, पचकोडिया

तहसील फुलेरा का ग्राम पचकोडिया मंढा भीमसिंह के पास है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसमें एक वेदी मे एक ही प्रतिमा विराजमान है। पहिले यहाँ जैन घर थे किन्तु अब यहाँ एक भी नही है। यह जानकारी मंढा भीमसिंह के दिगम्बर जैन मंदिर के प्रबन्धक श्री लाधूलाल ने दी है।

विशेष:- फुलेरा तहसील के निम्न ग्राम मंढा भीमसिंह के पास ही कुछ दूरी पर स्थित हैं जहाँ दिगम्बर जैन परिवार तो हैं किन्तु मंदिर नहीं है। यहाँ के जैन परिवार मंढा भीमसिंह के मंदिर में ही दर्शन करने जाते है और उसी मंदिर की पंचायत के अन्तर्गत है :- सुलहतीपुर और सुकालपुर।

इसी तहसील के निम्न गांवों मे पहिले दिगम्बर जैन मंदिर थे तथा जैन परिवार थे किन्तु अब न जैन मंदिर हैं न जैन घर।

1. **काजीपुरा** - काजीपुरा फुलेरा तहसील का एक गाँव है जहाँ अब न जैन घर है और न जैन मंदिर। पहिले दिगम्बर जैन मंदिर तथा जैन परिवार अवश्य थे।

2. **कालख** - कालख फुलेरा तहसील का ही गांव है जो जयपुर जोबनेर सड़क मार्ग पर है। यहाँ पहिले जैन मंदिर तथा जैन परिवार थे। अब न मंदिर है और न जैन परिवार। जयपुर मे नमक की मण्डी मे कालखवालो का चौक है।

3. **बोवास** - बोवास फुलेरा तहसील का एक गांव है जहां अब न जैन मंदिर है और न जैन घर। पहिले जैन मंदिर तथा जैन घर थे।

सुत्तम्मि जाणमाणो भवस्स भवणासणं च सो कुणदि।
सूई जहा असुत्ता णासदि सुत्त सहा णो वि।।

जैसे डोरे-रहित सूई खो जाती है तथा डोरे से युक्त सूई कभी नही खोती है, वैसे ही भव्य के लिए यह कहा गया है कि वह आगम को समझता हुआ ससार का नाश निश्चय ही करता है। — *णिग्गंठ पवयण*

तहसील - दूदू-मौजमाबाद
[28 गांवों में 36 मन्दिर]

जयपुर जिला के सांभर उपखंड का दूदू एक अच्छा कस्बा है जो जयपुर-अजमेर सड़क मार्ग पर जयपुर से 66 किलोमीटर दूर है। यह जयपुर-अजमेर के मध्य पड़ता है यहाँ से सांभर, फुलेरा, नारायना, मौजमाबाद, पचेवर, अजमेर, किशनगढ़ सभी ओर जाया जा सकता है। यहाँ तहसील हैड़ क्वाटर है, किन्तु तहसील दूदू-मौजमाबाद कहलाती है। यहाँ के अनेक जैन परिवार जयपुर जाकर बस गये है।

दूदू-मौजमाबाद तहसील के 28 गांवो में 36 दिगम्बर जैन मंदिर है, जिसमे 3 नसियां है।

दूदू:

वर्तमान में दूदू मे 60 दिगम्बर जैन परिवार है। जिनमे 15 दिगम्बर जैन परिवार बस स्टैण्ड पर हैं। दूदू में 3 दिगम्बर जैन मन्दिर है, जिनमें एक बस स्टैण्ड पर है, एक गांव मे तथा एक नसियाँ गांव से बाहर है।

1. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय छाबड़ान

यह मंदिर (चैत्यालय) बस स्टैण्ड दूदू पर है इसका निर्माण सन् 1978 मे श्री उम्मेदमल जी छाबड़ा दूदू वालो ने कराया। मंदिर अभी निर्माणाधीन है। वर्तमान मे चैत्यालय मकान मे नीचे विराजमान है तथा ऊपर विशाल मंदिर बना है जिसमें श्रीजी की बड़ी प्रतिमा विराजमान की जावेगी। इस मंदिर का निर्माण श्री उम्मेदमल जी ने मुनि श्री विवेक सागर जी महाराज की प्रेरणा से कराया है।

मंदिर (चैत्यालय) में मूलनायक प्रतिमा भगवान महावीर स्वामी की है जो विक्रम सम्वत् 2037 की प्रतिष्ठित है। इसमें एक वेदी है जिसमें एक प्रतिमा तथा एक यंत्र है। मंदिर तेरहपंथ आम्नाय का है।

मंदिर का प्रबन्ध श्री उम्मेदलाल छाबड़ा तथा उनके परिवार द्वारा ही किया जाता है। मंदिर के सामने ही श्री उम्मेदमल छाबड़ा का सुन्दर भवन एवं बगीचा है।

मन्दिर की अचल सम्पत्ति के रूप मे 4 दुकानें है। मंदिर की आर्थिक स्थिति ठीक है।

2. श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर

दूदू बस स्टेण्ड से 2 किलोमीटर दूर गांव में यह मंदिर है। इसका निर्माण यहाँ के दिगम्बर जैन बोहरा परिवार ने सम्वत् 1815 मे कराया था। इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है। जो सम्वत् 1200 या इसके आस-पास की है। प्रतिमा पर चिन्ह नहीं दिखाई देता किन्तु उसे आदिनाथ जी की ही कहते हैं। मंदिर मे कुल 9 वेदियाँ हैं जिनमें 42 धातु की तथा 33 पाषाण की कुल 75 प्रतिमाएँ एवं 26 यंत्र है। सबसे प्राचीन 3 प्रतिमाएँ सम्वत् 1200 लगभग की हैं। मंदिर तेरहपंथ आम्नाय का है, किन्तु एक आल्या में क्षेत्रपाल भी विराजमान हैं।

गांव में 45 दिगम्बर जैन परिवार है। मंदिर का प्रबन्ध समाज द्वारा किया जाता है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री भंवरलाल बोहरा (मास्टरजी) है।

अचल सम्पत्ति के रूप मे 4 दुकानें बाजार मे तथा 2 धर्मशालाएँ हैं जहाँ उत्सव विधानादि होते रहते है। एक धर्मशाला मे 8 कमरे, एक हाल तथा दूसरी में 6 कमरे एक हाल है। मंदिर में सभी आवश्यक सामान, बिछायते, पूजा के बर्तन, जीमन के बर्तन आदि हैं।

यहाँ लगभग 40 हस्तलिखित तथा 160 मुद्रित ग्रन्थ है। सभी आलमारियों में सुरक्षित हैं।

मंदिर कलापूर्ण है। वेदी मे सोने की कारीगरी का सुन्दर कार्य है। वेदी के आगे चबूतरा है तथा उस पर बड़ा गुम्बज है जिसमें चारों ओर 24 तीर्थंकरो के भित्ति चित्र हैं। मंदिर दुछत्ता है। पाषाण में सम्मेदशिखरजी का भाव चित्र उत्कीर्ण है। मंदिर मे श्वेत पाषाण की भगवान शांतिनाथ की पद्मासन प्रतिमा आकर्षक एवं चमत्कारी है।

3. श्री दिगम्बर जैन नसियाँ, दूदू

यह नसियाँ दूदू ग्राम से बाहर पश्चिम की ओर अजमेर दरवाजे से बाहर 2 किलोमीटर दूर है। रास्ते मे तालाब पड़ता है। तालाब की पाल पर से जाना पड़ता है। नसियाँ का निर्माण दिगम्बर जैन समाज दूदू द्वारा लगभग 350 वर्ष पूर्व कराया बताते हैं। इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की सम्वत् 1826 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमे एक धातु की चौबीसी तथा 2 पाषाण की कुल 3 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र है। मंदिर तेरह एवं बीसपंथ दोनो ही आम्नाय का है।

नसियाँ में बाहर मकान तथा चबूतरा, तिबारा एवं कुआ है और बड़ा दरवाजा है। अंदर चौक में जाकर निज मंदिर है। जिसकी वेदी कलापूर्ण है। काँच की जड़ाई का सुन्दर काम भी है।

यहाँ पोष कृष्णा एकादशी को मेला होता है जिसमे समाज के लोग आते है।

यहाँ का प्रबन्ध स्थानीय समाज द्वारा किया जात: है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री भंवरलाल बोहरा (मास्टरजी) हैं।

4. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, उगरियावास

उगरियावास अजमेर रोड़ पर महलाँ बोराज से 4 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण कब और किसने कराया कोई उल्लेख नहीं है। मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है। मंदिर में एक वेदी है जिसमें 18 धातु तथा 5 पाषाण की कुल 23 प्रतिमाएँ एवं 3 यंत्र हैं। इस मंदिर का वर्ष 1990-91 में जीर्णोद्धार कराया गया है और 16.5.91 को वेदी की प्रतिष्ठा हुई है।

मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। गांव में पांच दिगम्बर जैन परिवार है, वे ही मंदिर की व्यवस्था करते हैं।

अचल सम्पत्ति के रूप मे एक धर्मशाला, दो दुकाने, एक मकान तथा उसी के नीचे एक दुकान है। एक कुआ भी है जो सूख गया है। मंदिर में 40 वर्ष पूर्व चोरी हुई थी उसमे चांदी का सामान चोरी गया था जो वापस नहीं आया।

मंदिर में 9 हस्तलिखित ग्रन्थ हैं। मंदिर की आर्थिक स्थिति संतोषजनक है। मंदिर के प्रबन्धक श्री ताराचन्द जैन है।

यहाँ एक खण्डित प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की सम्वत् 1601 की है।

5. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, उरसेवा

ग्राम उरसेवा जयपुर से वाया दूदू होते हुए सेवा से आगे कच्चे मार्ग पर 87 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो उरसेवा जैन समाज द्वारा लगभग 300 वर्ष पूर्व बनाया हुआ बताते है। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है जो सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में एक वेदी है जिसमें 2 धातु तथा 4 पाषाण की कुल 6 प्रतिमाएँ एवं 2 यंत्र हैं। यह मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। यहाँ एक ही दिगम्बर जैन परिवार पाटनी गोत्रीय है। मंदिर का प्रबन्ध श्री 'भंवरलाल पाटनी करते हैं।

मन्दिर के अधीन कोई अचल सम्पत्ति नहीं है। यद्यपि मंदिर कलापूर्ण नहीं है किन्तु रख-रखाव एवं सफाई आदि की व्यवस्था सुन्दर है।

स्वाध्याय हेतु केवल एक हस्तलिखित ग्रन्थ है जो सम्वत् 1908 का लिखा हुआ है।

6. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कोटजैवर

कोटजैवर दूदू तहसील का लगभग 700 की जनसंख्या वाला एक ग्राम है जो महलॉं-जोबनेर रोड़ पर बोराज के पास है। यहाँ एक प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण कब और किसने कराया ज्ञात नही है।

इस मंदिर मे पहिले एक ही प्रतिमा भगवान महावीर स्वामी की श्वेत पाषाण की पद्मासन मुद्रा में विराजमान थी। जो वर्तमान मे कोई श्रावक के न रहने एवं पूजा-प्रक्षाल न होने के कारण बोराज के दिगम्बर जैन मंदिर मे ले जाकर विराजमान कर दी गई है। अब यहाँ मात्र मंदिर का भवन ही शेष है। यह जानकारी सर्वेक्षण के दौरान उगरियावास निवासी श्री विकास जैन से मिली है।

7. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, गागरडू

गागरडू ग्राम जयपुर-अजमेर रोड़ पर 81 किलोमीटर पर बांयी ओर पडासोली होकर 9 किलोमीटर है। यहॉं एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण लगभग 500 वर्ष पूर्व गागरडू दिगम्बर जैन समाज ने कराया था। मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जिसका प्रतिष्ठा सम्वत् पढ़ने मे नही आता किन्तु प्राचीन है। मंदिर में दो वेदियॉं है जिनमें धातु की 18 प्रतिमाएं व चरण चौकी एवं पाषाण की 20 प्रतिमाएँ कुल 38 प्रतिमाएँ व 4 चरण चौकी एवं 17 यंत्र है। यहाँ सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1548 की है। मंदिर बीसपथ आम्नाय का है।

यहाँ एक ही जैन परिवार है और मंदिर के प्रबन्धक श्री नोरतनमल बड़जात्या है। मंदिर मे पूजा-प्रक्षाल नियमित नहीं होती। यहॉं दिसम्बर 1993 के लगभग चोरी हुई थी जिसमे 7 प्रतिमाएँ 2 सोने के झोल के कलश व चांदी के छत्र चोरी चले गये थे। पुलिस मे रिपोर्ट की गई किन्तु अब तक कोई सुपरिणाम नही मिला।

मंदिर में 10-12 हस्तलिखित ग्रन्थ भी है। सात-आठ शास्त्र मुद्रित है। सबसे प्राचीन ग्रन्थ 'पार्श्वनाथ पुराण' सम्वत् 1009 का है। मंदिर जीर्ण अवस्था में है।

8. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, गुढ़ा बैरसल

गुढ़ा बैरसल एक सुन्दर गांव है जो महलॉं जोबनेर सड़क पर 3 किलोमीटर दूर है तथा आसलपुर रेलवे स्टेशन से भी 3 किलोमीटर दूर है।

यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसे 400 वर्ष पुराना बताते हैं, किन्तु

किसने और कब बनाया कोई उल्लेख नहीं है। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान सुमतिनाथ की है जो सम्वत् 1664 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे एक वेदी तथा दो आल्या है जिनमें 8 धातु की तथा 6 पाषाण की कुल 14 प्रतिमाएँ एवं 6 यंत्र हैं। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1664 की है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। यहाँ दिगम्बर 9 जैनों के घर है।

मंदिर की अचल सम्पत्ति मे एक तहखाना, दो दुकाने तथा एक बिहारी के लिए खाली जमीन है। दुकानो का विवाद चल रहा है।

मंदिर मे तीन बार चोरी हो चुकी है जिसमे वेदी के ऊपर के सोने के झोल के कलश और नकद मय गोलख के आलमारी तोड़कर चोर ले गये।

मंदिर की वेदी कलापूर्ण है। मंदिर का प्रबन्ध स्थानीय दि. जैन समाज द्वारा किया जाता है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री राजकुमार जैन है।

9. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, गंगाती कलाँ

गंगाती कलाँ ग्राम जयपुर-अजमेर रोड़ पर महलों से आगे 10 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण लगभग 125 वर्ष पूर्व श्री सोनपाल जी मीठालाल जी सौगाणी गगाती कलाँ वालो ने कराया था। मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान नेमिनाथ की है जो सम्वत् 1948 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे एक ही वेदी है जिसमे 3 धातु तथा 1 पाषाण की कुल 4 प्रतिमाएँ है। सबसे प्राचीन प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की धातु की सम्वत् 1234 की प्रतिष्ठित है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। यहाँ एक ही जैन परिवार है।

मंदिर साधारण है तथा आर्थिक स्थिति सामान्य है। मंदिर के मुख्य प्रबन्धक श्री नेमिचन्द सोगाणी है।

10. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, छप्या

छप्या दूदू तहसील का एक ग्राम है जो सड़क मार्ग से जयपुर से 60 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो प्राचीन है किन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि इसका निर्माण किसने कब करवाया। इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की श्वेत पाषाण की पद्मासन मुद्रा मे विराजमान है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमे 3 धातु तथा 3 पाषाण की कुल 6 प्रतिमाएँ एवं दो यंत्र है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा क्षेत्रपाल जी भी विराजमान है।

छप्या ग्राम मे एक भी जैन परिवार नही है तथा मंदिर की व्यवस्था दूदू निवासी श्री पदमचन्द जैन करते है।

सम्पर्क सूत्र - श्री प्रकाशचन्द पदमचन्द जैन बस स्टेण्ड दूदू (जयपुर)।

11. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, छिर

छिर ग्राम जयपुर से सड़क मार्ग से 60 किलोमीटर दूर वाया नरैना एवं रेलमार्ग से 85 किलोमीटर दूर पड़ता है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो बहुत पुराना है किन्तु जैन समाज छिर ने कब निर्माण कराया कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है। यहाँ एक वेदी है जिसमें 3 धातु तथा 3 पाषाण की कुल 6 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र है।

मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। छिर में कोई जैन परिवार नहीं है; अतः मंदिर की व्यवस्था श्री दिगम्बर जैन मंदिर, साली के प्रबन्धक ही करते हैं। मंदिर जीर्ण अवस्था का है और सुधार अपेक्षित है। वर्तमान मे पूजा-प्रक्षाल की नियमित व्यवस्था नहीं है। मार्ग वर्षाकाल मे रुक जाता है।

यहाँ आसोज मास के प्रथम रविवार को मेला लगता है।

12. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, झाग

झाग एक अच्छा प्राचीन ग्राम है। यहाँ जयपुर-अजमेर राष्ट्रीय मार्ग पर बगरू से पहुंचा जा सकता। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है। मंदिर का निर्माण दिगम्बर जैन समाज झाग द्वारा कराया हुआ है किन्तु निर्माण कब हुआ कोई उल्लेख नहीं मिलता। मंदिर मे सात वेदियाँ है जिनमे 9 धातु तथा 28 पाषाण की कुल 37 प्रतिमाएँ एवं 8 यंत्र विराजमान है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। यहाँ वर्तमान में 13 दिगम्बर जैन परिवार है। मंदिर का प्रबन्ध स्थानीय दि. जैन समाज द्वारा किया जाता है।

मंदिर की अचल सम्पत्ति के रूप मे एक मकान व छह दुकाने है। मंदिर में जाजम, बिछायतें, सिंहासन आदि सभी आवश्यक सामान भी मौजूद है।

मंदिर में लगभग 25 वर्ष पूर्व चोरी हुई थी जिसमे चांदी के बांस, छत्र, चवर आदि सामान चोरी चला गया।

मंदिर अति कलापूर्ण है एवं विशाल है। गुम्बज मे सोने की कारीगरी के सुन्दर भित्ति चित्र है। सोलह स्वप्न, नेमिनाथ बारात, सम्मेद शिखर व गिरनार आदि तीर्थों के भित्ति चित्र है। यहाँ 71 हस्तलिखित ग्रन्थ सुरक्षित है। आर्थिक स्थिति सामान्य है। मंदिर के मंत्री श्री प्रेमचन्द जैन हैं।

13. श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, दांतरी

तहसील दूदू में दांतरी जयपुर से जयपुर-अजमेर सड़क मार्ग पर 82 किलोमीटर पर दाहिनी और आधा किलोमीटर दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन

मंदिर है जिसका निर्माण कब और किसने कराया कोई जानकारी नहीं है। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान नेमिनाथ की है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमे 5 धातु तथा 6 पाषाण की कुल 11 प्रतिमाएँ एवं 2 यंत्र हैं। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1548 की है।

दांतरी में एक दिगम्बर जैन जैन परिवार है।

मंदिर के प्रवेश द्वार पर छत्री है तथा अन्दर चौक में प्रवेश करके सामने वेदी है। मंदिर का प्रबन्ध श्री चांदमल गंगवाल द्वारा किया जाता है।

14. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, धमाना

धमाना दूदू तहसील मे मौजमाबाद के समीप है जो सड़क मार्ग से जयपुर से वाया फागी 68 किलोमीटर दूर है। यहां की जनसंख्या लगभग 2000 है तथा दो दिगम्बर जैन परिवार है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है। इसका निर्माण धमाना दिगम्बर जैन समाज ने कब कराया कोई ज्ञात नहीं। मूलनायक प्रतिमा भगवान सुपार्श्वनाथ की पद्मासन मुद्रा मे श्वेत पाषाण की संवत् 1826 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमे 5 धातु तथा एक पाषाण की कुल 6 प्रतिमाएँ एव एक यंत्र है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

मंदिर का प्रबन्ध एक प्रबन्ध कमेटी द्वारा किया जाता है, जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री पन्नालाल जैन गंगवाल है।

अचल संपत्ति के रूप मे दो-ढ़ाई बीघा जमीन है। मंदिर की व्यवस्था एवं आर्थिक स्थिति ठीक है।

15. पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, धांधोली

धांधोली जयपुर से सड़क मार्ग से वाया दूदू 80 किलोमीटर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण लगभग 100 वर्ष पूर्व धांधोली दि. जैन समाज ने कराया है। मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की श्वेत पाषाण की पद्मासन मुद्रा मे संवत् 1548 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में यद्यपि दो वेदियाँ है किन्तु एक अशुभ माने जाने के कारण खाली पड़ी है, दूसरी में 2 धातु तथा 1 पाषाण की कुल 3 प्रतिमाएँ व 2 यंत्र हैं। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

धांधोली की जनसंख्या यद्यपि 3000 हजार की है, किन्तु दिगम्बर जैनो के केवल 2 परिवार है। मंदिर का प्रबंध समाज द्वारा किया जाता है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री मोहनलाल बड़जात्या हैं।

16. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, पडासोली

पडासोली तहसील दूदू जयपुर से जयपुर-अजमेर सड़क पर 77 किलोमीटर पर बांयी ओर एक किलोमीटर अन्दर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो पडासोली दि. जैन समाज द्वारा लगभग 300 वर्ष पूर्व का बनाया हुआ है। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है जो सम्वत् 1664 की प्रतिष्ठित है। यहाँ एक वेदी है जिसमें 4 धातु तथा 3 पाषाण की कुल 7 प्रतिमाएँ एवं 6 यंत्र हैं। सबसे प्राचीन प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की सम्वत् 1514 तथा सबसे प्राचीन यंत्र सम्वत् 1503 का प्रतिष्ठित है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

वर्तमान में पडासोली में एक भी जैन परिवार नहीं है। पर्यूषण पर्व के दिनो में श्री भंवरलाल बोहरा (मास्टरजी) पूजा-प्रक्षाल हेतु दूदू से आते है। सामान्य रूप में प्रतिदिन पूजा-प्रक्षाल हेतु टहलवा रखा हुआ है। मंदिर के मुख्य प्रबन्धक श्री भंवरलाल बोहरा (मास्टरजी) ही है।

मन्दिर के अधीन अचल सम्पत्ति के रूप मे एक दुकान है।

17. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, पालूकलाँ

पालूकलाँ (तहसील दूदू) में एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसमे भगवान पार्श्वनाथ की मूलनायक प्रतिमा सम्वत् 1526 की है। मंदिर का निर्माण दि. जैन समाज पालूकलाँ द्वारा 525 वर्ष पूर्व कराया बताते हैं। मंदिर मे एक वेदी है जिसमे धातु की 3 प्रतिमाएँ तथा 4 यंत्र विराजमान है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

मंदिर निर्माण के सम्बन्ध मे कहा जाता है कि इसका निर्माण मौजमाबाद के मंदिर के निर्माण के साथ अकबर बादशाह के समय मे हुआ था। यहाँ का प्रबन्ध श्री अशोक कुमार जैन द्वारा किया जाता है। यहाँ केवल एक ही दिगम्बर जैन घर है।

इस मंदिर में तीन बार चोरियाँ हुई है जिसमे पार्श्वनाथ की पाषाण की प्रतिमा एवं सामान चोरी गया। मंदिर का जीर्णोद्धार अपेक्षित है।

18. श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, बोराज

बोराज एक प्रसिद्ध प्राचीन ग्राम है जो महलाँ से जोबनेर मार्ग पर 7 किलोमीटर दूर है तथा आसलपुर-जोबनेर रेलवे स्टेशन से 4 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण बोराज दि. जैन समाज ने कराया था किन्तु कब कराया इसका कोई उल्लेख नही है। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है जो सम्वत् 1794 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में

5 वेदियाँ हैं जिनमें 5 धातु तथा 18 पाषाण की कुल 23 प्रतिमाएँ एवं 13 यंत्र विराजमान हैं। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1548 की है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

यहाँ 9 दिगम्बर जैन परिवार है तथा मंदिर की व्यवस्था स्थानीय समाज द्वारा की जाती है। अचल सम्पत्ति के रूप में 5½ बीघा जमीन, 8 दुकानें तथा एक धर्मशाला है। मंदिर मे अन्य आवश्यक सामान के अतिरिक्त एक कलापूर्ण चंदवा सोने-चांदी (कलाबूत) के काम का 10×16 फीट का है। मंदिर कलापूर्ण है। चौथी वेदी में कुन्दन की जड़ाई का कार्य है। मंदिर के प्रांगण के बांयी ओर मकराने पर सम्मेद शिखर का उकेरा हुआ सुन्दर चित्र है।

यहाँ अक्टूबर, 1993 मे चोरी हुई थी जिसमे 13 मूर्तियाँ चोरी गई थी। एक वेदी में 2 पाषाण तथा दो धातु की प्रतिमा विराजमान है जो पहिले चोरी चली गयी थी और पुलिस ने बरामद की। शेष 9 अष्ट धातु की प्रतिमाएँ नहीं मिली।

मंदिर मे लगभग 65 हस्तलिखित ग्रन्थ हैं। इस मंदिर के वर्तमान में प्रबन्धकर्ता श्री विनोदकुमार जैन लुहाड़िया हैं।

19. श्री दिगम्बर जैन नसियाँ, बोराज

यह नसियां बोराज गांव के बाहर बनी हुई है। इसका निर्माण कब और किसने कराया कोई सूचना उपलब्ध नही है। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि बोराज मे मंदिर निर्माण के बाद ही इसका निर्माण हुआ हो। नसियां के मंदिर मे एक वेदी है जिसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान सुपार्श्वनाथ की पाषाण की सम्वत् 1826 की प्रतिष्ठित है तथा एक यंत्र भी विराजमान है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

नसियों का प्रबन्ध समाज द्वारा ही किया जाता है। जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री विनोदकुमार जैन लुहाड़िया है।

नसियाँ का क्षेत्रफल 6 बीघा है जो कृषि भूमि है। दो बीघा भूमि आबादी है जिसका डंडा (बाउण्ड्रीवाल) बना हुआ है। नसियां मे एक कुआ है तथा तीन चरण चिन्ह छत्रियां भी बनी हुई हैं।

20. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, ममाना

ममाना ग्राम साली से 6 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण कब और किसने कराया यह ज्ञात नहीं है। इसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है जो सम्वत् 1521 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में एक

वेदी है जिसमें 12 धातु तथा 4 पाषाण की कुल 16 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र है। एक धातु प्रतिमा मे बारह यक्षों पर भगवान विराजमान है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। यहाँ एक जैन घर है।

मंदिर प्राचीन महलनुमा है और जर्जरित अवस्था मे है तथा सुधार अपेक्षित है। मन्दिर महासंघ के प्रयास से जीर्णोद्धार हुआ है।

यहाँ केवल एक महिला श्रीमती चन्द्रकान्ता जी ही मंदिर की व्यवस्था देखती हैं।

मंदिर में फरवरी, 1996 में चोरी हो जाने से मूर्तियाँ, गौलख तथा अन्य सामान चोरी मे गया है।

21. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, मरवा

ग्राम मरवा जयपुर से नरायना सावरदा होकर 90 किलोमीटर दूर है यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो लगभग 500 वर्ष पूर्व दि. जैन समाज मरवा द्वारा निर्माण कराया गया था। मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है जो सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है।

मंदिर में तीन वेदियाँ है जिनमे 12 धातु तथा 23 पाषाण की कुल 35 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र विराजमान है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1548 की है। मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है तथा यहां अब दिगम्बर जैनो के 4 परिवार है। कहते हैं पहिले यहाँ 10 परिवार थे। मंदिर का प्रबन्ध स्थानीय जैन समाज द्वारा किया जाता है। जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री विनोदकुमार बड़जात्या एवं श्री मांगीलाल बड़जात्या हैं।

मंदिर के अधीन अचल सम्पत्ति के रूप मे एक जैन भवन है जिसमे 5 कमरे व 4 हाल है तथा एक दुकान है। एक मकान छाबडो के पूर्वजो का दिया हुआ भी है जो ठाकुर साहब के भाई के कब्जे मे बताते हैं।

मंदिर में 20-25 हस्तलिखित ग्रन्थ है। सबसे प्राचीन ग्रन्थ सम्वत् 1899 का लिपिबद्ध 'अष्टपाहुड' है।

मंदिर कलापूर्ण है और गुम्बज अच्छा बना हुआ है। मंदिर काफी साफ, सुथरा एवं विशाल है।

22. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, महलाँ

महलाँ जयपुर-अजमेर रोड़ पर स्थित एक सुन्दर ग्राम है। महलाँ बस स्टेण्ड पर काफी चहल पहली रहती है। महलाँ के पास बगरू होने से बगरू महलाँ के नाम से यह गाँव विख्यात है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसमे

मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की सम्वत् 1536 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में दो वेदियाँ हैं। जिनमें 10 धातु तथा 6 पाषाण की कुल 16 प्रतिमाएँ एवं 17 यंत्र हैं।

मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा क्षेत्रपाल विराजमान है। कहते है मंदिर का निर्माण लगभग 500 वर्ष पूर्व हुआ है।

मंदिर की अचल सम्पत्ति के रूप में नीचे एक दुकान है। मंदिर जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है मरम्मत की आवश्यकता है। यहाँ तीन जैन घर हैं। वर्तमान में यहाँ के प्रबन्धक श्री मूलचन्द पाण्डया हैं।

23. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, रहलाणा

रहलाणा जयपुर-अजमेर रोड़ पर जयपुर से 75 किलोमीटर दूर बांये ओर मुड़कर पडासोली होते हुए 14 किलोमीटर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण लगभग 300 वर्ष पूर्व रहलाणा दि. जैन समाज ने कराया था। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की सम्वत्1826 की प्रतिष्ठित है।

मंदिर मे तीन वेदियां है जिनमे एक निर्माणाधीन है और दो में श्री विराजमान हैं। दोनो वेदियों में 12 धातु तथा 17 पाषाण की 29 प्रतिमाएँ एवं 16 यंत्र हैं। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

रहलाणा मे 7 दिगम्बर जैन परिवार हैं तथा प्रबन्ध स्थानीय जैन समाज द्वारा किया जाता है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री कपूरचन्द बाकलीवाल है।

अचल सम्पत्ति के रूप में मंदिर के सामने ही एक धर्मशाला है जिसमें 6 कमरें तथा एक हाल है।

मंदिर में दो बार चोरी हो चुकी है। पहली मे गोलख व दूसरी में धातु की प्रतिमा व गोलख चोरी गयी।

आर्थिक स्थिति ठीक है। मंदिर के प्रवेश द्वार पर छत्री बनी हुई है।

24. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, रामनगर

रामनगर जयपुर-अजमेर रोड पर जयपुर से 73 किलोमीटर बांयें मुडकर एक किलोमीटर अन्दर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो लगभग 250 वर्ष पुराना है तथा जिसका निर्माण दिगम्बर जैन समाज रामनगर ने कराया था। मूलनायक प्रतिमा भगवान मल्लिनाथ की है जो सम्वत् 1768 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में एक वेदी व एक आल्या है जिसमे 32 धातु तथा 15 पाषाण की कुल 47 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र बिराजमान है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1552 की प्रतिष्ठित है। मंदिर तेरहपंथ आम्नाय का है।

यहाँ केवल एक दिगम्बर जैन घर है। मंदिर की व्यवस्था श्री मोहनलाल रावंका देखते हैं।

अचल सम्पत्ति के रूप में एक नसियाँ है किन्तु वहाँ वर्तमान में कोई प्रतिमा विराजमान नहीं है। केवल दो बीघा पक्की कृषि भूमि इसके आधीन है। इसकी पासबुक जैन नसियाँ के नाम है।

मंदिर में गत 15 वर्षों मे तीन बार हुई चोरी मे प्रतिमाएँ व यंत्र चले गये। इनमें से 3 प्रतिमाएँ अष्टधातु की खेतो मे मिल गईं। जिन्हें लाकर मंदिर में एक आल्या में विराजमान कर रखा है। इनके सम्वत् 1552, 1715 तथा 1752 हैं।

मंदिर कलापूर्ण है। बाहर के प्रवेश द्वार पर गुम्बज है। अन्दर चौक मे से उत्तराविमुखी 3 प्रवेश द्वार है तथा अन्दर जिन-वेदी है जिस पर गुम्बज है। उसमे भित्ति चित्र हैं। वेदी मे सोने की छपायी तथा काँच का कार्य है।

शास्त्र भण्डार मे 100-150 ग्रन्थ व गुटके हैं जो जीर्ण-शीर्ण और अव्यवस्थित है। प्रबन्धक उन्हे किसी भी जगह देने को तैयार हैं। मंदिर भी जीर्ण अवस्था मे हैं।

25. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, लदेरा

ग्राम लदेरा जयपुर से वाया नरायना होकर 95 कि.मी. दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसे लगभग 100 वर्ष पूर्व श्री गौरीलाल बाकलीवाल ने बनवाया था। मूलनायक प्रतिमा भगवान श्रेयांसनाथ की है जो सम्वत् 1946 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में एक वेदी है जिसमे एक धातु की प्रतिमा तथा एक यंत्र है।

यहाँ एक ही जैन परिवार है तथा मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

इसके प्रबन्धक श्री कैलाशचन्द बाकलीवाल है। यहाँ नया मंदिर भवन निर्माणाधीन है।

सारवून:

ग्राम साखून जयपुर से 80 किलोमीटर तथा रेलवे स्टेशन साखून होकर 85 किलोमीटर है।

साखून बहुत प्राचीन गांव है। यहाँ दो दिगम्बर जैन मंदिर तथा एक नसियां है जो अपना वैभव प्रकट कर रहे हैं। यहाँ सम्वत् 1660 में पंचकल्याणक (बिम्ब-प्रतिष्ठा) महोत्सव हुआ था जिसे अकबर बादशाह के शासन काल में कछवाहा वंश के महाराजा मानसिंह के राज्य में साखून

निवासी किसी दोसी परिवार ने कराया था। यहाँ पहिले काफी जैन घर थे किन्तु अब केवल 10 घर हैं। सम्वत् 1660 के शिलालेख से पता चलता है कि आमेर में रहने वाले दोसी परिवार साखून के रहने वाले थे जो आमेर जाकर बसे थे।

कहते हैं किसी दोसी ने सम्वत् 1660 में प्रतिष्ठा कराकर 4 मंदिर साखून, हरसोली, बांदर सींदरी तथा छोटा लावा में बनवाये थे। यहाँ सम्वत् 1660 की प्रतिष्ठा की प्रतिमाएँ पर पूरे लेख हैं।

26. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर दोसी पंचायत

यह मंदिर बड़े मंदिर के नाम से भी प्रसिद्ध है इसका निर्माण वि.सं. 1660 में साखून निवासी दोसी परिवार ने कराया था। मंदिर में उपलब्ध लेखो के आधार पर ही यह प्रमाणित होता है कि सम्वत् 1660 मे मंदिर निर्माण होकर यहाँ बिम्ब-प्रतिष्ठा महोत्सव हुआ। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है जो सम्वत् 1660 की यहाँ की ही प्रतिष्ठित है। यह मंदिर भव्य एवं विशाल है। इसमे 11 वेदियाँ हैं जिनमे 32 धातु की तथा 24 पाषाण की कुल 56 प्रतिमाएँ एवं 15 यंत्र विराजमान है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1168 की है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। क्षेत्रपाल जी एवं पद्मावती जी की प्रतिमा भी विराजमान है। मदिर के बाहर सम्वत् 1660 का एक शिलालेख है जो पूरी तरह पढ़ने मे नही आता।

अचल सम्पत्ति के रूप मे एक धर्मशाला है जिसमे एक हाल तथा 4 कमरें है तथा 2 दुकानें है। यहाँ चांदी की एक वेदी भी है जिस पर सोने का झोल चढ़ा है। मंदिर कलापूर्ण है तथा दर्शनीय है। संगमरमर की वेदियाँ है तथा नीचे एक बहरा भी है। आर्थिक स्थिति ठीक है। मंदिर का प्रबन्ध दोसी परिवार के श्री चिरंजीलाल दोसी करते हैं।

यहाँ मंदिर के बाहर एक स्तम्भ है जिसे कीर्तिस्तम्भ कहा जाता है। यह स्तम्भ 4 फुट ऊंचा तथा 10-12 इंच चौकोर मोटा है। लेख घिस गया है पढ़ने मे नहीं आता। सरस्वती भवन के आल्या के ऊपर भी लेख है।

27. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बाकलीवाल

साखून का यह दूसरा मंदिर है जो छोटा मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है। यह बड़े मंदिर से भी पहिले का बताया जाता है। इसका निर्माण साखून के बाकलीवाल परिवार द्वारा सम्वत् 1660 के पहिले ही कराया बताया है। इसमे भगवान आदिनाथ की सम्वत् 1660 की मूलनायक प्रतिमा है। मंदिर में 3 वेदियाँ हैं जिनमे 8 धातु की तथा 3 पाषाण की कुल 11 प्रतिमाएँ एवं 24 यंत्र है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1201 की धातु की चौबीसी है।

मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। पद्मावती देवी जी तथा क्षेत्रपाल जी की प्रतिमाएँ हैं। मुख्य द्वार पर गणेश प्रतिमा भी उकेरित है।

मंदिर की व्यवस्था बाकलीवाल परिवार द्वारा की जाती है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री भंवरलाल बाकलीवाल हैं।

मंदिर का क्षेत्रफल 500 वर्गगज है तथा। अचल सम्पत्ति के रूप में एक धर्मशाला जिसमें 2 कमरें तथा बरामदा है एवं अहाता खिंचा हुआ है। 5 दुकानें हैं जिनमें 3 ठीक तथा दो जीर्ण-शीर्ण हैं। एक नोहरा है। एक ताम्बे की वेदी है जिस पर सोने का झोल चढ़ा है।

मंदिर प्राचीन एवं विशाल है। आर्थिक स्थिति ठीक है। यहाँ एक भौंहरा (तलघर) होना भी कहा जाता है।

टिप्पणी:- श्री भंवरलाल न्यायतीर्थ के सर्वे रजिस्टर के अनुसार यह मंदिर 100 वर्ष पुराना है तथा गंगवाल गोत्रीय किन्हीं अज्ञात व्यक्ति द्वारा बनाया हुआ है। यहाँ गंगवालों की ही आम्नाय है।

28. श्री दिगम्बर जैन भट्टारकों की नसियां

यह नसियां साखून गांव के बाहर बनी हुई है तथा प्राचीन है। इसका निर्माण दि. जैन समाज साखून द्वारा लगभग सम्वत् 1660 में ही कराया गया है। इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है। मंदिर में एक वेदी है जिसमे दो धातु तथा 8 पाषाण तथा एक धातु की चरण चौकी सहित कुल 11 प्रतिमाएँ एवं 4 यंत्र हैं। यहाँ धातु के चरण-चिन्ह भी है।

मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा प्रबन्ध यहाँ के जैन समाज द्वारा किया जाता है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री चिरंजीलाल दोसी एवं नेमीचन्द बाकलीवाल हैं।

अचल सम्पत्ति के रूप में 3 बीघा कृषि भूमि है व कुआ है। यह सब परकोटे मे हैं। आसोज बुदी 2 को यहाँ समाज की ओर से पूजा विधान तथा सामूहिक गोठ होती है। आर्थिक स्थिति ठीक है।

29. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, सावरदा

सावरदा जयपुर-अजमेर सड़क मार्ग पर दूदू से पहिले उत्तर की ओर सड़क से 2 किलोमीटर अन्दर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण सावरदा दि. जैन समाज ने कब कराया पता नहीं। मंदिर पहिले गढ़ में था जिसे समाज ने ही बनवाया था। मंदिर प्राचीन है। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान धर्मनाथ की है। मंदिर में दो वेदियाँ हैं जिनमें 16 धातु तथा 29 पाषाण की कुल 45 प्रतिमाएँ एवं 7 यंत्र हैं। सबसे प्राचीन प्रतिमा भगवान नेमिनाथ की सम्वत् 1264 की है। कुछ प्रतिमाएँ सम्वत् 1500 से पूर्व की भी हैं।

मंदिर तेरहपंथ आम्नाय का है, किन्तु यहाँ क्षेत्रपाल की प्रतिमा भी है। सावरदा मे 8 दिगम्बर जैन घर हैं। मंदिर की व्यवस्था स्थानीय लोगों के परस्पर परामर्श से की जाती है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री सुरेशचन्द छाबड़ा हैं।

अचल सम्पत्ति के रूप में मंदिर के नीचे 12 दुकानें तथा एक धर्मशाला है। मंदिर में लगभग 25 हस्तलिखित ग्रन्थ हैं जो सुरक्षित रखें हैं। सबसे प्राचीन प्रति सम्वत् 1897 की लिखित 'आदिनाथ पुराण' की है।

मंदिर में लगभग 1¼ फुट अवगाहना की नंदीश्वर प्रतिमा भी है।

30. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, साली

साली एक पुराना ग्राम है जो सड़क मार्ग जयपुर से वाया नारायना 95 किलोमीटर तथा साली रेल्वे स्टेशन मार्ग 80 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण लगभग 250 वर्ष पूर्व साली दिगम्बर जैन समाज ने कराया बताया। मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जिस पर कोई लेख नहीं है।

मंदिर अच्छा व गुम्बजवाला है। मंदिर में तीन वेदियाँ है जिनमें 15 धातु तथा 15 पाषाण की कुल 30 प्रतिमाएँ एवं 5 यंत्र है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1548 की है।

मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। मंदिर के बाहर एक शिलालेख सम्वत् 1056 का है जिसमे भट्टारक ललित कीर्तिजी के नाम का उल्लेख है। लेख पूर्णत: स्पष्ट नही है।

साली में वर्तमान मे 7 दिगम्बर जैन घर है। मंदिर का प्रबन्ध चुनी हुई कमेटी द्वारा किया जाता है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री सौभागमल बड़जात्या है।

मंदिर की अचल सम्पत्ति के रूप मे एक नोहरा, धर्मशाला 4 कमरे व 4 दुकानें है। दुकाने किराये पर हैं।

यहाँ 3-4 हस्तलिखित ग्रन्थ भी है। मंदिर की स्थिति साधारण है।

31. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, सेवा

सेवा जयपुर से वाया दूदू 78 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो दि. जैन समाज सेवा द्वारा लगभग 250 वर्ष पूर्व निर्माण कराया गया था। मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है जो सम्वत् 1826 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे तीन वेदियाँ है जिनमे 15 धातु की तथा 18 पाषाण की कुल 33 प्रतिमाएँ एवं 5 यंत्र विराजमान हैं। सबसे प्राचीन प्रतिमा धातु की चौबीसी है जो सम्वत् 1548 की है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

सेवा में पहिले काफी जैन घर थे किन्तु अब केवल 3 दिगम्बर जैन घर हैं। मंदिर का प्रबन्ध समाज द्वारा किया जाता है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री शांतिलाल सौगानी तथा मंत्री श्री रिखबचन्द सौगानी है।

अचल सम्पत्ति के रूप में 8 दुकानें हैं जिन पर कमरे व हाल बने हुए

हैं। एक कुआ तथा नोहरा भी है। मंदिर में गत 30 वर्षों मे 3 बार चोरियाँ हो गईं जिनमें 8-10 प्रतिमा तथा चांदी का छत्र आदि गये।

मंदिर कलापूर्ण है। वेदी में सोने की छपाई का सुन्दर कार्य है। गुम्बज में राग-रागिनियों के सुन्दर कलापूर्ण भित्ति चित्र भी हैं चित्रकारी भी सुन्दर है।

शास्त्र भण्डार में 25-30 हस्तलिखित ग्रन्थ हैं। सबसे प्राचीन प्रति 'पद्मपुराण' की सम्वत् 1857 की है।

यहाँ नौ फणी पार्श्वनाथ की प्राचीन एवं आकर्षक प्रतिमा है तथा एक शिला खण्ड में भी प्रतिमाएँ उकेरी हुई हैं। मंदिर की आर्थिक स्थिति ठीक है।

32. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, हरसुली

हरसुली जयपुर से जयपुर अजमेर रोड़ पर 81 कि.मी. पर बांयी ओर मुड़कर पडासोली होकर 5 किलोमीटर है। यहाँ दो दिगम्बर जैन मंदिर हैं। एक श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर है जो पार्श्वनाथ मंदिर के नाम से जाना जाता है। यह हरसुली दिगम्बर जैन समाज द्वारा निर्मित नया मंदिर है। इसका निर्माण कब हुआ ज्ञात नहीं। इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे यद्यपि तीन वेदियाँ हैं किन्तु प्रतिमाएँ एक वेदी में ही हैं जिसमे 5 धातु तथा 6 पाषाण की कुल 11 प्रतिमाएँ एवं 6 यंत्र है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1548 की ही है। मंदिर तेरहपंथ आम्नाय का है, किन्तु क्षेत्रपालजी भी विराजमान है।

हरसुली में 6 दिगम्बर जैन परिवार हैं। अचल सम्पत्ति के रूप मे मंदिर के नीचे 5 दुकानें हैं।

यहाँ दो बार मंदिर मे चोरी हो चुकी है। चोर चांदी के सामान के साथ तीन प्रतिमाएँ भी ले गये।

मंदिर कलापूर्ण है। वेदी के ऊपर गुम्बज मे सुन्दर चित्रकारी के भित्ति चित्र है। मंदिर संगमरमर का नया बना है। अन्य दोनों वेदियाँ सुन्दर हैं। वेदी मे सोने की छपाई कार्य अच्छा है।

यहाँ शास्त्र भण्डार भी है जिसमे करीब 50 ग्रन्थ हैं। सब सुरक्षित हैं। व्यवस्था ठीक है। मंदिर साफ-सुथरा है। मंदिर का प्रबन्ध समाज द्वारा किया जाता है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री पदमचन्द सोगानी हैं।

33. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, हरसुली

हरसुली गांव में यह दूसरा श्री दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण हरसुली के दि. जैन समाज ने लगभग 300 वर्ष पूर्व कराया था। इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान महावीर की है जो सम्वत् 1664 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे एक

वेदी है जिसमें 2 धातु तथा 3 पाषाण की कुल 5 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1573 की है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

यही मंदिर प्राचीन है और पार्श्वनाथ मंदिर से कुछ दूरी पर है।

मंदिर की आर्थिक स्थिति ठीक है। इस मंदिर के मुख्य प्रबन्धक श्री पदमचन्द सौगानी ही हैं।

मौजमाबाद:

जयपुर जिला के सांभर उपखंड में मौजमाबाद एक प्राचीन कस्बा है जो जयपुर, अजमेर राष्ट्रीय राजमार्ग पर जयपुर से बगरू होकर 60 किलोमीटर, फागी होकर 72 किलोमीटर तथा दूदू होकर 70 किलोमीटर दूर है। यहाँ की आबादी लगभग 2000 घरों की है तथा जनसंख्या लगभग 10,000 है। यह कस्बा 400 वर्षों से भी अधिक प्राचीन है। कहते हैं आमेर के महाराजा मानसिंह प्रथम जो दिल्ली के बादशाह अकबर के प्रधान सेनापति थे, बाल्यकाल में यहाँ कई वर्षों तक रहे थे तथा उनके नाम का यहाँ एक महल भी है। महाराजा मानसिंह प्रथम के आमात्य श्री नानू गोधा ने यहाँ एक तीन शिखर का विशाल दिगम्बर जैन मंदिर बनवाया जो आज अपनी भव्यता का प्रदर्शन कर रहा है। मौजमाबाद में संवत् 1660, 1664 तथा संवत् 1982-83 में विशाल पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित हुए हैं जिसमें हजारों की संख्या में प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित हुई हैं, जो आज देश के अनेकों मंदिरों में उपलब्ध हैं।

वर्तमान में यहाँ 60 दिगम्बर जैन घर हैं जिनकी सदस्य संख्या लगभग 300 है। यहाँ दो दिगम्बर जैन मंदिर एवं एक नसियाँ है। पहले यहाँ काफी जैन परिवार थे जिसमें से कितने ही शहरों में जाकर बस गये।

34. श्री दिगम्बर जैन छोटा मन्दिर

इस मंदिर का निर्माण कब हुआ कोई उल्लेख नही मिलता, किन्तु बताया जाता है कि यह मंदिर सबसे पुराना है। इस मे मूलनायक प्रतिमा भगवान नेमिनाथ की श्याम पाषाण की पद्मासन तथा भगवान आदिनाथ की श्वेत पाषाण की पद्मासन है जो संवत् 1178 की प्रतिष्ठित है। समवसरण सहित मंदिर में 5 वेदियाँ हैं जिनमें 6 धातु की तथा 7 पाषाण की कुल 13 प्रतिमाएँ एवं 5 यंत्र है। सबसे प्राचीन प्रतिमा संवत् 1172 की है। मंदिर तेरह पंथ आम्नाय का है।

मौजमाबाद के दोनो दिगम्बर जैन मन्दिरो का तथा नसियाँ का प्रबन्ध एक ही चुनी हुई कमेटी द्वारा किया जाता है। मंदिर में शास्त्र सभा होती है, स्थिति ठीक है।

35. श्री दिगम्बर जैन नसियाँ

इस नसियाँ का निर्माण दिगम्बर जैन समाज मौजमाबाद ने लगभग 700 वर्ष पूर्व कराया बताया, किन्तु कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। नसियाँ के चारो ओर अहाता है तथा बड़े विशाल दरवाजे के सामने तालाब है। नसियाँ क्षेत्र के मध्य मंदिर है जिसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की श्वेत पाषाण की पद्मासन संवत् 1664 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में एक वेदी है जिसमें पाषाण की तीन प्रतिमाएँ हैं। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। व्यवस्थापक दोनों मंदिर तथा नसियाँ के एक ही हैं।

इस नसियाँ में तीन चरण छत्रियाँ भी हैं :-

1. क्षुल्लक वृषभ सागर महाराज की संवत् 2030 की निर्मित है।
2. क्षुल्लक मुनि श्री सिद्ध सागर महाराज की है जो संवत् 2040 की निर्मित है।
3. इस छत्री का कोई विवरण उपलब्ध नही है।

नसियाँ काफी विस्तृत क्षेत्र मे है और सामने एक तालाब है। नसियों मंदिर के अधीन 5 बीघा कृषि भूमि भी बताई जाती है।

36. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर अतिशय क्षेत्र मौजमाबाद

जयपुर जिला के मौजमाबाद का यह दिगम्बर जैन मंदिर अपनी प्राचीनता, मान्यता एवं विशाल मनोज्ञ प्रतिमाओ के कारण अतिशय क्षेत्र के नाम से जाना जाता है। यह क्षेत्र कला, साहित्य और विशाल मंदिर के लिये महत्वपूर्ण है। यहाँ 3 जिनालय हैं जिनमे से यह भगवान आदिनाथ स्वामी का 400 वर्षो से भी अधिक पुराना है। इसके निर्माणकर्ता श्री नानू गोधा रहे हैं जिन्होने संवत् 1664 में इस मंदिर का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव कराकर प्रतिमाएँ विराजमान की। इस कलापूर्ण मंदिर के गगनचुम्बी शिखर हैं। जिन मंदिर के प्रवेश द्वार के बाहर चौक में 22×15 फीट का संगमरमर का चबूतरा है जिस पर मंडल-विधानादि होते हैं।

दीवारो पर लाल पाषाण मे अच्छी कुराई का कार्य है। देव-देवियाँ विभिन्न मुद्राओं में दिखाई गई हैं। एक सरस्वती की खड़ी प्रतिमा भी है जिसका वाहन मोती चुगता हुआ हंस दर्शनीय है।

मंदिर में मूलनायक प्रतिमा 1008 भगवान आदिनाथ की पद्मासन मुद्रा में श्वेत पाषाण की है जो संवत् 1664 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में दो तलघर हैं। तलघरों सहित 11 वेदियाँ तथा 10 आल्या हैं जिनमें 94 धातु की तथा 202 पाषाण की कुल 296 प्रतिमाएँ एवं 6 यंत्र विराजमान है। यहाँ सबसे प्राचीन प्रतिमा संवत् 1660 की है तथा 10-12 प्रतिमाएँ ऐसी हैं जो अत्यंत प्राचीन

हैं, उन पर कोई लेख भी दिखाई नहीं देते। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

एक तलघर में भगवान आदिनाथ, अजितनाथ एवं संभवनाथ की श्वेत पाषाण की विशाल एवं मनोज्ञ आकर्षक सातिशय प्रतिमाएँ हैं जो दर्शकों की मनोकामनाएँ पूरी करती प्रतीत होती है। इन के आगे अखण्ड ज्योति जलती है तथा इन्हीं के कारण यह अतिशय क्षेत्र कहलाता है।

दूसरा तलघर बड़ा है जिसमें कई मनोज्ञ प्रतिमाएँ हैं।

मंदिर का प्रबन्ध चुनी हुई कमेटी द्वारा होता है, जिसके अध्यक्ष श्री घीसालाल छाबड़ा एव मंत्री श्री गंभीरमल चौधरी है।

मंदिर के अधीन अचल संपत्ति के रूप में एक जैन भवन, दो नोहरे, कृषि भूमि 5 बीघा, 300 गज जमीन मंदिर के सामने है। एक रथ, बिछायतें, गद्दे, रजाईयाँ तथा बर्तन आदि भी है।

मंदिर मे गत 10-15 वर्षों में तीन बार चोरी हो चुकी है जिनमे दान पात्र तथा चांदी का सामान गया है।

मंदिर मे अनेक प्राचीन हस्तलिखत ग्रंथ हैं, जिनकी सूची डा. कस्तूरचन्द जी कासलीवाल ने बनायी है। यहाँ सचित्र पाण्डुलिपि भी है। मंदिर में शास्त्र सभा होती है।

मंदिर अत्यन्त प्राचीन एवं कलापूर्ण है। वेदी मे सोने की छपाई का कार्य है। चोक पर दुछता बना है मंदिर की कुर्सी ऊंची है सीढियां चढ़कर मंदिर का प्रवेश द्वार है तथा प्रवेश द्वार पर गुम्बज है।

विशेष:- मंदिर के सामने मानस्तंभ नया निर्मित हुआ है।

सहस्त्रकूट जिनालय

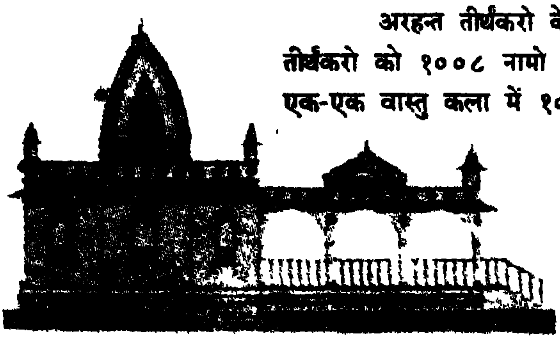

अरहन्त तीर्थंकरो के शरीर मे १००८ सुलक्षण होते है। अतः तीर्थंकरो को १००८ नामो से पुकारते है। इस एक-एक नाम के लिये एक-एक वास्तु कला में १००८ बिम्ब एक स्थान पर विराजमान किये जाते है। जिसे ''सहस्त्रकूट जिनालय'' कहा जाता है। श्री कोटिभट्ट राजा श्रीपाल के समय सहस्त्रकूट जिनालय के सम्बन्ध में श्रीपाल चरित्र मे वर्णित किया गया है कि जब सहस्त्रकूट जिनालय के कपाट स्वतः ही एक-एक बन्द हो गये तब कोटि भट्ट राजा श्रीपाल एक दिन उसकी वन्दना करने के लिये आते है तो उनके शील की महिमा से कपाट एकदम खुल जाते हैं।

तहसील - फागी
[26 गांवों में 40 मन्दिर]

जयपुर जिला के सांभर उपखण्ड में फागी तहसील हैडक्वाटर है। जयपुर-मालपुरा सड़क मार्ग पर जयपुर से 50 किलोमीटर की दूरी पर फागी ग्राम स्थित है। फागी लगभग 500 वर्ष पुराना बताया जाता है तथा वहाँ कम से कम 500 घरों की बस्ती बतायी जाती है। फागी तहसील के 26 गांवों में 37 दिगम्बर जैन मंदिर एवं 3 नसियाँ इस प्रकार फागी क्षेत्र में कुल 40 मंदिर हैं। फागी तथा आस-पास के गांवों मे खण्डेलवाल जैनों तथा अग्रवाल जैनो की काफी संख्या है। जयपुर नगर के बसने के पश्चात् अन्य गांवों की तरह फागी से भी जैन परिवार जयपुर में बस गये। जयपुर के जौहरी बाजार, घीवालो के रास्ता में फागी का जैन मंदिर है जिसे फागी से आये जैन परिवारों ने बनवाया था। फागी साहित्यिक केन्द्र भी रहा है। प्रसिद्ध साहित्य सेवी पं. जयचन्द्र छाबड़ा फागी के ही रहने वाले थे।

फागी :

फागी कस्बे में वर्तमान में दिगम्बर जैनों के 60 परिवार तथा 6 दिगम्बर जैन मंदिर है। यहाँ पर जैनों का अच्छा प्रभुत्व है।

1. श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर

यह एक प्राचीन मंदिर है जिसका निर्माण कहते है लगभग 500 वर्ष पूर्व छाबड़ा परिवार ने कराया था। निर्माण के सम्बन्ध मे कोई प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध नहीं है। वर्तमान में मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है। सम्भव है पहिले भगवान आदिनाथ की मूलनायक प्रतिमा रही हो, इसी से मंदिर आदिनाथ दि. जैन मंदिर कहलाता है। मंदिर में कुल 9 वेदियाँ हैं जिनमें 4 धातु तथा 32 पाषाण की कुल 36 प्रतिमाएँ एवं 9 यंत्र विराजमान हैं। मुख्य वेदी के पीछे वाली वेदी मे 2 श्याम वर्ण की पाषाण की प्रतिमाएँ अति मनोज्ञ हैं। इसके अतिरिक्त क्षेत्रपाल तथा पद्मावती माता की प्रतिमा भी है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। मंदिर विशाल तथा सुन्दर है।

मंदिर का प्रबन्ध समाज द्वारा चुनी हुई कमेटी करती है जिसके मंत्री श्री फूलचन्द छाबड़ा है।

मंदिर के अधीन अचल सम्पत्ति के रूप में बाजार में एक हवेली है जिसमें स्कूल चलता है तथा एक बिहारी है। बाजार मे एक दुकान तथा एक प्लाट

भी करीब 100 गज का है। मंदिर की एक दुकान के सम्बन्ध में न्यायालय में विवाद चल रहा है।

मंदिर में मार्च, 1993 में चोरी हो गई थी जिसकी रिपोर्ट पुलिस मे कर दी गई है, किन्तु अभी तक कोई पता नहीं लगा है।

मंदिर के शास्त्र-भण्डार मे लगभग 50-60 हस्तलिखित ग्रन्थ हैं किन्तु सूची बनी हुई नहीं है।

2. श्री 1008 चन्द्रवीर दिगम्बर जैन मन्दिर

फागी में यह मंदिर पंचायत समिति के सामने है जो नवीन है। इसका निर्माण जैन समाज फागी ने फरवरी सन् 1989 मे कराया है। इसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ जी की है। मंदिर में एक ही वेदी है जिसमे 3 धातु की तथा 2 पाषाण की कुल 5 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र है। मंदिर बीस पंथ आम्नाय का है। मंदिर का प्रबन्ध समाज द्वारा किया जाता है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री जमनालाल गंगवाल है।

इस मंदिर में दो बार सन् 1989 और 1990 मे चोरी हो चुकी है जिसमें गोलख व पूजा के मूल्यवान बर्तनों की चोरी हुई। पुलिस में रिपोर्ट की हुई है किन्तु कोई चीज वापस नही आयी।

3. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर तेरहपंथी

फागी का यह प्राचीन मंदिर है जिसका निर्माण लगभग 350 वर्ष पूर्व दिगम्बर जैन अग्रवाल समाज द्वारा कराया हुआ बताया जाता है। निर्माण सम्बन्धी काई प्रामाणिक आधार उपलब्ध नहीं है।

मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की सम्वत् 1741 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में एक ही वेदी है जिसमें 4 धातु की तथा 10 पाषाण की कुल 14 पद्मासन तथा 1 खड्गासन (धातु की) कुल सहित 15 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र विराजमान है। मंदिर तेरहपंथ आम्नाय है। कोई शिलालेख आदि नहीं है। मंदिर का प्रबन्ध समाज द्वारा चुनी हुई कमेटी पार्श्वनाथ नवयुवक मण्डल फागी द्वारा किया जाता है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री कपूरचन्द जैन मांदी वाले हैं।

मंदिर की अचल सम्पत्ति के रूप में एक हवेली, एक दुकान तथा 2 बीघा 4 बिस्वा खेती की जमीन है। अन्य सामान में एक समवसरण भी है। जमीन के सम्बन्ध में मुकदमा चल रहा है।

मंदिर कलापूर्ण एवं दर्शनीय है। यहाँ लगभग 100 हस्तलिखित ग्रंथ हैं जिनकी सूची नही है। 40 मुद्रित ग्रंथ भी हैं।

4. श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन नया मंदिर

इस मंदिर का निर्माण वि.सं. 1945 में श्री तनसुख जी कासलीवाल ने कराया तथा अब भी व्यवस्था कासलीवाल परिवार की देख-रेख में ही हैं। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान मुनिसुव्रतनाथ की सम्वत् 1861 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में 5 वेदियाँ है जिनमें 10 धातु की तथा 22 पाषाण की कुल 32 प्रतिमाएँ है एवं 3 यंत्र हैं। मंदिर गुमानपंथ आम्नाय का है।

मंदिर का प्रबन्ध श्री रतनलाल कासलीवाल पटवारी द्वारा किया जाता है। मंदिर के अधीन अचल सम्पत्ति के रूप मे 2 बिहारी, 7 दुकानें मंदिर के नीचे, सात बीघा कृषि भूमि तथा एक मकान अलग से है। मंदिर मे रथ, पालकी तथा रथ के घोड़े भी हैं।

खेती की जमीन का मुकदमा चल रहा है। जमीन रहन रखी हुई थी, मंदिर के नाम हो गई, किन्तु राहिम ने केस कर रखा है।

मंदिर अच्छा बना हुआ है और सुनहरी व काँच का काम दर्शनीय है। यहाँ करीब 10 हस्तलिखित ग्रन्थ है।

5. श्री दिगम्बर जैन नसियाँ सरावगियान

कहते है यह नसियाँ लगभग 400 वर्ष पूर्व फागी से बाहर की ओर दिगम्बर जैन समाज के छाबड़ा बन्धुओ द्वारा निर्माण कराई गई थी, किन्तु कोई प्रामाणिक उल्लेख नहीं मिलता। नसियाँ यद्यपि प्राचीन है, किन्तु कब बनी यह नही कहा जा सकता। नसियाँ के मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की वि.सं. 2021 की प्रतिष्ठित है। सम्भव है किसी कारणवश प्राचीन प्रतिमा के स्थान पर नई प्रतिमा विराजमान की हो।

नसियाँ में एक वेदी है जिसमे 2 धातु तथा 4 पाषाण की कुल 6 प्रतिमाएँ तथा एक यंत्र है। यह नसियाँ बीसपंथ आम्नाय की है तथा यहाँ क्षेत्रपाल की मूर्ति भी स्थापित है।

यहाँ का प्रबन्ध छाबडा परिवार के सदस्यो द्वारा ही किया जाता है। नसियाँ के अधीन अचल सम्पत्ति के रूप मे 2 दुकाने है। नसियाँ के प्रबन्धक श्री फूलचन्द छाबड़ा एवं श्री ताराचन्द सरपंच फागी हैं।

6. श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ चैत्यालय

इस चैत्यालय का निर्माण अग्रवाल जैन समाज फागी द्वारा सन् 1994 ई. में कराया गया था। इसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ जी की वीर नि.सं. 2500 की प्रतिष्ठित है। चैत्यालय मे एक वेदी है जिसमें 4 धातु की

तथा 3 पाषाण की कुल 7 प्रतिमाएँ एवं 2 यंत्र विराजमान है। चैत्यालय तेरहपंथ आम्नाय का है।

चैत्यालय का प्रबन्ध पार्श्वनाथ जैन युवक मण्डल फागी द्वारा किया जाता है जिसके अध्यक्ष श्री कपूरचन्द अग्रवाल हैं। चैत्यालय में अचल सम्पत्ति के रूप में एक धर्मशाला जिसमे 6 दुकाने तथा 8 कमरें हैं। इसमे कुआ तथा हैण्डपम्प भी है। चैत्यालय की वेदी कलापूर्ण है।

7. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, गोहन्दी

गोहन्दी ग्राम जयपुर-मालपुरा रोड़ पर वाया रेनवाल जयपुर से 46 किलोमीटर दूर और हरसुल्या गांव से 6 किलोमीटर आगे है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो दि. जैन समाज गोहन्दी द्वारा निर्माण कराया हुआ है। मंदिर का निर्माण कब हुआ यह तो नही कहा जा सकता, किन्तु इतना अवश्य है कि मंदिर प्राचीन है और सांगानेर के संघीजी के मंदिर के समान विशाल है। मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमे 2 धातु तथा 9 पाषाण की कुल 11 प्रतिमाएँ एवं दो यंत्र है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। यहाँ 3 दिगम्बर जैन घर हैं, वे ही मंदिर की व्यवस्था देखते है। प्रमुख व्यवस्थापक श्री कन्हैयालाल मोनलाल रावंका है। मु.पो. गोहन्दी, वाया रेनवाल, जयपुर।

8. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, चकवाड़ा

चकवाड़ा फागी-चोरु सड़क मार्ग पर स्थित है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो लगभग 500 वर्ष पुराना बताया जाता है तथा दिगम्बर जैन समाज द्वारा ही निर्मित है। मूलनायक प्रतिमा भगवान नेमिनाथ की सम्वत् 1861 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे 3 वेदियाँ है। जिनमें धातु की 30 तथा पाषाण की 21 कुल 51 प्रतिमाएँ एवं 13 यंत्र है। सबसे प्राचीन प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की सं. 1548 की प्रतिष्ठित है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा क्षेत्रपाल विराजमान है। मंदिर के शास्त्र भण्डार मे 20 हस्तलिखित ग्रंथ है।

यहाँ 6 जैन परिवार हैं। मंदिर की व्यवस्था समाज द्वारा चुनी हुई कमेटी करती है जिसके अध्यक्ष श्री राजेन्द्र कुमार बाकलीवाल है तथा मंत्री श्री चेतनलाल जैन है।

अचल सम्पत्ति के रूप मे 22 बीघा कृषि भूमि, एक कुआ तथा एक 100 वर्ग गज का प्लाट है। इसमे से 9 बीघा जमीन का विवाद चल रहा है। सन् 1986-87 के आस-पास मंदिर मे चोरी हो गई थी जिसमे 3 छत्र तथा कुछ सामान अब भी न्यायालय मे है। श्री भंवरलाल वकील इसमे पैरवी कर रहे हैं।

मंदिर का प्रवेश-द्वार कलापूर्ण है। यहाँ भगवान नेमिनाथ की प्रतिमा अत्यन्त चमत्कारपूर्ण है। ऐसी किवदंती है कि प्रतिदिन प्रात: प्रतिमा के सामने एक रूपये का सिक्का चढ़ाया हुआ मिलता है। कौन चढ़ाता है यह ज्ञात नहीं।

9. श्री दिगम्बर जैन नसियाँ, चकवाड़ा

चकवाड़ा ग्राम के बाहर एक दिगम्बर जैन नसियाँ है जिसका निर्माण लगभग 200 वर्ष पूर्व जयपुर मे पानो के दरीबा मे रहने वाले श्री माणकचन्द ललितकुमार बाकलीवाल के पूर्वजों ने कराया था। यहाँ भगवान पार्श्वनाथ की मूलनायक प्रतिमा है। यह सम्वत् 2007 की फुलेरा मे प्रतिष्ठित है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमें पाषाण की एक प्रतिमा तथा एक यंत्र है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। नसियाँ की व्यवस्था चकवाड़ा समाज द्वारा चुनी हुई कमेटी करती है। यहाँ के मंत्री श्री चेतनलाल जैन है।

मंदिर के अधीन अचल सम्पत्ति के रूप मे चार दुकानें हैं जिनका किराया आता है तथा एक दुकान और बनवाली गई है। यह दुकान बन्द पड़ी है, और सांभर कोर्ट मे मुकदमा चल रहा है।

10. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर चन्द्रप्रभ स्वामी, चांदमाकलॉ

चांदमाकलॉ पीपला से 6 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसके निर्माण के सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है। मूलनायक प्रतिमा चन्द्रप्रभ स्वामी की है। मंदिर मे 3 वेदियाँ हैं जिनमें 7 धातु तथा 8 पाषाण की कुल 15 प्रतिमाएँ एवं 5 यंत्र है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सं. 1548 की है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा यहॉं 5 दिगम्बर जैन घर है। सन् 1956 में यहॉं 32 जैन घर थे। मंदिर का प्रबन्ध समाज द्वारा ही किया जाता है। अचल सम्पत्ति के रूप मे दो मकान है। जमीन के सम्बन्ध मे मुकदमा राजस्व मण्डल अजमेर में चल रहा है।

स्वाध्याय हेतु 5 ग्रन्थ हस्तलिखित एवं 7 मुद्रित है।

मंदिर अच्छा बना हुआ है तथा वेदी मकराने की है। मंदिर के वर्तमान में प्रबन्धक श्री रतनलाल जैन है।

11. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, चित्तौड़ा

चित्तौड़ा ग्राम जयपुर-मालपुरा रोड़ पर जयपुर से 40 किलोमीटर दूर है। चित्तौड़ा में पोस्ट आफिस है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो लगभग 600 वर्ष पुराना बताया जाता है तथा दिगम्बर जैन समाज चित्तौड़ा द्वारा निर्मित है। मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1542 की प्रतिष्ठित है

जो अत्यन्त मनोज्ञ है। मंदिर में मकराने की दो वेदियाँ है जिनमे 24 धातु की तथा 13 पाषाण की कुल 37 प्रतिमाएँ एवं 6 यंत्र है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1542 की है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। वर्तमान मे यहाँ 4 दिगम्बर जैन परिवार हैं। स्थानीय जैन समाज द्वारा ही मंदिर की व्यवस्था की जाती है। अचल सम्पत्ति के रूप मे मंदिर के नीचे दो दुकाने और एक धर्मशाला है। धर्मशाला का क्षेत्रफल 125 वर्ग गज है। दो दुकानों की खाली जमीन भी है।

मंदिर मे दो बार चोरी हो चुकी है। दोनो ही बार पुलिस मे रिपोर्ट की, किन्तु कुछ नतीजा नही निकला।

मंदिर में 55 हस्तलिखित ग्रन्थ है जिसकी सूची दिनांक 9.9.90 को श्री अनूपचन्द न्यायतीर्थ ने यहाँ आकर बनायी है।

सबसे प्राचीन प्रतिमा सं. अठारहवी सदी की है। शेष प्रतिमा अधिकतर बीसवी सदी की है। प्राय स्वाध्याय के ग्रन्थ ही हैं।

यहाँ के मुख्य प्रबन्धक श्री मोतीलाल सेठी है।

चोरू:

फागी तहसील का चोरू एक प्राचीन कस्बा है। यह जयपुर-मालपुरा रोड़ पर फागी से 14 किलोमीटर पश्चिम में तथा फागी व दूदू के बीच रामनाड़ा से 4 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। यहाँ पहिले काफी जैन परिवार थे किन्तु जयपुर नगर की स्थापना के साथ यहाँ के कितने ही परिवार जयपुर जाकर बस गये। मुख्यत: चौकड़ी मोदीखाना में चौरूकों का रास्ता (मोहल्ला) यहाँ से आये हुए परिवारों के नाम पर ही प्रसिद्ध है। इस मोहल्ले में सभी जैन परिवार बड़जात्या गोत्रीय हैं। जयपुर के कुछ परिवारों की अब भी चोरू में जमीन जायदाद है। श्री भंवरलाल न्यायतीर्थ व श्री अनूपचन्द न्यायतीर्थ आदि के पूर्वज चोरू निवासी ही थे। चोरू में वर्तमान में 30 दिगम्बर जैन परिवार हैं तथा दो मंदिर एवं एक नसियाँ है। यहाँ एक चन्द्रसागर दिगम्बर जैन औषधालय भी कार्यरत है।

12. श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर

यह मंदिर अत्यन्त प्राचीन है जिसका निर्माण दिगम्बर जैन समाज द्वारा संवत् 1601 मे कराया हुआ बताते है। मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ जी की है जो संवत् 1861 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे 3 वेदियाँ है जिनमें 66 धातु तथा 12 पाषाण की कुल 82 प्रतिमाऐं एवं 29 यंत्र है। प्रतिमाओ में 2 सिद्ध भगवान तथा एक पन्ना, एक स्फटिक मणि, एक मूंगा तथा एक बिल्लौर की है। इनके अतिरिक्त एक पद्मावती माता व एक अम्बिका माता की प्रतिमाएँ भी है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सं. 1548 की प्रतिष्ठित है।

मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। क्षेत्रपाल की प्रतिमा अत्यन्त चमत्कारिक है। मंदिर की व्यवस्था विधानानुसार चुनी हुई कमेटी द्वारा की जाती है जिसके अध्यक्ष श्री कपूरचन्द भॉवसा है।

मंदिर के अधीन अचल सम्पत्ति के रूप मे 20 बीघा जमीन खेती की मय कुआ, पांच दुकाने, एक मकान तथा एक कमरा अलग मकान की छत पर है। उत्सव, विधानादि हेतु पूजा उपकरण, जाजम 2, साईवान 1, दरी 1, सोना चढी हुई तांबे की 3 कटनी की एक वेदी है। जरी का चन्दोवा है।

इस मंदिर के अधीन एक धर्मशाला जिसमे 14 कमरे तथा कुआ है एवं दो नोहरे 20X30 तथा 50X100 क्षेत्रफल के और है।

मंदिर मे चांदी के बर्तन व उपकरण आदि दिनांक 22 1.93 को चोरी हो गये जिनमे लगभग 35 किलो चांदी के बर्तन व उपकरण चोर ले गये जिसकी रिपोर्ट थाना फागी मे दर्ज करायी गई है, किन्तु अभी तक कोई कार्यवाही बरामदगी की नही हुई है।

मंदिर का शिखर कलापूर्ण है तथा मंदिर मे 200 ग्रन्थो का संग्रह है जिनमे 100 हस्तलिखित है। यहाँ अनुबन्ध पर माली कार्य करता है।

मंदिर मे कभी-कभी शास्त्र सभा होती है और हरवर्ष भाद्रपद मास मे उत्सव, विधानादि होते है।

13. श्री दिगम्बर जैन नया मन्दिर

इस मंदिर का निर्माण चोरू दिगम्बर जैन समाज द्वारा सम्वत् 1945 मे कराया गया है। इसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की सम्वत् 1948 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में 5 वेदियाँ है जिनमे 17 धातु तथा 14 पाषाण की कुल 31 प्रतिमाएँ एवं 9 यंत्र विराजमान है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा प्रबन्ध स्थानीय दि. जैन समाज द्वारा किया जाता है।

अचल सम्पत्ति के रूप मे 7 दुकाने, 1 नोहरा, एक हवेली तथा एक धर्मशाला है जिसमें 1 कुआ भी है।

मंदिर मे लगभग 25 तथा 30 वर्ष पूर्व दो बार चोरी हो गई थी दोनों की रिपोर्ट दर्ज कराई थी जिसमे से पहिले हुई चोरी की मूर्तियाँ वापस आ गई। 25 वर्ष पूर्व की चोरी की अभी कोई बरामदगी नही हुई है।

मंदिर कलापूर्ण एवं मनोज्ञ है तथा शास्त्र भण्डार में लगभग 15 हस्तलिखित ग्रन्थ हैं।

यहाँ का प्रबन्ध श्री महावीर प्रसाद जैन एवं श्री राजकुमार जैन करते है।

14. श्री दिगम्बर जैन नसियां

यह नसियाँ चोरू ग्राम से बाहर स्थित है। इसका निर्माण कब कराया गया कोई उल्लेख नही मिलता किन्तु नसियाँ बड़े मंदिर के साथ ही लगभग सम्वत् 1600 के आस-पास बनी प्रतीत होती है। नसियाँ में स्थित मंदिर मे 3 वेदियाँ हैं जिनमें 2 धातु तथा 7 पाषाण की कुल 9 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र है। वेदी में मूलनायक प्रतिमा भगवान अजितनाथ की है जो सम्वत् 1664 मौजमाबाद की प्रतिष्ठित है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। 2 मूर्तियाँ क्षेत्रपाल की भी स्थित है जो चमत्कारिक हैं। इसके अतिरिक्त मंदिर के बाहर नसियाँ के प्रांगण में 3 चरण-चिन्ह छत्रियाँ भी है।

यहाँ एक पुरानी नसियाँ और है जिसमे छत्री, बावड़ी व चरण चिन्ह है। कोई प्रतिमा आदि विराजमान नहीं है। मंदिर की परिधि मे लगभग 1 बीघा पक्की जमीन है, कुआ है और इसकी बाउण्ड्री बनी हुई है।

नसियाँ मे प्रतिमाओं की चोरी हो गई थी जिसकी रिपोर्ट थाना मे दर्ज कराई किन्तु अभी तक कुछ नही हुआ।

यहाँ की पुरानी नसियाँ मे 3 छत्रियो मे से एक मुनि श्री पुष्पदंतसागर महाराज की सं 2048 की है तथा एक बिचली छत्री पर कोई उल्लेख नही है। एक अन्य तीसरी छत्री भट्टारकजी की है।

नसियाँ की व्यवस्था यहाँ के बडे मंदिर की प्रबन्ध समिति द्वारा ही की जाती है। यह उसी मंदिर के अधीन है। इसके प्रबन्धक श्री राजकुमार जैन है।

15. श्री दि. जैन मन्दिर अतिशय क्षेत्र पद्मप्रभ जिनालय, झराणा

झराणा जयपुर से वाया फागी-माधोराजपुरा 59 किलोमीटर दूर है। यहाँ का मु० पो० माधोराजपुरा है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो ''दिगम्बर जैन मंदिर अतिशय क्षेत्र पद्मप्रभु जिनालय झराणा'' के नाम से प्रसिद्ध है। मंदिर लगभग 400 वर्ष पूर्व झराणा के सेठी परिवार द्वारा बनाया हुआ बताया जाता है। मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान पद्मप्रभु की अत्यंत अतिशय पूर्ण है जो सम्वत् 1719 की प्रतिष्ठित है। इसी से यह अतिशय क्षेत्र कहलाता है।

मंदिर में एक वेदी है जिसमे 3 पाषाण तथा एक धातु की पद्मावती प्रतिमा सहित 4 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

झराणा में अब एक भी जैन घर नहीं है। अत· यहाँ की व्यवस्था श्री भंवरलाल सेठी माधोराजपुरा वाले करते है। वर्ष 1991-92 मे लगभग 800 वर्ष प्राचीन भगवान चन्द्रप्रभ की प्रतिमा की चोरी हो गई थी जिसकी पुलिस मे रिपोर्ट दर्ज करायी थी, किन्तु कुछ नही हुआ।

मंदिर का हाल ही मे जीर्णोद्धार कराया गया है जिससे बिल्कुल नया लगता है। यहाँ प्रतिवर्ष हरियाली अमावस्या तथा आसोज बुदी 2 का मेला भरता है। आर्थिक स्थिति ठीक है।

16. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, झाडला

झाडला गांव जयपुर से जयपुर-मालपुरा रोड़ पर 35 कि.मी पर पूर्व की ओर मुड़कर 3 किलोमीटर अथार्त जयपुर से 38 कि. मी. दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो दिगम्बर जैन समाज झाडला द्वारा लगभग 300 वर्ष पूर्व बनवाया गया था। मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है जो सम्वत् 1852 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में एक वेदी है जिसमे 4 धातु तथा 3 पाषाण की कुल 7 प्रतिमाएँ एवं 2 यंत्र है। सबसे प्राचीन प्रतिमा भगवान महावीर स्वामी की सम्वत् 1545 की प्रतिष्ठित है।

मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा क्षेत्रपाल की प्रतिमा है।

यहाँ जैनो का एक घर है। मंदिर की व्यवस्था श्री नरेन्द्र कुमार पाटनी करते है। मत्री श्री धर्मेन्द्र जैन है।

17 श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पार्श्वनाथजी, डाबच

डाबच ग्राम जयपुर से वाया चाकसू 60 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसकी स्थापना सम्वत् 1748 मे डाबच के अजमेरा परिवार ने की थी। मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1826 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे 3 वेदियॉ है जिनमे 10 धातु तथा 10 पाषाण की कुल 20 प्रतिमाएँ एवं 4 यंत्र है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1548 की है। मदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा क्षेत्रपाल की प्रतिमा विराजमान है।

मदिर सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर है तथा प्रवेश द्वार पर गुम्बज है। अन्दर चौक मे से जिनमंदिर का प्रवेश द्वार है। ऊपर बड़ा गुम्बज है। मदिर स्वच्छ एव सुन्दर है। वेदी कलापूर्ण है।

यहाँ एक जैन अजमेरा गोत्रीय परिवार है। मंदिर की व्यवस्था श्री प्रेमचन्द अजमेरा तथा उनकी माताजी ही करते है। मंदिर का क्षेत्रफल 200 वर्ग गज है। स्व० श्री चिमनलाल अजमेरा मुनीम जवाहरमल सुगनाचन्द तथा श्री मुन्नीलाल अजमेरा चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट यहाँ के ही थे।

18. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, नारेड़ा

फागी चोरू मार्ग पर नारेड़ा ग्राम है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान अजितनाथ की सम्वत् 1661 की प्रतिष्ठित है।

मंदिर मे एक वेदी है जिसमे 3 धातु तथा 6 पाषाण की कुल 9 प्रतिमाएँ एव 2 यंत्र हैं। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा क्षेत्रपाल जी की प्रतिमा भी है। यहाँ एक जैन घर है। अचल सम्पत्ति के रूप मे एक मकान है जिसमे 3 कमरे है। आर्थिक स्थिति सामान्य है।

स्वाध्याय के लिये 4-5 हस्तलिखित ग्रंथ है। मंदिर के प्रबन्धक श्री जतनलाल जैन है।

19. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, नीमेड़ा

ग्राम नीमेड़ा फागी के पास है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर तथा 5 दिगम्बर जैन परिवार है। मदिर 600 वर्ष पुराना बताया जाता है जिसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की सम्वत् 1542 की प्रतिष्ठित है। सबसे प्राचीन प्रतिमा भगवान अजितनाथ की सम्वत् 1457 की है। मंदिर का निर्माण स्थानीय दिगम्बर जैन समाज द्वारा कराया बताया जाता है।

मंदिर मे 3 वेदियाँ है जिनमे 21 धातु तथा 18 पाषाण की कुल 39 प्रतिमाएँ एव 6 यंत्र है। एक क्षेत्रपाल जी की मूर्ति है तथा मंदिर बीसपथ आम्नाय का है। मदिर का प्रबन्ध स्थानीय समाज द्वारा किया जाता है जिसके प्रबन्धक श्री नेमीचन्द रूपचन्द जैन है।

मंदिर के अधीन अचल सम्पत्ति के रूप मे दो दुकाने है। मंदिर मे चोरी हो चुकी है जिसमे छत्री के गुम्बज का कलश चोरी गया किन्तु पुलिस में रिपोर्ट कराने पर भी कुछ नही हुआ।

मंदिर कलापूर्ण है तथा यहां के शास्त्र भण्डार मे लगभग 40 हस्तलिखित ग्रन्थ है।

20. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, पीपला

पीपला गांव जयपुर मालपुरा रोड पर जयपुर से 36 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक विशाल दिगम्बर जैन मदिर है जिसका निर्माण पीपला के दिगम्बर जैन समाज ने 300 वर्ष पूर्व कराया था। मूलनायक प्रतिमा भगवान महावीर स्वामी की है जिसका प्रतिष्ठा लेख अस्पष्ट है। मंदिर मे 3 वेदियाँ है जिनमे 6 धातु तथा 8 पाषाण की कुल 14 प्रतिमाएँ एवं 2 यंत्र है। सबसे प्राचीन प्रतिमा स. 1826 की है। प्रतिमाओं मे 2 प्रतिमा धातु की खड़्गासन है। अन्य प्रतिमाओं मे 1861 जयपुर तथा 1985 की मौजमाबाद की प्रतिष्ठित है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। पीपला मे 8 ही जैन परिवार है।

मंदिर की व्यवस्था समाज द्वारा ही की जाती है। जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री लाधुलाल पटवारी हैं। अचल सम्पत्ति के रूप मे मंदिर के अधीन एक धर्मशाला

है और कुआ है। एक प्लाट 60×50 वर्ग गज का भी है। मंदिर का क्षेत्रफल 200 वर्ग गज है।

मंदिर में सन् 1980 तथा 1981 में दो बार चोरी हुई। जिसमें मूल्यवान सामान चोरी गया। रिपोर्ट पुलिस थाना फागी मे की गयी किन्तु अब तक कुछ नहीं हुआ।

स्वाध्याय हेतु मंदिर में 20 हस्तलिखित तथा 20 ही मुद्रित ग्रन्थ है जिनकी सूची बनी हुई नही है।

यहाँ के मंत्री श्री राजेन्द्रकुमार गंगवाल है।

बिसालू:

बिसालू गांव जयपुर से 80 किलोमीटर दूर है। जहाँ फागी, माधोराजपुरा चांदमो कलां तथा नया गांव होते हुए पहुँचा जा सकता है। यहाँ दो दिगम्बर जैन मंदिर हैं तथा दो ही जैन परिवार हैं। परिवारों में विवाद हो जाने के कारण दूसरे मंदिर (चैत्यालय) की स्थापना हुई है।

21. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, बिसालू

इस मंदिर का निर्माण लगभग 250 वर्ष पूर्व बिसालू के दिगम्बर जैन समाज द्वारा कराया गया था। मंदिर के प्रवेश द्वार पर एवं मुख्य वेदी पर गुम्बज बने है। अन्दर चौक में से जिनमंदिर का प्रवेश द्वार है। सामने वेदी है जिसमें मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है जो सम्वत् 1745 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे दो वेदियाँ है जिनमे 6 धातु तथा 5 पाषाण की कुल 11 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र है। इनमे एक पाषाण की चौबीसी है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1548 की है। मंदिर का क्षेत्रफल 200 वर्ग गज का है।

मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। इसका प्रबन्ध श्री कन्हैयालाल वैद करते है।

22. श्री दिगम्बर जैन चैत्यालय महावीर स्वामी, बिसालू

बिसालू का यह दूसरा मंदिर है जिसकी स्थापना दिनांक 29.5.1979 (सम्वत् 2036) में हुई थी। इसके निर्माणकर्ता श्री गुलकन्दलाल जैन है। यह मंदिर चैत्यालय के रूप मे पुराने मंदिर के बराबर एक कमरे मे हैं। इसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान महावीर स्वामी की है जो सम्वत् 2036 की प्रतिष्ठित है। इसमे एक ही वेदी है जिसमें एक प्रतिमा तथा एक यंत्र है।

मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। आर्थिक स्थिति ठीक है। इसके प्रबन्धक श्री गुलकन्दलाल वैद है।

23. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पार्श्वनाथजी, बीची

बीची ग्राम जयपुर से वाया फागी-माधोराजपुरा मार्ग पर 72 किलोमीटर दूर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो लगभग 250 वर्ष पूर्व बीची के दिगम्बर जैन समाज द्वारा निर्माण कराया हुआ है। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1826 की प्रतिष्ठित है। मंदिर सीढ़ियॉं चढ़कर ऊपर है। प्रवेश द्वार पर गुंबज है। चौक मे से जिनमंदिर का प्रवेश द्वार है। एक ही वेदी है जिसमें 32 धातु तथा 1 पाषाण की कुल 33 प्रतिमाएँ एवं 8 यंत्र हैं। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। क्षेत्रपाल तथा पद्मावती देवी की प्रतिमाएँ है। यहां एक पीतल की चरण चौकी भी है तथा एक यंत्र मे भगवान चन्द्रप्रभ की आकृति है। एक प्रतिमा चौमुखी (सर्वतोभद्र) भी है।

बीची मे 9 दिगम्बर जैन परिवारो के लगभग 100 व्यक्ति है। मंदिर की व्यवस्था समाज द्वारा ही की जाती है जिसके प्रमुख श्री रतनलाल काला एवं छीतरमल पहाड़िया हैं।

24. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, मण्डावरी

फागी के पास ही मण्डावरी ग्राम है, जहाँ एक दिगम्बर जैन मदिर है जिसका निर्माण लगभग 500 वर्ष पूर्व यहाँ की दिगम्बर जैन समाज द्वारा कराया बताया जाता है।

मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की सम्वत् 1565 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमे 3 धातु तथा 8 पाषाण की कुल 11 प्रतिमाऍ एवं 5 यत्र है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा क्षेत्रपाल जी की प्रतिमा भी है। वर्तमान मे यहाँ 5 दिगम्बर जैन परिवार है। मदिर का प्रबन्ध स्थानीय दिगम्बर जैन समाज द्वारा ही किया जाता है।

मंदिर के अधीन अचल सम्पत्ति के रूप मे दो खाली प्लाट है जिसका क्षेत्रफल 30×40 तथा 100×100 गज है। प्रबन्धक श्री पदमचन्द जैन है।

माधोराजपुरा :

माधोराजपुरा फागी तहसील का एक प्राचीन एवं प्रमुख कस्बा है जो जयपुर से वाया फागी 60 किलोमीटर जयपुर-मालपुरा रोड़ पर स्थित है। यहाँ दिगम्बर जैनों के 50 घर हैं तथा तीन प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर हैं। यहाँ प्रतिवर्ष महावीर जयन्ती पर तीनों मंदिरों में बारी-बारी से मेला होता है। माधोराजपुरा को तीर्थ क्षेत्र हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप की प्रेरणा स्रोत 105 गणिनी आर्यिका ज्ञानमती माता जी का दीक्षा स्थल होने का भी गौरव

प्राप्त है। उन्होंने यहीं पर 108 आचार्य वीरसागर जी महाराज से आर्यिका दीक्षा ली थी। यहाँ जैन मुनि आर्यिकाओं के संघ आते ही रहते हैं। यहाँ के श्रावक धार्मिक एवं स्वाध्याय प्रेमी हैं। मंदिरों में हस्तलिखित ग्रन्थों का अच्छा संग्रह हैं। यहाँ के मंदिर प्राचीन तथा विशाल हैं।

25. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बीसपंथी

इस मंदिर का निर्माण दिगम्बर जैन समाज माधोराजपुरा द्वारा लगभग 250 वर्ष पूर्व कराया गया था। इसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है जो सम्वत् 1562 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे 5 वेदियाँ है जिनमे 57 धातु की तथा 32 पाषाण की तथा 2 चरण चोकी कुल 91 प्रतिमाएँ एवं 38 यंत्र है। सबसे प्राचीन 2 प्रतिमाएँ भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1272 की प्रतिष्ठित है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा प्रवेश द्वार पर एक ओर क्षेत्रपाल तथा दूसरी ओर पद्मावती की धातु की 3 प्रतिमाएँ विराजमान है।

मदिर का प्रबन्ध चुनी हुई कमेटी द्वारा किया जाता है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री गुलकन्दीलाल बाकलीवाल है।

मदिर के अधीन अचल सम्पत्ति के रूप मे 12 दुकाने, एक पुरानी हवेली, एक नोहरा 200 वर्ग गज का है जिसमे कुआ है तथा हैड़पम्प लगा हुआ है।

गत 10 वर्षो की अवधि मे मंदिर मे 2 बार चोरी हुई किन्तु पुलिस मे रिपोर्ट दर्ज करवाने पर भी कोई कार्यवाही नही हुई।

शास्त्र भण्डार मे 50-60 हस्तलिखित ग्रन्थ हैं।

मंदिर कलापूर्ण है तथा प्रवेश द्वार पर मनोज्ञ भावो की दर्शनीय चित्रकारी है। सुन्दर भित्ति चित्र है। यहॉ प्रतिवर्ष महावीर जयन्ती पर ही उत्सव होता है।

26. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, तेरहपंथी

इस मंदिर का निर्माण माधोराजपुरा की तेरहपंथी दिगम्बर जैन समाज ने लगभग 200 वर्ष पूर्व कराया था। मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है जो समवसरण मे विराजमान है तथा सम्वत् 1852 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में 3 वेदियाँ है जिनमे 22 धातु की तथा 9 पाषाण की कुल 31 प्रतिमाएँ एवं 2 यंत्र हैं। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1852 की है। मंदिर तेरहपंथ (गुमानपंथ) आम्नाय का है जिसमें बीच में समवसरण बना है। यह मंदिर जयपुर के गुमानपंथी बधीचन्दजी दीवान के मंदिर से सम्बन्धित है।

मंदिर का प्रबन्ध स्थानीय समाज द्वारा किया जाता है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री चिरंजीलाल बाकलीवाल तथा मंत्री श्री प्रकाशचन्द बाकलीवाल हैं।

मंदिर के अधीन अचल सम्पत्ति के रूप मे 6 दुकाने, दो नोहरे पांच-पांच सौ वर्ग गज के तथा एक कुआ है।

मंदिर में सन् 1987-88 में चोरी हुई थी जिसमे चांदी की पालकी चोरी गई थी, रिपोर्ट पुलिस में दर्ज कराई गई पर कोई बरामदगी नही हुई।

मंदिर कलापूर्ण है तथा शास्त्र भण्डार मे 51 हस्तलिखित ग्रन्थ है जिनमें प्रमुख सं. 1735 का समाधि तंत्र, 1089 का पार्श्वपुराण, सं. 1827 का पुरूषार्थ सिद्धियुपाय है।

यहाँ महावीर जयन्ती का वार्षिक मेला होता है।

27. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर अग्रवालान

इस मंदिर का निर्माण दिगम्बर जैनाग्रावाल समाज माधोराजपुर ने लगभग 200 वर्ष पूर्व कराया था। इसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है जो सम्वत् 1230 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में 3 वेदियाँ है जिनमे 14 धातु की तथा 18 पाषाण की कुल 32 प्रतिमाएँ एवं 11 यंत्र है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1230 की है। मंदिर तेरहपंथ आम्नाय का है।

अचल सम्पत्ति के रूप मे मंदिर के पीछे 4 नोहरे मय कुआ 200 वर्ग गज, 7 दुकानें, एक धर्मशाला जिसमे 8 कमरे, 7 दुकाने, एक मकान तीन कमरों का श्री रामजीवणजी मोदी का चढ़ाया हुआ, नोहरा एक लुहारो की दुकान के पीछे का 500 वर्ग गज का है। मंदिर में एक आलमारी स्टील की, हाथी एक, रथ एक तथा समवसरण भी है। श्रीरामजीवणजी भोली द्वारा चढ़ाये गये मकान के सम्बन्ध मे मुकदमा चल रहा है। मार्च, 1993 मे मंदिर मे चोरी हुई थी जिसमें एक प्रतिमा चौबीसी की अष्टधातु की चली गयी थी। पुलिस मे रिपोर्ट की थी, किन्तु अभी तक कुछ नही हुआ।

मंदिर कलापूर्ण एवं दर्शनीय है तथा दुछत्ता है। शास्त्र भण्डार मे हस्तलिखित है।

महावीर जयन्ती पर मेला भरता है। मंदिर का प्रबन्ध चुनी हुई कमेटी द्वारा होता है जिसके मुख्य प्रबन्धक श्री श्रवणकुमार जैनाग्रवाल है।

28. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, मैंदवास

मैंदवास ग्राम फागी के पास ही है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण लगभग 800 वर्ष पूर्व मैंदवास के दिगम्बर जैन समाज द्वारा कराया बताया जाता है। मंदिर निर्माण के सम्बन्ध में कोई प्रामाणिक जानकारी नहीं है। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान महावीर स्वामी की है (चौबीसी प्रतिमा पाषाण की है जिसमे मूलनायक महावीर स्वामी है) जो सम्वत् 1826

की प्रतिष्ठित है। मंदिर में एक वेदी है जिसमे 3 धातु तथा 6 पाषाण की कुल 9 प्रतिमाएँ एवं 2 यंत्र है। यहाँ सात जैन परिवार हैं तथा मंदिर बीसपंथी आम्नाय का है। इसका प्रबन्ध स्थानीय दिगम्बर समाज द्वारा किया जाता है।

मंदिर कलापूर्ण है तथा अचल सम्पत्ति के रूप मे एक दुकान तथा 6 कमरो वाली धर्मशाला है। इसका क्षेत्रफल 90×40 गज है। मंदिर से किराये पर बर्तन व बिछायत आदि दिये जाते है।

मंदिर मे लगभग 40 हस्तलिखित ग्रन्थ है। मंदिर का चौक दुछत्ता बना हुआ है। प्रबन्धक श्री रामगोपाल जैन है।

29. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, मोहब्बतपुरा

मोहब्बतपुरा ग्राम जयपुर-मालपुरा सडक पर जयपुर से 38 किलोमीटर दूरी पर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है। जो दिगम्बर जैन समाज मोहब्बतपुरा द्वारा निर्मित है। मंदिर कब बना इसका कोई निश्चित समय ज्ञात नही है। मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है। यहाँ एक वेदी मे 2 धातु तथा 1 पाषाण की कुल 3 प्रतिमाएँ विराजमान है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। पूजा प्रक्षाल 7 दिन मे एक बार रेनवाल समाज की ओर से होती है।

गांव मे एक भी जैन घर नही है। मंदिर की देख-रेख रेनवाल दिगम्बर जैन समाज की नये मंदिर की कमेटी द्वारा की जाती है। मुख्य प्रबन्धक श्री कैलाशचन्द झांझरी तथा अशोक कुमार जैन है।

यहाँ प्रतिवर्ष आसोज माह के पहिले रविवार को मेला होता है।

30. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, नया चित्तौड़ा-रेनवाल

रेनवाल (माजीकी) जयपुर-मालपुरा रोड़ पर जयपुर से 32 किलोमीटर दूर है। यह एक अच्छा कस्बा है। यहाँ 32 दिगम्बर जैन परिवार हैं। यहाँ के दिगम्बर जैन मंदिर का निर्माण लगभग 100 वर्ष पूर्व दिगम्बर जैन समाज रेनवाल ने कराया बताया। इस सम्बन्ध मे कोई प्रामाणिक उल्लेख उपलब्ध नही है। मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1985 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में 4 वेदियाँ हैं। जिनमें 38 धातु की तथा 12 पाषाण की कुल 50 प्रतिमाएँ एवं 15 यंत्र है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1948 की है। मंदिर तेरहपंथ आम्नाय का है। मंदिर में एक प्रतिमा धातु की पद्मावती माता की भी है। इसके अतिरिक्त मंदिर से आधा किलोमीटर दूर दक्षिण की ओर फागी रोड़ पर श्रेष्ठमती आर्यिका माताजी की समाधिस्थल है जिस पर छत्री बनाने की योजना है।

मंदिर का प्रबन्ध एक चुनी हुई कमेटी द्वारा किया जाता है जिसके प्रबन्धक श्री कैलाशचन्द झांझरी हैं। श्री दिगम्बर जैन मंदिर मोहब्बतपुरा एवं हरसूल्या का प्रबन्ध भी यहाँ की कमेटी द्वारा ही किया जाता है।

मंदिर की अचल सम्पत्ति के रूप मे एक जैन भवन 700 वर्ष गज क्षेत्रफल का है जिसमें एक कुआ है तथा उसमें मोटर लगी हुई है। इसके अलावा मंदिर के नीचे 12 दुकाने और है।

मंदिर में हस्तलिखित ग्रन्थ भी हैं इनकी सूची बनी हुई नही है। कभी-कभी शाम को शास्त्र सभा का आयोजन भी होता है।

वेदी कलापूर्ण एवं सुन्दर है तथा कुछ प्राचीन तस्वीरे भी कलापूर्ण है।

वर्तमान मे यहाँ मंत्री श्री महावीरप्रसाद कोठ्यारी है।

31. श्री दिगम्बर जैन चैत्यालय, रेनवाल

इस चैत्यालय की स्थापना लगभग 250 वर्ष पूर्व दिगम्बर जैन समाज रेनवाल द्वारा कराई बताई जाती है। यद्यपि इस सम्बन्ध मे कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। इसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान आदिनाथ की है जो सम्वत् 1856 की प्रतिष्ठित है। इस चैत्यालय मे दो वेदियाँ है जिनमे 25 धातु तथा 6 पाषाण की कुल 31 प्रतिमाएँ एवं 4 यंत्र है। प्रतिमाओ मे एक धातु की खड्गासन प्रतिमा है। जिनालय बीसपंथ आम्नाय का है। क्षेत्रपाल की मूर्ति भी है।

चैत्यालय का प्रबन्ध समाज द्वारा ही किया जाता है। चैत्यालय के नीचे अचल सम्पत्ति के रूप में ग्यारह दुकाने हैं। स्वाध्याय के लिये सामान्य ग्रन्थ उपलब्ध हैं।

चैत्यालय की आर्थिक स्थिति संतोषजनक है। वर्तमान मे यहाँ के मुख्य प्रबन्धक श्री पदमचन्द जैनाग्रवाल तथा मत्री श्री अशोक कुमार जैन हैं।

32. श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर, चित्तौड़ा-रेनवाल

इस मंदिर का निर्माण एक शिलालेख के अनुसार, जो जिन मदिर मे बांये हाथ की ओर है, सम्वत् 1718 मे कराया गया है। लेख पढ़ने मे नही आने के कारण निर्माणकर्ता का पता नही चलता। मंदिर में मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है जो सम्वत् 1564 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे कुल 4 वेदियाँ हैं जिनमें 23 धातु तथा 16 पाषाण की कुल 39 प्रतिमाएँ एवं 20 यंत्र हैं। एक धातु की चरण चौकी है। इन प्रतिमाओ में 1 पद्मावती देवी की प्रतिमा भी है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

इस मंदिर का प्रबन्ध चुनी हुई कमेटी द्वारा किया जाता है जिसके अध्यक्ष

श्री प्रेमचन्द झांझरी है। मंदिर के नीचे अचल सम्पत्ति के रूप मे एक दुकान तथा एक बिहारी है। बिहारी का क्षेत्रफल 200 वर्ग गज है।

मंदिर मे पिछले 8 वर्षों मे दो बार चोरी हुई है। दोनो मे ही प्रतिमाएँ चोरी गई हैं और पुलिस मे रिपोर्ट की गई, किन्तु कोई वापस नहीं मिली।

शास्त्र भण्डार मे सामान्य हस्तलिखित ग्रन्थ है।

मंत्री श्री बिरधीचन्द रावंका है।

लदाणा :

लदाणा ग्राम जयपुर से मालपुरा रोड़ पर 42 किलोमीटर की दूरी पर है। पो० लदाणा, तहसील फागी है। यहाँ दो दिगम्बर जैन मंदिर है। दोनो ही चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर के नाम से जाने जाते है। यहाँ दिगम्बर जैनो के 8 परिवार है।

33. श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मन्दिर (प्रथम)

इस मंदिर का निर्माण लदाणा के दिगम्बर जैन समाज द्वारा लगभग 300 वर्ष पूर्व कराया गया था। मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है जो सम्वत् 1694 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमे 1 धातु तथा 3 पाषाण की कुल 4 प्रतिमाएँ एवं दो यंत्र है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1657 की भगवान कुंथुनाथ की है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

मंदिर के अधीन अचल सम्पत्ति के रूप मे 7 बीघा कृषि भूमि तथा एक पक्का कुआ है। मंदिर कलापूर्ण एवं दर्शनीय है। इसका प्रबन्ध समाज द्वारा ही किया जाता है जिसके प्रमुख प्रबन्धक श्री कैलाशचन्द ठोलिया तथा मंत्री श्री पदमचन्द जैन है।

34. श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मन्दिर (द्वितीय)

इस मंदिर का निर्माण भी लदाणा दिगम्बर जैन समाज द्वारा लगभग 300 वर्ष पूर्व कराया जाना बताते है। कहते है जब से ग्राम बसा है तभी से जैन मंदिर है। मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है जो सम्वत् 1826 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे पाँच वेदियाँ है जिनमे 13 धातु तथा 13 पाषाण की कुल 26 प्रतिमाएँ एवं 14 यंत्र है। सबसे प्राचीन प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है।

मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है तथा बाहर के आलय में क्षेत्रपाल विराजमान है।

मंदिर के अधीन अचल सम्पत्ति के रूप में एक धर्मशाला जिसमे 5 कमरे, 5 दुकाने तथा 8 बीघा कृषि भूमि मय पक्का कुआ है।

मंदिर कलापूर्ण है तथा 20-25 मुद्रित ग्रन्थ है। मंदिर का प्रबन्ध चुनी हुई कमेटी द्वारा किया जाता है जिसके अध्यक्ष श्री कैलाशचन्द ठोलिया एवं मंत्री श्री महेन्द्रकुमार गोधा हैं।

35. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, लसाड़िया

लसाड़िया जयपुर-केकड़ी सड़क मार्ग पर 58 किलोमीटर दूर दाहिनी ओर मुड़कर कच्चे में 7 किलोमीटर दूर पर स्थित है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसका निर्माण लगभग 300 वर्ष पूर्व दिगम्बर जैन खण्डेलवाल जाति के लोग्या गोत्रीय परिवार द्वारा कराया गया है। मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमे धातु की एक प्रतिमा (सिद्ध परमेष्ठी की) तथा 2 पाषाण की कुल 3 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र है। मंदिर बीसपथ आम्नाय का है। लसाड़िया मे दो जैन परिवार है। वे ही मदिर की व्यवस्था करते है। प्रमुख प्रबन्धक श्री सूरजमल लोग्या है।

36. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, समेल्या

समेल्या जयपुर से 70 किलोमीटर दूर फागी से कच्चे मे रतनपुरा होकर पहुँचा जा सकता है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो समेल्या की दिगम्बर जैन समाज द्वारा लगभग 200 वर्ष पूर्व निर्माण कराया गया था। इसमे मूलनायक प्रतिमा भगवान नेमिनाथ की है जो सम्वत् 1861 की प्रतिष्ठित है। मदिर मे एक वेदी है जिसमे पाषाण की एक प्रतिमा तथा एक यंत्र है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। मंदिर जीर्ण-शीर्ण है।

समेल्या मे एक जैन परिवार है वही मंदिर की व्यवस्था तथा देख-रेख करता है।

यहाँ दो हस्तलिखित ग्रन्थ है जिसमे एक सम्वत् 1952 का लिख हुआ है। यहाँ के प्रबन्धकर्ता श्री कन्हैयालाल रारा है।

37. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, सुलतानिया

सुलतानिया जयपुर से जयपुर-मालपुरा रोड़ पर 50 किलोमीटर दूर है तथा लदाणा होते हुए यहाँ पहुँचा जा सकता है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो लगभग 300 वर्ष पूर्व सुलतानिया के दिगम्बर जैन समाज द्वारा निर्माण कराया हुआ है। मूलनायक प्रतिमा भगवान नेमिनाथ की है जो सम्वत् 1826 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमें 3 धातु की तथा 4 पाषाण की कुल 7 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र है। धातु की मे एक सर्वतोभद्र प्रतिमा है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1548 की है।

मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है। गांव में एक ही जैन परिवार है जो मंदिर की व्यवस्था करता है। यहाँ मुख्य प्रबन्धक श्री कन्हैयालाल सेठी हैं।

38. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, सेवड़ा

फागी तहसील का सेवड़ा गांव जयपुर-मालपुरा रोड़ पर पीपला से साढ़े चार किलोमीटर दूर है।

यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जिसमें एक वेदी है जिसमे 4 पाषाण तथा 6 धातु की कुल 10 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र है।

यहाँ जैनो के 3 परिवार हैं। वे ही मंदिर की व्यवस्था करते हैं।

39. श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मन्दिर, सैंदरया

सैंदरया गांव बीची से 2 किलोमीटर तथा जयपुर से 72 किलोमीटर है। यहाँ एक दिगम्बर जैन मंदिर है जो लगभग 250 वर्ष पूर्व दिगम्बर जैन समाज सैदरया द्वारा निर्मित है। मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान चन्द्रप्रभ की है जो सम्वत् 1826 की प्रतिष्ठित है। मंदिर मे एक वेदी है जिसमे धातु की 6 तथा पाषाण की 4 कुल 10 प्रतिमाएँ एवं एक यंत्र है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1548 की है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

यहाँ दो दिगम्बर जैन परिवार है वे ही मंदिर की व्यवस्था देखते है। मुख्य प्रबन्धक श्री मांगीलाल एवं श्री रतनलाल पहाड़िया हैं।

मंदिर का क्षेत्रफल 200 वर्ग मीटर है तथा अचल सम्पत्ति के रूप मे एक धर्मशाला में दो कमरे, एक हाल तथा पीछे की ओर नोहरा है। मंदिर मे दो हस्तलिखित ग्रन्थ हैं।

40. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पार्श्वनाथजी, हरसूल्या

हरसूल्या गांव जयपुर-मालपुरा सड़क मार्ग पर जयपुर से 36 किलोमीटर तथा रेनवाल से 4 किलोमीटर फागी रोड़ पर है। यहाँ एक प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर है जो दिगम्बर जैन समाज हरसूल्या द्वारा निर्मित है। यह कब बना इसकी कोई जानकारी नही है। मंदिर मे मूलनायक प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ की है जो सम्वत् 1746 की प्रतिष्ठित है। मंदिर में एक वेदी है जिसमे 3 प्रतिमाएँ पाषाण की है। सबसे प्राचीन प्रतिमा सम्वत् 1548 की प्रतिष्ठित है। मंदिर बीसपंथ आम्नाय का है।

हरसूल्या मे पहिले काफी जैन परिवार थे, किन्तु अब एक भी जैन घर नहीं है। अत: मंदिर की देख-रेख दिगम्बर जैन नया मंदिर रेनवाल की प्रबन्ध समिति ही करती है। रेनवाल जैन समाज द्वारा ही यहाँ प्रतिदिन प्रक्षाल की जाती है। मुख्य प्रबन्धक श्री कैलाशचन्द झांझरी हैं।

यहाँ प्रतिवर्ष आसोज बुदी 2 को वार्षिक मेला होता है। ●

चतुर्थ खण्ड

卐

मन्दिर चित्रावली

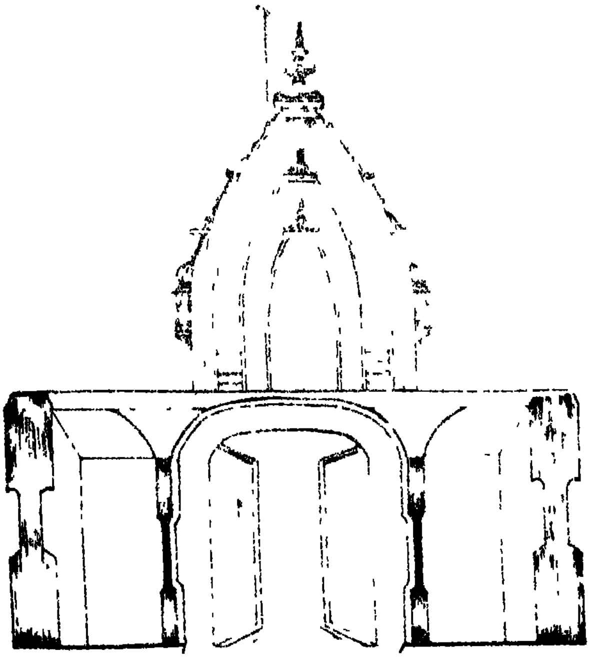

मन्दिर सामायिक के अभ्यास केन्द्र है, जहाँ एक निश्चित अवधि के लिए राग-द्वेष से मुक्त होकर रहते हैं। सामायिक वर्तमान में जीने का प्रयास है। जीवन को आनन्दमय बनाने की प्रक्रिया है। सामायिक निर्विकार जागरूकता है। साक्षीभाव की आराधना है।

शुभ कामनाओं सहित :

पाटनी ईंट उद्योग

उच्चकोटि की महावीर मार्का, ईटो के

निर्माता एवं विक्रेता

कानोता, जयपुर

☎

305351 304234

महावीर मार्का

प्रोपराइटर

रामेश्वर लाल पाटनी

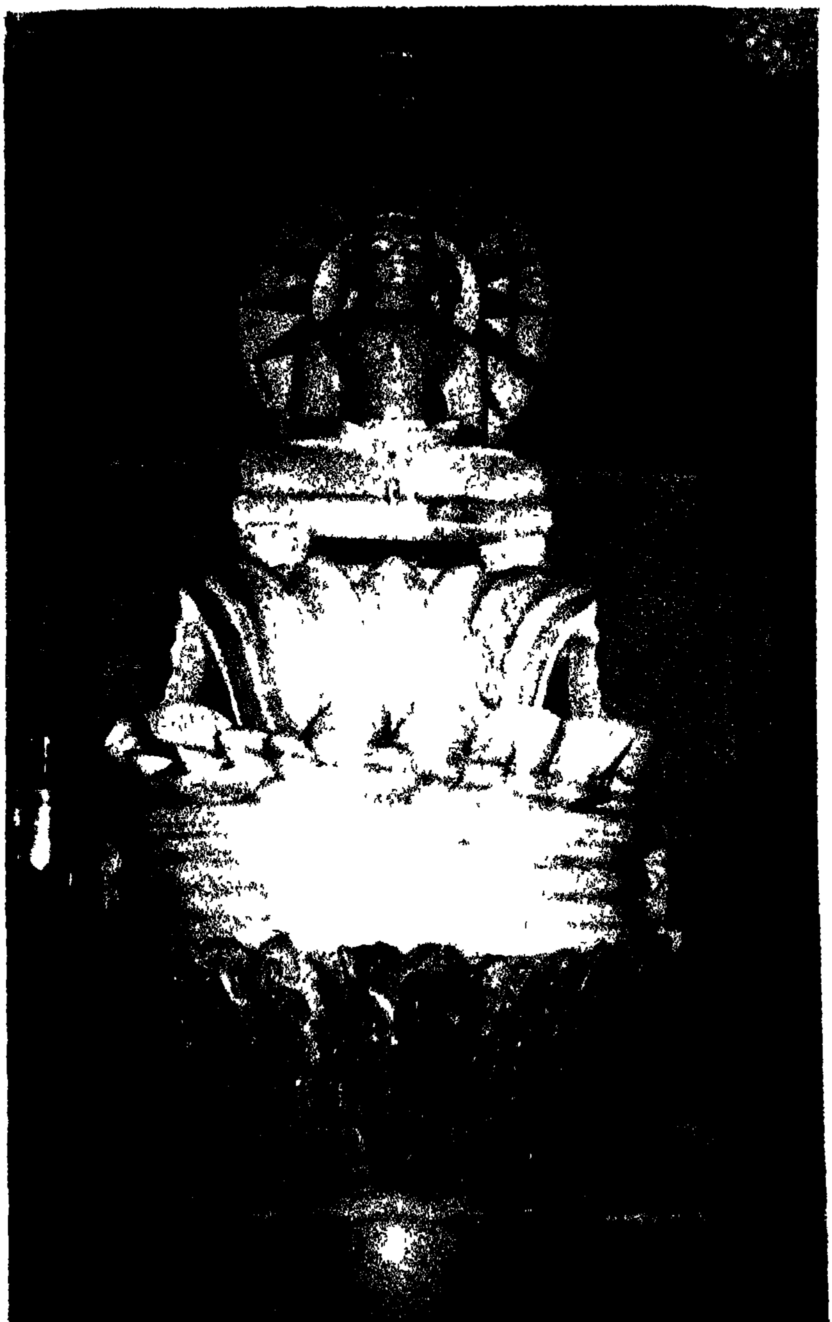

भूगर्भ से प्राप्त भगवान श्री पद्मप्रभ की मनोज्ञ व अतिशय पूर्ण प्रतिमा
श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा (बाड़ा)

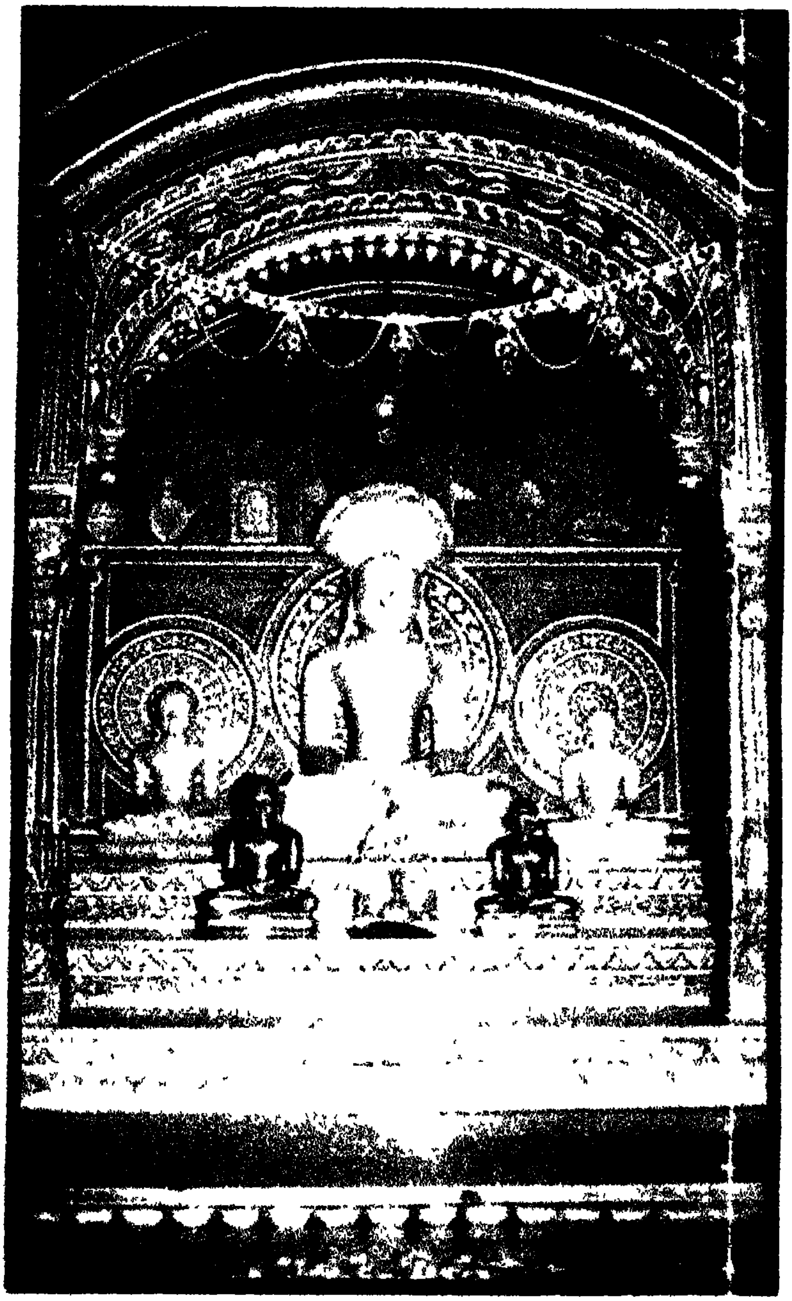

श्री चैत्यालय मन्दिरजी, चौमूँ

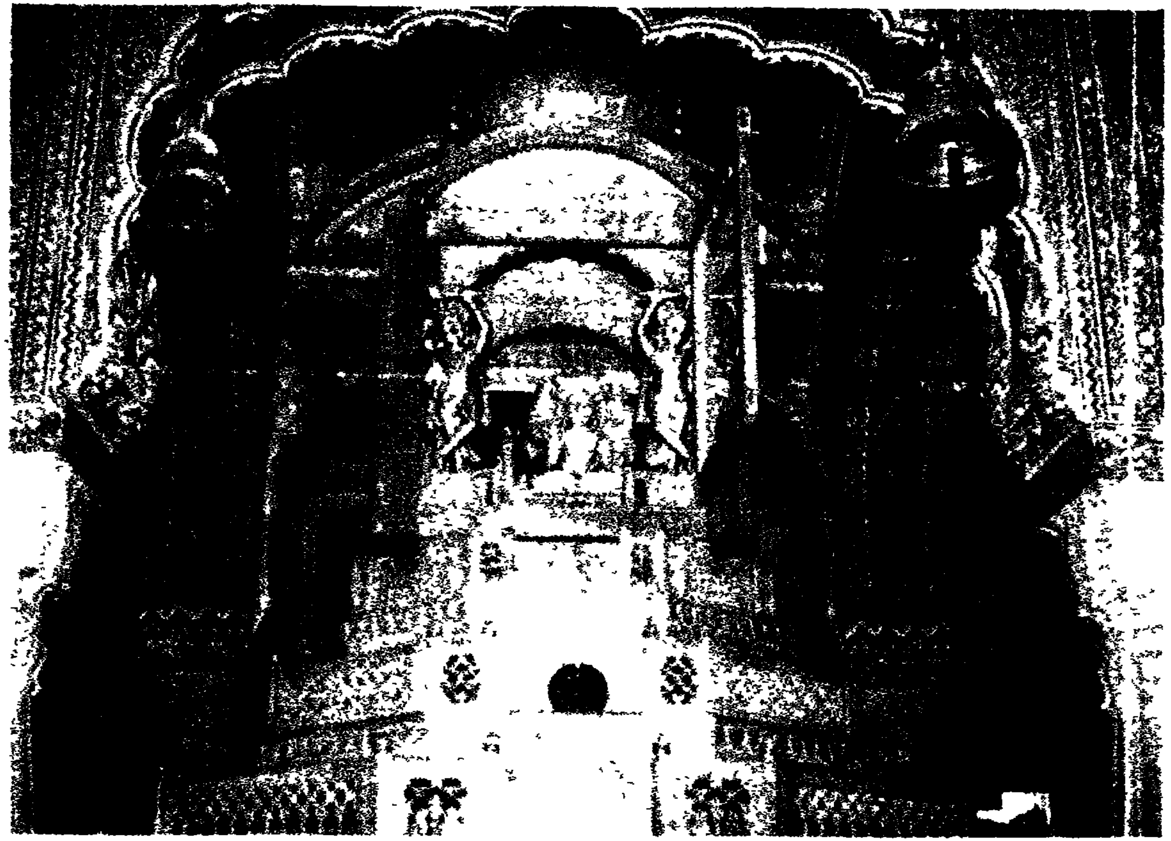

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, चौमूं

भगवान श्री पार्श्वनाथ की चमत्कारिक
खड्गासन प्रतिमा
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, भादवा

श्री पार्श्वनाथ की मनोज्ञ पद्मासन प्रतिमा
दिगम्बर जैन मन्दिर, भौंकरोटा

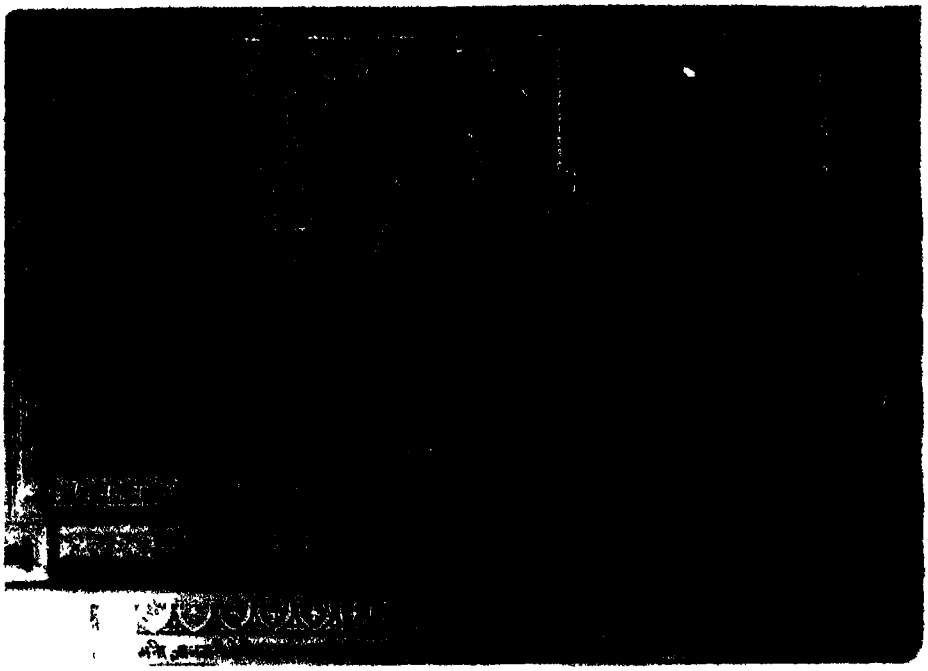

प्राचीन मन्दिर की नवीन कलापूर्ण वेदी के मध्य मूलनायक श्री आदिनाथ की सातिशय प्रतिमा
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर सघी जी, सांगानेर

विभिन्न रंगो से चित्रित प्राचीन मन्दिर मे मूलनायक श्री शान्तिनाथ भगवान
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर (बड़ा), बधाल

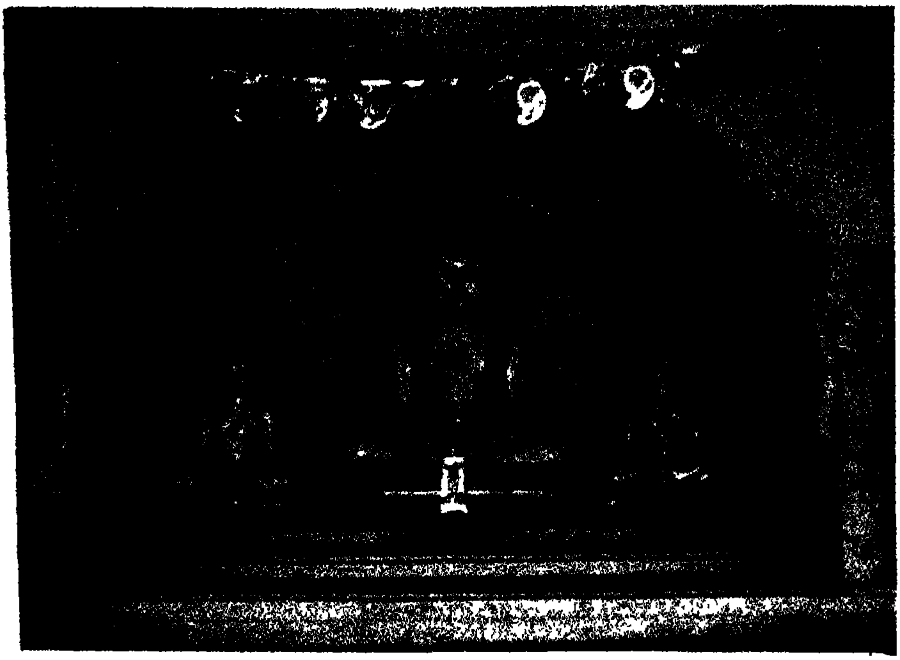

श्वेत पाषाण की वेदी में श्वेत मनोज्ञ तीर्थंकर प्रतिमाएँ
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बाकलीवालान, साखून

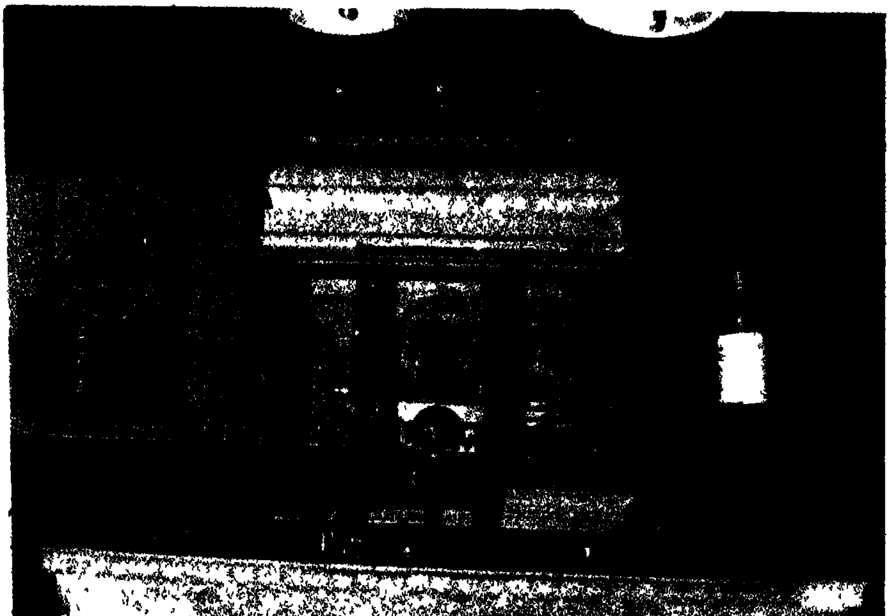

स्वर्ण-कलश युक्त वेदी, कलापूर्ण छत और मूलनायक श्री पार्श्वनाथ
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, झाग

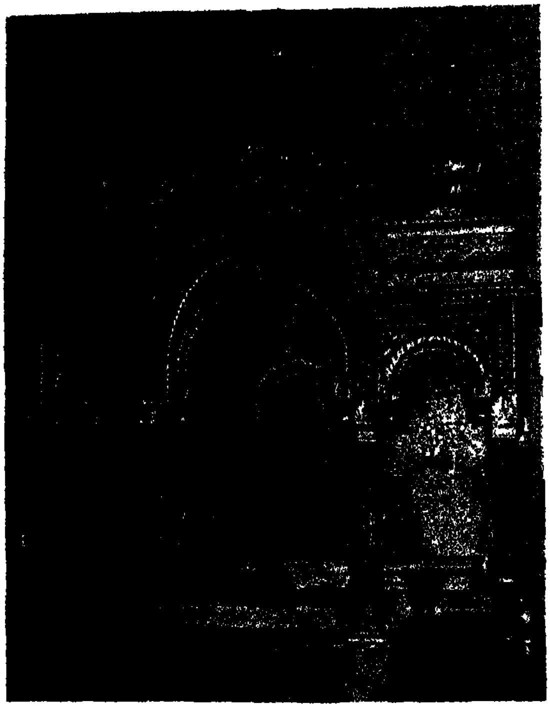

स्वर्ण-चित्रांकन की आकर्षक वेदी
मूलनायक श्री पार्श्वनाथ
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, लूणियावास

पाषाण व धातु की विभिन्न मनोज्ञ
तीर्थंकर प्रतिमाएँ
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, भैसलाना

प्राचीन मन्दिर में
प्राचीन मनोज्ञ प्रतिमाएँ
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, ममाना

भगवान श्री पार्श्वनाथ की प्राचीन सहस्रफणी मनोज्ञ
मूलनायक प्रतिमा
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, हिरनोदा

स्वर्ण-कलशयुक्त वेदी
मनोज्ञ तीर्थंकर प्रतिमाएँ
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, मरवा

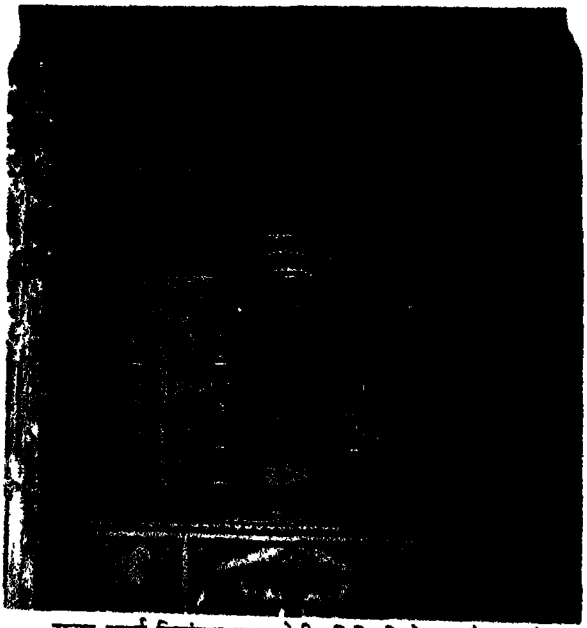

सुन्दर स्वर्ण चित्रांकन युक्त वेदी, भित्ति चित्रों का वैभव और
मनोज्ञ तीर्थंकर प्रतिमाएँ
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, आकोदा

श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर जी नरायना में
अतिशयकारी श्री १००८ भगवान पार्श्वनाथ

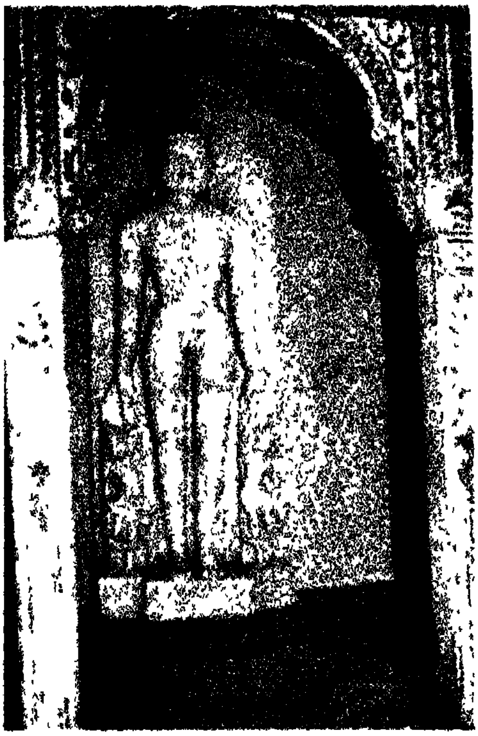

श्री दिगम्बर जैन छोटा मन्दिर जी नरायना में
विराजमान भगवान बाहुबलि की दुर्लभ प्रतिमा

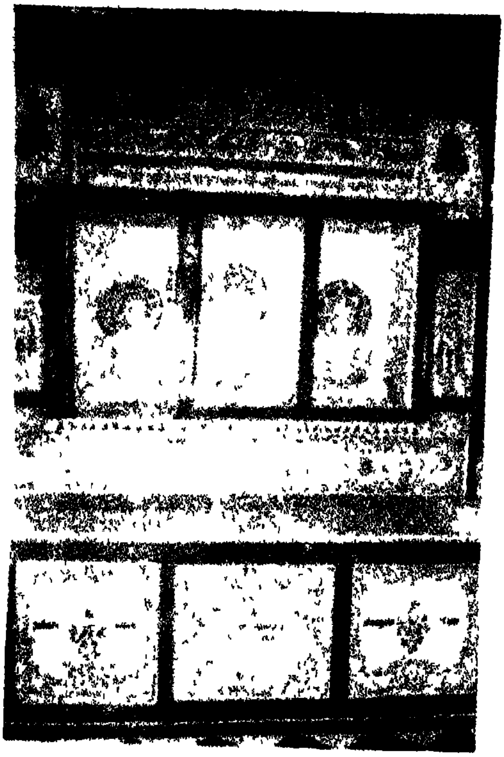

श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर जी नरायना
की मूल वेदी मे प्रतिष्ठापित त्रिमूर्तियाँ

श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर जी नरायना
मे स्थापित प्राचीन स्वर्ग सौपान

आकर्षक स्वर्णिम भित्ति चित्रांकन युक्त जिनालय द्वार
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, किशनगढ़-रैनवाल

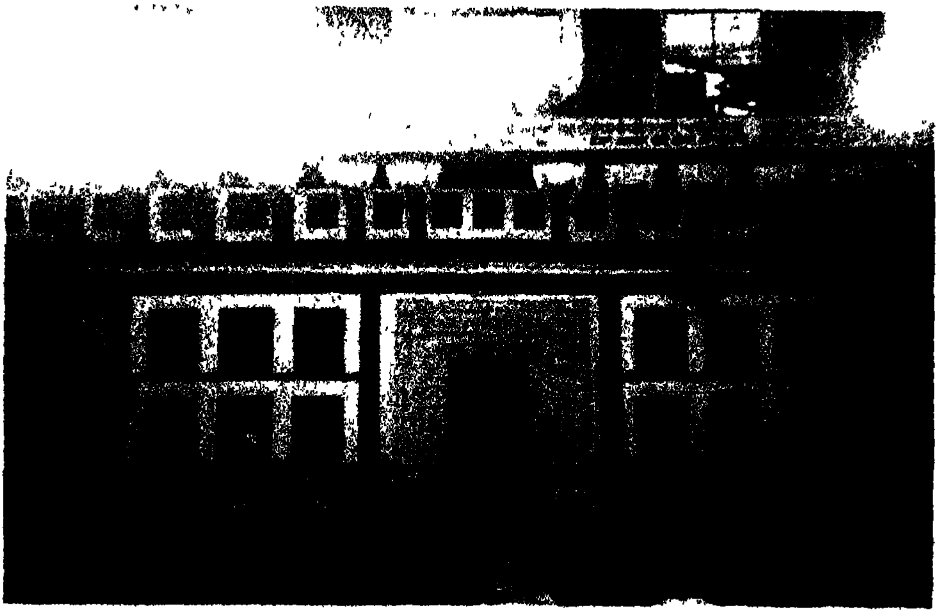

प्राचीन वास्तुकला और सुन्दर कुराई से युक्त जिनमण्डप का द्वार
श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, (बड़ा मन्दिर) मौजामाबाद

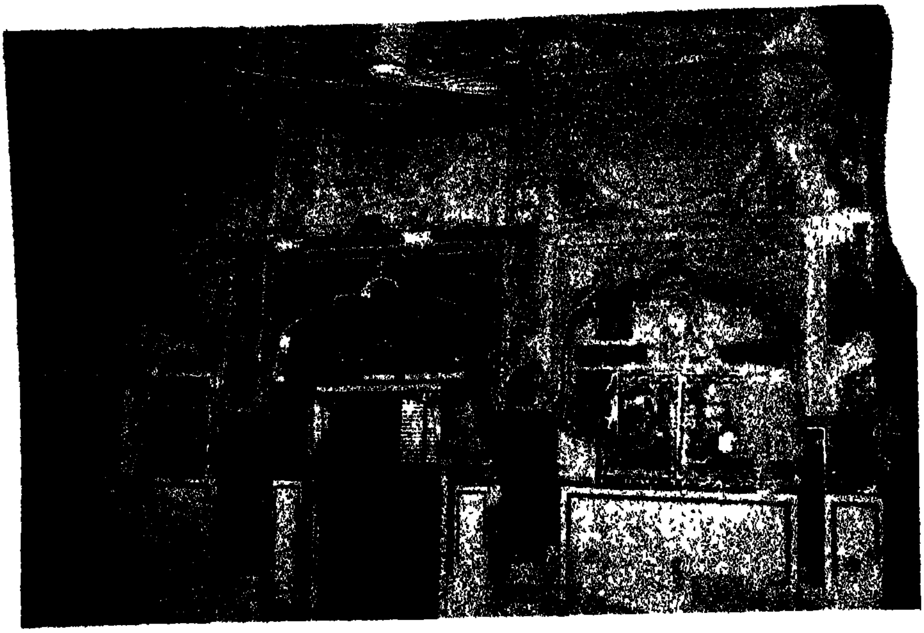

स्वर्णिम एवं रंगीन भाव चित्रों का आकर्षक जिनालय
श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, मण्डा

प्राचीन विशाल मन्दिर का सुन्दर चित्र कला युक्त गुम्बज
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, झाग

तीन प्राचीन कलात्मक भव्य शिखर
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, बाँसखो

प्राचीन शिखर समूह और नये शिखर निर्माण की तैयारी
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर संघी जी, सांगानेर

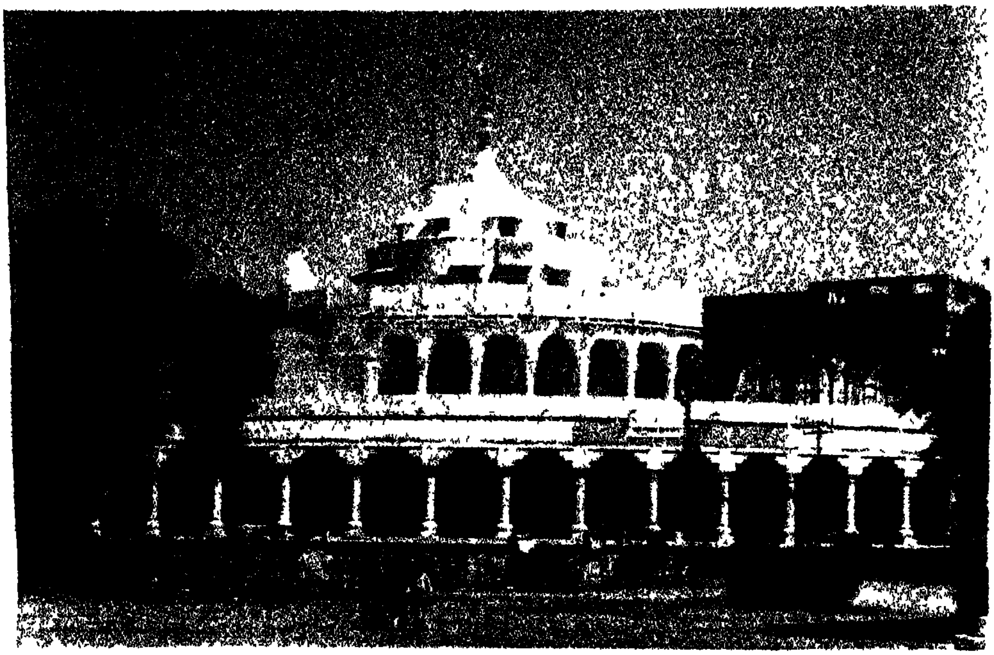

अद्भुत वास्तु कला का विशाल आकर्षक मन्दिर
श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा (बाड़ा)

स्वर्ण कलश युक्त गुम्बज और दुर्लभ वास्तुकला का रूप
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, भादवा

विशाल प्रवेश द्वार और भव्य झरोखों का ऊँचा जिनालय भवन
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, बधाल

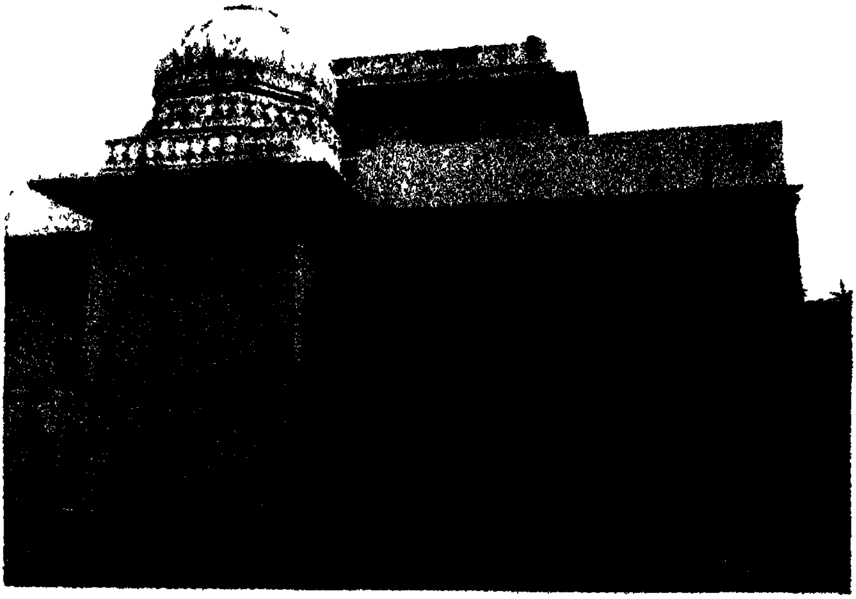

सुदृढ़ प्रवेश द्वार, गुम्बज और दुछत्ता मन्दिर भवन
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, भैंसलाना

दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ द्वारा आयोजित देव-दर्शन व पूजा-प्रक्षाल मे अरुचि के कारण एवं निराकरण विषयक संगोष्ठी [दिनांक 29-3-92]

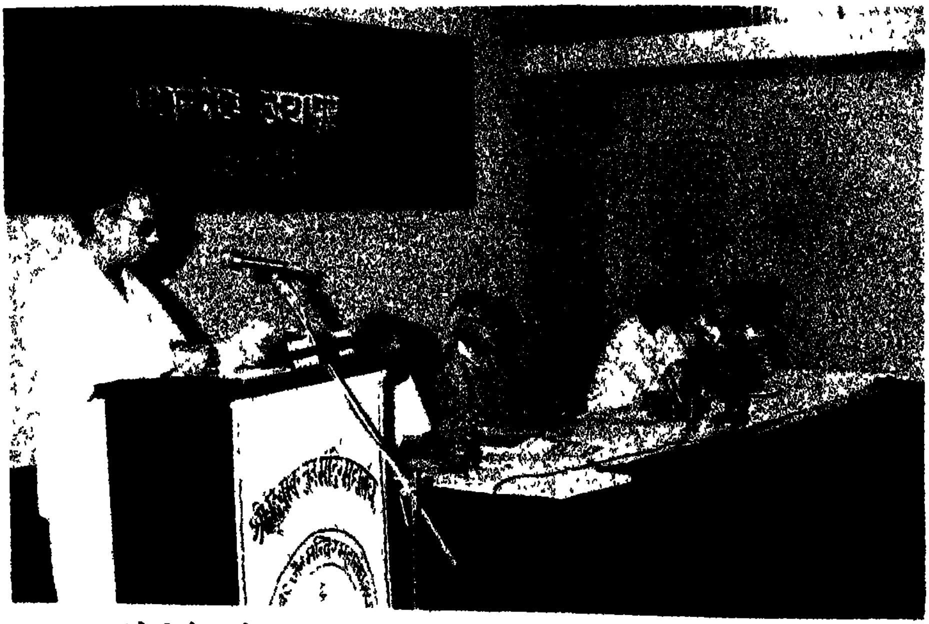

संगोष्ठी मे अपने विचार प्रकट करते हुए समाज के प्रमुख श्री श्रेयांसकुमार गोधा
[दिनांक 29 मार्च, 1992]

ग्रामीण व शहरी अञ्चलो के परिपेक्ष्य मे मन्दिरो की व्यवस्था/सुरक्षा की समस्या एव उनका निराकरण विषयक गोष्ठी - आयोजक श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासघ

[दिनांक 29 मार्च, 1992]

संगोष्ठी मे अपने विचार प्रकट करते हुए समाज के प्रमुख शिक्षाविद् श्री तेजकरण डण्डिया

[दिनांक 29 मार्च, 1992]

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ द्वारा प्रकाशित प्रथम पुस्तक/स्मारिका
''जयपुर दिगम्बर जैन मन्दिर परिचय''
पूर्व पर्यटन मंत्री श्रीमती पुष्पा जैन से विमोचन कराते हुए स्मारिका के प्रधान सम्पादक प. अनूपचन्द न्यायतीर्थ और महासंघ के अध्यक्ष श्री रामचन्द्र कासलीवाल [दिनाक 28 अप्रेल, 1990]

''जयपुर दिगम्बर जैन मन्दिर परिचय'' के विमोचन समारोह मे उपस्थित जन समुदाय
[दिनांक 28 अप्रेल, 1990]

पंचम खण्ड

卐

सांस्कृतिक, सामाजिक एवं पुरातत्त्व की दृष्टि से मन्दिरों का महत्त्व

अन्य जानकारी से सम्बन्धित लेखों की सूची

01	जैन मन्दिर सामाजिक एकता के प्रतीक	प नाथूलाल जैन शास्त्री	01
02	तीर्थंकर और उनकी प्रतिमाएँ	श्री ज्ञानेन्द्रकुमार विद्यावाचस्पति	03
03	देव दर्शन का महत्त्व	श्री निहालचन्द पाण्ड्या	05
04.	जैन मूर्ति शिल्प	आचार्य मुनि श्री विद्यानन्दजी	07
05	ऐतिहासिक साक्ष्यो और ग्रथ प्रमाणो म दिगम्बरत्व की परम्परा	डा हरि महर्षि	08
06	जैन धर्म की प्राचीनता		14
07	शास्त्र-स्वाध्याय परम तप है	कु अनुपमा जैन	16
08	धर्म क्रांति है- चेतना है- पवित्र प्रवाह है	श्री प्रवीणचन्द छाबड़ा	17
09	ढूढाड़ क्षेत्र मे दिगम्बर जैन सस्कृति के तीन प्राचीन स्थल मौजमाबाद चाकसू व नारायणा	श्री रामवल्लभ सोमानी	22
10	जयपुर राज्य के प्रमुख दिगम्बर जैन साधु साध्वियाँ	श्री अनूपचन्द न्यायतीर्थ	28
11	मन्दिरो का सरक्षण एव सवर्द्धन	श्री बाबूलाल सेठी	34
12	ग्रथ भण्डारो का रख-रखाव और सुरक्षा	श्री कुंवरचन्द काला	39
13	चाकसू तहसील के दिगम्बर जैन मन्दिर एक सर्वेक्षण	श्री पूनमचन्द जैन छाबड़ा	45
14	नारायणा के जैन मन्दिरो का शिल्प वैभव	श्री सजय पाटनी	48
15	खण्डित प्रतिमाओ के सग्रहालय की आवश्यकता	डा नीरजा कासलीवाल	50
16	श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र मौजमाबाद	श्री महेन्द्रकुमार पाटनी	55
17	निर्ग्रंथ प्रतिमा परम्परा एव वैशिष्ट्य	डा सुदीप जैन	57
18.	पूजा और मत्र	न्यायमूर्ति एम एल जैन	64
19.	ग्रामीण अञ्चल के जैन मन्दिरो की विशेषताएँ	डॉ कस्तूरचन्द कासलीवाल	74
20	स्वाध्याय का महत्त्व	श्री अनूपचन्द न्यायतीर्थ	83
21	निर्वाण क्षेत्रो सम्बन्धी आवश्यक जानकारी		84

प्रस्तुत लेखों मे लेखको के अपने स्वतत्र विचार है।

With Best Compliments From.

UNIGEMS

Highest Export Award Winners

Manufacturers, Exporters & Importers of.

DIAMONDS, JEWELLERY & CONSULTANTS

H O
2032 A, Street Barafwali,
Kinari Bazar, DELHI-110 006
Tel : 3275472, 3273396 ♦ Cable : 'TUPAS' DELHI

B.O.

Le Meridien Hotel
Show Room No.3 Lobbv Level,
Janpath, New Delhi-110 001
Tel. : (F) 3714163, 3710524, 3321402

Mahavir Bhawan,
9, Hospital Road,
C-Scheme,
Jaipur - 302 001
Tel. : 366438, 364893

B.O.

403, Dharam Palace,
Hughes Road,
Bombay-400 007
Tel.: 3614289 (F) 3615548

101, Vardhman,
Johari Bazar,
Jaipur
Tel.: (F) 565045, 565017

B.O.

NANAG RAM & Co.

H.O.
1201, Maliwara,
Delhi-110 006
Tel. 3276924

B.O.
Gopalji Ka Rasta,
Jaipur- 302 001
Tel. 563246

SANTOSH JEWELLERS

H O → 2032 A, Street Barafwali,Kinari Bazar, Delhi-110 006 Tel.: 3275472

जैन मन्दिर : सामाजिक एकता के प्रतीक

कोश के अनुसार मन्दिर गृह का पर्यायवाची है, किन्तु धार्मिक दृष्टि से जिनालय का बोध कराता है। शास्त्रों में मन्दिर और चैत्यालय पर्यायवाची है। व्यवहार में शिखर युक्त मन्दिर और बिना शिखर का चैत्यालय कहा जाता है।

वास्तु विद्या के अनुसार पर्यावरण की शुद्धता को लक्ष्य में रखते हुए शुद्ध और निर्दोष भूमि मे मन्दिर का निर्माण किया जाता है। उसके आस-पास धार्मिक जनता का निवास और जलाशय अवश्य होना चाहिए।

मन्दिर की नींव में सिद्धयंत्र प्रणाली, प्रज्वलित दीपक युक्त ताम्र कलश स्थापित किया जाता है।

शुभ मुहूर्त्त में मन्दिर निर्माण किया जाता है, जिसके निर्माण का विधान आचार्य जयसेनजी ने तीन प्रकार बताया है। उनमे से अपने चुनाव अनुसार नीचे भाग के मध्य मे एक बड़ा हाल, उसमे पूर्व या उत्तर मुख पीछे तीन फुट स्थान छोड़कर वेदी की रचना की जावे। वेदी मे मनोज्ञ 3 से 5 फुट तक की पाषाण प्रतिमा विराजमान की जावे। साथ मे नीचे दो सप्तधातु प्रतिमाये व एक विनायक यंत्र विराजमान रहे। वेदी के पीछे दरवाजा, खिड़की या उजालदान नही होना चाहिए। वेदी का प्रथम चबूतरा ढ़ाई फुट ऊंचा और फिर तीन कटनी का निर्माण किया जावे। मन्दिर मे ही स्वाध्याय स्थान होना चाहिए। ऊपर मन्दिर की ऊंचाई से सवाया या डेढ़ा शिखर, जिसके ऊपर स्वर्णकलश तथा पीछे दो हाथ ऊंचा ध्वजा-दण्ड रहता है। मन्दिर के समीप ही सामाजिक-मांगलिक कार्य हेतु एवं यात्रियो के आवास हेतु धर्मशाला का निर्माण होता है।

मन्दिर के माध्यम से ही सामाजिक संगठन एवं रीति-रिवाज बनते है। इसलिए मन्दिर सामाजिक एकता के प्रतीक माने जाते है।

मन्दिर के प्रबंध हेतु एक ट्रस्ट एवं उसकी गोठ की पंचायत का गठन होता है। सम्मिलित रूप से एक स्थान पर बैठना गोठ या पंचायत कही जाती है। अंग्रेजी में इसे पार्टी या सोसायटी भी कहते हैं।

मन्दिर की इन पंचायतों द्वारा सामाजिक रीति-रिवाजो मे सुधार हुआ है, परन्तु कुछ समय से राजनैतिक आन्दोलन का प्रभाव समाज पर भी पड़ा है। उदारता के नाम पर पंचायती अनुशासन शिथिल होता जा रहा है। आहार-विहार, वेश-भूषा व गृहस्थ-जीवन के आय-व्यय के स्रोत मे परिवर्तन हो रहा है। शाकाहार व सादा रहन-सहन तथा न्यायोपरांत धन की ओर ध्यान कम हो रहा है। अपने प्राचीन धर्म पालन के रक्षार्थ जीर्णोद्धार के बजाय बिना प्रयोजन पंचकल्याणको का बाहुल्य दृष्टिगोचर हो रहा है। समाज सेवा की भावना कम और संस्था के

चुनाव में नेतृत्व की महत्वाकांक्षा अधिक देखकर दु:ख होता है। मन्दिरों की संपत्ति की रक्षा नि:स्पृह-भाव से होनी चाहिए। परस्पर विवाद रहित श्रद्धापूर्वक कार्य संचालन आवश्यक है।

देश मे हम जैन अल्पसंख्यक की श्रेणी में रहना चाहते हैं। यदि हम संगठित नहीं रहेगें तो हमे सफलता किस प्रकार मिल सकेगी?

मन्दिरो की पंचायतो मे कठोरता और स्वार्थ को स्थान नहीं देते हुए सहानुभूति और सहनशीलता तथा विरोधी को अपनी ओर आकर्षित करने की क्षमता आवश्यक है। अलगाव या परस्पर भेद का जमाना अब नही रहा। अखिल भारतीय संस्थाओ द्वारा उपाधि वितरण जैसे प्रस्ताव या समारोह करना भी अब निरर्थक है। सदस्यो में क्रियाशीलता चाहिए जो मिलकर स्थान-स्थान पर एकता का प्रचार-प्रसार कर सकें।

- नाथूलाल जैन शास्त्री
सरसेठ हुकुमचन्द मार्ग, इन्दौर (मध्यप्रदेश)

दाणच्चणविहि जँ करहिं, ते जि सलक्खण हत्थ।
जे जिणतित्थहँ अणुसरहिं, पाय वि ते जि पसत्थ।।

जो हाथ दान करते है और भावपूर्वक पूजा विधि करते है वे ही सुलक्षण हाथ है। जो पॉव आत्मोत्थान के लिए जिन -तीर्थों को गमन करते है, वे ही पॉव प्रशसनीय है।

जे सुणंति धम्मक्खरइँ, ते हउँ मण्णमि कण्ण।
जे जोयहिँ जणिवरह मुहु, ते पर लोयण धण्ण।।

जो कान धार्मिक शब्दो को सुनते है उन्ही को मै कान मानता हूँ। जो ऑखे जिनवर का मुख देखती है वे ही ऑखे परम धन्य है।

चिंता बंध्यउ सयल जग, चिंता किणहि न बद्ध।
जे नर चिंता वस करइ, ते माणस नहीं सिद्ध।।

सारा जग चिता से बँधा हुआ है, चिता किसी के द्वारा नही बँधी है। जो मनुष्य चिता को वश मे कर लेते है, वे मनुष्य नही सिद्ध है।

- निर्ग्रन्थ प्रवचन 31

तीर्थङ्कर और उनकी प्रतिमाएँ

जैन धर्म में सृष्टिकर्त्ता ईश्वर की सत्ता की आस्था नहीं है। जैन धर्म में तीर्थंकर सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान हैं और वे ही उपास्य हैं। उनका जीवन आदर्श स्वरूप है। तीर्थंकर मुक्त हैं, मोक्ष पाने से पहले वे भी बंधन में थे, किन्तु साधना के द्वारा ही सिद्ध, सर्वशक्तिमान, मुक्त और आनन्दमय हो गये है। इन तीर्थकरो के मार्ग का अनुसरण करके सभी जीव उन्हीं के समान पूर्ण ज्ञान, पूर्ण शक्ति तथा पूर्ण आनन्द की प्राप्ति कर सकते हैं। तीर्थ का अर्थ मार्ग अथवा पुल होता है। जिस पर चलकर व्यक्ति उचित स्थान पर पहुँचता है। अत: मार्ग-प्रदर्शन के लिए इन्हीं की पूजा उपासना की जाती है।

जैन धर्म मे पंच-परमेष्ठी माने जाते है। पंच-परमेष्ठी हैं– अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु। दैनिक कार्यक्रम मे पंच-परमेष्ठी की पूजा एक प्रमुख अंग है। पूजा-वन्दना का उद्देश्य करुणा-प्राप्ति नहीं है वरन् पूर्व जन्म के कर्मो के नाश के लिए है जो केवल विचार, वचन और कर्मों द्वारा हो सकता है। कल्याण की प्राप्ति अपने ही कर्मों द्वारा हो सकती है। तीर्थंकर तो मार्ग-दृष्टा हैं और आदर्श का काम करते रहने से वे अपने आप को भी पवित्र करते है और मोक्ष प्राप्ति के लिए अपने को दृढ़ चित्त और वीर बनाते है। इसीलिए जैन धर्म मे मुक्त आत्मा को 'जिन' और 'वीर' कहा जाता है।

जैन धर्म का मूल आधार आचार है। पंच-महाव्रत- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह का पालन करणीय कर्तव्य है। धर्मानुसार मनुष्यों और पशु पक्षियो मे ही जीव नहीं है वरन् पेड़-पौधों तक मे भी जीव है। कर्मानुसार पुद्गल (भौतिक द्रव्य) के सम्पर्क से भी जीव का स्वरूप छिप जाता है। अत: कर्मो को नष्ट कर जीव बंधन मुक्त हो सकता है तथा अपने स्वाभाविक गुणो को प्रकाशित कर सकता है। जीव मोक्ष की प्राप्ति तीर्थंकरो के उपदेश से तथा निम्न तीन रत्नों के पालन से कर सकता है।

1. सम्यक्दर्शन अर्थात निज-प्रतीति एवं तीर्थकरो के उपदेशो के प्रति श्रद्धाभाव।
2. सम्यक् ज्ञान अर्थात् उनके उपदेशो का यथार्थ बोध।
3. सम्यक् चारित्र अर्थात नैतिक नियमो के अनुकूल आचरण।

जैन धर्म के प्रचारक अर्हन्त थे जो सर्वज्ञ, इन्द्रियजित, त्रैलोक्य विजयी सिद्ध पुरुष थे। तीर्थंकर 24 हुए हैं। जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव माने गये है। विद्वानों के अनुसार सिन्धुघाटी के अवशेषो से प्राप्त मुहर मे एक मुहर एक दिग्वासा योगी की है। इसे ऋषभदेव की मूर्ति भी कहा जाता है। इस प्रकार जैन धर्म की प्राचीनता आर्यों से पूर्व हो जाती है। 22 वे तीर्थंकर नेमिनाथ का

उल्लेख महाभारत (अनुशासन पर्व) मे हुआ है जिसमे नेमिनाथ को जिनेश्वर कहा गया है। इस प्रकार नेमिनाथ ऐतिहासिक महापुरुष थे। 23 वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ और 24 वें महावीर तो ऐतिहासिक पुरुष थे ही। पार्श्वनाथ का काल ई0 पू0 था। इनका स्थान प्रमुख तीर्थंकरो मे आता है। इन्हे ''निगण्ठनातपुत्त'' कहा गया है, जिन्होंने भवसागर की सभी ग्रन्थियो को खोल दिया था।

जैन प्रतिमा-पूजा-परम्परा शिशुनाग और नन्द राजाओ के काल मे प्रचलित थी, जैसा कि हाथी-गुम्फा अभिलेख से सिद्ध होता है। उपचारात्मक पूजा प्रणाली के लिए मन्दिर-निर्माण और प्रतिमा-प्रतिष्ठा आवश्यक हैं। सभी श्रावको के लिए प्रतिदिन मन्दिर जाकर देव-दर्शन अनिवार्य कहा गया है।

मथुरा के पुरातत्व अन्वेषणो के अध्ययन के पश्चात् इतिहास वेत्ताओ ने जैन-प्रतिमाओ के विकास-काल के चार चरण माने है:-

(1) शक और सीमियन काल प्राचीन भारत प्रतीको की उपासना का काल रहा है। इसका प्रभाव जैन धर्म पर भी पड़ा। जैन प्रतीक परम्परा मे सर्व प्रथम आयागपट्ट आता है। यह एक प्रकार का प्रस्तर का चक्र होता है। इन आयागपट्टो की स्थापना किसी प्रशस्तिपत्र के लिए की जाती थी। प्रारम्भिक आयागपट्ट लाछन शून्य होते थे। अत: वे किस जिन के लिए आयागपट्ट है, पहिचान होना कठिन हो जाता है।

(2) आयागपट्ट के दूसरे चरण मे प्रतिमाएँ उत्कीर्ण रहती थी। आयागपट्ट पर विशेष तीर्थकरो के लांछन भी बने होते थे।

(3) कुषाणकाल– इस युग मे प्रतीकोपासना के पश्चात् प्रतिमा की उपासना का युग आया। सभी तीर्थकरो की प्रतिमाएँ समान रूप से निर्मित की जाती थी। सभी जिनो की स्वतत्र विशाल प्रतिमाएँ निर्मित हुई, जिनमे कुछ पद्मासन और कुछ खड्गासन मुद्रा मे है।

कुषाण कालीन जैन प्रतिमाएँ सबसे प्राचीन है। हिन्दू त्रिमूर्ति के समान जैन स्तूप के तीन वर्ग है। मध्य प्रतिमा, पूज्य प्रतिमा तथा आयागपट्टीय प्रतिमा। चौमुखी मे चारो कोणों पर चार जिन प्रतिमाएँ चित्रित की जाती है। प्रत्येक तीर्थंकर के चिन्ह अलग-अलग होते है। जिनसे इनकी पहचान हो सके।

(4) गुप्तकाल– इस युग तक जैन-प्रतिमा का पूर्ण विकास हो चुका था। प्रत्येक जिन के विशेष लांछन, शासन देवता, गणधर, अष्ट प्रतिहार्य मुद्राओ आदि का पूर्ण विकास हो गया था।

– ज्ञानेन्द्रकुमार विद्यावाचस्पति

(जैन बालादर्श से साभार)

देव-दर्शन का महत्व

यह मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि जैसा मनुष्य देखता है और सोचता है, वैसा ही कर्म करने को प्रेरित होता है। प्रात: काल समस्त सांसारिक क्रियाओं से पूर्व रागादि दोषो से रहित शान्त छवि प्रभु प्रतिमा के दर्शन से इस प्रकार की विचारधारा उत्पन्न होगी जिससे आरम्भ एवं परिग्रह से बाह्य मे लिप्त रहने पर भी व्यक्ति अपने आत्मोत्थान के लिये संसार, शरीर और भोगों से विरक्तता प्राप्त करने की दिशा में कुछ प्रयास अवश्य कर सकेगा।

देव-दर्शन गृहस्थों के लिए अनिवार्य कर्तव्य है। अपने दैनिक कर्तव्यों में जिन-प्रतिमा का दर्शन आध्यात्मिक जागृति का पहला पाठ है। वीतरागी जिन-प्रतिमा का दर्शन करने वाला भावातिरेक से अपने अन्तरंग-कालुष्य को नष्ट कर आत्म परिणामों को निर्मल बना सकता है।

हमारे मन मे नाना प्रकार के विकार उत्पन्न होते हैं और आत्मा को मलिन कर विलीन हो जाते हैं। यह सब स्थिति हमारी क्यो होती है? इस तथ्य को जानने के लिए अपने व्यस्त जीवन मे से कुछ क्षण निकालकर मानव जिन-मन्दिर में ध्यानस्थ प्रभु की निर्विकार प्रतिमा का दर्शन करता है तो आत्मोल्लास उत्पन्न होता है, जीवन को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने का मार्ग दिखलाई पड़ता है, अपने विकार तथा कषायों को जीतने के लिए प्रेरणा प्राप्त होती है। वीतराग-प्रतिमा के दर्शन से आत्मा की सत्ता का भान होता है। यह जिन-दर्शन करने मे सहकारी है।

अनन्तकाल से पुद्गल के प्रति जो आसक्ति एवं ममता लगी हुई है उसे दूर करने के लिये और संयम की प्रवृत्ति उत्पन्न करने के लिए देव-दर्शन से बढ़कर अन्य कोई साधन नही है। जिन-प्रतिमा विस्मृत पुरुषार्थ की याद दिलाती है, युगों-युगो से भूले हुए आत्मा के पुरुषार्थ की ओर ध्यान आकृष्ट करती है।

चिन्तन एवं अनुभवन करना आत्मा का सहज स्वभाव है। अशुभ चिन्तवन का बुरा एवं शुभ चितवन का अच्छा प्रभाव होता है। ध्यानस्थ प्रतिमा के समक्ष अन्तर की ध्वनि सुनने मे सरलता होती है। अपने अन्तरंग से ऐसा लगता है कि आत्म-शक्ति अनन्त है। काम, क्रोध, मोह, लोभ आदि विकार मेरी शक्ति को सर्वथा विकृत नही कर सकते। विभाव एवं विकार मेरे अन्तरंग में नही है, ये मेरी ही भूल से पर-संयोग से उत्पन्न हुए है। मै तो स्वभावत: शुद्ध-बुद्ध अनन्त शक्तियों का धारी हूँ। मेरे उपादान को विकृत करने की शक्ति पर-संयोग मे नही है। जब तक पर को मैने अपना समझ रखा है तभी तक ये सारे कष्ट और बंधन हैं। यथार्थ ज्ञान होने पर मुझे बन्धन मे रखने वाला कौन हो सकता है?

यह ध्यानस्थ प्रतिमा– मैं कौन हूँ, क्या हूँ, कैसा हूँ और मुझे क्या करना

है, आदि गुत्थियो को सुलझाने का संकेत दे रही है। कल्पकालो से विस्मृत अपने स्वभाव की याद दिला रही है। इसकी यथार्थ प्रेरणा को समझना तभी संभव है जब वीतरागी दर्पण में अपने स्वरूप का अवलोकन किया जाय और भौतिकवादी दृष्टिकोण को छोड़ आत्मवादी दृष्टिकोण अपनाया जावे।

विश्वास, विचार और आचार का शोधन, प्रकाशन एवं विकास करना ही देव-दर्शन का लक्ष्य है। इससे आत्मशोधन की प्रेरणा प्राप्त होती है। आत्मा दीन-हीन और भिखारी नहीं है। वह तो मोक्ष प्राप्ति की योग्यता से अभी भी पूर्ण है। इस योग्यता के विकास का पाठ देव की प्रतिमा सिखलाती है। जो सजग दर्शनार्थी हैं उन्हें उक्त पाठ को याद करने में कठिनाई नही होती पर जो प्रमादी या अविवेकी दर्शनार्थी है वे उक्त तथ्य को हृदयंगम नही कर पाते हैं। इसी कारण लौकिक कामनाओं की पूर्ति की अभिलाषा मे झूलते रहते है। यह स्वयं का अपराध है।

मनुष्य की प्रकृति सदा से परोन्मुख है। अपनी आत्मा की शक्तियों को वह देख नही पाता है। देव-दर्शन मनुष्य की इस बाह्य प्रवृत्ति को अन्तरमुखी बनाने मे सहायक है। ध्यानस्थ-प्रतिमा का संसर्ग ध्यायी बनने की प्रेरणा देता है और राग-द्वेष-मोह को जीतकर परमपद प्राप्त करने की ओर बढ़ाता है। इसीलिये देव-दर्शन आवश्यक है।

– निहालचन्द पाण्ड्या

नन्दीश्वर जिनालय वन्दना

सम्यग्दृष्टि एक भवावतारी सौधर्म-इन्द्र अपने परिवार सहित वर्ष के तीनो अष्टाह्निका पर्व मे निरन्तर 8 दिन तक पूजन अभिषेक करके अपने जीवन को धन्य बनाता है। नन्दीश्वर द्वीप जम्बूद्वीप से आठवे स्थान पर पड़ता है। अत: वहाँ पर मनुष्यो का जाना सम्भव नही है। एतदर्थ

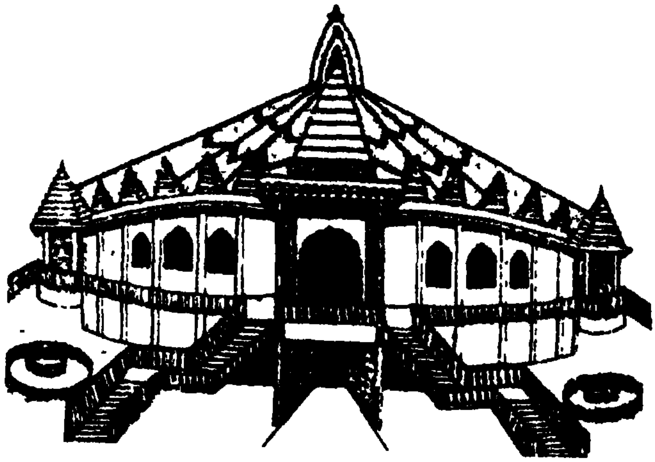

नन्दीश्वर द्वीप के 52 जिनालयो की स्थापना, निक्षेप से किसी भी धर्म क्षेत्र मे करके, भव्य जीवो के दर्शनार्थ की जाती है।

जैन-मूर्ति शिल्प

भारतीय जैन शिल्पकला का प्रयोजन क्या है और क्यों इसका इतना विकास हुआ? यह एक ऐसा विषय है जिस पर काफी उन्मुक्त और युक्ति-युक्त विचार होना चाहिये।

जैन धर्म और दर्शन वैराग्य मूलक है। उसका सम्बन्ध अन्तर्मुख सौन्दर्य से है, किन्तु यह जिज्ञासा सहज ही मन में उठती है कि क्या अन्तर्मुख सौन्दर्य की कोई बाह्य अभिव्यक्ति संभव नहीं है? क्या कोई काष्ठ, धातु या पाषाण खण्ड अपने आप बोल उठता है? संभव ही नहीं है, क्योंकि यदि किसी पाषाण व काष्ठ खण्ड आदि की शिल्प कृति लेनी होती है तो वह स्वयं वैसा कभी का कर चुका होता, किन्तु ऐसा है नहीं। बात कुछ और ही है। जब तक कोई साधक/शिल्पी अपनी साधना को पाषाण मे लय-बद्ध/ताल-बद्ध नही करता तब तक किसी भी शिल्पाकृति की प्रतिष्ठा असंभव है। काष्ठ, मिट्टी, पत्थर, कांसी, तांबा, सोना, चाँदी, माध्यम जो भी हो चेतन की तरंगो का रूपांकन जब तक कोई शिल्पी उन पर नहीं करता, वे गूँगे बने रहते हैं।

मूर्ति जैनों के लिये साधना-आराधना का आलम्बन है। वह साध्य नहीं है, साधन है। उसमें स्थापना निक्षेप से भगवत्ता की परिकल्पना की जाती है। शिल्पी भी यही करता है। मोहन-जोदडो मे जो सीलें (मुद्रायें) मिली है वे भी साधन हैं साध्य नहीं हैं। मार्ग हैं गन्तव्य नहीं है। किन्तु शिल्प और कला, वास्तु और स्थापत्य के माध्यम इतने सशक्त हैं कि उनके द्वारा परम्परा और इतिहास को प्रेरक, पवित्र और कालातीत बनाया जा सकता है।

जैन स्थापत्य और मूर्ति शिल्प का मुख्य प्रयोजन आत्मा की विशुद्धि को प्रगट करना और आत्मोत्थान के लिये व्यावहारिक सुमधुर भूमि का तैयार करना है। इसलिये सौन्दर्य मनोज्ञता, प्रफुल्लता, स्थितिप्रज्ञता, एकाग्रता, आराधना, आदि के इस माध्यम को हम जितना भी यथार्थ मूलक तथा भव्य बना सकते है, बनाने का प्रयत्न करते हैं। इनमें भगवान भला कहाँ है? कैसे हो सकते है? फिर भी है और हम उन्हे पा सकते हैं। मूर्ति की भव्यता इसमे है कि वह स्वयं साधक में उपस्थित हो, और साधक की सार्थकता इसमे हैं कि वह मूर्ति मे समुपस्थित हो, इन दोनो के तादात्म्य में ही साधना की सार्थकता है।

- आचार्य मुनि श्री विद्यानन्द

> यदि कोई मनुष्य आधे पलक समय के लिए भी परम आत्मा से प्रेम करता है (तो) जिस प्रकार अग्नि का कण लकडी के ढेर को जला देता है (उसी प्रकार) (परम आत्मा से प्रेम) सम्पूर्ण पाप को ही (नष्ट कर देता है)।

ऐतिहासिक-साक्ष्यों और ग्रंथ-प्रमाणों में -
दिगम्बरत्व की परम्परा

सभ्यता और शिष्टता के दावे सदा मुनष्य ने अपनी दुर्लभ देह को वस्त्रालंकारों से भूषित करके ही प्रकट किये हैं। ऐसी स्थिति मे वस्त्रो ने ही देश, प्रान्त, अञ्चल, जाति, वर्ग, उच्चता-निम्नता, अमीरी-गरीबी की अभिव्यक्ति और प्रतीकात्मकता दी है। सभ्यों और शिष्टों की नजर मे आज दिगम्बर रहना, नग्न रहना जंगलीपन असभ्य और अशिष्टता की निशानी माना जाता है।

किन्तु जैन तीर्थंकरो ने वस्त्र त्याग कर, वात-बसना होकर, निर्ग्रन्थ रहकर, कृच्छ और कठिन साधना कर जो मोक्ष मार्ग 'सांसारिक मनुष्यों' को दिखाया उसको सर्वथा पूज्य, वंदननीय और आदरास्पद दृष्टि से देखा गया। हिन्दू शास्त्र, इस्लाम, ईसाई ग्रंथो, लिखित इतिहास के विविध शासको, आचार ग्रंथो, वैराग्य शतक, पुरातात्विक साक्ष्यो - शिलालेखो, ताम्रपत्रो, गुहालेखो, स्तम्भ लेखो और उत्खननो से प्राप्त साक्ष्य इस बात की पुरजोर गवाही देते है कि दिगम्बरत्व प्रकृत वेश है, कठिन साधना का पर्याय है, उसके सम्बन्ध मे व्यञ्जित धारणाओ को ही इस लेख मे समाहित किया गया है।

प्रकृति मनुष्य की चिर सहचरी रही है। मनुष्य ने इस धराधाम पर जब अपनी नन्हीं पलके खोली होंगी तो उसने टिमटिमाते हुए तारो को, गगन मण्डल मे परिक्रमा करते हुए सूर्य-चन्द्र को, हरितमा से युक्त वन प्रान्तरों को, आनन्द और उल्लास को एवं अभिव्यक्त करते प्रपातो को देखा होगा। उसका मन, मुग्ध और आनन्दित हुआ होगा। तभी से उसने प्रकृति और उसके सार्वभौमिक रूप को आत्मसात् करने की चेष्टा की होगी।

भारत के ऋषि मुनियो ने अपने धर्म के प्रचार और प्रसार के लिए लम्बी पदयात्रा की, उन्होने जावा, सुमात्रा, लका, तिब्बत, वोर्नियो आदि द्वीप देशों मे ही नही अपितु महाभारत मे अनेक ऐसे स्थानो का उल्लेख आया है जिनमे भारतीयो ने गौरव स्थापित किया यथा वाल्मिक (आज का बुखारा) भगदत्त, सुवास्तु, यहाँ तक कि मिस्र जिसका असली नाम मद्र बताया जाता है। वहाँ तक भारत के पराक्रमी शल्य वंश ने अपना राज्य स्थापित किया था। पाण्डु की पत्नी और नकुल व सहदेव की माता माद्री मद्र देश से ही सम्बन्धित थी। यही नही वहाँ का प्रख्यात सुलेमान पर्वत भी शल्यमान पर्वत के पूर्व नाम से जाना जाता था। आज का कन्धार/कान्धार वस्तुतः गान्धार ही था, जहाँ से धृतराष्ट्र की पत्नी गान्धारी का आगमन हुआ था।

दिगम्बर प्रकृत वेश - प्रकृति से प्रेम करने वाले मनुष्य ने दिगम्बरत्व को प्राकृतिक रूप ही माना है और यही वस्तुतः उसका प्राकृतिक वेश भी है। यही कारण है कि जन्म और मरण के समय मनुष्य का रूप दिगम्बर होता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा है - ''मनुष्य मात्र की आदर्श स्थिति दिगम्बर ही है, आदर्श मनुष्य सर्वथा निर्दोष होता है, विकार शून्य होता है।''

वस्त्रों का परिधान मनुष्य के लिए लाभदायक नहीं है और न ही आवश्यक है। प्रकृति ने प्राणि मात्र के शरीर का गठन इस प्रकार किया है कि यदि वह प्राकृत वेश में रहे तो उसका स्वास्थ्य निरोग और श्रेष्ठ होगा तथा सदाचार भी अपने उत्कृष्ट रूप मे विद्यमान रहेगा। यही कारण है कि पुरातन जंगली जातियो मे जो भद्रता देखी जाती है वह आज के नगर निवासियों, सभ्यता और शिष्टता के पुतलों मे भी परिलक्षित नहीं होती, क्योंकि उनकी आत्मा विकार शून्य नहीं है।

अष्टसूत्र पाहुड में उल्लेख आया है कि जैन मुनियों का अचेलक (नग्न रूप) वस्तुत: इस रूप में रहने और हाथों को भोजन पात्र बनाने का उपदेश प्रथमत: जिनेन्द्र ने दिया था, यही एक मोक्ष धर्म मार्ग है - इसके अतिरिक्त शेष सब अमार्ग है। इसी सूत्र में एक स्थान पर यह भी कहा गया है कि बाल के अग्रभाग (नौक) बराबर भी परिग्रह का ग्रहण साधु के लिए नहीं होता। वह आहार के लिए कोई बर्तन नहीं रखता। हाथ ही उसके भोजन पात्र है, और भोजन भी वह जो दूसरो का दिया हुआ है, वह भी एक स्थान पर और एक ही बार, ऐसा आहार वह ग्रहण करता है, जो प्रासुक हो (स्वयं उसके लिए न बनाया गया हो)। जिसकी भोजन से ममता नहीं, जिसने शरीर से ममत्व हटा लिया, तब अन्य परिग्रह का तो दिगम्बर साधु के लिए प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता।

दिगम्बरत्व का आदि प्रचारक ऋषभदेव को माना गया। ज्ञानार्णव के एक परिच्छेद में ऋषभदेव को दिगम्बरत्व का आदि प्रचारक लिखा है। ऋषभदेव अन्तिम मनु नाभिराय के पुत्र थे। हिन्दू शास्त्रो मे भी इस पहले तीर्थंकर को विष्णु का आठवां अवतार और दिगम्बरत्व का आदि प्रचारक माना गया है।

हिन्दू ग्रंथों में प्रमाण

हिन्दू धर्म शास्त्रों में यानि प्राचीन वेद, वृहद् उपनिषद्-ग्रन्थो मे दिगम्बरत्व का वर्णन नहीं मिलता, लेकिन उसके उल्लेख भिक्षुक उपनिषद्, सत्यानीय उपनिषद्, याज्ञवल्क्य उपनिषद्, परमहंस परिव्राजक उपनिषद् आदि मे सन्यासियों का वर्णन आया है, जिनमें कुटीचक, बहुदक और हंस सन्यासी त्रिदण्ड धारण करने के कारण त्रिदण्डी कहलाते थे। वे शिखा, जटा, वस्तु, कोपीन आदि धारण करते थे। परमहंस परिव्राजक, शिखा और यज्ञोपवीत जैसे द्विज चिन्ह धारण नही करता, वह एक दण्ड ग्रहण करता है, एक वस्त्र धारण करता है और देह मे भस्म रमाता है। इन्ही उपनिषदों के एक उल्लेख के अनुसार तिरियातुत परिव्राजक का उल्लेख भी मिलता है जो बिल्कुल दिगम्बर होता है। सन्यास के नियमों का पालन करता है। सन्यासियो को अन्तिम प्रकार अवधूत कहा गया है जो पूर्णतया दिगम्बर और निर्ग्रन्थ होता है। वह सन्यास के नियमों की भी परवाह नहीं करता। उपनिषदों के वर्णन से यह स्पष्ट है कि एक समय में हिन्दू धर्म मे भी दिगम्बरत्व को विशेष स्थान मिला हुआ था।

अथर्ववेद के पन्द्रहवें अध्याय में जिन व्रात्य और महा व्रात्य का उल्लेख मिलता

है, उनमें महा व्रात्य का स्वरूप दिगम्बर साधु के अनुरूप है या यों कहना चाहिए कि वह जैन मुनि या जैन तीर्थकरो का ही द्योतक है। इसी प्रकार श्री मद्भागवत पुराण, लिंग पुराण में भी नग्न साधुओ का उल्लेख आया है और शिव के दिगम्बरत्व का उल्लेख स्कन्धपुराण और भर्तृहरि के वैराग्य शतक में हुआ है।

अरस्तू का भतीजा सियड़ो कलिस्तेनस सिकन्दर महान के साथ यहाँ आया था। वह बताता है कि उस समय ब्राह्मणो-श्रमणो के कोई संघ नहीं थे। उनके साधु प्रकृत अवस्था में यानि नग्न और नदी किनारे रहते थे तथा नंगे ही घूमते थे। औरंगज़ेब के समय में फ्रान्स से आये डॉ. बर्नियर ने लिखा है कि उसने हिन्दुओं के परमहंस नंगे सन्यासियो को देखा था उन्हें जोगी कहा जाता था। एक उल्लेख 851 ईस्वी का मिलता है जिसके अनुसार अरब देशें से सुलेमान सौदागर भारत आया था तब उसने यहाँ एक ऐसे नंगे साधु को देखा था जो 16 वर्ष से एक ही आसन पर स्थित था। इस प्रकार हिन्दू शास्त्रो और यात्रियो की साक्षी से हिन्दू धर्म मे भी दिगम्बरत्व का महत्व है,यह स्वत: स्पष्ट हो जाता है।

इस्लाम के साक्ष्य

इस्लाम धर्म में भी त्याग और वैराग्य को विशेष स्थान मिला। उसमे ऐसे दरवेश हुए है जो दिगम्बरत्व के हिमायती थे। तुर्किस्तान मे अब्दुल नामक दरवेश मादर जात यानि नंगे रहकर अपनी साधना मे लीन रहते बताये गये है। इस्लाम के महान सूफी तत्ववेत्ता और मसनवी ग्रन्थो के रचियता श्री जलालुद्दीन रूमी दिगम्बरत्व का खुला उपदेश देते थे। उनके उपदेश से सैकड़ो मुसलमान फकीरों ने दिगम्बरत्व वेश धारण किया था। उनमे अबुलकासिम गिलानी ओर सरमद शहीद विशेष उल्लेखनीय हैं।

सरमद को दिल्ली की गलियों मे नंगा घूमते हुए बर्नियर ने खुद अपनी ऑखो से देखा था। जब औरंगजेब बादशाह बना तो एक मुल्ला ने सरमद को नग्नता के अपराध मे फॉसी चढ़ाने की सलाह बादशाह को दी, लेकिन औरंगजेब ने नग्नता को दण्ड की वस्तु नही समझा और सरमद को कपड़े पहनने की दरख्वास्त की। इसके उत्तर मे सरमद ने कहा -''जिसने तुमको बादशाही का ताज दिया, उसी ने हमको परेशानी का सामान दिया। जिस किसी मे कोई ऐब पाया उसको लिबास पहनाया और जिसमें ऐब न पाया उसको नंगेपन का लिबास दिया।'' इस्लामी महजब मे भी दिगम्बरत्व साधुता का ही पर्याय रहा है और उसको अमली शक्ल भी हजारो मुसलमानो ने दी थी।

यहाँ एक प्रसंग का उल्लेख करना समीचीन होगा कि आजादी से केवल 7-8 वर्ष पूर्व ही जैन मुनि *आचार्य श्री देशभूषण* जी महाराज जब हैदराबाद में परिभ्रमण कर रहे थे तो नवाब हैदराबाद इस सूफीयाना अन्दाज मे रहने वाले नंगे दरवेश से बहुत ही प्रभावित हुआ और अपने कुनबे के बीच आचार्य श्री

को कैलीग्राफी और स्वर्णाक्षरों में लिखी कुरान शरीफ की एक प्रति भेट की जिसे आचार्य श्री ने हैदराबाद के सालारगंज संग्रहालय को अनुदानित करदी जो आज भी वहाँ सुरक्षित है।

ईसाई मत और दिगम्बरत्व

ईसाई धर्म ग्रन्थों मे भी दिगम्बरत्व के महत्व को विस्मरण नही किया गया बल्कि उसे पुरजोर ढंग से रेखांकित किया गया। इसका कारण यह था कि जिस महानुभाव द्वारा ईसाई धर्म का प्रतिपादन हुआ वह जैन श्रमणों के निकट शिक्षा पा चुका था। लगता है उसने जैन धर्म की शिक्षाओ को ही अलंकृत भाषा में पाश्चात्य देशो मे प्रचलित कर दिया था। सेमुअल अध्याय (19/24) मे कहा गया है कि ''और उसने अपने वस्त्र उतार डाले, और सेमुअल के समक्ष ऐसी ही घोषणा की। वह सारे दिन और सारी रात नंगा रहा। इस पर उन्होंने कहा कि क्या सॉल भी पैगम्बरों में से एक है?'' इस उद्धरण से स्पष्ट है कि बाइबिल भी मुमुक्षुओं को दिगम्बर मुनि हो जाने का उपदेश देती है।

जैन ग्रंथ प्रमाण

जैन शास्त्र प्रवचनसार मे जैन मुनियों के सम्बन्ध में उल्लेख है कि ''उनका लिंग अथवा वेश यथा जात-रूप नग्न है। वे सिर और दाढ़ी के केश नही रखते। इन स्थानों के बालो को हाथों से उखाड़ कर फेक देते है। यह उनकी केश लुंचन क्रिया है। इसके अतिरिक्त दिगम्बरी जैन मुनि का वेश शुद्ध, हिंसा रहित, श्रृंगार रहित, ममता रहित, उपयोग और योग की शुद्धि सहित, परद्रव्य की अपेक्षा रहित, मोक्ष का कारण होता है।''

संक्षेप में दिगम्बर मुनि के 28 मूलगुणों का विवेचनात्मक विवरण मूलाचार ग्रंथ में व्याख्यायित हुआ है जिनमें पंच महाव्रत, पंच समिति, पंच इन्द्रिय निरोध, छः आवश्यक सामायिक आदि के अतिरिक्त लोंच, आचेलक्य, अस्नान, पृथ्वी शयन, अदन्तघर्षण, स्थिति भोजन (एक वक्त), ये जैन साधुओं के 28 मूलगुण बताये गये हैं।

दिगम्बर मुनियों के पर्याय

उनमे कतिपय प्रमुख है :- अकच्छ (लंगोटी रहित), अंकिञ्चन (जरा भी परिग्रह नहीं), अचेलक (चेल अर्थात वस्त्र रहित), अतिथि (उपवास की नियत तिथि न हो), अनागार (ग्रह त्यागी), अपरिग्रही (तिल तुष मात्र परिग्रह से भी रहित), अह्रीक (बौद्धों ने घृणा वश उन्हें लज्जा हीन व नंगे मुनि कहा है, जबकि वाचस्पति अभिधान कोष में अह्रीक को दिगम्बर मुनि कहा है), निर्ग्रन्थ (नग्न साधु के लिए) दीर्घनिकाय मे प्रयुक्त हुआ है। कदम्ब ताम्रपत्र, शिलालेख और 1161 ई. में ग्वालियर से मिले एक शिलालेख में भी जिनेन्द्र को निर्ग्रन्थ नाथ कहकर पुकारा

गया है। इसी तरह मुनियो के लिए पाणिपात्र, भिक्षुक, महाव्रती, माहण, मुनि, यती, योगी, वातवसन, विवसन, संयमी, स्थविर, साधु, सन्यस्त, श्रमण, क्षपणक, आदि शब्दों का प्रयोग भी हुआ जो वस्तुत: दिगम्बर मुनियों के अर्थ मे ही है।

ऐतिहासिक-परिप्रेक्ष्य

जैन कथा ग्रन्थो से विदित है कि शिशुनाग-वंश के बाद नन्द-वंश के राजा स्वयं जैन मुनि हो गये थे और उनके मन्त्री शकटार भी जैनी ही थे। स्थूलभद्र भी दिगम्बर मुनि हो गये थे। मुद्रा राक्षस से इसकी पुष्टि होती है। शिशुनाग-वंश के अन्त और नन्द राज्य के प्रारम्भ काल मे जम्बूस्वामी अन्तिम केवली सर्वज्ञ ने सारे भारत का भ्रमण किया था। उन्होंने बंगाल के कोटिकपुर मे सर्वज्ञता प्राप्त की थी और मथुरा मे (चौरासी) उनकी मुक्ति हुई। वहाँ एक स्तूप उनकी स्मृति में बनाया गया था। मथुरा जैनों का प्राचीन केन्द्र रहा है। वहाँ भगवान पार्श्वनाथ के समय का भी एक स्तूप मौजूद है, ऐसा बताया जाता है।

सम्राट चन्द्रगुप्त ने अपने वृहद् साम्राज्य मे दिगम्बर मुनियों के विहार और धर्म प्रचार करने की सुविधाएं प्रदान की थी। श्रमणपति भद्रबाहु के संघ की राजा बहुत विनय करता था। यूनानी यात्री मेगस्थनीज भी चन्द्रगुप्त को श्रमण भक्त प्रकट करता है।

सिकन्दर महान के समय भी तक्षशिला मे बहुत से नंगे मुनियों को तपस्या लीन देखा गया। सिकन्दर के दूत ने, जिसका नाम अंशकृतक्ष था, कल्याण मुनि से तप का रहस्य जानना चाहा, तो उन्होंने यही कहा कि हमारी तरह दिगम्बर हो जाओ, रहस्य स्वत: समझ जाओगे। कल्याण मुनि ज्योतिष शास्त्र में निष्णात थे, उनकी शिक्षाओ का इतना अधिक प्रभाव हुआ था कि डायनीडायजिनेस नामक यूनानी तत्ववेत्ता ने दिगम्बर वेश धारण किया था और नंगी मूर्तियाँ भी बनाई जाने लगी थीं।

यूनानी लेखकों ने दिगम्बर मुनियो के विषय मे खूब लिखा है। वे बताते है कि– ''यह साधु नंगे रहते थे, सर्दी, गर्मी समान रूप से सहन करते थे। जनता में इनकी विशेष मान्यता थी। हाट बाजार में जाकर यह धर्मोपदेश दिया करते थे। बड़े-बड़े शिष्टगृहों के अन्त:पुरो में भी ये उपदेश देने जाते थे। राजा गण उनकी विनय करते और सम्मति लेते थे। ज्योतिष के अनुसार यह लोगो को फलाफल भी बताते थे। भोजन का निमन्त्रण स्वीकार नहीं करते थे। विधिपूर्वक नगर में कोई सभ्य जन इन्हे भोजन देता, तो यह ग्रहण कर लेते थे।''

संक्षेप में आन्ध्र वंशी हाले. कुलुमायि आदि भी जैन धर्म प्रेमी कहे गये है। भारतीय यवनो मे मनेन्द्र नामक राजा प्रसिद्ध हुआ। जिसकी राजधानी पंजाब का प्रसिद्ध नगर स्यालकोट था। एक उल्लेख के अनुसार अन्तत: वह जैन धर्म में दीक्षित

हो गया था और उसके राज्य में अहिंसा धर्म की प्रधानता हो गई थी। उस समय मथुरा, उज्जैन और गिरिनार जैन मुनियो के केन्द्र स्थल थे।

खारबेल ने जैन ऋषियों का एक महासम्मेलन एकत्र किया था, जिसमें मथुरा, उज्जैन, गिरिनार, कांचीपुर आदि स्थानों से दिगम्बर मुनि सम्मेलन में भाग लेने कुमारी पर्वत पहुँचे थे। इन स्थानों से आये मुनियो ने मिलकर जिनवाणी का उद्धार किया और खारबेल सम्राट के सहयोग से भारत और भारत के बाहर भी जैन धर्म का संभवत: प्रचार हो गया था।

गुप्तवंश के प्रतापी सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की राजसभा में क्षपणक नाम के एक दिगम्बर मुनि का उल्लेख मिलता है। जिसे विद्वानों ने सिद्धसेन जैनाचार्य कहा है। उसने काली मंदिर में चमत्कार दिखाकर सम्राट चन्द्रगुप्त को जैन धर्म में दीक्षित कर लिया था।

सम्राट हर्ष के राजकवि बाणभट्ट के ग्रन्थों में उल्लेख मिलता है कि ''राजा जब गहन जंगल मे पहुँचा, तो वहाँ उसने अनेक प्रकार के तपस्वी देखे। उनमें नग्न (दिगम्बर) अर्हत् (जैन) साधु भी थे। हर्ष ने उन्हें अपने महासम्मेलन में शास्त्रार्थ के लिए बुलाया था और वे बड़ी संख्या में उपस्थित हुए थे।'' इससे प्रकट होता है कि हर्ष जैसे अन्तिम हिन्दू सम्राट के समय भी उसकी राजधानी के आस-पास जैन साधुओं का प्राबल्य था।

भारतीय संस्कृत साहित्य मे भी दिगम्बर मुनियों के कई उल्लेख मिलते हैं। भर्तृहरि के वैराग्य शतक मे दिगम्बर मुनियो की प्रशंसा इन शब्दों मे की गई है– ''जिनका हाथ ही पवित्र बर्तन है, भिक्षा ही जिन का भोजन है। दसों दिशाएँ ही जिनके वस्त्र हैं। सम्पूर्ण पृथ्वी ही जिनकी शैय्या है। एकान्त में निस्संग रहना ही जो पसन्द करते हैं। दीनता को जिन्होंने छोड़ दिया है। कर्मों को जिन्होंने निर्मूल कर दिया है और जो अपने में सन्तुष्ट रहते हैं, उन पुरुषों को धन्य है।''

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि जैन धर्म और उसका प्रचार-प्रसार, दिगम्बरत्व और उसकी मान्यता सुदीर्घकाल से चली आ रही एक लम्बी परम्परा का अंग है। भारतीय इतिहास में कोई काल या कोई स्थान (जो विशेष महत्व के रहे हों) ऐसा नहीं मिलता कि जहाँ किसी न किसी प्रसंग में दिगम्बर मुनियों का उल्लेख न हुआ हो। भारतीय पुरातत्व से सन्दर्भित उत्खनन, गुफा, प्रतिमाएँ, शिलालेख, ताम्रपत्र, लोह पट्ट, स्तम्भ लेख, जैन साधुओं के दिगम्बरत्व और उनकी मुनि परम्परा को, उनके निस्पृह जीवन को, उनके मंगल उपदेशों को रेखांकित करने वाले प्रबल साक्ष्य हैं और जो इतिहास और पुरातत्व के अध्येताओं के लिए श्रमणों और श्रावकों के लिए, संघ और स्थिवरों के लिए दिशा बोध करने के लिए सदा ही सक्षम और समर्थ हैं। *– डॉ. हरि महर्षि*

1887, पाटनी भवन, ऊँचा कुँआ, हल्दियों का रास्ता, जयपुर

जैन धर्म की प्राचीनता

जैन धर्म सबसे प्राचीन है। इस बारे मे जैनाचार्य विद्यानंदजी ने मोहनजोदड़ो, जैन परंपरा और प्रमाण नामक शोधात्मक लेख में लिखा है:

'जैन धर्म की प्राचीनता निर्विवाद है। प्राचीनता के इस तथ्य को हम दो साधनों से मान सकते हैं- पुरातत्व एवं इतिहास। जैन पुरातत्व का प्रथम सिरा कहाँ है, यह तय कर पाना कठिन है क्योंकि मोहन जोदड़ो की खुदाई में कुछ ऐसी सामग्री मिली है जिसमें जैन धर्म की प्राचीनता को कम से कम पांच हजार वर्ष आगे धकेल दिया है।' इसी प्रकार हड़प्पा की खुदाई से एक नग्न मानव धड़ मिला है। नग्न मुद्रा कायोत्सर्ग मुद्रा में है। केन्द्रीय पुरातत्व विभाग के तत्कालीन महानिदेशक टी.एन. रामचंद्रन ने उस पर गहन अध्ययन किया है। उन्होने अपने 'हड़प्पा एण्ड जैनिज्म' नामक शोधपूर्ण पुस्तक मे उसे ऋषभदेव की मूर्ति प्रमाणित करते हुए लिखा है-

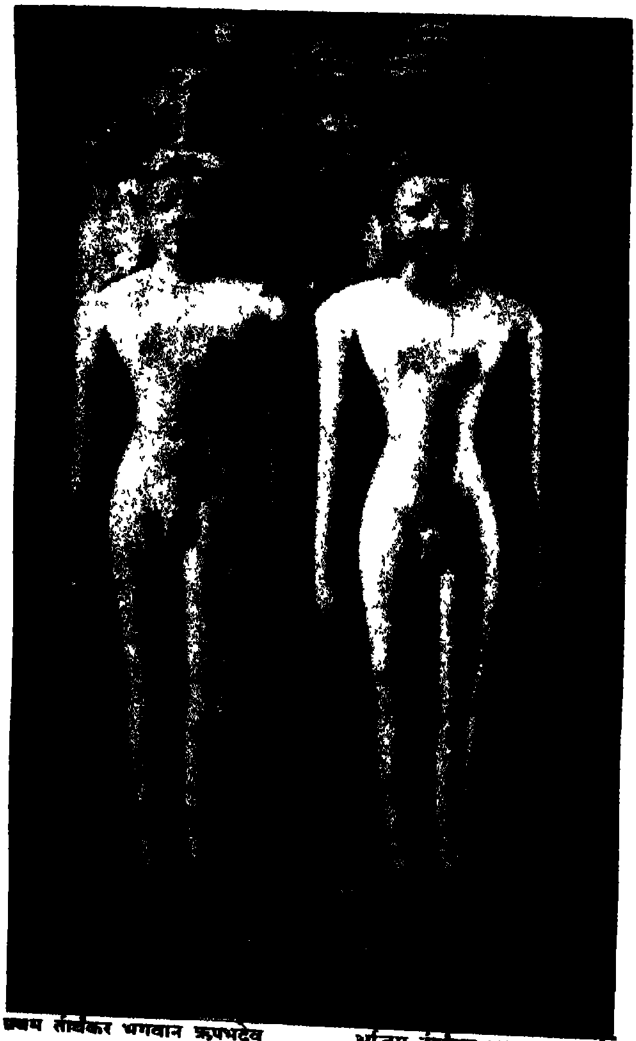

प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव   अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर

ब्रिटिश म्यूजियम मे स्थित युगल जैन तीर्थंकर *(W C 1B-3D G)*

''हड़प्पा की कायोत्सर्ग मुद्रा मे उत्कीर्णित मूर्ति पूर्ण रूप से जैन मूर्ति है, उनके मुख पर जैन धर्म का साम्य भाव

दूर से झलकता है।'' डॉ. काशीप्रसाद ने भी इसे तीर्थंकर ऋषभदेव की मूर्ति माना है। उनके अनुसार- 'पटना के पास लोहानीपुर से प्राप्त तीर्थंकर महावीर की मूर्ति भारत की सबसे प्राचीन मूर्ति है। हड़प्पा की नग्न मूर्ति और इस जैन मूर्ति में समानता है। इनकी विशेषता है योग मुद्रा।'' बाबू कामता प्रसाद जैन ने भी अपनी पुस्तक 'महावीर और अन्य तीर्थंकर' में लिखा है कि ''हड़प्पा से प्राप्त प्लेट नं. 10 पर केवल मानव मूर्ति का धड़ उत्कीर्णित है। यह भी नग्न है और कायोत्सर्ग मुद्रा मे है। इसका हूबहू साम्य बांकीपुर की जैन मूर्ति में मिलता है। यह मौर्यकालीन है।'' हड़प्पा की संस्कृति को विद्वानो ने ईसा पूर्व 3000 से 2000 का माना है। इससे स्पष्ट होता है कि आज से चार-पाँच हजार वर्ष पूर्व भी तीर्थंकरों का अस्तित्व था और उनकी पूजा अर्चना होती थी।

इन सब आधारों से अनेक विद्वानो ने यह स्वीकार किया है कि सिंधु घाटी की सभ्यता जैन संस्कृति से संबद्ध थी। पी.आर. देशमुख ने अपनी पुस्तक 'इंडस सिविलाइजेशन ऋग्वेद एण्ड हिंदू कल्चर' मे लिखा है- ''जैनों के पहले तीर्थंकर सिंधु सभ्यता से ही थे। सिंधुजनों के देव नग्न होते थे। जैन लोगो ने उस सभ्यता, संस्कृति को बनाए रखा आर नग्न तीर्थकरो की पूजा की।'' उन्होंने सिंधु घाटी की भाषिक संरचना का भी उल्लेख करते हुए लिखा- ''सिंधुजनो की भाषा प्राकृत थी। प्राकृत जन सामान्य की भाषा है, जैनों और हिंदुओं में भारी भाषिक भेद है। जैनो के समस्त प्राचीन धार्मिक ग्रंथ प्राकृत मे है। विशेषतया अर्धमागधी मे, जबकि हिंदुओं के समस्त ग्रंथ संस्कृत मे है। प्राकृत भाषा के प्रयोग से भी यह सिद्ध होता है कि जैन प्राग्वैदिक हैं और सिंधुघाटी से उनका सम्बन्ध था।'' इस विषय में डॉ. प्रेमसागर जैन द्वारा लिखित ''सिंधु घाटी मे ऋषभ युग'' दृष्टव्य है। उन्होने अपने शोधात्मक लेख में अनेक प्रमाणो के आधार पर यह स्थापित करते हुए कहा कि ''समूची सिंधु घाटी, उसमे चाहे मोहनजोदड़ो हो या हड़प्पा, ऋषभदेव की थी, उनकी ही पूजा अर्चना होती थी।''

इतिहासकारों के अनुसार वैदिक आर्यो के भारत आगमन अथवा सप्तसिंधु से आगे बढ़ने से पूर्व भारत में द्रविड़, नाग आदि मानव जातियां थी। उस काल की संस्कृति को द्रविड़ संस्कृति कहा गया है। डॉ. हेरास, प्रो.एस. श्रीकंठ शास्त्री जैसे अनेक शीर्षस्थ विद्वानो और पुरातत्ववेत्ताओ ने उस संस्कृति को द्रविड़ तथा अनार्य संस्कृति का अभिन्न अंग माना है। प्रो.एस.श्रीकंठ शास्त्री ने सिंधु-सभ्यता का जैन-धर्म के साथ सादृश्य बताते हुए लिखा है– ''अपने दिगम्बर धर्म, योगमार्ग, वृषभ आदि विभिन्न लांछनों की पूजा आदि बातो के कारण प्राचीन सिंधु-सभ्यता जैनधर्म के साथ अद्भुत सादृश्य रखती है।''

[दै. भास्कर से साभार]

शास्त्र स्वाध्याय परम तप है

शास्त्र सम्यग्ज्ञान का साधन है। जिस प्रकार पथिक को पाथेय (मार्ग के लिए आहार) की आवश्यकता होती है उसी प्रकार मोक्ष मार्ग में चलने वाले के लिए शास्त्र ज्ञान एक प्रकार का पाथेय है। इस पाथेय के रहते हुए मोक्ष मार्ग के पथिक को कोई कष्ट नही होता। शास्त्र की उद्भूति अपने आप नही होती किन्तु केवलज्ञानी से होती है। भगवान महावीर को केवलज्ञान हो गया, परन्तु 66 दिन तक दिव्य ध्वनि नही खिरी। समवशरण रचा गया, उसमे विराजमान महावीर को देखकर लोगो के नेत्र तो तृप्त हो गये, परन्तु श्रोत्र अतृप्त बने रहे। इन्द्र के माध्यम से इन्द्रभूति समवशरण मे पहुँचे। वहा पहुँच कर उनके दीक्षित होने पर भगवान की दिव्यध्वनि खिरी और उसे उन्होंने गणधर बन कर ग्रन्थ रूप मे अर्हन्त कथित अर्थ रूप श्रुत को शास्त्र रूप मे परिवर्तित कर हम लोगो को सुनाया। इस तरह शास्त्रो का समुद्भव भगवान की दिव्य-ध्वनि से होता है।

प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन शास्त्र स्वाध्याय करना चाहिये। क्योंकि जिन-शास्त्र एक प्रकार की औषधि है और ऐसी औषधि है जो विषय सुख का विरेचन करने वाली है तथा जन्म मरण के रोगो को दूर करने वाली है। शास्त्र आचार्यो के वचन है। शास्त्रो के द्वारा मानव के अन्तरंग मे छिपे हुए रागादि विकारी भाव दूर होते हैं। हमारे दैनिक कार्यो मे वीतरागी सन्तों द्वारा रचित शास्त्रो के स्वाध्याय का विशेष स्थान होना चाहिये। क्योंकि इन शास्त्रो से ही भगवान की वाणी का सार अर्थात् मोक्ष-मार्ग का पता चलता है। धार्मिक ग्रन्थो एवं पत्रिकाओ का अध्ययन जीवन को सफल बनाता है। इनसे हेय उपादेय का ज्ञान होता है, जिससे हम हेय को छोड़कर एवं उपादेय को ग्रहण कर अपना जीवन सफल बना सकते है। शास्त्र की भक्ति से ही एक ग्वाला अगले भव मे कुन्दकुन्दाचार्य बनता है। मात्र शास्त्र की विनय करने से, सम्भाल कर रखने से एक अनपढ़ ग्वाला अपना कल्याण कर सकता है तो हम भी प्रतिदिन स्वाध्याय द्वारा अपना कुछ कल्याण कर सकते हैं।

स्वाध्याय परम तप है, यह कर्म निर्जरा का कारण भी है। जिस प्रकार रस्सी के बिना कुए का पानी प्राप्त नही हो सकता। उसी प्रकार स्वाध्याय के बिना तत्व ज्ञान प्राप्त नही हो सकता। शास्त्रो से सम्बन्ध नहीं त्यागना चाहिए। मोक्ष मार्ग की साधना मे देव और गुरू के समान शास्त्र का परिज्ञान भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

– कु. अनुपमा जैन, नहटौर

धर्म क्रान्ति है - चेतना है - पवित्र प्रवाह है

जो है - सो है, इसे जानना ही सत्य और द्रव्य को जानने की यात्रा का प्रथम चरण है। प्रत्येक द्रव्य सत् है, यही इसका लक्षण है। सत्य अनादि है। अनादि होता ही वह है, जिसका कोई प्रारम्भ नहीं होता है। सत्य की तरह द्रव्य भी सदा वही रहता है। वह ''था'' या ''गा'' नही होता, इसी मे वह नया व पुराना नहीं होता। सत्य को धारणा, आग्रह, मान्यता, भय का संकोच लेकर नहीं पाया जा सकता है। ज्ञानी सत्य को देखता है। उसका सुनना व गुनना ज्ञान-यात्रा होती है। अज्ञानी अपनी वासना व कामनाओ का संसार बुनता है और विकल्पों मे सत्य खोजता है। जीवन का सत्य और गणित अतीव सहज होकर समक्ष रहता है, इसी से इसे जानना व उघाड़ना चेतना का विस्फोट है। ज्ञान आत्मा का स्वभाव है, आन्तरिक स्थिति है। ज्ञानी अपने स्वरूप मे ज्ञाता-दृष्टा होता है। वह किसी को कर्त्ता, विधाता व नियन्ता स्वीकार नही करता। वह ऐसे किसी काल-खण्ड की कल्पना भी नहीं करता, जब कही कुछ नही रहा है और ऐसे अभाव को किसी पराशक्ति ने भर दिया है या नयी सृष्टि की संरचना की है।

हर समय जगत जैसा है, वैसा ही रहा है। हर जीव अपने जगत का निर्माण वैसा ही करता रहा है, जैसा वह होता है। जगत दौड़ता हुआ ऐसा वर्तुल है, जो परिवर्तनों व तरंगो से भरा होकर भी अनादि है। पृथ्वी, सूर्य, चन्द्र, तारामण्डल आदि सब अपनी परिधि मे धुरी पर नित्य परिक्रमा किये रहते है। परिधि पर जो दूरी रहती है, वह केन्द्र पर समाप्त हो जाती है। आधार याने केन्द्र सदैव वहीं रहता है, इसी से परिधि अपने समय का इतिहास बन जाती है। केन्द्र पर सत्य विराजमान रहता है, जो गति को निरन्तर बनाये रहता है। इस निरन्तरता में ही अनेक काल-खण्ड, जीवन-मरण आदि समाये हुए हैं।

अनादिकाल से सत् अनन्तकाल के लिये मूलधारा मे प्रवाहित है। एक पल के लिये भी विराम नहीं।......इसी से हर द्रव्य स्वतन्त्र है, उसकी अपनी संप्रभुता है, जिसमे वह विकसित, परिचालित व गतिमान रहता है। अनन्त गुणों व पर्यायो के लिये होना ही उसका आधार है। गुण द्रव्य में रहते है, पर स्वयम् निर्गुण होते हैं। गुण ही द्रव्य का स्वभाव है। वह किसी से बंधता नहीं है, बांधता भी नहीं है। गाय के गले मे रस्सी डालकर समझना कि गाय को बांध लिया है, जब कि गाय बंधती नहीं है। रस्सी स्वयम् अपने को गांठ लगाती है और वही बंधती है। हाथो मे पड़ी हथकड़ी हाथों को नहीं, अपनी कड़ी मे कड़ी डालकर स्वयं को बांधती है। कोई भी द्रव्य अन्य को बांध नही सकता। इसी तरह कोई भी द्रव्य एक समय के लिये भी कही ठहरता या टिकता नही है। यही सत्

चित् धारा है, स्थूल अनुभवो व वेदनाओ का अनुष्ठान है। जैविक अस्तित्व ही देशकालिक सत्य है। असंख्यात् जीव हर पल जन्मते है, व मरते है, यह सब मांगलिक नियमों के अनुसार होता है। जन्म और मृत्यु के बाद भी तत्व समाप्त नहीं होता। निरन्तर गतिमान रहता है।

जैन दर्शन में द्रव्य आकृत है और इसका स्वरूप आकृति है, जिसे पर्याय भी कहा जाता है। आकृत देखने मे नही आता है और आकृति सामने रहती है। आकृति बदलती रहती है, आकृत नही। ऐसा कोई द्रव्य नही है, जिसकी कोई आकृति नही है। हर जीव, पदार्थ या द्रव्य की पहिचान आकृति होती है और यह आकृति देह पर मढी हुई चाम होती है। चमड़ी पहिचान बनाती है, वहीं अपने रंग-रूप में रहती है। इसी से हर आकृति अपने ही आकार में अकेली होती है। असंख्यात पेड़-पौधो की पत्तियो मे हर एक का आकार उनका अपना होता है। किसी भी द्रव्य की आकृति एक समय में वही होती है। यह संभव ही नहीं है कि एक समय मे दो आकृतियां धारण की जावे। आने वाली पर्याय के लिये पूर्व पर्याय को स्थान छोड़ना ही होता है। शिशु से बालक, बालक से युवा और वृद्ध होना पर्याय बदलना है। यह बदलाव हर समय उसी देह मे होता रहता है। जो समक्ष होते हुए भी पकड़ मे नही आता है। जिस देह को अपनी मानकर मोहित रहते हैं, स्वयं अपनी देह मे ही हो रहे रूपान्तरण को समझ या देख नही पाते है। पल-पल हो रहे बदलाव पर दृष्टि टिकती नही है, जैसे तेज गति अ-गति हो जाती है, देखने मे नहीं आती है।

देह मे हो रहे नित्य परिवर्तन के बावजूद नित्यता और सौन्दर्य द्रव्य का बहुआयामी तत्व है, जहा अनन्त धाराएँ है। द्रव्य किसी का निषेध नही करता, वह अन्य को आत्मसात करते हुए भी अपनी सत्ता मे पूर्ण स्वतंत्र रहता है। पर्याय का बदलाव द्रव्य मे निहित अवस्थाओ का प्रगटीकरण है। बीज मे रहने वाले वृक्ष की तरह है, जो अनुकूलता के मिलने पर अंकुरित होकर विशाल रूप मे समक्ष आ जाता है। शैशव, बाल, युवा, वृद्ध आदि सभी अवस्थाएं एक साथ देह मे रहती है जो समय मे प्रगट हो जाती है। किसी भी गीत का प्रारम्भ है तो अन्त भी है और दोनों ही नष्ट नहीं होते हैं। अभी गाया गया बोल तत्काल कभी होकर भी ध्वनित हुआ रहता है। नदी अपने पूरे वेग से सागर की तरफ दौड़ती रहती है और अपने को विलीन करती जाती है। फिर भी उसका उद्गम, मध्य और प्रवाह यथावत रहता है। उसका वेग, उसका प्रवाह एक समय के लिये भी स्थगित नही होता है। यही द्रव्य का अनुपम रहस्य है कि वह अपनी आकृतियो मे रूपान्तरित होता है, विलीन होता है, फिर भी कभी नही होकर सदैव "अभी" बना रहता है। द्रव्य अपने लक्षणो मे इस तरह गुँथा रहता है कि इस संबन्ध में "जो नही कहा जा सकता है, उसे कहना ही नही चाहिये।" क्योंकि सत्य कहने के साथ विकृत हो जाता है। इसलिये, जो जानते है,वे कहते नही हैं और जो कह रहे है, वे जानते नही है।

जैन दृष्टि में हर जीव में परमात्मा होने के गुण विद्यमान है। जगत में जो भी है, वह सदा से है। द्रव्य को कोई बना नही सकता तो मिटा भी नही सकता। द्रव्य का पहला लक्षण है धर्म, दूसरा अधर्म, तीसरा आकाश, चौथा काल, पांचवा पुद्गल और छठा जीव द्रव्य है, स्वभाव है। बीज मे विद्यमान वृक्ष की तरह धर्म क्रान्ति है, चेतना है, जो मैं हूँ, उसी में जीना है और उसे ही पाना है। अधर्म गति को रोकने वाला तत्व है, जिसकी दृष्टि सदैव ''पर'' पर रहती है। जड़ होकर पुरातन को पकड़े रहना, आग्रही होना अधर्म तत्व है। धर्म गंगा का पवित्र प्रवाह है, जिसमें जीवन है, गति है, अधर्म-तालाब है, बंधा हुआ मृत है। समस्त पदार्थों, जीवों को जगह देना आकाश का लक्षण है। आकाश तटस्थ है, वह अवकाश देता है, जहां जिसे विस्तार पाना हो, वह स्थान देता है। आकाश समर्पण नहीं, संकल्प है। काल का लक्षण वर्तना है। समय स्वयं गतिशील है, वह ठहरता नही है, विलम्ब भी नही करता। काल कभी दूषित नही होता। काल मे सब समाहित है, वह अपने प्रवाह मे रहता है। काल निरपेक्ष द्रव्य है, जहा सबको अपने समय मे होने की पूरी सुविधा है।

पुद्गल का लक्षण है - रूप, रस, गन्ध और स्पर्श से युक्त होना। यह परमाणु स्वरूप है, जो अनेक परमाणुओ से मिलकर स्कन्ध बनता है। समस्त दृश्य जगत ''पुद्गल '' का ही विस्तार है। इन्द्रियाँ, शरीर, मन, इन्द्रियो के विषय, श्वास-उच्छवास आदि सब पुद्गल द्रव्य के विविध परिणमन है। शब्द, बन्ध, सूक्ष्मता, स्थूलता, संस्थान, भेद, अंधकार, छाया, प्रकाश, उद्योत, शीत और गरमी आदि पुद्गल द्रव्य की पर्याये है। हर जीव और पुद्गल अपने आप मे सक्रिय एवं सत्ता है। पदार्थों से भरा यह जगत जितना सामने है, उसे देखना, जानना और उससे जुड़ना ही सुख-दुख, राग-द्वेष, मोह-ममकार का कारण है। कषाय के सूक्ष्म कर्म परमाणु ही स्थूल पुद्गल में मूर्त्त हो जाते हैं। जीव व पुद्गल मे स्वभावगत आकर्षण है। अचेतन पुद्गल भी अक्रिय नही है। जैन दृष्टि मे यह जड़ नही है, चेतन रूप वृक्ष से विलग हुई लकड़ी, खान से अलग हुआ लोहा, पहाड़ से टूटा पत्थर आदि अलग-अलग चेतन से विलग हुए पदार्थ हैं। ये भी निरन्तर अनेक रूप, पर्याय धारण करते रहते हैं, इसी को परिणमन कहते हैं। पुद्गल के नित्य परिणामी ऊर्जा में से ही अनन्त शक्तियाँ विस्फोटक होकर विश्व लीला को परिचालित करती है। अणुओ के स्कन्धों का अन्तिम भेद परमाणु है, जिसका आदि, मध्य और अन्त वही है, जो शाश्वत, शब्द रहित, अविभागी मूर्तिक है। ऐसे अनन्त मौलिक परमाणु जगत् मे व्याप्त है। विज्ञान की सत्ता यही है कि वह परमाणु की विस्फोटक शक्ति को प्रगट कर सकती है। पुद्गल को जानने की प्रक्रिया और उसके रूपान्तरण से शक्तियो को विकिसत करना ही विज्ञान है। अनादिकाल से परमाणु की अनन्त शक्ति से अवगत होने की चेष्टाएँ होती रही हैं। इस अनवरत खोज और उसके परिणाम से ही संसार चल

रहा है। चेतन और अचेतन का यह व्यापार ही आकर्षण है। यही कही प्रकृति में हस्तक्षेप भी है, जो विकास के साथ विनाश का हेतु है।

वस्तु-तत्व से राग ही संकट का कारण है। हर जीव जीना चाहता है। जीने के लिये सुरक्षा के उपाय खोजता है। वस्तुओ मे भी सुरक्षा देखने लगता है, इसी से आग्रह है, परिग्रह की शुरूआत होती है। अपने अज्ञान-जन्य मोह में अपना जीना भी दूभर कर लेता है। सत्ता की आकांक्षा मे बंधक बनाने, शोषण करने को अपना अधिकार मान लेता है। वस्तु और व्यक्ति का सम्मान करने और आवश्यकता के अनुरूप उपयोग करने की जगह, उस पर स्वामित्व कायम कर लेते है। प्रकृति मे केवल आत्म-दान है। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, वनस्पतियाँ आदि सब सर्व के साथ आत्म-भाव रखते है। लेकिन अहंकार और ममकार मे परस्पर-उपग्रह के यज्ञ को भंग कर रहे है। विज्ञान पुद्गल स्कन्धो के रूपान्तरण से नये आयाम पैदा करता है, यही उसका चमत्कार है। यही अस्तित्व का बोध होकर अनुभव बन जाता है। पदार्थ भी अस्तित्व है, लेकिन वहाँ अनुभव नही है। स्मृति मे अनुभव है, लेकिन उसमे ज्ञान नही है। पुद्गल स्वय अस्तित्व है, विज्ञान नित्य नये अनुभव से शक्तियो का विकास करता है। विज्ञान ने जान लिया है कि पुद्गल मे 'गल' अतीव महत्वपूर्ण है। हर द्रव्य गल रहा है अर्थात् नित्य नयी पर्याय धारण कर रहा है, और ध्रुव भी है। द्रव्य की इस क्षमता और नित्य नूतन बने रहने के व्यवहार का शोधन, भेदन ही विज्ञान का विकास क्रम है, परमाणु का ऊर्जा मे परिणमन है।

वास्तव में पुद्गल और उसकी परिणतियो का जीव से ऐसा ही सम्बन्ध है, जैसा दूध और पानी का है। दोनों भिन्न होकर भी अभिन्न है। इस भेद विज्ञान को जानना, देखना और आचरण करना दूध का दूध और पानी का पानी हो जाता है। वस्तु स्वरूप को जाने बिना वस्तु भेद नही किया जा सकता। जो जानता है वह 'पर' द्रव्य या 'पर' पर्याय मे परिणमन नही करता वह स्वरूप मे परिणमन करता है। जो निज को निज और पर को पर जानता है, वह अपने मे ही विहार करता है। शुद्धोपयोगी जीव द्रव्य मे से कुछ भी ग्रहण नही करता और न कुछ स्वाधीन छोड़ता है। पुद्गल केवल पदार्थ का बोधक नही है। पुद्गल सदैव ''अभी'' रहता है, वह कभी होता नही है। पुद्गल गति है, प्रवाह है। हर द्रव्य अपने धर्म मे विकासमान होकर भी अधर्म तत्व मे यथास्थिति का गुण लिये रहता है। आकाश का अवकाश और काल का वर्तना गुण भी एक साथ रहता है। जगत में हर द्रव्य चेतन है। जो पुद्गल है, वह भी चेतन से विलग हुआ ऐसा पदार्थ है, जिसमें अचेतन होने के बावजूद अपने चेतन गुण से पूरी तरह विलग नही होता है। यही कारण है कि अपनी अवस्था मे नाश होने की प्रक्रिया धीरे-धीरे चलती रहती है।

चेतन और अचेतन दोनो भिन्न है। इनकी भिन्नता ही सत्य है। दोनों ही परस्पर पूरक होकर सह-अस्तित्व की अनिवार्यत: है। मूल मे कोई भी पदार्थ जड़ या अचेतन नहीं है। जड़ दिखता पत्थर, लकड़ी, रत्न आदि सब अपने चेतन से बिछुड़े पुद्गल हैं। हर द्रव्य बहु आयामी है, वह अनन्त गुण और अनन्त पर्याय धर्मा है। यही द्रव्य का अनेकान्तिक स्वभाव है। द्रव्य के साथ जीना ही धर्म को जीना है। स्वभावो की इस सम्वादिता मे ही जीवन का संगीत है, सौन्दर्य और आनन्द है। इसमे राग नही रहता, विराग भी नही होता, जो होता है वह सहज भाव से स्वत: होता है। नित्य-नूतनता का होना ही जीवन है। पदार्थ या जीव से राग होना ही पर्याय से चिपटे रहना है। पर द्रव्य चेतन हो या अचेतन हो, स्वयं अपना साध्य है। जो कोई साधन बनने या बनाने के भ्रम मे रहते है, वे अपने ही अस्तित्व को नकारते हैं।

सागर की अनन्त तरंगे एक दूसरे से खेलती है, बनती है, मिटती है और निरन्तर बनी रहती है- वैसे ही अनन्त पदार्थो से भरे इस जगत मे अनन्त जड़ व चेतन, जीव व पुद्गल पदार्थ है, जो अनन्त आकृतियो मे मिलते हैं - बिछुड़ते है और सदा बने रहते है। यह संयोग वियोग ही इसकी सुन्दरता है। अपने भीतर ही सर्जन-विसर्जन गति-प्रगति और नित्यता बनाये रहता है। इसी से कोई भी द्रव्य ध्रुव होकर भी कूटस्थ नही है, परिणमनशील है। हर पदार्थ यथार्थ है। समस्त चराचर जगत चेतन व अचेतन वास्तविकता है। यह माया या भ्रम नही है वरन परम सत्य वस्तु है। देशकालातीत अवस्था में जगत् माया या मिथ्या है, किन्तु कोई भी जीव या पदार्थ देशकालातीत नही है। समग्र को युगपत् देखने पर सागर व तरंगें सब वही है, यही इसकी नित्यता है, ध्रौव्य तथा स्थायित्व है। अपने संकल्प-विकल्पो को केन्द्र बनाकर दिशाएँ देखते है। परन्तु, केन्द्र के हट जाने पर सब दिशाएँ विलुप्त हो जाती है। केवल एक पूर्ण तथा अखण्ड काल-प्रवाह रह जाता है।

'णा इच्छो उए इण अत्थमेति, ण चन्द्रिमा बड्ढति हायति वा।'

सूर्य उदय होता है और न अस्त होता है, चन्द्रमा भी घटता-बढ़ता नही है, किन्तु हमारी दृष्टि इसी भ्रम पालना की अभ्यस्त है।

– प्रवीणचन्द्र छाबड़ा, न्यू कालोनी, जयपुर

सो अण्णाणी मूढो, जो ण याणदे समयसारं।

वह अज्ञानी है मूढ है, जो समयसार (आत्मस्वभाव) को नही जानता है। *- निर्ग्रन्थ प्रवचन 19*

ढूंढाड क्षेत्र में-

दिगम्बर जैन संस्कृति के तीन प्राचीन-स्थल : मौजमाबाद, चाकसू व नरायना

ढूंढाड का जयपुर क्षेत्र दिगम्बर जैन समुदाय का गढ़ कहा जाता है। यहाँ दीर्घकाल से ही अच्छे मंदिर बने है। सांगानेर का संघीजी मंदिर संभवत: प्राचीनतम है। यह मूलरूप से प्रतिहार कालीन है। प्रारंभ मे यह छोटा-सा देवालय था जो 10 वी शताब्दी मे बना था। इसका व्यापक जीर्णोद्धार 16 वीं शताब्दी में किया गया। जिससे इसका प्राचीनस्वरूप परिवर्तित हो गया। यह मंदिर एक ऊंची ''जगति'' पर बना हुआ है। मूलरूप मे इसके कई सीढ़ियां रही होगी; जैसी कि अन्य प्रतिहार कालीन (8वी से 10 वीं शताब्दी) मंदिरों मे होती है।

मौजमाबाद भी बड़ा प्राचीन है। यहाँ गुप्तकालीन प्राचीन बावड़ी भी बनी हुई है। जिसमे कमल के (गुप्त कालीन) सुन्दर पुष्प खुदे हुए है। इसका निर्माण भी एक विशेष शैली से हुआ है। इसमे चूना आदि नही लगा हुआ है। ऊपर के पत्थर मे एक कोण निकाल कर नीचे के पत्थर मे एक छेद करके पत्थरो को जोड़ दिया गया है। पूर्व मे सांभर का क्षेत्र मौजमाबाद तक फैला हुआ था। मौजमाबाद में सुन्दर जैन मंदिर बना हुआ है। यह दो मंजिला है। मुख्य मंदिर के नीचे के भाग में तलघर (गर्भगृह) भी है। इसमे भी भगवान विराजमान है। यहाँ कई ग्रंथ लिखे गये थे। वि.सं. 1606 मे आदिपुराण की एक सचित्र प्रति यहाँ चित्रित की गई थी। इसमे कुलादारशैली के अतिसुन्दर चित्र है।

जयपुर रियासत मे रहे एक प्रसिद्ध विद्वान झूँथाराम संघी के पूर्वज उदा एवं उनका पुत्र माला मौजमाबाद के निवासी थे। यह परिवार मूल रूप से भौसा गोत्र का था। इसके वंशज मोहन दास मिर्जा राजा जयसिंह का मंत्री था। इसने आमेर मे एक विशाल मंदिर बनवाया था जिसे आजकल शिव मंदिर मे परिवर्तित कर दिया गया है। यह मूल रूप से विमलनाथ का मंदिर था। इस परिवार ने कई ग्रंथ लिखवाये थे। इनमे ''करकण्डु चरिउ'' राजा मानसिंह प्रथम के शासनकाल का है। संभवत: उदा ने इसे प्रतिलिपि कराया था। आमेर के नेमिनाथ मंदिर में ''विजययंत्र'' मे विसं.1694 का लेख है। इसमे श्रेष्ठी माला का उल्लेख है। यह उक्त संवत तक जीवित था। माला को ''करकण्डु चरिउ'' की प्रशस्ति में ''संघ भार धुरन्धर'' लिखा है। इसके पांच पुत्र थे जिनमे पहला डालू था। इसके द्वारा दूदू, अराई एवं मौजमाबाद मे कई प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित कराई गई थीं। इसे आमेर के वि.सं. 1714 एवं 1716 के लेख मे ''संघ भार धुरन्धर जिन पूजा पुरन्दर जिन चैत्यालय प्रतिष्ठ: कारणिक तत्पर'' लिखा गया है। आमेर के नेमिनाथ चैत्यालय मे वि.सं. 1658 मे प्रतिष्ठित पार्श्वनाथ की प्रतिमा है। इसके आसन पर सांप की आकृति बनी हुई है। लेख मे डालू श्रेष्ठी आदि का उल्लेख है जिसके चार पत्नियां थी, इनके नाम लेख मे वर्णित हैं। (1) लाडमदे

(2) दुरगादे (3) सुहागदे और (4) लहिका। इसके एक पुत्र आसकरण था जिसका उल्लेख ''करकण्डु चरिउ'' की प्रशस्ति में भी आता है। चौधरी माल्लाह का दूसरा पुत्र चतुर्भुज था। इसकी पत्नी का नाम वादणदे था। चतुर्भुज का उल्लेख आमेर के लेख मे नही है। संभवत: उस समय तक उसकी मृत्यु हो गई थी। करकण्डु चरिउ की प्रशस्ति में इसका स्पष्टत: उल्लेख है। अत: इसके परिवार के सदस्य होने में कोई शंका नहीं है। माल्हा का तीसरा पुत्र खेलसी था। इसके तीन पुत्र थे (1) मोहनदास (2) नारायणदास और (3) राजसिंह।

मोहनदास मिर्जा राजा जयसिंह के शासन काल में आमेर आया था। इसके लिए आमेर के वि.सं. 1716 में ''स्वामिधर्मी विभुसेवी स्वाम्वाराधन तत्पर:'' लिखा गया है। वह स्वयं विद्वान था एवं विद्वानो का आदर करता था। ''समयसार'' ग्रंथ की प्रशस्ति वि.सं. 1697 मे इसका स्पष्टत: उल्लेख किया गया है। इसे जोशी आलिराज ने संघी मोहनदास के पठनार्थ इसकी प्रतिलिपि कराई थी। मोहनदास के तीन पुत्र (1) कल्याणदास (2) विमलदास और (3) अजीतदास थे। इसी अजीतदास की वंश परम्परा मे संघी झूँथाराम हुआ था। म्हाला के चौथे पुत्र राजसिंह थे। इसके दो पुत्र थे (1) हेमराज और सुथरदास और पांचवा पुत्र वेणीदास था जिसके एक पुत्र लाभचंद था। इस प्रकार से इस महत्वपूर्ण परिवार का वंश-वृक्ष निम्न प्रकार है:-

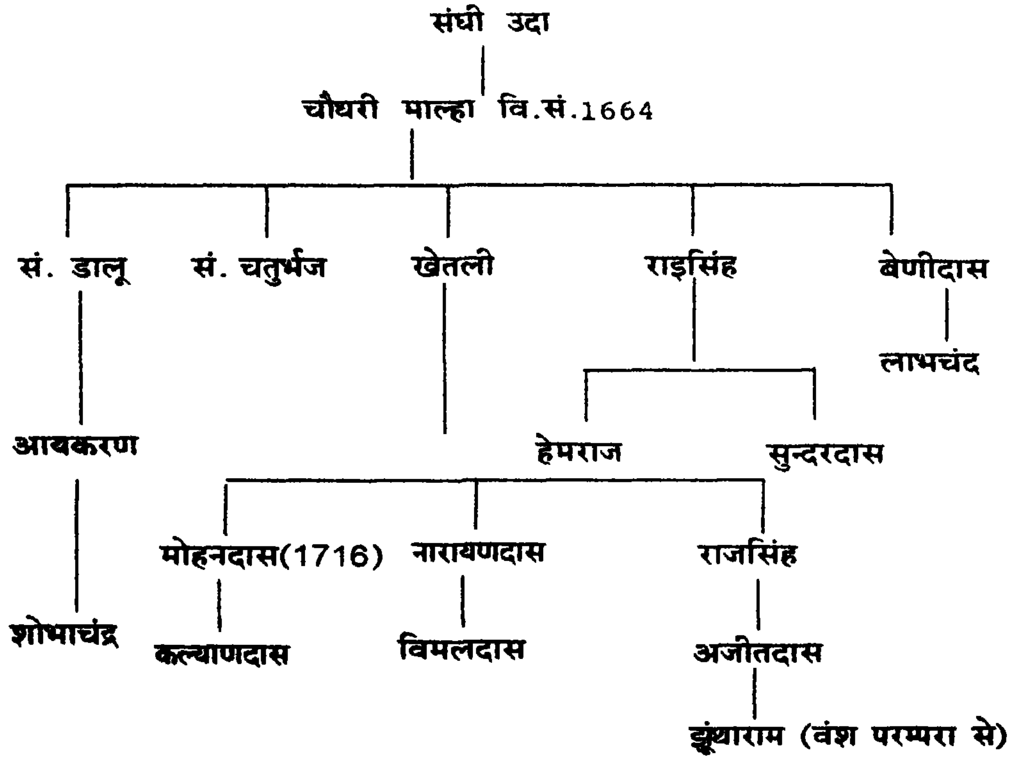

चाकसू जयपुर टोंक रोड़ पर स्थित है। यह एक प्राचीन नगर है। यह छठी शताब्दी में एक उन्नत नगर था। चाकसू की शिव डूँगरी मे एक प्राचीन जैन मंदिर था जो आठवी शताब्दी का बना था। इसके गर्भगृह के भाग में आज भी जैन प्रतिमाएं विद्यमान है। इसे कालान्तर मे शिव मंदिर मे परिवर्तित कर दिया गया। चाकसू में और भी कई सुन्दर जैन मंदिर बने हुये है जो अधिकांश मध्य कालीन हैं। चाकसू नगर प्रारम्भ में ''भतृपट्टाभिधान गुहिलोतो'' के अधिकार में था। (10 वी शताब्दी का जारी पट्टा) इसके बाद चौहानो के अधिकार में आया। चौहानो के बाद दिल्ली और मालवा के सुल्तानों के अधिकार में रहा। इसे राणा कुंभा और सांगा ने जीता था। सांगा की ओर से टोडा का ''रामचंद्र सोलंकी'' यहाँ का अधिकारी रहा था। टोडा के सोलंकियो से कछवाहो ने जीता था। कालान्तर में ही इसे मुगल साम्राज्य मे मिला लिया गया। शाहजहां ने इसे स्थाई रूप से मिर्जा राजा जयसिंह को जागीर मे दिया था। तब से यह कछवाहों के अधिकार मे चला आ रहा है। चाकसू में कई ग्रंथ लिखे गये थे।

चाकसू दिगम्बर जैनों का प्रमुख गढ़ रहा है। मूलसंघ के आचार्य चंद्रकीर्ति चित्तौड़ से यहाँ आ गए थे। चाकसू के वि.सं 1661 के लेख मे इनके चाकसू मे रहने का उल्लेख है। इन्होने चाकसू मे एक जैन मंदिर का निर्माण कराया था। यह नेमिनाथ का मंदिर आज भी वहां विशिष्ट है। वि.सं. 1548 बैशाख सुदी 3 सोमवार के दिन चाकसू मे प्रतिष्ठित अजमेरा गोत्र के संघही गोल्हा एवं उसके पुत्र पदारथ वरदा आवा नाथु सूजा आदि ने एक सिद्धचक्र यंत्र स्थापित कराया था जो वर्तमान मे आमेर के सांवला जी के मंदिर मे है। ''बाहुबलि चरित्र'' की प्रतिलिपि वि.सं. 1582 मे कराई गई थी। वह इस समय ब्यावर के ऐलिक पन्नालाल जैन सरस्वती भवन ब्यावर मे संग्रहीत है। इसकी लम्बी प्रशस्ति मे पहाड़िया गोत्र के दोषी परिवार का, जो चाकसू का रहने वाला था, उल्लेख है।

बाहुबलि चरित्र की इस प्रति मे ''भट्टारक श्री प्रभा चद्रदेवा आये खडेलवालाचये चम्पावती वास्तवो महारावणा श्री सग्रामदेव राज्ये राहुल श्री राम चंद्र प्रतापे खंडेलवालान्वये पहाडिया गोत्रे संघ भार धुरन्धर सिंघई भोपति. '' वर्णित है। वि.सं. 1595 में यहाँ कल्पसूत्र की प्रतिलिपि की गई थी। जो अब बीकानेर मे अभयजन ग्रंथालय (श्री नाहटा जी का संग्रहालय) मे उपलब्ध है। इसमें वीरमदेव के राज्य का लेख है। इस बीरमदेव को शटिप्रबाद मालदेव ने जीत लिया था।

'श्रवणा सताबीसी' नामक एक जैन प्रशस्ति मे एक रोचक वर्णन किया गया है। यह वि.सं. 1578 की कृति है। इसमें महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सूचना है। यह दिगम्बर जैन ग्रंथ है। इस समय अजमेर के जैन शास्त्र भंडार मे है। लोदी

ने आक्रमण किया तो लोग चाकसू से भी भाग गये। उस समय रणथम्भोर पर महाराजा सांगा का अधिकार था। केवल दो ही व्यक्ति रह गए थे। इन्होने भगवान से प्रार्थना की कि यदि सांगा की जीत हो जायगी तो वह कविता बनाकर आपको प्रेषित करेगे। कुछ समय बाद सांगा की जीत का समाचार मालूम हुआ तो इन दिगम्बर जैन कवियो ने प्रार्थना बनाई। यहाँ वि.सं. 1581 जेष्ठ सुदी 6 को करकण्डु चरित की प्रतिलिपि की गई थी। वि.सं. 1583 मे ''चंद्रप्रभचरित'' की प्रतिलिपि की गई थी। (सं. 1583 वर्ष आषाढ सुदी 3 बुधवासरे चम्पावती नगर राणा संग्राम राज्ये राव श्रीरामचंद्र प्रतापे) इसी प्रकार से वि.स. 1584 में वर्द्धमान कथा राज्ये ढक्कर कावे, जो 16वी शताब्दी का था, ने भी अपभ्रंश में कई रचनाएं की थी। इनमे कृपाण चरित्र, मेघमालावायकला, पंचेन्द्रिय वेल, नेमिराजमति वेला आदि कृतियां इनकी बनाई हुई है।

'तारीख 3-सलातीन-3-अफसाना' मे यह लिखा है कि यहाँ राणा सांगा के प्रतिनिधि पूरणमल ने वहाँ रहने वाले सैयादो की हत्या कर दी थी। संभवत: सैयादो का बड़ा प्रभाव था। गर्ग अलीशाह नामक एक मुस्लिम अधिकारी ने वहाँ के जैन एवं वैष्णव मंदिरों को नष्ट कर दिया था। लोगो ने इसके विरूद्ध आक्रमण कर उसे मार दिया था। उसे धर्मात्मा के रूप मे मुलसमानो ने चित्रित किया है।

चाकसू मे इसके बाद भी लगातार कई ग्रंथ लिखे गये है। यहाँ से कालान्तर मे दिगम्बर जैन भट्टारक भी आमेर चले गये थे। यहाँ के कई लेखक और कवि भी बराबर आमेर और जयपुर जाते रहे है। आज भी यह नगर अपनी प्राचीनता एवं संस्कृति के लिए बहुत प्रसिद्ध है। यहा वि.सं. 1706 मे एक पट्टावली स्तम्भ जो मूलरूप से नेमिनाथ मंदिर चाकसू मे लग रहा था। वर्तमान मे आमेर के राजकीय संग्रहालय में है।

''संवत 1706 वर्ष ज्येष्ट सुदि पंचमी दिवसे रविवारे श्री मूल सं. आम्नाय बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदा चार्यान्वये भट्टारक श्री पदमादिदेवास्त पट्टे भट्टारक श्री शुभचंद देवास्तत्पट्टे श्री जिनेन्द्र देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचंद्र देवास्तत्पट्टे श्री चंद्रकीर्ति देवास्तपट्टे भट्टारक देवेन्द्र कीर्ति देवास्तत्पट्टे भट्टारक नरेन्द्र कीर्तिदेवा तदाम्नाये चम्पावती नगर समीपि व त्रे चगानि नाम्नि स्थले नेमिनाथ चैत्यालये महाराज श्री जयसिंह राज्य प्रवर्तमाने भट्टारक श्री नरेन्द्र कीर्तिभि: पट्टावली स्तम्भ: कार्यक्ष-आर्थ कारापित:/चम्पावती श्रावका नं. नित्य प्रणमति शुभ भूपात् कल्याणमस्तु वर्द्धतां जिनशासनं श्री''

इसी प्रकार का एक और स्तम्भ चाकसू में लगवाया गया था। यह भी इस समय आमेर के राजकीय संग्रहालय में है। चाकसू में नसियां शिव डूँगरी पर वि.सं. 1593 का लेख भी लग रहा है। इसका सुपाठय्य अंश इसप्रकार है :

''संवत 1593 वर्ष माघ सुदी 7 दिने मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि तत्पट्टे शुभचंद्र तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्र तत्पट्टे भ. श्री प्रभाचंदस्तत्शिष्य श्री धर्मचंद्रस्तदाम्नाये खंडेलवालत्वये बाकलीवाल गोत्रे सा. मालू-''

नारायना (नरैना) एक प्राचीन स्थल है। पृथ्वीराज चौहान के शासनकाल मे यह स्थान महत्वपूर्ण था। महाराजा सागा के शासनकाल में भी वह यहाँ का बहुत महत्वपूर्ण था। ''सकल तीर्थस्तोत'' मे इसे जैनो का एक तीर्थस्थल माना है। नारायना के पादुकाओ के एक लेख में ''संवत् 1083 माघ सदी 14 आचार्यगुणपाद सुग्मं'' लिखा हुआ है। बिजोलिया के वि.सं 1226 के लेख में लोलकश्रणटि के पूर्वज पुण्य राशि ने नारायना में महावीर स्वामी का दिगम्बर जैन मंदिर बनवाया था। (श्लोक सं0 36) वि.स 1135 मे एक लेख मं प्राणकार व शपि मंथन ने अपने पूर्वजो के निर्मित बाहुबलि की एक मूर्ति की स्थापना की थी। लेख मे लिखा है ''संवत 1135 फाल्गुन सुदी-प्राग्वार जोल श्रेष्ठि सूजन सुत मथन सुश्रयोर्थ'' पितृत्य भ्रातु माल्हा भार्या मथन मृतचाहड संहिता भार्या प्रथम मनसुख बाहुबलि देव निज श्रेयोर्थ प्रतिष्ठित ।''

इससे पता चलता है कि ये प्राग्वार वंशी श्रेष्ठि लोग उस समय दिगम्बर सम्प्रदाय को भी मानते थे। परवाल पोरवाल आदि जाति इसी का रूप है। भगवान पार्श्वनाथ की एक मूर्ति वि.सं 1009 वैशाख सुदी को प्रतिष्ठापित की गई थी। इनके अतिरिक्त बड़ी मात्रा मे प्राचीन मूर्तियां यहा से मिली है। इन पर कोई लेख उत्तीर्ण नही है।

यहाँ सरस्वती की बहुत ही भव्य प्रतिमा मिली है। यह अत्यन्त मनोहारी है। इस पर वि.सं. 1102 का लेख भी खुदा हुआ है (संवत 1102 वैशाख सुदी, श्री नेमिनाथीय समस्त वालयो प्रतिष्ठा कारिते ॐ ह्रीं सौं.सरस्वती नम:) सिह वाहिनी देवी की जैन प्रतिमा जो सिंह पर आसीन है,भी बनी हुई है। इनमें से दो तो सफेद पाषाण की है एवं एक काले पत्थर की है। ''सत्यपुरीय महावीर उत्साह'' नामक कविता में,जिसे धनपाल ने वि.सं. 1081-82 मे से बनाया था, नारायना मे महावीर स्वामी का सुन्दर मंदिर होने का उल्लेख है (कोरिंट सिरिमाल धार आहाडु नराणउ) इससे प्रतीत होता है कि यहाँ का मंदिर विशेष रूप से उल्लेखनीय था। इसे मुसलमानो के आक्रमण के शीघ्र बाद ध्वस्त कर दिया था। पृथ्वीराज चौहान परिहार के बाद अजमेर का पूरा क्षेत्र मुसलमानों के अधिकार मे आ गया था।

लाडनूं के समीप से भी कई जैन मूर्तियां जमीन में खुदी हुई मिली हैं। इसी प्रकार से सुखासन भी मिली हैं। लाडनूं का पूरा सुन्दर मंदिर जमीन में ध्वस्त हो गया था। इसे हाल ही मे ढूँढ़ा गया है। नारायना से भी भैरवजी के

मंदिर के पास 12 वी सदी तक की कई जैन मूर्तियां खेत में खोदते समय निकली हैं। संभवत: वह भैरव का मंदिर ही मूल रूप से महावीर जी का मंदिर रहा हो।

इस समय नारायना में दो दिगम्बर जैन मंदिर है, किन्तु ये सब बाद के बने हुए हैं। महावीर का मंदिर बहुत उत्कृष्ट था। यह संगमरमर का बना हुआ था। खुदाई में कई उत्कीर्ण स्तम्भ मूर्तियां आदि मिली थी।

यहाँ भट्टारक क्षेमेन्द्र कीर्ति (इंडर बागड शाखा) एवं जगत कीर्ति (चाकसू शाखा) का यहाँ मिलन 1748 वि. सं.मे हुआ था। इनका विशेष सम्मान किया गया था। भक्तामर स्त्रोत की प्रतिलिपि भी यहां की गई थी। यह इस समय बूंदी के शास्त्र भंडार में संगृहीत है।

इस प्रकार से मौजमाबाद, चाकसू और नारायना जैन संस्कृति के प्रमुख केन्द्र स्थल रहे हैं, जिनकी चौहानों के शासनकाल में विशेष पात्रता थी।

- रामवल्लभ सोमानी

एस-3ए, सत्यनगर, झोटवाड़ा, जयपुर

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं पणमंति, जस्स धम्मे सया मणो।।

जो अहिंसा, संयम और तपरूप है वह धर्म है। ऐसे धर्म से ही सर्वोच्च कल्याण होता है। जिस मनुष्य का मन सदा ऐसे धर्म मे लगा हुआ है उसको देवता भी प्रणाम करते है।

卐

धम्मो दयाविसुद्धो पव्वज्जा सव्वसंगपरिचत्ता।
देवो ववगयमोहो उदययरो भव्वजीवाणं।।

धर्म वह है जो दयासहित है, सन्यास वह है जो समस्त आसक्ति से रहित है, देव वह है जिसने मूर्च्छा नष्ट की है और जो भव्य जीवो का उत्थान करने वाला है।

- निर्ग्रन्थ प्रवचन 15

जयपुर राज्य के प्रमुख दिगम्बर जैन साधु-साध्वियाँ

ब्र. धर्मचन्द्र शास्त्री द्वारा संपादित ''दिगम्बर जैन साधु परिचय ग्रंथ'' मे जिसका प्रकाशन सन् 1985 मे हुआ था तब तक के जैन साधु साध्वियो का परिचय दिया गया है। इसके पश्चात् ऐसा कोई संदर्भ ग्रंथ देखने मे नही आया। इस प्रकार के ग्रंथो के प्रकाशन की महती आवश्यकता है जिससे हमारे धर्म गुरूओ का पूर्ण परिचय जनता को प्राप्त हो सके।

साधु समाज की विभूति है। पंच परमेष्ठी की गणना मे साधु का तीसरा स्थान है। देव,शास्त्र व गुरू हमारे धार्मिक श्रद्धा के आधारभूत हैं। प्रतिदिन नियम से उनकी पूजा की जाती है। साधु चलते-फिरते तीर्थ है। इन्हे जिनेश्वर का लघुनंदन भी कहा जाता है। बिना जैनेश्वरी दीक्षा लिये भव-बंधन नही कट सकते। निर्वाण प्राप्त करने हेतु मनुष्य जीवन धारण कर साधु बनना पड़ता है। समाज मे साधु का पद अत्यंत महत्वपूर्ण एवं पूजनीय है। साधु के उपदेशामृत से धर्म का अच्छा स्वरूप तथा सुविचारित जीवन जीने की कला प्राप्त होती है। साधु निष्परिग्रही एवं निर्मोही होता है। साधु के त्यागमयी जीवन का अन्य लोगो पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अपने घर से नाता तोड़ गांव-गाव मे पदयात्रा करनी पड़ती है। साधु ज्ञानार्जन कर स्व पर कल्याण मे तत्पर रहता है। वह किसी पर भार स्वरूप नही है। साधु सावधानी पूर्वक 28 मूलगुणो का पूर्ण रूप से पालन करता है। भूख, प्यास, गर्मी, सर्दी व बरसात के परीषह सहन करता है। किसी से किसी प्रकार की याचना नही करता। जन्मजात बालकवत नग्न घूमता है। ऐसे दिगम्बर साधु सदा से होते आये है, इस समय उपलब्ध है तथा आगे भी होते रहेगे यह क्रम कभी रुकेगा नही।

देश के प्रत्येक प्रांत मे साधु बनते आये है। इस सदी मे हजारो की संख्या मे दिगम्बर साधु एवं साध्विया हो चुकी है। इस लेख मे जयपुर रियासत (राज्य) मे तथा जयपुर नगर मे जन्मे कतिपय साधुओ व साध्वियो का परिचय जनता की जानकारी हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है जिससे हम अपने आपको गौरवान्वित कर सके।

108 मुनि श्री जयसागरजी:

आपका पूर्वनाम दीपचन्दजी था। खण्डेलवाल दिगम्बर जैन बोहरा गोत्रीय परिवार मे आपका जन्म सन् 1911 के आसपास जयपुर से 6 किमी. दूर जयसिंहपुरा खोर (ग्राम) मे हुआ था। आपके पिता का नाम श्री केशरलाल जी तथा माता का नाम वाग्देवी (बच्ची बाई) था। आप बाल ब्रहमचारी थे तथा प्रारम्भ से ही धार्मिक विचारो के थे। आपने राज्य सेवा (पटवारी पद) छोड़कर

आचार्य श्री जम्बूसागर जी से कुंथलगिरि मे मुनि दीक्षा ली। आपने अनेक स्थानो पर औषधालय तथा पाठशालाएं खुलवायीं। आप लादूलालजी खोरवालो के छोटे भ्राता थे। आपकी बहिन ने भी आर्यिका दीक्षा ली थी। कुछ समय पूर्व उनकी समाधि हो चुकी है।

108 मुनि श्री जयसागरजी:

आपका पूर्व नाम गुलाबचंदजी था, आप जयपुर के प्रसिद्ध समाज सेवी श्री लक्ष्मीचंदजी लोग्या सर्राफ के पुत्र थे। आपके सुपुत्र श्री महावीर कुमार लौग्या तथा भाई स्व. श्री गोपीचंदजी लौग्या भी काफी प्रसिद्ध व्यवसायी रहे है। श्री गुलाबचंदजी जयपुर की चौकड़ी मोदीखाना मे दीवानजी की धर्मशाला के पीछे रहते थे। आपने संवत् 2003 मे अपना व्रती जीवन प्रारंभ किया तथा सं. 2013 मे आचार्य श्री वीरसागरजी से जयपुर मे ही मुनि दीक्षा ली एवं सं 2024 मे प्रतागढ़ मे आचार्य शिवसागरजी के सानिध्य मे समाधि मरण किया।

108 मुनि श्री नेमिसागरजी:

आपका पूर्व नाम छुट्टन लालजी था। आपका जन्म जयपुर मे हुआ था। आपके पिता श्री जमनालालजी काला तथा माता श्रीमती गुलाबदेवी थी। आप चौकडी मोदीखाना मे ठाकुर उदयसिंह जी की हवेली के पास रहते थे। आपके भाई श्री छीतरमल जी काला थे। आपने पुण्य तीर्थ गजपथा मे क्षुल्लक दीक्षा ली तथा औरगाबाद (महाराष्ट्र) मे सन् 1966 मे श्री सन्मति सागरजी से मुनि दीक्षा ली। महान तपस्वी मुनि नेमिसागरजी ने एक-एक माह के उपवास भी किये थे। मै स्वय (अनूपचद न्यायतीर्थ) इनके दीक्षा दिवस पर औरगाबाद मे यात्रा करते हुए पहुँचा था। आपकी समाधि गाजियाबाद (दिल्ली) मे हुई।

108 मुनि श्री सन्मतिसागरजी:

आपका जन्म टोडारायसिंह मे हुआ था। आपके पिता श्री मोतीलालजी छाबड़ा प्रसिद्ध व्यक्ति थे। आपकी शिक्षा साधारण ही थी, किंतु धार्मिक वृत्ति के होने से 108 आचार्य श्री वीरसागर जी से दीक्षा ली तथा अनेक स्थानो पर चातुर्मास करते हुए सन् 1981 मे उदयपुर मे समाधिमरण किया।

108 मुनि श्री सुपार्श्वसागरसागरजी:

आप जयपुर राज्य के ग्राम सारसोप के निवासी थे। आपका जन्म संवत् 1958 मे हुआ। आपे पिता श्री छगनलाल जी तथा माता श्रीमती सुन्दर बाई थी। जैनाग्रवाल जाति मे जन्म लेकर अपनी धार्मिक श्रद्धा का गहरा परिचय दिया। आपका गृहस्थ का नाम घासीलाल था। आपका विवाह संवत् 1961 मे हुआ तथा संवत् 1986 तक 3 पुत्रो के पिता बन गये। संवत् 1986 मे ही आपकी पत्नी का स्वर्गवास हो गया। आपके पिता की ग्राम में अच्छी प्रतिष्ठा थी। आपकी शिक्षा ग्राम मे ही जोशी

के माध्यम से हुई व 32 वर्ष की उम्र मे ही व्रत धारण कर लिए। आपने संवत् 2010 में जयपुर में आचार्य श्री वीरसागरजी से क्षुल्लक दीक्षा तथा आचार्य श्री शिवसागरजी से सीकर में मुनि दीक्षा ली। आचार्य श्री धर्मसागर जी के सानिध्य में मुजफ्फरनगर मे आपकी समाधि हुई।

108 **मुनि श्री पुष्पदंतसागरजी:**

आपका जन्म सन् 1922 मे जयपुर राज्य के प्रसिद्ध ग्राम मौजमाबाद में हुआ। आपके पिता श्री चांदमलजी तथा माता का नाम फूलाबाई था। आपके यहाँ कपड़े का व्यापार था। आपकी शिक्षा साधारण थी, किंतु स्वाध्याय प्रेमी होने से वैराग्य भावना जागी और संवत् 2021 में इन्दौर मे मुनि श्री धर्मसागरजी महाराज से मुनि दीक्षा ली। आपने सदा के लिए नमक व मीठा छोड़ दिया आपने 200 से अधिक बार सम्मेद शिखर की वन्दना की तथा अन्य तीर्थो की भी अनेक बार वन्दना की।

108 **मुनि श्री क्षेमंकरनंदिजी:**

आप जयपुर राज्य के मालपुरा गांव के श्री भँवरलालजी कासलीवाल के जन्मे। गृहस्थ नाम चंदनमल रहा। आपका जन्म 18-10-1919 को हुआ। 1966 में आचार्य श्री शिवसागरजी से ब्रह्मचर्य व्रत तथा श्री ज्ञानभूषणजी से सातवी प्रतिमा तथा 13-5-92 को गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी से सांगानेर मे मुनि दीक्षा ली।

108 **मुनि श्री कामविजयनंदिजी:**

आप जयपुर के ही सूतपूणी वाले (बड़जात्या) परिवार से थे। आपने दिनांक 13-5-92 को गणधराचार्य श्री कुंथुसागर जी से सांगानेर मे दीक्षा ली।

108 **मुनि श्री विमलसागरजी:**

आपका जन्म जयपुर राज्यान्तर्गत दौसा नगर मे हुआ। आपके पिता श्री भूरामलजी छाबड़ा तथा माता श्रीमती गैंदी बाई थी। आपका जन्म संवत् 1969 मे हुआ तथा नाम सौभागमल रखा गया। आपकी शिक्षा दौसा मे हुई तथा 15 वर्ष की आयु में विवाह हुआ। आपके एक पुत्र हुआ जिसका नाम धर्मचन्द्र था। आपने सं. 2003 में मुनि श्री मल्लिसागरजी से क्षुल्लक दीक्षा जयपुर मे तथा संवत् 2028 मे टोडारायसिंह मे आचार्य श्री सन्मतिसागरजी से मुनि दीक्षा ली। आपने आचार्य श्री अजितसागरजी से अध्ययन करने की प्रेरणा ली।

108 **मुनि श्री विवेकसागरजी:**

आपका जन्म जयपुर जिला के मरवा ग्राम में श्री सुगनचंदजी छाबड़ा के यहाँ हुआ। माता का नाम रजमती बाई था। प्रारम्भ से ही धर्म में विशेष रुचि थी। आपने 108 आचार्य श्री विद्यासागरजी से पहली प्रतिमा, आचार्य श्री विमल

सागरजी से दूसरी प्रतिमा तथा आचार्य श्री ज्ञानसागरजी से नसीराबाद (अजमेर) में मुनि दीक्षा ली। आपका विवेक जागृत देखकर आचार्य श्री ज्ञानसागरजी ने विवेकसागर नाम रखा। आप महान तपस्वी थे।

105 **आर्यिका सिद्धमतीजी:**

आपका पूर्व नाम कल्ली बाई था। आप जयसागरजी महाराज (जयसिंहपुरा खोर-जयपुर) की छोटी बहिन थी। आपका विवाह जयपुर में चाकसू के चौक निवासी श्री चांदमलजी निंगोत्या के साथ हुआ। आप प्रारम्भ से ही धार्मिक विचारो की थी। आपका जन्म संवत 1971 मे हुआ। संवत् 2028 मे जयपुर मे ही आपने आचार्य श्री धर्मसागरजी महाराज से आर्यिका दीक्षा ली। आप कठोर तपस्विनी थी। आपने 10-10 उपवास भी कितनी ही बार किए।

105 **आर्यिका वीरमतीजी:**

आपका पूर्व नाम चांदबाई था। आपका जन्म जयपुर मे संवत् 1925 के आसपास हुआ बताया। आपके पिता श्री जमनालाल जी तथा माता गुलाब देवी थी। आप काला गोत्रीय खण्डेलवाल दिगम्बर जैन थी। आपका विवाह कपूरचंदजी के साथ हुआ। आचार्य श्री शांतिसागरजी से प्रेरणा प्राप्त कर सिद्धवरकूट क्षेत्र पर क्षुल्लिका दीक्षा ली तथा सं. 1995 मे आचार्य श्री वीरसागरजी से इन्दौर मे आर्यिका की दीक्षा ली। आप केवल दूध ही लेती थी। शेष रसों का त्याग था।

105 **आर्यिका वासुमतीजी:**

आपका पूर्व नाम लाड़बाई था। आपका जन्म जयपुर मे खण्डेलवाल दिगम्बर जैन बड़जात्या परिवार मे हुआ। आपके पिता श्री चान्दूलालजी सब्जी के व्यापारी थे। आपके पति का नाम श्री चिरजीलालजी था। आपने संवत् 2011 में खानियां (जयपुर) 108 आचार्य श्री वीरसागरजी महाराज से आर्यिका की दीक्षा ली। आपने जगह-जगह धर्मोपदेश देकर धर्म प्रचार किया।

105 **आर्यिका नेमिमतीजी:**

आपका जन्म जयपुर मे सं. 1955 मे श्री रिखबचन्द जी बिन्दायक्या की धर्मपत्नी मेहताब बाई की कुक्षि से हुआ। आपका बचपन का नाम भवर बाई था। आपकी शिक्षा चौथी कक्षा तक हुई तथा 10 वर्ष की आयु मे आपका विवाह जयपुर के प्रसिद्ध समाज सेवी नन्दलालजी बिलाला पील्या वालो के सुपुत्र गणेशलालजी बिलाला से हुआ। श्री गणेशलालजी टकसाल मे ऑफिसर थे। दोनों ही पति-पत्नी मुनि भक्त थे। आचार्य श्री शिवसागर जी के साथ गिरनार जाते समय ब्यावर में श्री गणेशलालजी का स्वर्गवास हो गया। पति की मृत्यु के डेढ़ वर्ष बाद आपने भी आचार्य श्री शिवसागरजी से क्षुल्लिका दीक्षा लेली तथा सं. 2017 में सुजानगढ़ में आर्यिका दीक्षा ग्रहण की।

क्षुल्लिका कीर्तिमतीजी:

आपका जन्म जयपुर में ही खण्डेलवाल दिगम्बर जैन पाटोदी गोत्रीय परिवार मे हुआ। आप अतीव धार्मिक विचारो से ओतप्रोत थी। आपने वीर निर्वाण सं. 2464 में जयपुर में ही महान् तपस्वी 108 मुनि श्री चन्द्रसागरजी महाराज से ही पाटोदी के मंदिर में दीक्षा ली थी। यह एक संयोग की बात थी कि पाटोदी परिवार की महिला की दीक्षा पाटोदी के मंदिर मे ही हुई। आपने एक-एक माह के उपवास भी किये। आपने अपनी सारी संपत्ति धार्मिक कार्यो मे लगा दी थी।

क्षुल्लिका वृषभसेनाजी:

आपका गृहावस्था का नाम गैदबाई था। आप जयपुर के प्रसिद्ध चांदी-सोने के व्यापारी श्री रूपनारायण खंडाका (अग्रवाल जैन) की पुत्री थी। 30 वर्ष की आयु मे आपके पति का स्वर्गवास हो गया। आप प्रारभ मे ही धार्मिक प्रवृत्ति की थी। 108 आचार्य श्री देशभूषणजी महाराज से जयपुर के दीवानजी के मंदिर में आपने क्षुल्लिका दीक्षा ली तथा खंडाका वाले माताजी के नाम से प्रसिद्ध हुईं। आप ही की प्रेरणा से जयपुर की दीवानजी की नसियां मे विशाल मानस्तभ, चूलगिरि पर विजय पताका यत्र और पुरानी बस्ती मे घिनाई वाले दिगम्बर जैन मंदिर मे भगवान पार्श्वनाथ की 5 फुट ऊंची श्याम वर्ण पाषाण की खड़गासन प्रतिमा प्रतिष्ठित हुई है। आपकी समाधि जयपुर मे दिगम्बर जैन मंदिर पाटोदी मे हुई तथा चूलगिरि क्षेत्र पर दाह संस्कार होकर चरण-चिन्ह छत्री बनी है। खंडाका परिवार ने 108 आचार्य श्री देशभूषणजी तथा अन्य मुनिराजो के जयपुर मे चतुर्मास कराये है।

क्षुल्लिका विनयमती माताजी:

आपका जन्म फुलेरा (राज.) तहसील के हिरनोदा ग्राम मे हुआ। आपके पिता का नाम जीवनलालजी तथा माता का नाम कपूरबाई था। इनका नाम सूरज बाई था। आपने संवत् 2036 मे जोबनेर मे आर्यिका विशुद्धमती माताजी से दीक्षा ग्रहण की।

क्षुल्लिका जिनमतीजी:

आपका जन्म फुलेरा तहसील के सिगोदिया ग्राम मे संवत 2009 मे हुआ। आपके पिता श्री गोपीलालजी सोगाणी तथा माता कस्तूर बाई थीं। आपका जन्म नाम छिगन बाई था। आपका विवाह कांकरा निवासी श्री मांगीलालजी पाटनी के साथ हुआ तब आपकी आयु 13 वर्ष की थी। 9 वर्ष बाद आपके पति स्वर्ग सिधार गए। आपने सीकर मे आचार्य श्री शिवसागरजी से सातवी प्रतिमा तथा दिल्ली मे 108 आचार्य श्री देशभूषणजी से संवत् 2022 में क्षुल्लिका दीक्षा ली।

इसके अतिरिक्त श्री महावीरप्रसादजी बैराठी की बहिन श्रीमती मनफूल

देवीजी जयपुर वाली ने भी क्षुल्लिका व्रत लेकर आर्यिका दीक्षा ले अपना आत्म कल्याण किया है।

जयपुर राज्य के ग्रामीण अंचल के प्रमुख संतों की नामावली भी यहाँ दी जा रही है। मुनि धर्मेन्द्रसागरजी (पारसोल), मुनि निर्वाणसागरजी (ढाणी आसलपुर), मुनि वासुपूज्यसागरजी (गढमोरा), क्षुल्लक नेमसागरजी (घिणोई), क्षुल्लक वृषभसागरजी (दूदू), मुनि पार्श्वसागरजी (मीढा), मुनि मेघसागरजी (छीतरी), मुनि विनयसागरजी (दूदू), क्षुल्लक विजयसागरजी (दौसा), ब्र. लाडमलजी (चोरू), ब्र. सूरजमलजी प्रतिष्ठाचार्य (निवाई)

इनके अतिरिक्त 108 मुनि श्री चन्द्रसागरजी द्वारा दीक्षित 108 मुनि श्री सिद्धसागरजी (जिन्हें बाल्टीसागरजी भी कहा जाता था) जिनकी समाधि मोहनबाड़ी जयपुर मे हुई। 108 आचार्य श्री शिवसागरजी द्वारा दीक्षित आचार्य श्री विद्यासागरजी के गुरु श्री ज्ञानसागरजी राणोली वाले तथा बूंदी जिला के ग्राम मे जन्मे आचार्य श्री धर्मसागरजी अक्खड सत भी इसी राजस्थान प्रांत मे हुए हैं।

— अनूपचन्द न्यायतीर्थ

769, गोदीको का रास्ता,
किशनपोल बाजार, जयपुर-302003

हमारा मन बंदर से भी अधिक चंचल होता है लेकिन जब आप पूजन, देवदर्शन, स्वाध्याय आदि करते हैं तो आपका मन शांत हो जाता है उसमें किसी भी तरह के विकल्प नहीं आते हैं। अतः मन को बांधने के लिए इन चीजों का बहुत महत्व है।

हमारे धर्म में अहिंसा के प्रति जो कट्टरता है वह अद्भुत है। जैन शास्त्रों के अनुसार मन, वचन या काया से किसी भी प्राणी को दुख या कष्ट पहुंचाना महापाप है।

जैन शास्त्र कहते हैं कि संसार के सारे प्राणी आपके पड़ौसी के समान हैं अतः उनसे प्यार करो। संसार के किसी भी प्राणी के प्रति आपके मन में लेशमात्र भी दुर्भावना नहीं होनी चाहिए तभी आप जैन धर्म के सच्चे अनुयायी हैं।

— आचार्य मुनि श्री विद्यानन्द

मंदिरों का संरक्षण एवं संवर्धन

मंदिर आध्यात्मिक चेतना के केन्द्र एवं सामाजिक संस्कृति/संगठन के आधार स्तंभ हैं। मन्दिर के साथ जुडी मानवश्रद्धा एवं परम्परा आज भी हर श्रावक को किसी न किसी रूप मे इनसे जोड़े हुये हैं। मंदिर बाह्य जगत और आन्तरिक जगत को जोड़ने का एक अनुपम सेतु है। इस सामाजिक धरोहर का संरक्षण एवं संवर्धन करना प्रत्येक सामाजिक प्राणी का दायित्व तथा कर्त्तव्य है।

संरक्षण एवं संवर्धन के लिये हम निम्न प्रकार से विचार कर सकते हैं:

(1) प्रतिमाओं (2) शास्त्र भंडारो और (3) अचल सम्पत्तियों एवं कलाकृतियों।

प्रतिमाये जिन मन्दिर के प्राण है, इनकी सुरक्षा अति आवश्यक है। इस हेतु मन्दिर प्रबन्धकों को व प्रक्षाल करने वालों को निम्न दायित्वों का निर्वहन करना उचित होगा :

(1) पाषाण पद्मासन की बड़ी प्रतिमाओं के नीचे पीछे की ओर तथा दोनों ओर संगमरमर के पथर के टुकड़े रखकर बीच में खाली स्थान को सफेद सीमेन्ट से भरकर प्रतिमा को वेदी से ऊपर रहने की सुनिश्चतता करना ताकि अभिषेक का जल प्रतिमा के नीचे नहीं इकट्ठा हो सके। इससे प्रतिमाये तो सुरक्षित रहेंगी ही तथा जीवो की भी उत्पत्ति नही हो सकेगी। इससे जीव हिंसा के पाप से भी बच सकेगे।

(2) प्राचीन पाषाण की प्रतिमाओ का क्षरण न हो इसलिये आवश्यक है कि इनका अभिषेक बार-बार न हो। इस हेतु अभिषेक/प्रक्षाल का समय निश्चित करना तथा उसके अनुपालन की सुनिश्चतता करना।

(3) प्रक्षाल के बाद प्रतिमाओ को पोंछने के लिये मलमल के बारीक वस्त्र का उपयोग करना चाहिये तथा रगड़ना नही चाहिए।

(4) चोरी आदि से सुरक्षा के लिये निम्न कदम उठाये जा सकते हैं :

(अ) मन्दिर की वेदियों पर नम्बर डालकर प्रतिमाओ तथा यन्त्रो के लेख उतारे जावें तथा उनके चित्र खिंचवाकर एक एलबम मे लगाये जावें। उन चित्रों के पीछे प्रतिमा नाम, प्रतिष्ठाचार्य, वर्ण, धातु या पाषाण, ऊंचाई, चौड़ाई, मोटाई आदि का भी वर्णन अंकित किया जावे। इनका रजिस्टर मे भी इन्द्राज किया जावे।

(ब) छोटी-छोटी प्रतिमाओ को एक स्थान पर करके शीशे व मेटल के दरवाजे से सुरक्षित किया जावे ताकि दर्शन भी हो सकें।

(स) वेदियो पर मजबूत मोटे काँच व अल्मूनियम के फ्रेम भी लगा कर सुरक्षित किया जा सकता है।

शास्त्र भण्डारों :

हमारे आचार्यों ने जिनागम को देव और गुरू के समान ही पूजनीय माना है। सागार धर्मामृत के रचयिता पं. आशाधर जी ने लिखा है :-

"ये यजन्ते श्रुतं भक्त्या ते यजन्ते इज्जसा जिनम्।
न किंचदंत्तरं प्राहुराप्ता हि श्रुत देवयो।।"

जो भक्ति पूर्वक श्रुत की पूजा करते है वे नियम से जिनदेव की पूजा करते हैं। अत: जिन प्रतिमा की भाति जिन शास्त्र, जिनवाणी को भी सुरक्षित रखने के उपाय करना आवश्यक है। इनकी सुरक्षा के लिये निम्न उपाय करना उचित होगा :-

(1) सचित्र ग्रंथों, स्वर्णाक्षिरी ताड़पत्रीय ग्रंथो की सूची बनाकर उन्हे डबल लॉक मे रखा जावे तथा उनकी फोटोस्टेट कापियां अन्य हस्तलिखित ग्रंथो के साथ रखी जावे।

(2) हस्तलिखित शास्त्रो की सूची अलग से तैयार की जाकर उन्हें मजबूत वेष्टनो मे फीते या डोरी से कसकर बांधा जावे तथा उन्हे मुद्रित शास्त्रो से अलग स्टील की आलमारियो मे रखा जावे उस आलमारी मे ही एक रजिस्टर रखा जावे जिसमे उन्हे बाहर निकालने का इन्द्राज दर्ज किया जावे। यथासभव मन्दिर से बाहर न ले जाया जावे।

(3) छपे हुये ग्रंथो की सूची बनाकर उन्हे अलग से सुव्यस्थित रूप से स्वाध्याय हेतु एक आलमारी मे स्वाध्याय कक्ष मे रखा जावे। घर पर स्वाध्याय हेतु ले जाने के लिये शास्त्रों का इन्द्राज एक रजिस्टर मे रखा जावे।

(4) श्रुत पंचमी के अवसर पर तथा भाद्रपद मास मे सरस्वती पूजन का आयोजन करना चाहिए। उस पूजन मे वस्त्र समर्पयामि का विधान है। तद्नुसार प्रक्रिया करने पर शास्त्र वेष्टन भी उपलब्ध होंगे और शास्त्र का महत्व भी समझ मे आवेगा।

भाव-भित्ति-चित्रो की सुरक्षा हेतु दीवार पर उकेरे हुओ को कॉच के फ्रेम में जड़वाकर सुरक्षित करना चाहिये। अन्य कलाकृतियो की समुचित सुरक्षा का भी ध्यान रखना चाहिये।

अचल सम्पत्ति :-

(1) मन्दिर के अधीनस्थ अचल सम्पत्ति, जमीन, दुकान, मकान आदि के स्वामित्व पत्र (डाक्यूमैट्स) मन्दिर के हित मे ही है तथा वे वैधानिक दृष्टि से सही है। उसकी जाँच करना तथा मूल पत्रों को डबल लॉक मे रखना एवं उनकी फोटोस्टेट प्रतियाँ कराकर बाहर रोजमर्रा के कार्य हेतु चाहिए रखना।

(2) मन्दिर का भवन जीर्णशीर्ण अवस्था मे हो या जीर्णोद्धार की आवश्यकता हो और मन्दिर आर्थिक दृष्टि से कमजोर हो तो श्री दि. जैन मन्दिर महासंघ जयपुर, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म संरक्षिणी) महासभा, नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स, ऐशबाग, लखनऊ अथवा भारतवर्षीय तीर्थ क्षेत्र कमेटी, बम्बई से इस हेतु सम्पर्क करना चाहिये।

(3) माली ब्यास के अनाधिकृत कब्जों के बचाव हेतु लिखित मे अनुबंध होना आवश्यक है। इसका आदर्श (मॉडल) प्रारूप महासंघ से प्राप्त किया जा सकता है।

चल सम्पत्तियाँ का भी पूर्ण विवरण रजिस्टरो मे अंकित रखना चाहिये तथा चोरी आदि से सुरक्षा हेतु भी उचित उपाय किये जाने चाहिये।

संवर्द्धन-सुविधाये :-

मन्दिरो के विकास एवं सवर्द्धन हेतु यह आवश्यक है कि मन्दिर मे दर्शनार्थियो एवं पूजनार्थियो को आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध रहे। इस सम्बन्ध मे प्रबन्धकों को निम्न सुविधाएँ उपलब्ध कराना चाहिये ·

यदि मन्दिर मुख्य सड़क पर स्थित नही है तो वे उसके नजदीक प्रसिद्ध स्थान पर एक मार्गदर्शक चिन्ह लगाकर मन्दिर की स्थिति से अवगत करावे ताकि दर्शनार्थियो को स्थिति मालूम करने मे सुविधा रहे।

सिद्धान्ताचार्य प्रवर धरसेनजी ने षटखण्डागम मे कृतिकर्म के सन्दर्भ मे कहा है :

''सुद्ध मणो धोद पादो'' अर्थात् शुद्ध मन से पैर धोकर मन्दिर मे आना चाहिये। अतएव प्रवेश द्वार के बाहर हाथ पैर आदि धोने की व्यवस्था करना ताकि दर्शनार्थी अंगो की पवित्रता के साथ मन्दिर मे प्रवेश कर सके।

पूजनार्थियो के नहाने के स्थान पर लगे नलो पर छने जल की व्यवस्था करना चाहिए। उनके लिये स्वच्छ एवं धुले हुये दुपट्टो की व्यवस्था करना। स्वच्छता के लिये समय-समय पर धोती दुपट्टो की धुलाई एवं रंगाई की व्यवस्था का ध्यान रखना सर्दी में गर्म पानी की व्यवस्था करना।

मुख्य वेदी के सम्मुख एवं गोलख (दान पेटी) के पास एक डिब्बे (पात्र) मे चावल/लोग आदि की व्यवस्था करना ताकि दर्शनार्थी दर्शन करने से पूर्व उसमे से द्रव्य लेकर भगवान के सम्मुख समर्पित कर सके तथा गोलख मे उस हेतु द्रव्य डाल सकें। यदि सम्भव हो सके तो पूजनार्थियो के लिये धुली हुई पूजन सामग्री की व्यवस्था करना।

वेदी के बाहर वेदी मे विराजमान बड़ी प्रतिमाओ के (तीर्थंकरो के) नामों की समुचित स्थान पर लेखन की व्यवस्था करना ताकि दर्शनार्थी उन तीर्थंकरो के नाम का जय जयकार कर सके तथा समुचित विनय पाठ दोहा पढ़कर अर्घ समर्पित कर सके।

केशर का तिलक लगाने हेतु दर्शनार्थियों के लिये एक प्याली मे केशर/चंदन की व्यवस्था करना चाहिये।

गन्धोदक को एक ढ़के हुऐ पात्र में रखने की व्यवस्था करना ताकि उसमे जीव आदि गिरने से हिंसा न हो सके तथा गन्धोदक भी स्वच्छ बना रहे। गन्धोदक के पात्र के पास ही एक पात्र मे स्वच्छ. पानी हो ताकि गन्धोदक लेने से पूर्व हाथ धोकर पवित्र कर सकें तथा गन्धोदक लगाने के पश्चात् भी हाथ धो सकें।

मन्दिर में दीपक आदि रखने के लिये एक चारों ओर हवादार ढ़के हुये पात्र की व्यवस्था करना ताकि उसमे जीव गिरकर न मर सकें।

आशिका (स्थापना के चावल) डालने हेतु पवित्र स्थान के लिये दीवार में बाहर की तरफ 6 इंच का एक निकासू पत्थर लगा दें ताकि पवित्रता बनें रहे क्योंकि वहां पर पैर आदि रखने की संभावना नहीं रहेगी।

स्वाध्याय हेतु एक समुचित कक्ष/स्थान की व्यवस्था की सुनिश्चतता करनी चाहिये। वहां पर समुचित शास्त्र मय उनकी सूची के क्रमानुसार उपलब्ध रहने चाहिये तथा उस स्थान पर चौकी, पलासना, पैड एवं पैंसिल उपलब्ध रहनी चाहिये। जिस पर रखकर विनयपूर्वक स्वाध्याय किया जा सके।

सामाजिक संगठन के रूप मे प्रबन्धको के दायित्व :

मन्दिर सामाजिक संगठन के भी आधार स्तंभ हैं। यह सामाजिक संगठन की सबसे महत्त्वपूर्ण इकाई है जिस पर अन्य सभी सामाजिक प्रवृत्तियां निर्भर करती है। प्रबन्धको का इसके सुव्यवस्थित संचालन के प्रति विशेष दायित्व हो जाता है। इस सम्बन्ध मे निम्न बिन्दुओ पर ध्यान देना आवश्यक प्रतीत होता है:—

मन्दिरो की व्यवस्था सम्बन्धित कर्त्तव्यो का निर्वहन पुण्यार्जन की दृष्टि से करना चाहिये। राजनीति का प्रवेश इनमे नही होना चाहिये।

युवक जो आज इस संस्था से विमुख हो रहे है उन्हे भी इसके प्रबन्ध समिति मे अधिक से अधिक जोड़ा जाना चाहिये। कर्तव्य निर्वहन का भार युवकों को भी सौंपना चाहिये। प्रबन्धकों का व्यवहारिक जीवन आदर्श होना चाहिये ताकि युवक इस संस्था की ओर आकर्षित हो सकें। महिलाओं को भी प्रबन्ध मे सहभागिता देनी चाहिये।

पदाधिकारियों को प्रत्येक दिन मन्दिर मे अवश्य दर्शन पूजा हेतु आना चाहिये ताकि वे दिन प्रतिदिन की समस्याओं तथा प्रक्षाल/पूजा आदि व्यवस्था से अवगत रहें।

प्रबन्ध समिति का निश्चित अवधि में चुनाव हो जाना चाहिये ताकि गतिशीलता बनी रहे एवं नये-नये आयाम वहां शुरू किया जा सके।

धार्मिक अध्ययन हेतु रात्रि पाठशाला की व्यवस्था भी होनी चाहिये यदि एक मन्दिर के प्रबन्धक ऐसा नही कर सकते हों तो आस-पास के दो चार मन्दिर के प्रबन्धक मिलकर ऐसा कर सकते है। (अतएव वर्तमान मे धार्मिक संस्कारो और ज्ञान की परम आवश्यकता है।)

मन्दिरो के प्रबन्धको का यह भी विशेष दायित्व है कि वे सुनिश्चित करे कि उनके परिवार के सदस्य, नित देव-दर्शन एव स्वाध्याय की परम्परा का पालन कर इस संस्था के संरक्षण मे योगदान कर रहे है।

पूर्व मे जन्म, विवाह एवं मृत्यु के अवसर पर परिवार के कुछ संस्कारित क्रियाएं करके मन्दिरो से जुडे रहते थे तथा आर्थिक योगदान भी इन अवसरो पर करते थे, किन्तु आजकल यह रीति व परम्परा नगण्य है। इस ओर नई पीढ़ी को ज्ञान न होने से यह कार्य पूर्ण नही होता। आचार्य जिनसेन ने धार्मिक क्रियाओ के प्रति जागृत रहने के लिये कहा है कि पुत्री के विवाह के अवसर पर चांदी की माला, सामग्री रखने हेतु एक डब्बी एवं श्रावक धर्म का एक शास्त्र स्वाध्याय हेतु अवश्य प्रदान करना चाहिये। प्रबन्धको को चाहिये कि मन्दिर से सम्बन्धित परिवारो मे इसकी सुनिश्चितता करे। तीये के बैठक मे शान्तिपाठ, बारह भावना, या अन्य वैराग्यवर्द्धक पाठ के कैसेट के बजाने की व्यवस्था करना चाहिये। ऐसे कैसिट की प्रति मन्दिर महासंघ से प्राप्त की जा सकती हैं।

विभिन्न जैन संस्थाओ के पदाधिकारियो का भी यह दायित्व है कि अपने संस्थान मे नियुक्त जैन व्यक्तियो से नित देवदर्शन एव स्वाध्याय की परम्परा के निर्वहन की सुनिश्चितता करे।

यदि मन्दिर की आर्थिक स्थिति से सम्भव हो तो मन्दिरो के प्रबन्धको को तीर्थकरो के कल्याण के, किसी अवसर पर मन्दिर के माध्यम मे, कल्याणकारी प्रवृत्तिया हाथ मे लेकर अभावग्रस्त व्यक्तियो की सहायता करके भी सस्था को पुन· लोकप्रिय बनाना चाहिये।

राजकीय नियमो की अनुपालना आवश्यक है। अत प्रबन्धको को मन्दिरो से सम्बन्धित निम्न कानूनो की जानकारी आवश्यक है

(1) राजस्थान लोक न्यास अधिनियम, 1959 (2) दी एन्टीक्वीटीज एण्ड आर्ट ट्रेजर्स एक्ट, 1972 (3) आयकर कानून, 1961 (4) राजस्थान भवन किराया एवं खाली कराने पर पाबन्दी नियम, 1950 (5) राजस्थान सार्वजनिक सम्पत्ति (अनाधिकृत अधिकार वालो से खाली कराना) नियम, 1964

इनके सम्बन्ध मे विशेष जानकारी महासघ से प्राप्त की जा सकती है।

- बाबूलाल सेठी,
937, सेठी भवन, रास्ता चोरूकान, जयपुर

ग्रन्थ भण्डारों का रख-रखाव और सुरक्षा

धर्मशास्त्र और ग्रन्थ हमारे धर्म और संस्कृति की निधियां हैं जिनका समुचित रख-रखाव और सुरक्षा अत्यन्त आवश्यक है।

धर्म के महत्व एवं मानव के आदर्श जीवन के लिये जहाँ हमारे तीर्थंकरो (देवो) के जीवन, उनके चरित्र, उनके आदर्श तथा उनके उपदेशो से हमारा जीवन-मार्ग प्रशस्त होता है तो उनकी वाणी एवं आदर्शमय जीवन के धर्मशास्त्र व ग्रन्थ भी मानव जीवन के लिये कल्याणकारी और हितकारी तथा परम उपयोगी भी हैं। जैसे देवो के प्रति श्रद्धा प्रकट की जाती है उसी प्रकार शास्त्र-ग्रन्थो (जिनवाणी) के प्रति भी श्रद्धा-आस्था प्रकट की जाती है, पूजा की जाती है तथा सम्मान दिया जाता है। हमारे यहाँ ऐसे जिनवाणी शास्त्रों व धर्म ग्रन्थो का अपार भण्डार है। इसी से जैन वाङ्मय समृद्ध है, जिसे अक्षुण्ण बनाये रखना और सुरक्षित रखना समाज के लिये आवश्यक है, विशेषकर प्राचीन दुर्लभ हस्तलिखित शास्त्रो एवं ग्रन्थो को।

दिगम्बर आचार्य श्री विद्यानन्दजी मुनिराज ने भी इस संबंध मे व्यक्त किया है कि ''साहित्य समाज का दर्पण है। समाज की सास्कृतिक निधियां साहित्य के माध्यम से सुरक्षित रहती है। प्राचीन भारत मे आज जैसी प्रशस्त मुद्रण कला नही थी, किन्तु तब लोगो का मन साहित्यमय था। स्वाध्याय की ओर रुचि लेना, रस उत्पन्न करना भी इस दिशा मे सहायक है। आदर्श ग्रन्थो के प्रति आदर भावना से प्राचीन साहित्य को विलुप्त होने से बचाया जा सकता है, बचाया जाना चाहिये, सुरक्षित किया जाना चाहिये।''

जैन मन्दिरों में जैन धर्म, संस्कृति, सिद्धान्त एवं प्रभावना वृद्धि के अनेक प्राचीन हस्तलिखित एवं मुद्रित ग्रन्थ स्वाध्याय की रुचि, नियम एव परम्परा के फलस्वरूप मौजूद है। ऐसे प्राचीन ग्रन्थो के जैन मन्दिरो मे छोटे-बड़े ग्रन्थ भण्डार तो विद्यमान है, किन्तु वर्तमान मे उनका समुचित संधारण- रख-रखाव और सुरक्षा तथा उपयोग नही है। समुचित रख-रखाव एवं सुरक्षा न होने से अनेक अमूल्य अनूठे शास्त्रों-ग्रन्थो का ह्रास हो रहा है, वे क्षतिग्रस्त होते जा रहे है अथवा हमारी उदासीनता, चारित्रिक दुर्बलता व पतन के कारण विलुप्त भी होते जा रहे है। यदि यह क्रम निरन्तर रहा तो हमारी श्रमण संस्कृति का स्थायित्व नष्ट हो जायेगा। साहित्य ही स्थायित्व बनाये रखता है।

जैन मन्दिरो मे विद्यमान ग्रन्थ भण्डारों मे प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत,हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, कन्नड़ आदि विभिन्न भाषाओ में हस्तलिखित प्राचीन पाण्डुलिपियां काफी संख्या मे उपलब्ध हैं। हस्तलिखित शास्त्रो के अतिरिक्त कपडे

पर मण्डल विधान, यंत्रचित्र तथा भित्तिचित्र और अन्य कलाकृतियाँ भी मंदिरों मे उपलबध है जिनका सही रख-रखाव व सुरक्षा के प्रति जागरूकता जरूरी है।

ऐसी साहित्यिक निधियो का वर्तमान मे उपयोग, संधारण और सुरक्षा जैसे प्रश्न गम्भीर रूप से विचारणीय है।

ऐसा देखा गया है कि जिन-जिन मन्दिरो मे प्राचीन शास्त्र, हस्तलिखित ग्रन्थ, अनूठे या दुर्लभ हैं, उनका भी समुचित रूप से रख-रखाव और सुरक्षा नहीं है, उनकी सूची नही है, उनकी सरलता से शोधकर्ताओ के लिये उपलब्धि नहीं है। किन्हीं शास्त्र भण्डारो को समूचे रूप मे मन्दिरो के प्रबंधको तक ने कभी देखा तक नही है। ऐसी दयनीय दशा होने से ग्रन्थो, विशेषकर हस्तलिखित शास्त्रों, का समुचित संधारण और सुरक्षा का प्रश्न सम्मुख है।

इस संबंध मे आवश्यक है कि मन्दिरो मे विद्यमान शास्त्र भण्डारो में जो प्राचीन हस्तलिखित या अनूठी या दुर्लभ, अद्वितीय अथवा अन्य साहित्यिक निधि हो, उन्हे हम देखे और उनकी सूची बनावे तथा समुचित रख-रखाव और सुरक्षा के लिये जागरूक होकर अग्रसर हों। प्राचीन हस्तलिखित शास्त्रो का विशेष ध्यान देकर उनकी पृथक से सूची बनाकर रखे।

ग्रन्थ भण्डारो को समुचित रख-रखाव और सुरक्षा की दृष्टि से देखा जाय कि भण्डारो मे शास्त्रो या पुस्तकों की क्या दशा है? उनका रख-रखाव किस प्रकार का है? उन्हे दीमक या कीड़ा तो नही लगा है अथवा सीलन तो नही आ गई है? यदि ऐसा है तो उन्हे उचित उपाय कर बचाया जावे। यह भी देखे कि किस-किस भाषा एवं विषय के ग्रन्थ है। इस विषय मे विशेषज्ञ विद्वानों से परामर्श व मार्ग दर्शन लिया जाना उचित रहेगा।

शास्त्र भण्डारो मे प्राचीन हस्तलिखित पाण्डुलिपियो और दुर्लभ ग्रन्थो की सुरक्षा और उनके उपयोग की दृष्टि से उनका सूचीकरण कर प्रकाशन कराना, कम्प्यूटराइजड कराना, उनकी फोटोस्टेट प्रतियां कराना तथा उनकी माइक्रो-फिल्म तैयार कराना भी उपयोगी हो सकता है। इस दिशा मे जागरूक होने से जहां जैन संस्कृति की निधि प्राचीन साहित्य को सुरक्षित रख पायेगे वहां उक्त उपायो से प्रकाशमान होने एवं शोधकर्ताओ को उपलब्धि होने से समाज व विद्वान भी इस प्राचीन धरोहर से परिचित हो सकेगे।

मन्दिरो के ग्रन्थ भण्डारो मे उपलब्ध प्राचीन हस्तलिखित शास्त्र-ग्रन्थ और पाण्डुलिपियो तथा मुद्रित ग्रन्थो व पुस्तको के समुचित रख-रखाव (संधारण) एव सुरक्षा की दृष्टि से सामान्य रूप मे निम्नांकित उपाय किये जा सकते है :-

हस्तलिखित ग्रन्थो की सूची अलग से तैयार की जाकर उन्हें मजबूत वेष्टनो मे फीते या डोरी से कस कर बांधा जावे और स्टील की आलमारी मे

रखा जावे। उन्हे किसी को देने या बाहर निकालने का इन्द्राज भी सूचीबद्ध रजिस्टर मे किया जाना चाहिये। बहुमूल्य हस्तलिखित ग्रन्थो की यथासम्भव माइक्रोफिल्म अथवा फोटोस्टेट कराई जा सकती है ताकि मूल प्रति पूर्णतया अक्षुण्ण रहे।

हस्तलिखित एवं छपे हुए ग्रन्थों को अलग-अलग रजिस्टर मे पूर्ण विवरण सहित यथा- ग्रन्थ नाम, ग्रन्थकर्ता, टीकाकार का नाम, पृष्ठ संख्या, आकार, प्रकार, रचनाकाल, लेखनकाल, पूर्ण या अपूर्ण दशा, भाषा आदि का उल्लेख रखा जावे।

सचित्र ग्रन्थो, स्वर्णाक्षरी, रूपाक्षरी, ताड़पत्रीय प्रतियो की सूची बनाकर ग्रन्थो को अलग उचित रूप मे रखा जावे। इनकी भी फोटोस्टेट कराकर प्रतियां रखी जाना उचित रहेगा।

ग्रन्थ भण्डार के समुचित संधारण के लिये योग्य एवं जानकार व्यक्ति की सेवाएं लेना हितकर रहेगा।

ग्रन्थों को नष्ट होने व गलने से रोकने के उपाय :

ग्रन्थ तथा अन्य साहित्य सामग्री सीलन, हवा न लगने, धूप, गर्मी व शुष्क जलवायु वातावरण के कारण खराब होते है। इनसे बचाने का उपाय यह है कि इन्हें ऐसे कमरो मे रखा जावे जहां सीलन न आवे, धूप आती हो, उजालदान हो और अंधेरा न रहता हो तथा हवा आती हो।

हवादार जगह न होने से फफूंद आ जाती है जो ग्रन्थो तथा अभिलेखो के लिये हानिकारक है। जहॉ ग्रन्थ भण्डार रखा जावे वहां हवा के आने-जाने के लिये हवादान हो या हो सके तो एक्जास्ट पंखे लगे हो।

ग्रन्थों तथा पुस्तकों को ऐसी जगह नही रखना चाहिये जहां उन पर सीधी धूप आती हो, क्योकि उससे कागज पीला पड़ जायेगा व जल्दी फट जायेगा। जहां हीटर आदि का ताप आता हो वहां भी ग्रन्थ अथवा पुस्तके नही रखना चाहिये।

ग्रन्थो या पुस्तको पर धूल नही जमना चाहिये, क्योकि इससे उन पर फफूद आ जाती है। धूल सभी तरह से हानिकारक है। जहा खुले मे ग्रन्थ रखे हो उन्हे झाड-पौछ कर साफ करते रहना चाहिये। बिजली से चलने वाले ''वैक्यूम-क्लीनर्स'' भी धूल झाड़ने के लिये काम मे लाये जा सकते है, जहां अधिकाश ग्रन्थ या पुस्तके हो।

ग्रन्थों को कीड़ों व दीमकों से बचाना :

जिस जगह अंधेरा हो, फर्श तथा दीवारे टूटी हुई हो, उनमे दरारे हो या

जोड़ खुले हुए हो तो वहां कीड़े-मकोडे आसानी से उत्पन्न हो जाते हैं। इन कमियो को दूर कर दें तो कीडे-मकोड़े पैदा नहीं होगे और न ही उनके रहने के लिये जगह रहेगी। जहां ग्रन्थ, पुस्तकें या अभिलेख रखे जावें वहां किसी भी प्रकार की खाद्य सामग्री नही रहनी चाहिये। अत: ऐसी सावधानी बरती जावे ताकि कीड़े-मकोड़े या दीमक आदि उत्पन्न न हो और नुकसान न करे।

कीटनाशक पाउडर तथा छिड़कने की औषधियो से ग्रन्थ व पुस्तको पर धब्बे पड़ सकते है और वे खराब हो सकते है। अत: उनसे बचाना चाहिये।

धुआ आदि करके भी कीड़े-मकोड़ो तथा दीमको को भगाया जा सकता है, किन्तु यह ध्यान रहे कि धुआं इस प्रकार किया जावे जो ग्रन्थो व पुस्तको और स्वास्थ्य के लिये हानिकारक न हो।

जहाँ ग्रन्थ तथा अभिलेख खुली रैक्स मे रखे हो वहाँ नेफ्थेलीन की ईंटें रख कर भी कीड़े-मकाड़ो से रक्षा की जा सकती है।

दीमक मुख्यत: सीलन वाली जगहो मे आती है। यह सीलन वाली दीवारो पर पायी जाती है। अत: ग्रन्थो या अभिलेखो को दीवार से दूर हटाकर रखना चाहिये। दीवार के सहारे नहीं रखना चाहिये।

ग्रन्थ या अभिलेख के बंडल को दीवार के सहारे लटकते हुए भी नही रखा जाना चाहिये। रैक्स मे जहां ग्रन्थ या अभिलेख रखे जावे तो रैक्स दीवार से कम से कम पन्द्रह सेन्टीमीटर दूर होनी चाहिये। आलमारी तथा रैक्स को दीवार से दूर रखने मे मकड़ी के जाले आदि दीवार से साफ करने मे भी सुविधा रहेगी। हो सके तो रैक्स लकड़ी के स्थान पर लोहे की काम मे ली जावे ताकि दीमक लगने का डर न रहे।

कीड़े-मकोड़े एवं दीमक से सुरक्षित रखने के लिये आलमारी एव रैक्स के पायों को मिट्टी के तेल के साथ क्रूडक्रीओसेट तेल से रंगना चाहिये अथवा पायो को उक्त तेल से भरे प्यालो मे डुबोकर रखना चाहिये।

अन्य सुरक्षात्मक उपाय :

ग्रन्थ, पुस्तके या अभिलेख लोहे की आलमारी या लोहे के रैक्स मे रखे जावे। इससे नुकसान की संभावना नही रहेगी। लकडी के आलमारी व रैक्स के मुकाबले लोहे की आलमारी व रैक्स सीलन, शुष्कता एवं गलन की दृष्टि से सुरक्षित होती है।

ग्रन्थो, पुस्तको या अभिलेखो को बोर्ड के कारटून, बक्सो व डिब्बों मे रखना भी सुरक्षात्मक उपाय है, किन्तु इस प्रकार के कारटून या डिब्बो की उपलब्धि सुविधाजनक नही है। अत. ग्रन्थो, पुस्तको, शास्त्रों या अभिलेखो को

समान आकार के प्लाईवुड बोर्ड के दो टुकड़ों के बीच बंडल बांधकर रखा जा सकता है। इससे उन्हें कीडों से बचाया जा सक्ना है। इन ग्रन्थ-रक्षक-बोर्डो को लगाने से बंडलों को फीते या डोरी से बांधने पर उनके पृष्ठो/पत्रों के मुड़ने का डर भी नहीं रहेगा। इन बंडलो को इस तरह कसकर बांधा जाना चाहिये कि उसमें रखे कागज समान रूप से दबे रहें। इन बंडलों को रैक में खड़े रखते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि ग्रन्थ-रक्षक-बोर्डों (पुट्ठो) के किनारे रैक में पूरी तरह टिके हैं तथा बण्डल के अन्दर के कागज मुड़ तो नहीं रहे हैं।

आलमारी या रैक्स में से ग्रन्थों या बंडलों को हल्के व सावधानी से उठाना चाहिये, खींचकर या घसीटकर नहीं निकालना चाहिये। ये बंडल भी तीस सेन्टीमीटर से अधिक मोटाई के न हों।

ग्रन्थो व शास्त्रों को उनके पृष्ठों के आकार के समान वाले पुट्ठों या प्लाइवुड़ के बोर्डों के बीच मे रखकर वेष्टन लगाकर कपड़े के बस्तो मे फीते या डोरी से कसकर बांधकर रखना भी सुरक्षात्मक उपाय है।

ग्रन्थों के कागजो के मुड़ जाने तथा फट जाने की ओर भी ध्यान देना जरूरी है। ऐसी दशा मे इनकी सुधार की दिशा मे 'स्टार्च पेस्ट' अथवा 'डेक्सड्रीनपेस्ट' को काम मे लाना चाहिये, गोद या सरेस तथा बाजार मे बिकने वाले हल्के किस्म का टेप व ट्रांसपेरेंट टेप उपयोग मे नही लेना चाहिये क्योकि इनमे चिपकने योग्य पदार्थ कुछ दिन बाद कागज को नष्ट कर देते है या क्षति पहुँचाते है।

विशेष सुरक्षा एवं सावधानी :

शास्त्र भण्डारों मे बिना आज्ञा प्रवेश की अनुमति नही होनी चाहिये तथा सुरक्षा व्यवस्था विशिष्ट एवं कड़ी होनी चाहिये। सुरक्षा की दृष्टि से उजालदान आदि पर लोहे की जाली लगी होनी चाहिये।

जिस स्थान पर शास्त्र भण्डार हो वहा माचिस की तीली जलाना, किसी भी प्रकार की खुली आग, लौ वाली वस्तु, ज्वलनशील पदार्थ ले जाना एवं रखना वर्जित होना चाहिये। ऐसे स्थान के निकटस्थ अग्निशमन यंत्र-उपकरण भी लगाना चाहिये और उसकी उपयोगिता की जॉच की जानी चाहिये। यह विशेष ध्यान रहे कि अग्निशमन यंत्र मे आवश्यक शमन पदार्थ या गैस रहे।

प्राचीन हस्तलिखित-जैन-ग्रन्थों का अत्यन्त महत्व है और उनमे भी ऐसी पाण्डुलिपियों का जिनका प्रकाशन नहीं हुआ हो और जिनके बारे मे कोई जानकारी न हो। अतः ऐसे साहित्य का रख-रखाव (संधारण) और सुरक्षा का महत्व अधिक बढ़ जाता है तथा मंदिरो का दायित्व हो जाता है कि उनका समुचित रख-रखाव और सुरक्षात्मक उपाय अपनावें। इसके लिये उनका सूचीकरण,

फाटोस्टेट अथवा माइक्रोफिल्मिंग तथा प्रकाशन के कार्य किये जा सकते है जिससे उनका उपयोग हो सके।

जैन साहित्य व संस्कृति के संरक्षण की दिशा मे दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी के जैन विद्या संस्थान ने स्तुत्य कार्य किया है। विश्व प्रसिद्ध तीर्थ श्री महावीरजी जैन ग्रन्थ भण्डार से समृद्ध है जिसमें विभिन्न विषयों की विभिन्न भाषाओ की सहस्त्रों की संख्या मे पाण्डुलिपियां संगृहीत हैं। संस्थान ने राजस्थान के अनेक शास्त्र भण्डारों को सुव्यवस्थित करने और उनके सूचीकरण का कार्य किया है तथा डॉ. कस्तूरचन्द कासलीवाल एवं पं अनूपचन्द न्यायतीर्थ के सम्पादन मे राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारो की ग्रन्थ सूची पांच भागो मे प्रकाशित कर अपूर्व उपलब्धि प्राप्त की है। इन सूचियो के माध्यम से जैन विषयो पर शोधकर्ताओं ने पीएच.डी. की उपाधिया प्राप्त करने मे सफलता अर्जित की है। किन्तु अभी समस्त मंदिरो के ग्रन्थ भण्डारो के सम्पूर्ण सूचीकरण न हो सकने से सूचीकरण का कार्य अधूरा है। अत: मन्दिर प्रबंधको को, अपनी मानसिकता मे इस कार्य के प्रति जागरूकता लाकर, कार्य करने-कराने की महती आवश्यकता है ताकि हमारे जैन हस्तलिखित प्राचीन ग्रन्थो एवं पाण्डुलिपियो के माध्यम से जैन धर्म एवं संस्कृति का स्थायित्व अक्षुण्ण बना रहे।

इस कार्य के लिये मन्दिरो की प्रबन्ध समितियो द्वारा योजनाबद्ध रूप मे कार्यक्रम बनाकर मंदिरो मे विद्यमान शास्त्र भण्डारो के समुचित संधारण और सुरक्षा तथा सुव्यवस्थित करने के उपाय किये जाना अपेक्षित है। शास्त्रो मे हमारे तीर्थकरो की वाणी है, ध्वनि है। इसीलिये शास्त्रो, ग्रन्थो के प्रति आस्था, श्रद्धा, भक्ति, पूजा व सम्मान तीर्थकरो (देवों) के समान ही मान्य है और आवश्यक है। आगम अनुसार देव, शास्त्र और गुरु की पूजा की जाती है। पं आशाधरजी के 'सागार धर्मामृत' के अनुसार ''जो भक्तिपूर्वक श्रुत की पूजा करते है, वे नियम से जिनदेव की पूजा करते है, क्योंकि सर्वज्ञ परमात्मा मे तथा श्रुत मे किंचित मात्र भी अन्तर नही है।''

अत: शास्त्र भण्डारो के समुचित संधारण, सुव्यवस्था और सुरक्षा तथा उपयोग के प्रति जागरूकता समाज मे अपेक्षित है जिससे जैन वाङ्मय अक्षुण्ण रहे और जैन साहित्य संस्कृति का स्थायित्व दृढ़ रहे।

- कुबेरचन्द काला

3449, काला भवन,

जयलाल मुंशी का रास्ता, पुरानी बस्ती, जयपुर-302001

चाकसू तहसील के दिगम्बर जैन मन्दिर
एक सर्वेक्षण

देवालय हमारी आत्मिक उन्नति एवं शांति प्राप्ति के आध्यात्मिक स्थान हैं, किन्तु इन्हें सुरक्षित रखने और अक्षुण्ण बनाये रखने तथा इनका उचित संधारण भी आज के समय में गंभीर समस्या है। पूजन-प्रक्षालन की आज समस्याएं मुख्य हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ये समस्याएं कुछ अधिक ही हुई है। तस्करों, चोरो और किराएदारों ने इन समस्याओ में बढ़ोतरी की है। मन्दिरों के स्वामित्व के मामले भी बढ़े हैं। स्पष्ट है कि इन बातों को अनदेखा नहीं किया जा सकता। समस्याओ के निराकरण की दिशा मे कार्य करने के लिए मन्दिर महासंघ का जन्म हुआ और उपरोक्त समस्याओ से निपटने के लिए मन्दिरो का सर्वेक्षण आवश्यक समझा गया। प्रथमत: जयपुर नगर और आस-पास के उपनगरो मे स्थित जैन मन्दिरो का सर्वेक्षण किया गया और प्राप्त तथ्यों को ''दिगम्बर जैन मन्दिर जयपुर'' परिचय नामक पुस्तक में प्रकाशित करवाया गया। इस पुस्तक के प्रधान सम्पादक श्री अनूपचन्द न्यायतीर्थ हैं। यह गौरव की बात है कि पुस्तक को विद्वानो द्वारा संदर्भ ग्रन्थ के रूप मे स्वीकारा है। इसकी उपादेयता की मनीषियो, व विचारकों और समाज सेवकों ने भी प्रशंसा की है। इससे प्रोत्साहन पाकर जयपुर जिले के जैन मन्दिरों के सर्वेक्षण का कार्य हाथ मे लिया गया। चाकसू तहसील के जैन मन्दिरो का सर्वेक्षण इसी श्रृखंला की एक कड़ी है। इस तहसील का क्षेत्र उत्तर मे जहाँ सांगानेर तहसील मे मिलता है वही दक्षिण मे निवाई तहसील के क्षेत्र को छूता है। पूर्व में बस्सी एवं पश्चिम मे फागी तहसील के ग्राम इसके पड़ौसी हैं। अपने क्षेत्र के लगभग बीच मे चारो ओर बांधों, छोटे-बड़े तालाबो और नदी नालो से घिरा चाकसू कस्बा, जो अब नगर होने की सज्ञा धारण कर रहा है, अपने गौरवशाली अतीत का धनी भी है। छोटी बड़ी इमारतो के खण्डहर, मन्दिर और समीप की पहाड़ियों पर बने देवस्थान इसके साक्षी है। कहते है चाकसू कस्बा कई बार उलट-पुलट हो चुका है और हर बार संभल कर नये नाम से जाना गया है। जैन धर्म एवं संस्कृति का भी यह पुराना केन्द्र रहा है। चाकसू नगर एवं इस तहसील के मुख्य-मुख्य ग्रामों मे मन्दिरो, निषिधिकाओं (नसियाँ) व धर्मशालाओं का बाहुल्य दृष्टिगत होता है। स्वयं चाकसू मे ही पाँच जिनालय एवं दो निषिधकाएँ हैं। भारत प्रसिद्ध दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा इसी तहसील क्षेत्र में है। सर्व श्री कृपारामजी पांडया, ताराचन्दजी एवं बख्तरामजी साह जो जयपुर राज्य के दीवान रहे, का गृहनगर होने का सौभाग्य भी चाकसू को जाता है। दिगम्बर जैन भट्टारकों की कर्म भूमि होने का

श्रेय भी चाकसू को प्राप्त है। इन सबके एवं इन जैसे और कितने ही अन्य मनीषियों के चिह्न चाकसू मे दृष्टव्य हैं।

यहाँ के पाँचो दिगम्बर जैन देवालयो मे से दो बीलबाडी मोहल्ला, दो कोट मौहल्ला एवं एक तहसील कार्यालय के सामने है। दो नसियांओ मे एक छोटी नसियाँ एवं दूसरी बड़ी नसियाँ के नाम से जानी जाती है। दोनो ही जयपुर से चाकसू के रास्ते, चाकसू के समीप नेशनल हाइवे के दाहिने हाथ को पड़ती हैं। इनमें से बड़ी नसियाँ एक छोटी पहाड़ी पर स्थित है। इस पहाड़ी को वर्तमान मे शिवडूंगरी कहते हैं। बड़ी नसियाँ का ध्वज भंग हो चुका है। इसके निज मन्दिर में एवं अन्यत्र तोडफोड कर दी गई है और शिवलिंग स्थापित कर दिया गया है। ये संभवत: जयपुर में फैले पूर्व साम्प्रदायिक विद्वेष का परिणाम है। यह नसियाँ किलानुमा परकोटे मे है। परकोटे के अन्दर तिबारो के नीचे तलघर बने हुए हैं। तिबारों एवं जिनालय के बीच रथ परिक्रमा जितना पक्का मार्ग तथा आगे चौक बना हुआ है। एक ओर छोटा जलाशय-टांका है तथा एक विशाल वृक्ष है। चारो ओर भट्टारको की पाँच छतरियाँ है। अभी भी कम से कम 6 जैन शिलापट्ट संवत 1593 के यहाँ बिखरे पड़े है जो धार्मिक असहिष्णुता की कहानी अपने आप में कह रहे है। पद्मपुरा अतिशय क्षेत्र के अतिरिक्त चाकसू तहसील के शेष क्षेत्र मे निम्नप्रकार 25 दिगम्बर जैन मन्दिर, चैत्यालय एवं नसियाँ है।

मन्दिर:- कोथूण-1, कोहल्या-1, कोटखावदा-3, माधोसिहपुरा-1, महोदवपुरा-1, निमोड्या-1, रूपाहेडी-1, शिवदासपुरा-1 सावल्या-1, अकोड्या-1, बापूगाव-1, भाज्याड़ा-1, चंदलाई-1, चाकसू-6, थली-1, बगरया-1, तामड्या-1, टूमलीकावास-1।

आम्नाय की दृष्टि से देखा जावे तो 3 मन्दिरों मे से चाकसू मे दो एवं रूपाहेडी में एक दिगम्बर तेरापंथी आम्नाय के है। शेष सभी दिगम्बर बीसपंथी आम्नाय के हैं। तहसील क्षेत्र मे चार गांवो थली, कोहल्या, सांवल्या, बापू गांव एव कोथूण मे श्रावको के घर नही है। इनमे वर्ष मे एक बार वार्षिक कलशाभिषेक मेला होता है। बगरया, महादेवपुरा, टूमलीकावास एवं तामड्या मे श्रावको के एक-एक घर है।

पदमपुरा के दो मंदिरो को छोड़कर शेष 25 जिनालयो मे लगभग 500 प्रतिमाएँ 10 चरण-चिह्न एव 200 से अधिक यंत्र है। यत्रो मे एक यंत्र काष्ठ का भी है जो चाकसू के कोट के मंदिर मे है। कोथूण एव निमोड्या के मंदिरो मे दो शिलालेख है जो इन मंदिरो के निर्माण के संबंध मे प्रकाश डालते है। चाकसू तहसील क्षेत्र मे (पदमपुरा की धर्मशालाओ के अलावा) 7 धर्मशालाएं है।

वैसे तो सभी जिनालयो में जिनवाणी विराजमान है, किन्तु कम से कम

9 देवालयों में इनकी प्रचुरता है। शास्त्रों में मुद्रित एवं हस्तलिखित दोनो प्रकार के ग्रंथ हैं। ये शास्त्र सही तरीके से रखे हुए नहीं है और न इनकी कोई सूची बनी हुई है। जिनवाणी/शास्त्रो को उचित रूप से रखने की जरूरत है।

गांवों मे व्यापार एवं उद्यम के अभाव के कारण श्रावको की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नही हैं। इससे सभी उचित अजीविका के लिए शहरोन्मुखी हो गए हैं। वर्तमान मे चाकसू तहसील में 131 दिगम्बर जैन परिवार है।

- पूनमचन्द जैन छाबड़ा

192, महावीर नगर, टोंक रोड़, जयपुर

स्तुति

(अपभ्रंश भाषा)

जय तुहुँ गइ तुहुँ मइ तुहुँ सरणु।
तुहुँ माय वप्पु तुहुँ वन्धु-जणु।।
तुहुँ परम-पक्खु परमत्ति हरु।
तुहुँ सव्वहुँ परहुँ पराहिपरु।।
तुहुँ दंसणेँ णाणेँ चरित्ते थिउ।
तुहुँ सयल-सुरासुरेहिँ णमिउ।।
सिद्धन्तेँ मन्तेँ तुहुँ वायरणेँ।
सज्झाएँ झाणे तुहुँ तवचरणेँ।।
अरहन्तु वुद्धु तुहुँ हरि हरु वि तुहुँ अण्णाण-तमोह-रिउ।
तुहुँ सुहुमु णिरञ्जणु परमपउ तुहुँ रवि वम्भु सयम्भु सिउ।।

महाकवि स्वयम्भू

जय हो, तुम (मेरी) गति हो तुम (मेरी) बुद्धि हो तुम (मेरे) रक्षक हो, तुम (मेरे) माँ-बाप हो तुम बधुजन हो। तुम परमपक्ष (तर्क के परम आधार) हो, तुम दुर्मति को दूर करने वाले हो। तुम सब अन्यो से (भिन्न हो) तुम परम आत्मा हो।

तुम दर्शन, ज्ञान और चारित्र मे स्थित हो। सकल सुर-असुर तुम्हे नमन करते है। सिद्धान्त, मन्त्र व्याकरण, स्वाध्याय, ध्यान और तपश्चरण मे तुम हो। अरिहन्त, बुद्ध तुम हो, विष्णु और महादेव तुम हो अज्ञानरूपी अंधकार के शत्रु तुम हो। तुम सूक्ष्म, निरजन और मोक्ष हो, तुम सूर्य ब्रह्मा स्वयभू और शिव हो।

- *निर्ग्रन्थ प्रवचन 91 92*

नारायणा के जैन मन्दिरों का शिल्प वैभव

शाकंभरी प्रदेश का अत्यंत प्राचीन नगर नारायणा, नरानयन-नरेना, नरनका, नराण, नरपुर, नारायणपुर आदि विभिन्न नामो से संबोधित होता आया है।

11वीं-12वी शताब्दी मे नारायणा अपने वैभव के चरम शिखर पर था और जैन-संस्कृति यहाँ पर भली प्रकार से पुष्पित-पल्लवित थी। यहाँ की समृद्धता, शिल्प वैभव व कलात्मक धरोहर से कुपित होकर बर्बर व धर्मांध विदेशी आक्रांता महमूद गजनवी ने नरायणा पर अपना कहर ढ़ाया। इस बादशाह ने सैकडो मूर्तियो व मंदिरों को धूल-धूसरित कर दिया था।

एक हजार वर्षो से भी अधिक प्राचीन खण्डित परतु भव्य देव-प्रतिमाए विध्वंस व महाविनाश की इस अंतहीन वेदना की मूक साक्षी है।

पृथ्वीराज के शासनकाल मे जैन आचार्य पद्मप्रभ व जिनपति सूरी के मध्य हुए शास्त्रार्थ की ओजस्वी वाणी यही गूंजी थी, जो कि इस नगर को जैन संस्कृति का अतिप्राचीन केन्द्र होना प्रमाणित करती है। इस शास्त्रार्थ का उल्लेख इतिहासकार हरविलास शारदा की पुस्तक 'अजमेर हिस्टोरिकल एण्ड टोपो ग्राफिकल' की टिप्पणी मे है।

अपुष्ट जैन साहित्यिक साक्ष्यो के अनुसार प्रातिहार्य व चिह्नरहित प्रतिमाओ के कारण नर से नारायण कारक यह नगर सहस्रो वर्ष पूर्व सिद्धपुर महापत्तन के नाम से विख्यात था।

कालातंर मे मुजाहिद खान के शासन काल मे नारायणा के अनेक भव्य मंदिर नष्ट किए गए।

यह स्थान उस समय जैन धर्मावलंबियो के लिए विशेष महत्व रखता था इसीलिए आचार्य धरसेन विहार के निमित्त यहाँ आए थे। उस पावन स्मृति को बनाए रखने के लिए वि.सं. 1083 माघ सुदी 14 को उनके चरण-चिह्नो की स्थापना यहाँ के चंद्रप्रभ मदिर मे की गई। सप्रति नरायणा मे दो जैन मन्दिर विद्यमान है। जिनमे भूगर्भ से प्राप्त क्रूरता की शिकार इस ऐतिहासिक धरोहर को सहेज कर रखा गया है। दोनो ही जिनालयों मे अनूठे शिल्प वैभव से परिपूर्ण प्राचीन प्रतिमाएँ उपस्थित है। पुरातात्विक दृष्टि से उल्लेखनीय है कि दोनो मन्दिरो मे स्थित कुल मूर्तियो की लगभग 90 प्रतिशत भूगर्भ से प्राप्त है। इनमे से सत्तर प्रतिशत पर कोई लेख चिह्न नही होने से संभव है कि ये चतुर्थ काल की हो।

बड़े जैन मंदिर मे प्रवेश करते ही सामने विराजमान भूगर्भ से अद्यतन प्राप्त चौबीस तीर्थकरो के अकन युक्त सगमरमर की बेजोड कलाकृति पहली

ही दृष्टि में मंत्रमुग्ध कर देती है। चार-चार फुट ऊंचे दो पाषाण स्तंभो पर दो तीर्थंकरों एवं छह फुट लंबे एक तोरणाकार पाषाण स्तंभ पर शेष इक्कीस मूर्तियॉ जिस तन्मयता, श्रद्धा व कलापूर्ण तरीके से उकेरी गई है, प्रशंसनीय है। तोरण के नीचे की एक मूल प्रतिमा जो संभवत: ऋषभदेव की होनी चाहिए अब तक अप्राप्य है। इस पूरी कलाकृति पर कही कोई लेख, चिह्न नही है, जिससे इसकी प्राचनीता निश्चित है। बारीकी से बनाए गए नाखून, उभरा हुआ सीना, संकीर्ण कटि व आभा युक्त शांति व अंहिसा का संदेश देता मुख मण्डल देखने वाले को आत्मविभोर कर देता है।

इसके बाएं हाथ पर सामने की ओर तीर्थंकर पार्श्वनाथ की 13वीं शताब्दी मे बनी संगमरमर की मनोहारी मूर्ति है। इस मूर्ति के साथ एक रोचक प्रसग जुड़ा हुआ है। निकटवर्ती मम्माणा गांव में जब यह मूर्ति निकली तो भक्तगणो मे इसे अपने-अपने गांव ले जाने के लिए विवाद हो गया तब यह तय हुआ कि प्रतिमा को एक रथ मे रखकर उसे छोड़ दिया जाए। जहॉ कही भी यह रथ स्वत: ही रुकेगा वही मूर्ति की स्थापना कर दी जाएगी। रथ मूर्ति सहित अतिशय क्षेत्र नरैना मे आकर रुका, जिसके कारण यह मूर्ति इस मन्दिर का वैभव बढ़ा रही है। मन्दिर मे ऐसी ही अनेक कलापूर्ण व प्राचीन प्रतिमाएँ है।

इनमे ही तीन देवी मूर्तियां भी सम्मिलित है जो लेख चिह्न रहित उत्कृष्ट कारीगरी से युक्त है।

इसी प्रकार चंद्रप्रभ का मंदिर भी कला व ऐतिहासिक दृष्टि से अमूल्य है। इस मंदिर की वेदियो पर नयनाभिराम व अत्यंत मनोहारी स्वर्णकारी की गई है। मंदिर में 1100 वर्ष पुरानी भगवान बाहुबली की प्रतिमा सहसा चित्त को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है।

इसी मे आचार्य धरसेन के चरण-चिह्न भी स्थापित है। चंद्रप्रभ मंदिर मे हंसवाहिनी सरस्वती देवी की प्राचीन मूर्ति सर्वाधिक उल्लेखनीय है जो कमण्डल, माला, पुस्तक एवं वीणा युक्त है। यह मूर्ति कला व ऐतिहासिकता की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसके चित्र खीचना वर्जित है।

– संजय पाटनी

> धम्मो वत्थुसहावो, खमादिभावो य दसविहो धम्मो।
> रयणत्तयं च धम्मो, जीवाणं रक्खणं धम्मो।।
>
> वस्तु का स्वभाव धर्म है। क्षमादि परिणाम भी दस प्रकार का धर्म है। तीन रत्नो का समूह भी धर्म है तथा जीवो की रक्षा करना भी धर्म है। - *निर्ग्रन्थ प्रवचन 16*

खण्डित प्रतिमाओं के संग्रहालय की आवश्यकता

मानव जाति को हमेशा से अपने अतीत के विषय की जानकारी की जिज्ञासा रही है। आधुनिक मानव मे भी इस तरह की प्रवृत्ति विद्यमान है। भारत का इतिहास और पुरातत्व सम्पूर्ण विश्व मे महत्वपूर्ण और विशिष्ट माना जाता रहा है। पाषाण काल से भारत में अनेक तरह की सभ्यता विकसित हुई और विध्वंस भी हुई। सिन्धु घाटी की सभ्यता से ही यहाँ पर मूर्ति कला का विकास हुआ। इस सभ्यता की जानकारी हमे खुदाई से प्राप्त अवशेषों से ही होती है, जो कि हमे जीर्ण-शीर्ण अवस्था मे प्राप्त हो रही है। इसी प्रकार अन्य सभ्यताएँ जैन व बौद्ध काल की तथा मथुरा कला, गांधार कला आदि की जानकारी इन प्राचीन मूर्ति कलाओ की प्राप्त प्रतिमाओ के आधार पर ही मिलती है।

प्राचीन प्रतिमाओ के आधार पर हमे उस काल मे प्रयोग मे आने वाली वस्तुओ, रहन-सहन के तरीको, धर्म की मान्यता, शासको के विचार जनता का शासको के प्रति व्यवहार, विचार और सोच की जानकारी मिलती है।

ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी की बहुत सी प्राचीन प्रतिमाएँ मिलती है, जो सम्भवत: पूजा के लिये काम मे ली जाती थी। इसके पहले टेराकोटा की प्रतिमा ही उत्खनन से प्राप्त हुई है, जिन की पूजा के विषय मे हमे कोई जानकारी नहीं मिलती है। जैन व बौद्ध धर्म के उद्भव के समय के साथ-साथ बौद्ध, गाधार, मथुरा और जैन प्रतिमाएँ खुदाई से भी मिली है। जिसमे मथुरा मे ककाली टीला से जैन प्रतिमाओ का बहुत बड़ा संग्रह प्राप्त हुआ है। इतना किसी भी एक स्थान से प्रतिमाओ का खजाना नही मिला है।

मन्दिरो मे बड़ी सख्या मे प्राचीन प्रतिमाएँ स्थापित है, जो धार्मिक आस्था के साथ-साथ, अध्ययन कला के विकास की भी कहानी कहते है। इनके अध्ययन द्वारा इनके संबंध मे वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है। जिनमे विभिन्न संस्कृतियों का सामंजस्य एवं कला-प्रवृतियो की सूक्ष्म जानकारी मिलती है। यह भारतीय संस्कृति के धरोहर के रूप मे अमूल्य निधि है और जिनका अध्ययन समय-समय पर विद्वानो द्वारा किया गया है, जिसके आधार पर भारतीय मूर्ति कला ने विश्व मे अपना अलग से स्थान बना लिया है।

प्रतिमाएँ बहुसंख्या मे पाषाण निर्मित एवं मिश्रित धातुओ की है। यह आवश्यक नही कि प्रत्येक मिश्रित धातु की प्रतिमा ताम्र निर्मित हो, परन्तु इनमे ताम्र की कुछ न कुछ मात्रा अवश्य रहती है। इस कारण पुरातत्व की तकनीकी शब्दावली मे उन्हे 'ब्रोज' ही कहने की परम्परा रही है। मूल्यवान रत्नो की भी

प्रतिमाएँ मिलती हैं, लेकिन इनकी संख्या नगण्य ही है। इस प्रसंग मे यह बात विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है कि प्रतिमाओं के निर्माण का माध्यम कुछ भी रहा हो, परन्तु उनका कलात्मक महत्व का ही मूल्यांकन पुरातत्ववेत्ताओ और कला समीक्षकों द्वारा किया जाता है।

सांस्कृतिक अध्ययन के क्षेत्र मे इन प्रतिमाओं पर कभी-कभी प्राचीन लेख भी उपलब्ध होते हैं, जिनमे इनके निर्माण काल, निर्माणकर्ता एवं प्रतिष्ठाता का नाम आदि का उल्लेख होता है। कभी-कभी शासको के नाम भी इन प्रतिमाओ पर मिल जाते हैं। जिनके आधार पर राजनैतिक इतिहास, लिपिशास्त्र, भाषा विकास सम्बन्धी जानकारी भी मिलती है। ईसा की दूसरी शताब्दी से लेकर अद्यावधि में ये प्रतिमाएँ निरन्तर बनती रही है।

इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि अभी तक सभी धर्मों मे यह मान्यता रही है कि खण्डित मूर्तियो की पूजा नहीं की जाती। भारत मे आक्रमणकारियो के द्वारा बड़ी संख्या मे प्रतिमाएँ खण्डित की गयी और कुछ प्रतिमाएँ काल के प्रभाव से स्वमेव खण्डित हो गयी। इसलिये धर्माचार्यो ने यह विधान दिया कि खण्डित प्रतिमाओं की पूजा नही की जाए और इन्हे जल में विसर्जित किया जावे। जिस समय धार्मिक क्षेत्र मे इस नियम का प्रावधान किया गया था तब यह विधान नितान्त प्रासंगिक था, क्योंकि इन प्रतिमाओ की पूजा न किए जाने के कारण इनके उचित रख-रखाव के अभाव मे (देवी-देवताओं) देव परिवार के तिरस्कार एवं अपमान की पर्याप्त संभावना रहती थी। ऐसा समझा जाता होगा कि पूजा मे न रहने के कारण इन प्रतिमाओ को उनकी गरिमा के अनुकूल आदर व सम्मान नही मिलता होगा। प्राचीन काल मे तो इन प्रतिमाओं का केवल धार्मिक दृष्टि से ही महत्व था और इनके कला-पक्ष एवं पुरातात्विक दृष्टि से अध्ययन नही किया जाता था, लेकिन अब जबकि इन प्रतिमाओ का पुरातात्विक एवं कलात्मक दृष्टि से अध्ययन किया जाने लगा है, जिसके परिणामस्वरूप यह भारत देश की पहचान बन गयी है। अत· इनका सुरक्षित किया जाना परम आवश्यक हो गया है, क्योंकि प्रतिमाओ को सुरक्षा प्रदान करने के पश्चात् ही इनका विस्तृत अध्ययन किया जा सकता है एवं आने वाली पीढ़ियो को भी देश की सांस्कृतिक सामग्री की जानकारी दी जा सकती है। अतएव आधुनिक परिपेक्ष में इन प्रतिमाओ को जल मे विसर्जित करने की परम्परा उचित और उपयुक्त् नही है, क्योकि ऐसा करने से यह मूल्यवान सास्कृतिक धरोहर सदा के लिये विलुप्त हो जायेगी।

राष्ट्र सन्त आचार्य मुनि श्री विद्यानन्दजी महाराज ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तिका ''मोहन-जो-दड़ो जैन परम्परा और प्रमाण'' मे प्राचीन स्थल से प्राप्त मुद्राओं के अध्ययन के आधार पर यह सफलता पूर्वक सिद्ध कर दिया है कि जैन धर्म आज

से 5000 वर्ष प्राचीन है। उनके अपने इस सिद्धान्त के निरूपण में जिन मुद्राओं से प्रमाणित सामग्री मिली है, वे अधिकांशत: खण्डित है जैसा कि उनके द्वारा प्रकाशित पुस्तिका में पृष्ठ संख्या-17,18,19,20 पर प्रकाशित मुद्राओं से आभासित होता है। यह कहा जा सकता है कि जैन धर्म की प्रारम्भिक अवस्था में खण्डित प्रतिमाएँ त्याज्य नहीं थी, इसी कारण यह 5000 वर्ष तक सुरक्षित रही और इनके अध्ययन के आधार पर जैन धर्म की प्राचीनता सिद्ध करने मे सहायता मिली।

इसी प्रकार सिन्धु घाटी की मोहरो पर अन्य धर्मो के भी प्रतीक और प्रतिमाएँ मिलती हैं, जिसमे अन्य धर्म से संबंधित पशुपति की प्रसिद्ध मुद्रा है, जो खण्डित है। देवियों की मृण मूर्तियां भी प्रचुर संख्या मे उपलब्ध हुई हैं, उसमें से भी अधिकांशत: खण्डित है। इस प्रकार पुरातात्विक प्रमाणे के आधार पर यह सिद्ध किया जा सकता है कि जैन एवं अन्यान्य धर्मो की प्रारम्भिक अवस्था मे खण्डित प्रतिमाओ को पर्याप्त सुरक्षा प्रदान की जाती थी। आज के परिपेक्ष मे इस प्राचीन परम्परा की पुनर्स्थापना की अत्यधिक आवश्यकता है। खण्डित प्रतिमाओ का निषेध केवल मध्यकालीन अवधारणा है जिसे अब समाप्त कर दिया जाना चाहिए।

विष्णु पुराण जैसे प्रारम्भिक मध्यकालीन ग्रन्थो मे खण्डित प्रातिमाओ की उपासना का निषेध अवश्य हुआ है, परन्तु यह उल्लेख कही नही है कि उन्हे नदियो मे अथवा सरोवर में प्रवाहित कर सदैव के लिये समाप्त कर दिया जाये।

अत: इन प्रतिमाओ को संरक्षण प्रदान करना प्रत्येक दृष्टि से आवश्यक है। यह आज के युग की एक जरूरत है। भले ही इन रूढ़ीवादी धार्मिक सोच मे परिवर्तन लाने के लिये एक आन्दोलन भी किया जा सकता है। लेकिन मुख्य बात तो विचार धारा मे परिवर्तन लाने की है जिसके लिये समाज के प्रबुद्ध एवं शिक्षित वर्ग को आगे आना होगा। यह बात बहुत स्पष्ट रूप से समझ ली जानी चाहिए कि खंडित प्रतिमाओ की रक्षा कर हम कोई धर्म विरोधी कार्य नही कर रहे है, वरन् धर्म के स्थायित्व, प्रचार, प्रसार एवं महत्व को एक आधार प्रदान कर रहे है। इस कार्य को सुनियोजित करने के लिये पुरातात्विक नियमो में भी संशोधन की आवश्यकता है और प्रतिमाओं के विसर्जन पर कानून द्वारा भी रोक लगा दी जानी चाहिए, क्योंकि विसर्जन की प्रक्रिया मे हम अपनी सस्कृति का बहुत बड़ा अहित कर रहे है।

खण्डित प्रतिमाओ को कई प्रकार से सुरक्षित किया जा सकता है, परन्तु इसकी सर्वोत्तम विधि इनको सग्रहालयो मे जमा करा कर सुरक्षित करा देना है, जहाँ ये उचित परिपेक्ष मे जन साधारण एवं विद्वानों के अवलोकनार्थ प्रदर्शित की जाती है। बड़े संग्रहालयो मे तो प्रत्येक धर्म की प्रतिमाओं की पृथक्-पृथक्

कला दीर्घाएँ हैं, जिनमें प्रतिमा-शास्त्र के विकास की झाँकी प्रस्तुत की गयी है। इस दृष्टि से दिल्ली का राष्ट्रीय संग्रहालय बहुत महत्वपूर्ण है।

राजस्थान शासन द्वारा नियंत्रित अनेक संग्रहालयो में भी जैन कलादीर्घाओं में विशेष रूप से ऐसी प्राचीन प्रतिमाओं को संग्रह कर सुरक्षित रखा गया है तथा इनके महत्व व इतिहास की जानकारी भी सूचना पट्टों पर अंकित की गयी है। जैन समुदाय के अनुयायियो को विशेष रूप से यह जान लेना चाहिए कि खण्डित प्रतिमाओं के लिये संग्रहालय ही उचित स्थान है। अगर खण्डित प्रतिमाएँ समाज बड़ी संख्या मे उपलब्ध कराने मे समर्थ रहता है तो प्रसिद्ध जैन मंदिरों के परिसर में इनका स्वतन्त्र संग्रहालय भी बनाया जाना उपयुक्त सिद्ध हो सकता है। यदि किसी संस्थान द्वारा मंदिर परिसर मे संग्रहालय स्थापित है तो उनके संग्रह में खण्डित प्रतिमाओ का अवदान किया जा सकता है। आवश्यकता इस बात की भी है कि यह संग्रहालय भी संग्रहालय शास्त्र की आधुनिकतम अवधारणाओं के अनुकूल हो ओर इनके रख-रखाव के लिये संग्रहालय शास्त्र मे विद्वान अधिकारी नियुक्त हों जिन्हे जैन-प्रतिमा-विज्ञान का विशेष ज्ञान प्राप्त हो, तभी इनके विकास एवं कलात्मक महत्व को सही ढंग से समझा जा सकता है। अंतत: धार्मिक क्षेत्र में रुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को यह बात भी स्पष्ट रूप से समझ लेनी चाहिए कि जैन संग्रहालयो की स्थापना से ही वे धर्म की अधिक सेवा कर सकेगे एवं खण्डित मूर्तियो को उचित स्थान मिल सकेगा। इस प्रकार के संग्रहालय न केवल धर्म का गौरव बढाएँगे वरन् देश की समृद्धिशाली धरोहर के प्रतीक भी होगे।

इन संग्रहालयों में प्रतिमाओं की फोटोग्राफी व शोध छात्रो के अध्ययन के लिये विशेष सुविधाएँ भी उपलब्ध करायी जावें तभी इनका उचित उपयोग हो सकेगा। अच्छा तो यह हो कि इन संग्रहालयो द्वारा ही खण्डित प्रतिमाओं के अध्ययन के लिये विशेष परियोजना तैयार की जावे और विद्वानो को प्रोत्साहित किया जावे कि वे इन परियोजनाओं को स्वीकार कर प्रतिमाओं का उचित मूल्यांकन करे, लेकिन यह सब तभी संभव होगा, जबकि इन संग्रहालय संस्थाओं को पर्याप्त संख्या मे विभिन्न काल की प्रतिमाएँ उपलब्ध हो। अत: यह धार्मिक पुरुषार्थ का ही कार्य होगा, यदि इस प्रकार की प्रतिमाएँ इन संग्रहालयो को उपलब्ध करा दी जावें।

खण्डित प्रतिमाओ को सुरक्षित स्थानों, विशेष कर संग्रहालयों में रखने के लिये जन-जागरण की भी बहुत आवश्यकता है, क्योंकि जनता को इनके महत्व का कोई ज्ञान नहीं है। साथ ही यह भी जानकारी नही है कि इनको सुरक्षित कर सकने की क्या प्रक्रिया है। जन जागरण का कार्य समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, दूर-दर्शन एवं आकाशवाणी के माध्यम से किया जा सकता है। समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ इस निमित्त विशेष लेख प्रकाशित कर सकती है तथा दूरदर्शन एवं

आकाशवाणी मे वार्त्ताओं के अतिरिक्त अन्य आकर्षक कार्यक्रम जैसे लघु-नाटिकाओं एवं विज्ञापन के माध्यम से भी जन-जागरण का अभियान प्रारम्भ किया जा सकता है। विश्व-विद्यालयों, महा-विद्यालयों एव अन्य शाश्वत संस्थानों द्वारा समय-समय पर विचार गोष्ठियों का आयोजन कर इस प्रकार के वातावरण का निर्माण किया जा सकता है, जिससे खण्डित प्रतिमाओ को उचित संरक्षण मिल सके। इस जन-जागरण अभियान में धर्म गुरुओ की भी एक महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। प्रबुद्ध एवं जागरूक धर्म गुरुओं को अपने प्रवचनों में खण्डित प्रतिमाओं की सुरक्षा के संदेश जन-साधरण को देना श्रेयस्कर होगा, क्योंकि धर्म-गुरुओं की चर्चाओ का सबसे अधिक प्रभाव जन-साधारण पर पड़ता है। यदि हम यह सब कर सके तो देश की कला एवं संस्कृति की सेवा के साथ-साथ सम्बन्धित धर्मों की भी यह एक बड़ी सेवा होगी।

- डॉ. नीरजा कासलीवाल

एसबी-14, भवानीसिह मार्ग, बापूनगर, जयपुर-302001

मानस्तम्भ का महात्म्य

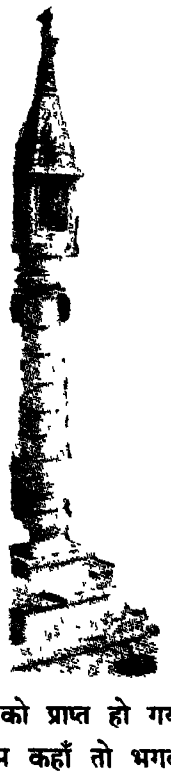

जैनागम के अनुसार जब भगवान का साक्षात समवशरण लगता है तब चारो दिशाओ मे चार मानस्तम्भ स्थापित किये जाते है और मानस्तम्भ मे चारो दिशाओ मे एक-एक प्रतिमा स्थापित की जाती है अर्थात एक मानस्तम्भ मे कुल चार प्रतिमाये होती है। इस मानस्तम्भ को देखकर मिथ्यादृष्टियो का मद (अहकार) गल जाता है और भव्य जीव सम्यग्दृष्टि होकर समवसरण मे प्रवेश कर साक्षात् अरिहत भगवान की वाणी को सुनने का अधिकारी बन जाता है।

इस सम्बन्ध मे अन्तिम तीर्थकर भगवान महावीर के समय की एक घटना का उल्लेख जैन शास्त्रो मे मिलता है कि इन्द्रभूति गौतम अपने 5 भाई और 500 शिष्यो सहित भगवान महावीर से प्रतिवाद करने के लिये अहकार के साथ आता है, लेकिन मानस्तम्भ को देखते ही उसका मद गलित हो जाता है और प्रतिवाद का भाव छोड़कर सम्यक्त्व को प्राप्त कर सम्पूर्ण शिष्यो सहित जैनेश्वरी दीक्षा धारण कर भगवान महावीर के प्रथम गणधर पद को प्राप्त हो गया अर्थात इस मानस्तम्भ की महिमा कितनी अनुपम है कि इन्द्रभूति गौतम कहाँ तो भगवान से लडने आया था और कहाँ भगवान का प्रथम गणधर बन गया । ऐसा मानस्तम्भ का महात्म्य है।

श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, मौजमाबाद

मौजमाबाद जयपुर से 78 किलोमीटर दूर राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 8 पर स्थित दूदू कस्बे के दक्षिण पूर्व मे 13 किलोमीटर पर स्थित है। मौजमाबाद के लिए जयपुर से भी सीधी बस सेवा मिलती है तथा दूदू कस्बे से भी मौजमाबाद के लिए बसें नियमित रूप से मिलती रहती है। मौजमाबाद राजस्थान के प्राचीन नगरों मे से एक है। यह नगर भूतपूर्व जयपुर रियासत मे था तथा वर्तमान मे भी जयपुर जिले मे है। विक्रम की सत्रहवी शताब्दी मे इस नगर का वैभव अपनी चरम सीमा पर था। जयपुर आमेर के शासकों व दिल्ली के मुगल शासको का मौजमाबाद से निकट सम्बन्ध रहा है। इस नगर में 2 मन्दिर व एक नसियाँ है। इस नगर को मोजाद के नाम से भी जनसाधारण पुकारता है। इस नगर की प्रसिद्धि का कारण यहाँ पर सं 1664 मे प्रतिष्ठित श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर ही है। इस मन्दिर की प्रतिष्ठा सं 1664 मे यहा के प्रसिद्ध व्यक्ति श्रीस्वरूप चन्द के पुत्र श्री नानू गोधा ने करवाई थी। श्री नानू गोधा आमेर के महाराजा मानसिंह प्रथम के प्रधान मंत्री थे। इन्होंने देश भर मे 84 मन्दिरो व चैत्यालयों का निर्माण करवाया था। इन्होने सम्मेद शिखरजी की वंदना भी की थी तथा ऐसा कहा जाता है कि इन्होने सम्मेद शिखर के टोको का जीर्णोद्धार भी करवाया था।

विक्रम सम्वत् 1664 (सन् 1607) मिति ज्येष्ठ कृष्णा 3 सोमवार के दिन मौजमाबाद नगर में विशाल मेले का आयोजन किया गया व उस समय वहां पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हुई। प्रतिष्ठा करवाने वाले थे श्री नानू गोधा। इस अवसर पर भगवान आदिनाथ की प्रतिमा सहित अनेक जैन प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा हुई। मौजमाबाद के इस मन्दिर की प्रसिद्धि बढ़ती गई तथा देश भर के श्रृद्धालु यहां दर्शन हेतु आने लगे।

नानू गोधा ने देशभर में जो 84 मन्दिरो का निर्माण करवाया था उसमे मौजमाबाद का यह आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर सबसे विशाल व कलापूर्ण है। एक प्राचीन रुक्के के अनुसार इस मन्दिर के निर्माण मे लाखों रुपये की राशि व्यय हुई थी। मन्दिर के ऊपर तीन कलापूर्ण उत्तंग शिखर है जो दूर से दिखाई पड़ते हैं। मन्दिर में दर्शनार्थ जाने के लिए कुछ सीढ़िया चढ़कर प्रथम द्वार मिलता है। दरवाजे मे घुसते ही एक विशाल चौक आता है जिसमे 22½×15 फुट का एक संगमरमर का चबूतरा बना हुआ है। जिस पर बैठकर विभिन्न विधानों की पूजा का आयोजन होता है। मन्दिर के प्रवेश द्वार का भाग अत्यन्त कलापूर्ण है। इस पर श्वेत तथा लाल पाषाण पर अद्भुत कलाकृतियो का अंकन

किया गया है। देवियों की साज-सज्जा और नृत्य करते हुए उनकी भाव भंगिमाएँ दर्शनीय है। एक कलाकृति में सरस्वती हंस को मोती चुगा रही है। इस प्रवेश द्वार को आठ भागों में विभक्त किया गया है। प्रवेश द्वार पर गणेश जी की मूर्ति भी उत्कीर्ण है। पाषाण में हाथी अपने सूंड मे जल भरकर भगवान का अभिषेक करता हुआ दिखाया गया है। इसी प्रकार सिंह वाहिनी देवी भी उत्कीर्ण है। निजवेदी पर एक विशाल गुम्बद बना हुआ है जिसमें विभिन्न भावों के साथ देवी व देवों को दर्शाया गया है।

इस मन्दिर में दो तल-घर हैं जिनमे तीर्थंकरो की भव्य एवं कलापूर्ण प्रतिमाएँ विराजमान हैं। ये सभी प्रतिमाएँ श्री नानू गोधा द्वारा सं0 1664 में प्रतिष्ठापित हैं। इस विशाल मन्दिर में पाषाण व धातु की करीब 275 प्रतिमाएं विराजमान हैं। भगवान आदिनाथ की विशाल पद्मासन प्रतिमा बहुत ही सौम्य एवं मनोज्ञ है। यह ही मन में भावना रहती है कि इस प्रतिमा का दर्शन ही करते रहें, प्रतिमा के सामने से हटने का जी ही नहीं करता। जिस मूर्तिकार ने इस प्रतिमा को बनाया है, वह धन्य है। उसने अपनी धार्मिक भावना का इस प्रतिमा में समावेश कर दिया है, यह प्रतिमा तल-घर मे विराजमान है।

इस मन्दिर में पाषाण की अम्बिका देवी एवं नंदीश्वर द्वीप तथा बावन चैत्यालय भी दर्शनीय हैं। यहाँ के क्षेत्रपालजी भी काफी चमत्कारी है।

मन्दिर के सामने पहले यहाँ पर कमरे बने थे। इस भूमि को समतल कर अब वहाँ मानस्तम्भ बनाने का कार्यक्रम हाथ मे लिया गया है।

मौजमाबाद नगर साहित्य निर्माण का भी अच्छा केन्द्र रहा है। यहां पर अनेक जैन कवियों ने जन्म लिया। विक्रम सम्वत 1660 मे यहां हिन्दी के जैन कवि श्री छीतरमल ठोलिया हुए जिन्होंने होली कथा को चौपाई मे छन्दोबद्ध किया। यही पर आचार्य श्री ज्ञानकीर्ति ने संस्कृत मे यशोधर चरित काव्य की रचना की। यह भी श्री आदिनाथ मन्दिर में ही लिखी गई थी।

– महेन्द्रकुमार पाटनी,
127, सावित्री पथ, बापूनगर, जयपुर

मज्झ सहावं णाणं, दंसणचरणं ण कोवि आवरणं।
जो संवेयणगाही, सोहं णादा हवे आदा।।

ज्ञान, दर्शन और चारित्र मेरा स्वभाव है, कोई भी आवरण मेरा स्वभाव नहीं है। जो अनुभव से (अपने स्वभाव को) प्राप्त करने वाला होता है वह ज्ञाता आत्मा मैं हूँ। *- निर्ग्रन्थ प्रवचन 10*

निर्ग्रन्थ प्रतिमा : परम्परा एवं वैशिष्ट्य

ईंट, पत्थर एवं लकड़ी से सभी भवन बनते है, किन्तु इन्ही मे से कुछ भवन जिस कारण-विशेष से पूजनीय होकर 'मंदिर' या 'चैत्यागृह' या 'चैत्यालय' संज्ञा पा जाते हैं, उस कारण-विशेष का नाम 'प्रतिमा' है। इसे 'चैत्य' भी कहा जाता है। सामान्यत: तो किसी भी व्यक्ति की लकड़ी, प्रस्तर अथवा धातु से निर्मित प्रतिकृति को 'प्रतिमा' कहा जाता है, किन्तु भारतवर्ष मे 'प्रतिमा' का अर्थ 'टके सेर भाजी, टके सेर खाजा' जैसा कभी नही रहा है कि हर किसी की अनुकृति को 'प्रतिमा' कह दिया जाये। किसी भी व्यक्ति की प्रतिकृति को अंग्रेजी भाषा के 'स्टेच्यू' शब्द एवं हिन्दी के 'मूर्ति' शब्द से अभिहित किया जा सकता है, परन्तु भारतीय परम्परा के अनुसार 'प्रतिमा' शब्द का प्रयोग अतिविशिष्ट गुणों से युक्त 'परमात्मा' पद को प्राप्त व्यक्ति-विशेष की प्रतिकृति के लिए किया जाता है। इस 'प्रतिमा' के स्वरूप, निर्माण-परम्परा एवं वैशिष्ट्य को यहाँ रेखांकित करने का प्रयत्न किया गया है।

'प्रतिमा' शब्द का अर्थ–

'प्रतिमीयते इति प्रतिमा' इस व्युत्पत्ति के अनुसार 'प्रति' उपसर्ग के साथ 'मा' धातु के साथ 'अंग' प्रत्यय का विधान करके फिर स्त्रीत्वसूचक 'टाप्' प्रत्यय लगाने पर (प्रति + मा + अङ् + टाप्) 'प्रतिमा' शब्द निष्पन्न होता है। 'मेदिनीकोश' के अनुसार इसका अर्थ 'अनुकृति' किया गया है। 'रघुवंश महाकाव्य' में इसे 'प्रतिबिम्ब' शब्द से भी संकेतित किया गया है। 'अमरकोश' मे इसके प्रतिमान, प्रतिबिंब, प्रतियातना, प्रतिच्छाया, प्रतिकृति, अर्च्चा एवं प्रतिनिधि - ये सात पर्यायवायी नाम गिनाये गये है। आचार्य हेमचन्द्र सूरि ने इसके प्रतिच्छन्द:, प्रतिकाय:, प्रतिरूपं – ये नामान्तर और गिनाये है। 'दंसणपाहुड' की टीका में कहा गया है -

''सा प्रतिमा प्रतियातना प्रतिबिम्बं प्रतिकृति:''

अर्थात् प्रतिमा, प्रतियातना, प्रतिबिम्ब एवं प्रतिकृति - ये सब एकार्थवाचक नाम हैं। 'भगवती आराधना' में कहा गया है कि - ''चैत्यं प्रतिबिम्बमिति यावत्। कस्य ? प्रत्यासत्ते: श्रुतयोरेवार्हतसिद्धयो: प्रतिबिम्बग्रहणम्।''

अर्थ:- 'चैत्यं' अर्थात् 'प्रतिबिम्ब' या 'प्रतिमा'। 'चैत्य' शब्द से प्रस्तुत प्रसंग में अरिहंतों और सिद्धों की प्रतिमाओ का ग्रहण समझना चाहिए।

'प्रतिमा' की परम्परा :- 'मूर्ति' से 'मूर्तिमान्' की एवं 'प्रतिमा' से 'परमात्मा' की पूजा करने की दृष्टि मूलत: जैन-दृष्टि रही है। भारत की प्राचीन

दो ही परम्पराएँ रही हैं- ब्राह्मण-परम्परा एवं श्रमण-परम्परा। इनमें से ब्राह्मण या वैदिक परम्परा में मूल में 'प्रतिमा' में 'परमात्मा' की कल्पना ही नहीं थी, अतः वे प्रतिमा को पूजते ही नहीं थे। यजुर्वेद (32/13) में स्पष्ट कहा गया है "न तस्य प्रतिमा अस्ति।" अर्थात् उस परमात्मा की कोई प्रतिमा नहीं है।'श्वेताश्वतउपनिषद्' (4/19) में भी यही वाक्य प्राप्त होता है। उपनिषत्कार इसका कारण स्पष्ट करते हुए लिखते हैं - "एकोदेवः सर्वभूतेषु गूढः" अर्थात् वह एक अद्वितीय परम ब्रह्म परमात्मा समस्त तत्वों मे व्याप्त है, अतः उसे किसी प्रतिमा-विशेष तक सीमित करने का कोई औचित्य नहीं है।

इसी बात की पुष्टि करते हुये आदि शंकराचार्य लिखते हैं -

"न प्रतीके न हि सा" अर्थात् किसी भी प्रतिमा आदि प्रतीक में उस ब्रह्मतत्त्व की सत्ता सीमित नहीं है। फिर भी वैदिक-ऋचाओं में जिन देवताओं की स्तुतियाँ की गयीं हैं, उनमें उन देवताओं के आकार-प्रकार, सौन्दर्य, वस्त्राभूषण एवं आयुध आदि की स्पष्टतः चर्चा प्राप्त होती है। अतः प्रतीत होता है कि प्रारंभ में वैदिक लोग कल्पना शक्ति के द्वारा अपने आराध्य का वैचारिक बिम्ब बनाकर उसकी पूजा करते थे, भौतिक प्रतिमा बनाकर उसके माध्यम से परमात्मा की अर्चना करने की परम्परा उनमें बहुत बाद में आयी है। वराहमिहिर ने पाँचवी शताब्दी ई. में विभिन्न देवताओं की मूर्तियो एवं उनकी पूजा का वर्णन किया है, जो श्रमण-परम्परा का प्रभाव ज्ञात होता है।

जबकि श्रमण-परम्परा (जैन-परम्परा) में 'प्रतिमा' - निर्माण एवं उसके माध्यम से परमात्मा की आराधना की परम्परा अति प्राचीनकाल से चली आ रही है। कहा जाता है कि आदिब्रह्मा तीर्थंकर ऋषभदेव के ज्येष्ठपुत्र प्रथम चक्रवर्ती भरत (जिनके नाम पर इस देश का नाम 'भारतवर्ष' पड़ा) ने सर्वप्रथम 'अरिहंत' की प्रतिमा बनाकर उसकी पूजा करने का सूत्रपात इस युग में किया था। ईसा पूर्व 2400-2000 की एक मूर्ति का अंश हड़प्पा की खुदाई मे प्राप्त हुआ है, जिसे प्रख्यात पुरातत्ववेत्ता प्रो. टी.एन. रामचन्द्रन ने 'जैन तीर्थंकर की मूर्ति' बतलाया है। ऐतिहासिक रूप से ईसापूर्व द्वितीय शताब्दी के सम्राट खारबेल के शिलालेख में कलिंग-जिन (अग्रजिन-वृषभदेव) की प्रतिमा का उल्लेख प्राप्त होता है, जिसे पुष्यमित्र शुंग ले गया था और सम्राट् खारबेल ने उस पर विजय प्राप्त करके सादर उस जिन-प्रतिमा को पुनः प्राप्त करके उसकी वंदना-पूजा की थी एवं वापस कलिंगदेश ले गया था।

"नंदराजनीतं कलिंगजिननं संनिवेसं अंग-मगधतो कलिंग आनेति हय-गय-संग-वाहण-सहस्सेहिं मगध-वासिणं च पादें वंदापयति।"

अर्थः- नंदराजा (के सेनापति पुष्यमित्र शुंग) के द्वारा कलिंग से ले जायी गयी जिनमूर्ति (अग्रजिन-वृषभदेव) को (मैंने इस युद्ध में सादर पुनः प्राप्त किया

और उसे) संस्थापित करके मैंने अंगदेश और मगधदेश की सम्पत्ति प्राप्त की। हजारों घोड़ों, हाथियों, सैनिकों एवं (रथ) आदि वाहनों सहित मगधवासियों ने मेरी चरण-वंदना की है।

एक कुषाण-युगीन निर्ग्रन्थ जैन प्रतिमा मथुरा के 'कंकाली टीला' से प्राप्त हुई थी, जो आज भी मथुरा के राजकीय संग्रहालय मे विद्यमान है। इस मूर्ति के बारे में एक लेख प्राप्त होता है, जो निम्नानुसार है-

'''सिद्धं ....उसभ प्रतिमा वर्यये धीतु (गुल्हा) ये जयदासस्य कुटुंबिनिये दानं।'

अर्थ:- सिद्धं गुलहोन ने, जो कि वर्मा की पुत्री और जयदास की पत्नी थी, एक (भगवान ऋषभदेव की) प्रतिमा समर्पित की थी।

एक अन्य अतिप्राचीन मौर्यकालीन निर्ग्रन्थ जैन मूर्ति आज भी पटना के राष्ट्रीय संग्रहालय मे विद्यमान है।

जैन-शास्त्रो में भी अतिप्राचीन काल से प्रतिमा-पूजा का विधान प्राप्त होता है। ईसापूर्वकालीन 'प्रतिक्रमणसूत्र' में श्रमण एवं श्रावक दोनो के लिए 'चैत्य' (प्रतिमा) की भक्ति करने का विधान प्राप्त होता है। ईसापूर्व प्रथम शताब्दी के आचार्य कुन्दकुन्द ने भी 'चैत्य' (प्रतिमा) की भक्ति करने का निर्देश दिया है। आचार्य रविषेण (४वी शताब्दी ई.) ने लिखा है कि 'जो जिनेन्द्र परमात्मा के आकार के अनुरूप जिनबिम्ब' (प्रतिमा) बनवाकर उसकी पूजा-स्तुति करता है, उसके लिए इस लोक में कुछ भी दुर्लभ नहीं है :-

''जिनबिम्बं जिनाकारं जिनपूजां जिनस्तुतिम्।
य: करोति जनस्तस्य न किंचिद् दुर्लभं भवेत्।।''

आचार्य जटासिंहनन्दि (छठवीं शताब्दी ई.) ने भी जिनबिम्ब के निर्माण की महिमा बतलाते हुए उसकी प्रेरणा दी है। आचार्य अमितगति, आचार्य पद्मनन्दि, आचार्य वसुनन्दि ने भी जिनबिम्ब (प्रतिमा) के निर्माण का श्रेष्ठ फल बताते हुए इन्हें बनवाना श्रावकों का कर्तव्य बताया है। पंडित शिव आशाधरसूरि ने तो जिन-बिम्ब (प्रतिमा) आदि का निर्माण कराना 'पाक्षिक श्रावको' (अर्थात् जिन्हें जिनधर्म का पक्ष भी है,) का कर्तव्य बतलाया है। पांडे राजमल्लजी ने भी अरिहंत एवं सिद्ध की जिनप्रतिमाएँ आदि बनवाने का विधान करते हुए लिखा है कि 'जिनबिम्ब महोत्सव' करने में कदापि शिथिलता नही करनी चाहिए।

श्रमण-परम्परा में प्रतिमा-निर्माण की महिमा

जैसा कि ऊपर कई आचार्यों के कथनों में स्पष्ट कहा गया है कि 'प्रतिमा बनवाने का बड़ा महत्व है', - इसी तथ्य को और अधिक स्पष्ट करते हुए आचार्य

शिवार्य लिखते हैं कि- ''अरिहंत आदि की प्रतिमा के दर्शन से उनके गुणों का स्मरण हो जाता है। इस स्मरण से नवीन अशुभ कर्मों का 'संवर' हो जाता है। इस प्रकार समस्त इष्ट पुरुषार्थ की सिद्धि करने में जिनबिम्ब कारण होते हैं, अतः उनकी उपासना अवश्य करनी चाहिए। वे आगे पुनः लिखते हैं कि ''चैत्य (प्रतिमा) की भक्ति आत्मस्वरूप की प्राप्ति में सहायक होती है, अतः चैत्य भक्ति सदा करनी चाहिए।''

श्रमण-परम्परा में 'प्रतिमा' का स्वरूप

श्रमण-परम्परा मे 'प्रतिमा' का स्वरूप निर्वस्त्र, निराभरण, प्रशान्तमुद्रा एवं दिगम्बर रूप ही माना गया है। जैन प्रतिमा के स्वरूप के बारे मे वैदिक आचार्य वराहमिहिर लिखते हैं –

''आजानु-लम्बबाहुः श्रीवत्साङ्क-प्रशान्तमूर्तिश्च।
दिग्वासस्तरुणो रूपवाँश्च कार्योऽर्हतां देवः।।''

अर्थः- तीर्थंकर अरिहंत की प्रतिमा घुटनो तक लम्बे हाथो वाली, वक्षस्थल के मध्य 'श्रीवत्स' के चिन्ह से युक्त, प्रशान्तमुद्रा वाली एवं युवावस्था-सम्पन्न दिगम्बर ही बनवानी चाहिए।

अन्यत्र भी जैन - परम्परा मे प्रतिमा का स्वरूप ऐसा ही बताया है–

''उत्तमं दशतालेन देवाङ्गैः स मानयेत्।
चतुर्विंशतितीर्थानां दशतालेन कारयेत्।।
निराभरणसर्वांगं निर्वस्त्रांग मनोहरम्।
समवक्षः स्थले हेमवर्णः श्रीवत्स-लाञ्छनम्।।''

अर्थः- उत्तम देवताओं का शरीर दशताल-प्रमाण माना गया है, अतः चौबीसों तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ भी दशताल-प्रमाण बनवानी चाहिए। वे प्रतिमाएँ आभूषण-रहित, निर्वस्त्र, दिगम्बर, मनोहारी, समान वक्षस्थल (स्त्री आकार से रहित), स्वर्ण के वर्णवाली एवं श्रीवत्स के चिन्ह वाली होनी चाहिए।

आचार्य पूज्यपाद देवनन्दि (5वीं शताब्दी ई.) मे लिखते हैं–

''विगतायुधाः विक्रियाविभूषाः प्रकृतिस्थाः कृतिनां जिनेश्वराणाम्।
प्रतिमाः प्रतिमागृहेषु कान्त्या प्रतिमाः कल्कष शान्तयेऽभिवंदे।।''

अर्थः- जिनेश्वरों का प्रतिमा आयुधो से रहित, विक्रिया (आभूषणों एवं श्रृंगारिक या आक्रोशमयी राग-द्वेष सूचक मुखमुद्राओं) से रहित, प्राकृतिक (जन्मजात दिगम्बररूप वाली) एवं कान्तिवान् होनी चाहिये।

वे पुनः लिखते है –

''निराभरण-भासुरं विगतराग-वेगोदयात्।
निरम्बर-मनोहरं प्रकृतिरूप-निर्दोषत:।।''

अर्थ:- जिनेन्द्र प्रतिमा आभूषण-रहित, चमकदार, राग-द्वेष के भावो से रहित, वस्त्ररहित होते हुए भी मनोहारी एवं प्राकृतिक रूप से निर्दोष होनी चाहिए।

इतना ही नही, गणधर (गणेश) की प्रतिमाये भी दिगम्बर एवं प्रशान्त मुद्रा वाली ही होती है। यह तथ्य वैदिक संस्कृति मे भी स्वीकार किया गया है -

''श्यामवर्ण तथा शक्ति धारयन्तं दिगम्बरम्।
दिगम्बरां सुवदनां भुजद्वय-समन्विताम्।
विघ्नेश्वरीति ख्यातां सर्वावयव-सुन्दरीम्''

अर्थ:- विघ्नेश्वर के नाम से प्रसिद्ध गणधर (गणेश) की प्रतिमा श्यामवर्णी, शक्ति सम्पन्ना, दिगम्बर मुद्रा वाली, सुन्दर मुखाकृति, दो हाथो वाली तथा समस्त अवयवों से सुन्दर होनी चाहिए।

'वसुनन्दि-प्रतिष्ठापाठ' मे भी जिनप्रतिमा का परिचय देते हुए निम्नानुसार लिखा है कि:

(1) लक्षण- जिनेन्द्र की प्रतिमा सर्व सुलक्षणो से युक्त बनानी चाहिए। वह सीधी, लम्बायमान, सुंदर संस्थान, तरुण अंगवाली व दिगम्बर होनी चाहिये। श्रीवत्स लक्षण से भूषित वक्षस्थल और घुटने तक लम्बायमान बाहुवाली होनी चाहिये। काँख आदि अंग रोमहीन होने चाहिये तथा मूँछ व झुर्रियों आदि से रहित होने चाहिये।

(2) माप - प्रतिमा की अपनी अंगुली के माप से वह 108 अंगुल की होनी चाहिये, चित्र मे या लेपमय शिला आदि में प्रत्येक अंग का मान, प्रमाण व उन्मान नीचे व ऊपर सर्व ओर यथाकथित रूप से लगा लेना चाहिये। ऊपर से नीचे तक सौल डालकर शिला पर सीधे निशान लगाने चाहिए। प्रतिमा की तौल या माप निम्न प्रकार जानने चाहिए। उसका मुख उसकी अपनी अंगुली के माप से 12 अंगुल या एक बालिश्त होना चाहिए और उसी मान से अन्य भी नौ प्रकार का माप जानना चाहिए।

(3) मुद्रा - लक्षणो से संयुक्त भी प्रतिमा यदि नेत्र-रहित हो या मुँदी हुई आँख वाली हो तो शोभा नही देती, इसलिए उसे उसकी आँख खुली रखनी चाहिए अर्थात् न तो अत्यन्त मुँदी हुई होनी चाहिए और न अत्यन्त फटी हुई। ऊपर-नीचे अथवा दायें-बायें दृष्टि नही होनी चाहिए। बल्कि शान्त नासाग्र प्रसन्न व निर्विकार होना चाहिए और इसी प्रकार मध्य व अधोभाग भी वीतरागता-प्रदर्शक होना चाहिए।

जिन-प्रतिमा के प्रमुख लक्षणों की सार्थकता बतलाते हुए धवलाकार आचार्य वीरसेन स्वामी लिखते हैं-

1. निरायुध होने से क्रोध, मान, माया, लोभ, जन्म, जरा, मरण, भय और हिंसा के अभाव का सूचक है। 2. स्पन्दरहित नेत्र दृष्टि होने से तीनों वेदों के उदय के अभाव का ज्ञापक हैं। 3. निराभरण होने से राग का अभाव। 4. भृकुटीरहित होने से क्रोध का अभाव। 5. गमन, नृत्य, हास्य, विदारण, अक्षसूत्र, जटामुकुट और नरमुण्डमाला न धारण करने से मोह का अभाव। 6. वस्त्ररहित होने से लोभ का अभाव। 7. अग्नि, विष, अशनि और वज्रायुधादिकों से बाधा न होने के कारण घातिया कर्मों का अभाव। 8. कुटिल अवलोकन के अभाव से ज्ञानावरण व दर्शनावरण का पूर्ण अभाव। 9. गमन, प्रभामण्डल, त्रिलोकव्यापी सुरभि से अमानुषता। इस कारण यह शरीर राग-द्वेष एवं मोह के अभाव का ज्ञायक है। (इस वीतरागता से ही उनकी सत्यभाषा व प्रामाणिकता सिद्ध होती है।)

यहाँ यह प्रश्न संभावित है कि ''जिनप्रतिमा दिगम्बर ही बनाने का विधान समस्त आचार्यो ने क्यों किया?''

तो इसका समाधान यही है कि ''चूँकि जिनेन्द्र परमात्मा निर्विकार दिगम्बर ही हुये हैं, अत: उनकी प्रतिमा भी तदनुरूप बनाने का प्रावधान समस्त जैन एवं जैनेतर ग्रंथों में प्राप्त होता है। यह कोई पूर्वाग्रह-प्रेरित कथन नहीं है, अपितु प्रमाणपुष्ट निष्पक्ष यथार्थ तथ्य की प्रस्तुति मात्र है। जैनेतरों के ग्रंथों में प्राय: सर्वत्र ही जैन तीर्थंकरों एवं अरिहंतों को दिगम्बर ही माना गया है।'' प्रसिद्ध बौद्ध आचार्य धर्मकीर्ति लिखते है-

''ऋषभवर्द्धमानादि: दिगम्बराणां शास्ता सर्वज्ञ आप्तश्चेति।''

अर्थात् ऋषभदेव से लेकर वर्द्धमान महावीर-पर्यन्त चौबीसों तीर्थंकरों दिगम्बरों के अनुशास्ता, सर्वज्ञ एवं आप्तपुरुष थे।

वे जैनों को दिगम्बर के साथ-साथ दिन में ही अपनी जीवनचर्या करने वाले बताते है - 'आह्नीका: दिगम्बरा:' अर्थात् जैन श्रमण दिगम्बर एवं आहनीक (दिन में चर्या करने वाले) होते हैं।

'वाल्मीकि रामायण' में भी श्रमणों को दिगम्बर ही कहा गया है-

''श्रमणा: दिगम्बरा: श्रमणा: वातवसना इति''

अन्य वैदिक-ग्रन्थों में भी जैनो को दिगम्बर कहा गया है। यथा- ''यथाजातरूपधरो निर्ग्रन्था निष्परिग्रहा:।''

अर्थ:- जैनश्रमण नवजात बालक के समान निर्विकार दिगम्बर रूपवाले,

निर्ग्रन्थ, निष्परिग्रही होते हैं। यहाँ तक कि श्वेताम्बराचार्य हरिभद्रसूरि ने भी जैनो को मूलरूप में निर्ग्रन्थ दिगम्बर ही माना है–

"निर्ग्रन्थ- एतेन मूलसंघादि-दिगम्बरा:।"

अर्थ:- 'निर्ग्रन्थ' इस शब्द से मूलसंघ आदि दिगम्बर ही ग्रहण किये जाते हैं।

परम नास्तिक चार्वाकों ने भी जैन श्रमणों को नग्न ही कहा है- "नग्न श्रमणक-दुर्बुद्धे" चूँकि नग्न-दिगम्बर रूप को परम मंगलमय माना गया है, अत: जैनश्रमण परममंगलरूप नग्नता को ही अंगीकार करते हैं।

इसीलिए 'प्रतिमा' की पूज्यता को प्रमाणित करने के लिए इन्द्रनन्दि भट्टारक ने स्पष्ट कहा है कि "मूलसंघ के अन्तर्गत आने वाले नन्दिसंघ, सेनसंघ, देवसंघ और सिंहसंघ - इन चार संघों के अन्तर्गत प्रतिष्ठित जिनबिम्ब ही नमस्कार करने योग्य हैं। अन्य संघो के नही, क्योकि वे न्याय, नियम से विरुद्ध हैं।" चूँकि उक्त चारों संघ मूल दिगम्बर जैन-परम्परा के हैं, अत: इनकी आम्नाय मे प्रतिमा का भी निर्दोष स्वरूप सुरक्षित रहा है।

- डॉ. सुदीप जैन

[महावीर सन्देश से उद्धृत]

पूजन मे जल चढाने का अर्थ यह है कि जिस प्रकार जल मे शीतलता होती है वैसी ही शीतलता मेरी आत्मा मे बनी रहे। अक्षत इसलिए चढाए जाते है कि आप अक्षय पद प्राप्त कर सकें।

पुष्प चढाने के पीछे भाव पुष्प के समान ऐश्वर्य और सुख की प्राप्ति का है। नैवेद्य चढाने के पीछे यह भाव होते है कि हे भगवान, जिस प्रकार आपने अपने क्षुधावर्णी कर्म का नाश किया है उसी प्रकार मेर क्षुधावर्णी कर्मो का नाश हो जाए।

दीपक चढाने के पीछे भाव यह होता है कि जिस प्रकार भगवान का ज्ञान दीप के समान सारे ससार को आलोकित करता है ऐसा ही ज्ञान मेरी आत्मा में प्रकट हो।

धूप चढाने के पीछे भाव यह है कि जिस प्रकार धूप की सुगध सारे प्रदूषण को खत्म कर देती है उसी प्रकार मेरी आत्मा का प्रदूषण नष्ट हो जाए।

फल चढाने के पीछे मोक्ष फल की प्राप्ति का भाव है। शान्ति धारा के पीछे सारे ससार मे शाति होने की भावना होती है।

आचार्य मुनि श्री विद्यानन्द

पूजा और मंत्र

पूजा का साधारण अर्थ सत्कार है और मंत्र का अर्थ है ध्यान-चिंतन। यह आदर-सत्कार का साधन भी है। मूर्ति पूजा का इतिहास सदियो पुराना है। परन्तु कबीर कहते हैं:-

'पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूं पहार।
ताते आ चाकी भली पीस खाय संसार।।'

ठीक यही बात जैन धर्म भी कहता है कि द्रव्य पूजा भाव पूजा के बिना व्यर्थ है। भाव पूजा है तो पर्वत पूजन से भी आत्म शुद्धि मिल सकती है। पं() पद्मचंद शास्त्री का कहना है कि जिन शासन में मूर्ति की पूजा का विधान नही है, अपितु मूर्ति के द्वारा मूर्तिमान की पूजा का विधान है। प्रकारांतर से यह जीव अर्हत् की पूजा के बहाने अपने गुणो का ही स्मरण करता है।

मेरे ख्याल से पूजन भक्ति-योग का रूप है और सम्यक् दर्शन और भक्ति योग में अधिक अन्तर नहीं है, क्योकि श्रद्धा दोनो का ही मूल आधार है। कुछ हद तक यह भी कहा जा सकता है कि सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चारित्र से ही भक्ति योग, ज्ञानयोग व कर्मयोग फलित होते हैं। जैनेतर भक्ति मार्ग आराध्य को प्राप्त करने या उसमे विलीन होने के लिए अपनाया जाता है या फिर केवल सांसारिक याचनाएं ही उसमे होती हैं। जैन भक्ति मार्ग का असली ध्येय मुक्ति है। यह आत्मा को परमात्मा बनाने की प्रक्रिया है। जैनेतर दर्शन में कुछ मानते है कि एक परमात्मा मे अन्य आत्माए विलीन होती है। जैन दर्शन के अनुसार अनन्त परमात्माओ में अनन्त परमात्माएं समा जाती है, किन्तु साथ ही यह भी मान्यता है कि भक्ति से पुण्य कर्म का आस्त्रव व बंध होता है, इसलिए सांसारिक सम्पदा व सुख भी उनके उदय से प्राप्त होते है। फिर भी जहां भक्ति है वहाँ राग है जो कर्म बंध का, चाहे पुण्य कर्म का ही हो, कारण है। तथापि जैन दर्शन भक्ति और पूजन आदि का प्रतिपादन करता है और इन्हें सम्यक् दर्शन के साथ सम्यक् चरित्र का भी अंग मानता है। मूर्ति वैसे तो केवल पत्थर या धातु मात्र है, परन्तु उसमें श्रद्धापूर्वक नाम-स्थापना निक्षेप करने पर वह पूज्य हो जाती है। भाव व श्रद्धा के कारण मात्र पत्थर व धातु, नहीं रह जाते और वह वही हो जाता है जो हमने मान लिया।

अरहंत भगवान चाहे वे वर्तमान है या हो चुके है या होंगे। वे तथा सिद्ध भगवान न कुछ ले सकते है और न प्रत्यक्ष रूप से कुछ दे ही सकते हैं। वे तो मोक्ष मार्ग का उपदेश दे चुके है, रास्ता दिखा चुके हैं। यही बात शास्त्र और गुरु पर भी लागू होती है, फिर इनसे रागात्मकता स्थापित करना और

कर्मबंध करना कहाँ की अक्लमंदी है। इसका समाधान समन्तभद्र इस तरह करते हैं-

पूज्यं जिनं त्वाऽर्चयिता जनस्य सावद्यलेशो बहु पुण्यराशौ।
दोषाय नाऽलं, कणिका विषस्य न दोषाय शीतशिवाम्बुराशौ।।

(हे जिन! आपकी पूजा करने वाले जन के लेशमात्र सावद्य तो होता ही है, परन्तु उससे कहीं अधिक पुण्य राशि का संचय होता है। इसलिए उसमे दोष उसी प्रकार नहीं है जैसे शीतल शिवंकर जलराशि मे विषय की एक कणिका कोई खराबी पैदा नही कर सकती)

पण्डित प्रवर टोडरमल जी ने इसका समाधान बड़े ही प्रभावी ढंग से यो किया है- जब राग का उदय हो तो यदि उसे शुभ प्रवृत्ति मे न लगाया जाय तो वह अशुभ प्रवृत्ति और पाप कर्म का आस्रव करेगा। इसलिए रागोदय का उपयोग देव, शास्त्र, गुरु की सेवा-पूजन मे किया जाना ही श्रेयस्कर है। इसलिए हमारी पूजा के शब्दों में सारे जैन सिद्धांत और मिथिक ही गाये जाते है।

पूजा मूलत: एक व्यक्तिगत प्रयास है चाहे वह सामूहिक रूप से ही क्यो न हो। यह प्रक्रिया ऐसे लोगो के लिए या कहिए श्रावको के लिए प्रभुत्व प्राप्त करने की सरल साधना है जिसके द्वारा भी आत्मा परमात्मा से साक्षात्कार व तादात्म्य स्थापित कर सके, क्योंकि लौकिक या भौतिक लब्धियां जीवन का चरम ध्येय नही है। कवि इकबाल के शब्दो मे 'सितारो से आगे जहाँ और भी है, इसी रोजोशब मे उलझ कर न रह जा, तेरे जमीन ओ मका और भी है' उस अंतिम मुकाम पर जाने के लिए क्या करे? उसके लिए पूजा का सोपान भी है।

यह तो हुई पूजन की दार्शनिक पृष्ठभूमि। अब जरा पूजा की विधि आदि पर एक नजर डाली जाए। पूजा निर्विघ्न रहे इसके लिए पं() आशाधर की सलाह है कि-

यथास्वं दानमानाद्यै· सुखीकृत्य विधर्मिण.।
स्वधर्मण: स्वसात्कृत्य सिद्धयर्थी यजतां जिनम्।।

(सिद्धि के इच्छुक को अन्य धर्मावलम्बियो को यथा योग्य दान सम्मान आदि के द्वारा अनुकूल बना कर साधर्मियो को साथ में लेकर जिन की पूजा करनी चाहिए।)

पूजा के आरम्भ करने से पहले स्वस्ति व मंगल वाचन किया जाता है। समस्त तीर्थंकरों और साधुओं से प्रार्थना की जाती है कि जैनेन्द्र-यज्ञ-विशेष की सारी प्रक्रिया के समय सारे विघ्न समूह नष्ट हो। स्वस्ति मंगल के बाद विधिपूर्वक

पूजा प्रारम्भ की जाय। आजकल नवीन कवियों ने नई-नई पूजाएँ रचकर पूजा की विधि में भी यत् किंचित् फेर बदल कर दिए हैं और नए-नए सुझाव देने लगे हैं। पूजा के कई संग्रह भी मिलने लगे हैं।

साधारणतया चाहे वे मूर्ति रूप में समक्ष हो या नही, सिद्धों, अर्हंतों, तीर्थंकरों, गुरुओं, जिनवाणी, जिनबिंबों या चैत्यों, सोलहकारण भावनाओं, धर्म के लक्षणों की या अन्य आराध्य की पूजा का प्रारम्भ करते समय एक पात्र का प्रयोग करते है।

जिसमे स्वस्तिक ॐ आदि लिख कर आराध्य से कहते हैं:-

ॐ ह्रीं अत्र अवतर अवतर संवौषट् (ॐ ह्री यहाँ आइए, आइए, संवौषट्)

ॐ ह्री अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ठ· (ॐ ह्री यहाँ बैठिए, बैठिए, ठः ठः ठः)

ॐ ह्री अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (ऊं ह्री मेरे समीपस्थ होइए होइए वषट्)

साथ मे उस पात्र मे चावल सुमन डालते जाते है। इस पात्र को आसिका नाम दिया है जिसका अर्थ है छोटा आसन। इसके पश्चात् ऊं ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय आदि यथोचित शब्दावली के बाद 'निर्वपामि इति स्वाहा' कह कर विभिन्न द्रव्य चढ़ाते है।

अब हमारे अराध्य न कही आते है, न जाते है, विशेषकर सिद्ध तो कदापि नहीं, फिर भी हम कल्पना करते हैं इस तरह कि मानो वे कोई ऐसे जीव या देव हैं जो बुलाए जा सकते है, बिठाए जा सकते है और मधुर संगीत के साथ या उसके बिना भी किया गया स्वागत सत्कार स्वीकार कर सकते हैं। यह प्रक्रिया, जान पड़ता है वैदिक-तांत्रिक यज्ञो व पूजा का अहिसाकरण है। यज्ञ वेदी के स्थान पर हम एक थाली या अन्य पात्र का उपयोग करते है जिसमे द्रव्य क्षेपण करते है। यह प्रक्रिया मन्त्रोच्चार के साथ होती है और हमारे जी को अच्छी ही नही लगती अपितु एक प्रकार की विनय, पवित्रता, शक्ति, रहस्यमयता और इन्द्रियातीत भाव का संचार भी करती है।

उपर्युक्त आव्हानन, स्थापना, सन्निधिकरण व निर्वपण आदि के साथ पूजा की प्रक्रिया में हम प्रयोग करते हैं कुछ ये शब्द- (1) संवौषट् (2) ठः ठः ठः (3) वषट् (4) स्वस्ति (5) ॐ (6) ह्री (7)स्वाहा (8) आरती आदि।

विद्वान बतलाते है कि ॐ ह्रीं श्री आदि शब्द बीजाक्षर हैं जो शाखा, शोभा, कल्याण या विजय के साधन है। परन्तु इससे आगे भी जिज्ञासा रहती है कि यह बीज क्या है और क्या है इनका अर्थ व प्रयोजन?

अमरकोष के अव्यय वर्ग, श्लोक 8 मे कुछ का अर्थ निम्न प्रकार दिया गया है-

स्वाहा देव हविर्दाने श्रौषट्, वौषट्, स्वधा अर्थात् स्वाहा, श्रौषट्, वौषट् वषट् और स्वधा ये पांच नाम हवि देने के समय प्रयुक्त होते है।

ऋग्वेद के मंडल 2 सूक्त 36 की ऋचा (मंत्र) 1 इन्द्र के प्रति इस प्रकार है-

तुभ्यं हिन्वानो वसिष्ट गा, अपो अधुक्षन्सीमविभिरद्रिभिर्नरः।
पिबेन्द्र स्वाहा प्रहुतं वषट् कृत, होत्रादा सोम प्रथमो य ई शिषे।।

ग्रिफिथ के अनुसार इस मंत्र का अर्थ है-

Water and milk hath he indeed sent forth to thee. The men have drained him with the filters and the stones Drink, Indra, from the Hotar's bowl, first right is thine soma hallowed and poured with Vasat and Swaha.

हे इन्द्र। हवन करने वाले के पात्र से इस सोम को पिओ जिसे तुम्हारे लिए दूध और पानी के साथ पत्थर से पीस छानकर हवन करने वाले ने तैयार किया है। यह वषट् कृत है, स्वाहा के साथ इस पर तुम्हारा ही पहला हक है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसी ऋचा मे स्वाहा का अर्थ 'उत्तम क्रिया के साथ' और वषट् कृत का अनुवाद 'क्रिया से सिद्ध किए हुए है किया है।' अन्यत्र 7/14/3 मे "सत्य क्रिया" 7/100/7 मे 'श्रद्धा' तथा 8/2/82 मे 'वषट् शब्द द्वारा सम्मानित' यह अर्थ किया है। दरअसल कुछ ध्वनियो के कोई अर्थ नही होते, वे केवल भाव के संकेत वाचक है। जैसे हे, हा, हाय हाय, अरे, हो, हो उफ्। इसी प्रकार वषट्, स्वाहा, सवौषट् का भी कोई अर्थ नही है। केवल आराध्य के स्वागत सत्कार का एक तरीका है। वेद मे तो स्वाहा व वषट् के प्रयोग के बिना आहुति निरर्थक ही नही, किन्तु हानिकारक भी मानी जाती है। ठः ठः ठः केवल बैठन के स्थान की ओर इंगित करते है। ठ उस पवित्र स्थल को कहते है जहाँ कोई आकर बैठ सकता है।

यह आव्हानन, स्वागत-सत्कार श्वेताम्बर पूजा पुस्तको मे केवल दादा गुरु की पूजा में पाया जाता है। तीर्थंकरो व सिद्धो की पूजा मे देखने मे नही आया। पूजा के विषय में अन्यथा कोई मौलिक भेद नही है।

अब जब हमने अपनी कल्पना या भावना से पूज्य को बुला ही लिया, पास मे बिठा भी लिया तो फिर स्थान को धूप चंदन से सुगन्धित व दीपक

से प्रकाशित करने के साथ-साथ पानी, फल, फूल, अन्न (चावल) पकवान भी समर्पित करने ही होंगे। एक-एक वस्तु समर्पित करके फिर आठों ही पदार्थों को मिलाकर अर्घ्य भी पेश करते है। भगवदगीता मे कृष्ण कहते है- पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति। तदहं भक्त्युपहतं अश्नामि प्रयतात्मनः।। (जो भक्ति पूर्वक मुझे पत्र, पुष्प, फल, जल चढ़ाता है उसको प्रयतात्मा मै ग्रहण करता हूँ।)

कठिनाई आई कि बातें तो बड़ी लुभावनी कर ली कि हे आराध्य! मै आपके लिए तरह-तरह के पकवान, दीपक आदि लेकर आया हूँ परन्तु ऐसा हर दिन हर शख्स नहीं कर सकता, इसलिए सफेद चावल मे अक्षत, रंगे चावल में फूल, बादाम आदि मे फल, नारियल की गिरी मे दीप व नैवेद्य की स्थापना कल्पना करके समर्पित करते हैं। कहते है यह द्रव्य कल्पना सचित्त पदार्थ का प्रयोग वर्जित करने के लिए की जाती है। यदि ऐसा ही है तो फिर पूजा की भाषा मे परिवर्तन करना समुचित होता। इसलिए कई भक्त यथालिखित सचित पदार्थों का भी उपयोग करते है। बीसपंथी अभिषेक मे तो-

संस्नापितस्य घृतदुग्धदधीक्षु रसैः, सर्वाभिरोषधिभिरर्हत उज्वलाभिः।
उद्वर्तितस्य विदधाम्यभिषेकमेलाकालेयकुंकुमरसोत्कटवारिपूरै ।।

(घी, दूध, दही, इक्षुरस से स्नान कराने के पश्चात् उबटन लगाकर अब मै एला, कालेय और कुंकुम के रस से मिश्रित उज्जवल सर्वोषधि रूप वारि पूर से अभिषेक करता हूँ) सचित्त अचित्त दोनो ही पदार्थो से पूजा करना आगम सम्मत है। ध्यान केवल यह रखना होता है कि हिसा मे दूर रहा जाए।

यह सब समर्पण-निर्वपण हम कर रहे है जिसको बुलाया उसके लिए नही, केवल स्वहित के लिए। आशाधर धर्मामृत सागार मे लिखते है-

वार्धारा रजसः शमाय पदयोः सम्यक्प्रयुक्तार्हत·
सद्गन्धस्तु तनुसौरभाय विभवाच्छेदाय सन्त्यक्षताः।
यष्टुः स्रग्दिविस्रजे चरुरुमा स्वाम्याय दीपस्त्विषे
धूपो विश्वदृगुत्सवाय फलमिष्टार्थाय चार्घ्याय सः।।

(अर्हत के चरणों मे विधिपूर्वक अर्पित जल की धारा पापो की शान्ति के लिए, उत्तम चन्दन पूजक के शरीर की सुगन्ध के लिए, अक्षत (अखण्ड तन्दुल) वैभव के नष्ट न होने के लिए, फूलो की माला स्वर्ग मे होने वाली मन्दार माला की प्राप्ति के लिए, धूप पूजन के परम सौभाग्य के लिए, फल इष्ट अर्थ की प्राप्ति के लिए और अर्घ्य पूजा विशेष के लिए है)।

इस पर पं() कैलाशचन्द्र का निष्कर्ष है कि मध्य काल मे पूजा मे लौकिक फल की भावना थी। उत्तर काल मे आध्यात्मिक रूप देकर पूजा का महत्व बढ़ाया

गया है। उनका यह भी कहना है कि आशाधर के पहले के ग्रंथो में अर्घ्य चढ़ाने का कथन भी नहीं है। अब आध्यात्मिक उपलब्धियो के सिलसिले मे जल जन्म-जरा-मृत्यु निवारण के लिए, चन्दन संसारताप विनाश के लिए, अक्षत अक्षय पद पाने के लिए, पुष्प कामबाण विध्वंस के लिए, नैवेद्य क्षुधा रोग विनाश के लिए, दीप मोहांधकार विनाश के लिए, धूप अष्ट कर्म दहन के लिए, फल मोक्ष फल के लिए और अर्घ्य अनर्घ पद (मोक्ष पद) पाने के लिए अर्पित किया जाता है। किसी अतिथि के सादर स्वागत मे जो वस्तु समर्पित की जाए उसे अर्घ्य कहते हैं। अनर्घ पद का अर्थ है वह पद जिसका मूल्य नही आँका जा सकता।

हमारे नवीन कवियों ने इस समर्पण-निर्वपण को यो बदल दिया है- वे चढ़ाते हैं जल ज्ञानावरणीय के क्षय के लिए, चंदन दर्शनावरणीय-वेदनीय के क्षय के लिए, अक्षत मोहनीय के क्षय के लिए, पुष्प आयुकर्म के विनाश के लिए, नैवेद्य नाम कर्म के विनाश के लिए, दीप गोत्र कर्म के क्षय के लिए, धूप अंतराय के नाश के लिए और फल मोक्ष के लिए तथा अष्टकर्मों के क्षय के लिए इकट्ठा इन्ही अष्ट द्रव्यो का अर्घ्य। ये ही कुछ नवीन कवि चैत्यालयो की पूजन मे किसी प्रयोजन का जिकर किए बिना ही निर्वपण करते है। यह भी विचारणीय है।

श्वेताम्बर परम्परा मे अष्ट द्रव्य अलग-अलग न चढ़ाकर केवल अर्घ्य ही चढ़ाते है। दिगम्बर परम्परा मे भी समयाभाव से पूरी पूजा न करने पर अथवा की गई पूजाओं का उपसहार करने पर अर्घ्य चढ़ाते है जिसे पूर्णार्घ्य या महार्घ्य कहते हैं। यथा --

उदकचन्दनतन्दुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे।।

श्वेताम्बरों द्वारा समर्पित अष्ट द्रव्यो मे वस्त्र भी चढ़ाया जाता है। हम शास्त्र पूजा मे नौ द्रव्यो मे वस्त्र द्रव्य चढ़ाते हैं। यथा-

नयनसुखकारी मृदुगुनधारी उज्ज्वल भारी मोलधरे।
शुभ ग्रंथ सम्हारा बसन निहारा तुम तन धारा ज्ञान करे।।

दिगम्बर परम्परा मे वीतराग देव को वस्त्र चढ़ाने का विधान नही है।

अब जब आराध्य को बुला लिया, पास मे बैठा लिया, स्वागत सत्कार कर लिया, भोजन परोस लिया, स्वीकृत हुआ मान भी लिया, तो फिर पूज्य और पूजक दोनो विदा लेना ही चाहेगे- यह स्वाभाविक है। इसलिए शिष्टाचार के साथ अपनी कमी के लिए क्षमा मांगकर यह कह कर विसर्जन किया जाता है-

आहूता ये पुरा देवा, लब्धभागा यथाक्रमम्।
ते मयाभ्यर्चिता भक्त्या सर्वे यान्तु यथा स्थितिम्।।

(जिन महाभाग देवो को मैने बुलाया, उनकी मैने भक्ति पूर्वक अर्चना की वे यथाक्रम से अपने अपने स्थान को जाएं।) उनके चले जाने पर उनके द्वारा अब रिक्त हुए आसन याने आसिका को नमन कर उनको धोने के लिए डाल दिया जाता है।

कुछ लोग स्थापना तो करते है, किन्तु विसर्जन को आम्नाय के प्रतिकूल मानते हैं और उसके स्थान पर क्षमापाठ भर ही करते है। जाहिर है यह अधूरी प्रक्रिया है। क्षमा मांग कर विदाई करना ही पूजा समाप्त करने की समुचित प्रक्रिया जान पड़ती है।

आत्मपूजोपनिषद् कहता है कि आत्मा का चिन्तन ही ध्यान है। कर्मो का त्याग ही आह्वानन है, स्थिर ज्ञान ही आसन है, आत्मा की ओर मन लगाए रखना ही अर्घ्य है, शून्य लय समाधि ही गंध है, अन्त:ज्ञान-चक्षु ही अक्षत है, चिद् का प्रकाश ही पुष्प है, सूर्यात्मकता ही दीप है, पूर्ण चन्द्र का अमृत रस ही नैवेद्य है, सदा सन्तुष्ट रहना ही विसर्जन है। जैसे द्रव्य पूजा के लिए नैवेद्यादि चाहिए वैसे ही भाव पूजा आत्म पूजा के लिए उपर्युक्त आध्यात्मिक सामग्री चाहिए।

मंदिरो मे पूजा के अंत मे तथा सध्या समय आरती का बड़ा ही महत्व मिला हुआ है। आरती शब्द का मूल रूप है आरात्रिक याने सध्या के उपरांत रात्रि के पहले या रात्रि मे दीप को ऊपर नीचे ठहर-ठहर कर घुमाकर इस प्रकार नीराजना करना कि मूर्ति का पूजा रूप अंधकार मे भी दिखाई दे सके। इसी प्रक्रिया का प्राकृत शब्द हुआ 'आरत्तिय' और उससे बना हमारा शब्द 'आरती' इसको आर्तिहरण, दु:खहरण भी बोलते है। इस तरह आरती शब्द संस्कृत व प्राकृत की देन है। जिस पात्र मे दीपक रहता है उसे भी आरात्रिक, आरती ही कहने लगे है।

अब जब पूजन के बाद देव-विसर्जन हो गया तो चढ़ाए गए द्रव्यो का क्या किया जाय? द्रव्यो मे से न देवो-आराध्यो ने कुछ खाया, न हम ही उसे प्रसाद मान कर खाते है- केवल गंधोदक जल को तो हम अपने शरीर पर लगाकर थोड़ा काम मे लेते है, बाकी सब मन्दिर के माली/सेवक के लिए छोड़ देते हैं। इस द्रव्य को निर्माल्य कहते है। 'पाइअ सद्द महण्णव' और 'अभिधान राजेन्द्र कोषो' मे निर्माल्य (णिम्मल्ल) का अर्थ ''देवोच्छिष्ट द्रव्य'' ऐसा दिया हुआ है। हम इसे अपने उपयोग मे इसलिए नही लेते कि ऐसा करने पर अन्तराय कर्म का आस्रव होता है। ऐसा अकलंक (त.रा.वा. 6/27/1) कहते है। विचारणीय यह है कि जिनेन्द्र देव को समर्पित पदार्थ के सेवन से जब कर्म का आस्रव-बंध होता है तो फिर उसे माली/सेवक को देना या माली/सेवक को इसे लेने के लिए प्रेरित करना कहाँ तक उचित है? इसका एक अलग पहलू भी है,

वह यह कि इतनी मूल्यवान सामग्री को यज्ञो की तरह आग मे जलाकर नष्ट किए जाने के बजाए किसी के काम आए तो इस परोपकार से पुण्यास्त्रव ही होगा।

ह्रीं श्रीं क्लीं आदि ये बीजाक्षर तांत्रिक प्रयोग है। इनका अर्थ वैसे कुछ नहीं- ये देव के संबोधन के रूप मे ही प्रयुक्त होते है। यहाँ तक कि कुछ मंत्रो का रूप ही इस प्रकार होता है-

(1) ॐ अर्ह मुखकमलवासिनी पापात्मक्षयकरि श्रुतज्ञानज्वालासहस्त्रप्रज्वलिते सरस्वति मत्पापं हन हन दह दह क्षां क्षी क्षूं क्षौ क्ष. - क्षीरवरधवले अमृत सभवे वं वं हूं हूं स्वाहा।

(2) ॐ ह्री श्री क्ली, ऐ अर्ह, तं मं हं सं त पं वं व हं सं सं त तं पं पं झं झं क्षी क्षीं क्ष्वी क्ष्वी हां हां द्रीं द्री द्रावय द्रावय नमो अर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा। मेरे विचार में ये झांझ मंजरी और मृदंग की ध्वनियो के संकेत है, इनको पढ़कर कलशाभिषेक करते हैं। इन सब का क्या अर्थ है?

अब यदि इनके अर्थ के लिए किसी मे पूछा जाए तो निराशा ही हाथ लगेगी।

ॐ का उच्चारण है 'ओम्'। इस ध्वनि का ऋग्वेद मे कोई जिकर नही है, परन्तु उपनिषद् इसके प्रभाव से भरे पड़े है। कुछ उपनिषद् यथा प्रणवोपनिषत्, अमृतनादोपनिषत्, एकाक्षरोपनिषत् और नादबिन्दूपनिषद् तो ॐ पर ही है, इसी को प्रणव भी कहते है। उपनिषदो के अनुसार ॐ एकाक्षर ब्रह्म है। वहाँ यह भी कहा है कि इनके तीन अक्षर है- अ, उ, म्। अक्षर अ ब्रह्मा का, उ विष्णु का तथा म् महेश का स्वरूप है। ये तीनो अक्षर चाद, सूरज और अग्नि का भी रूप है। जब मोक्ष के पास मुमुक्षु होता है तो कासी के घटे का सा शब्द होता है। ओंकार के इसी स्वरूप को समझना चाहिए। यह देवताओं, पितरो की तृप्ति हेतु यज्ञ तथा श्राद्ध आदि मे किया जाने वाला स्वाहा, स्वधा तथा वषट कार है। यह प्राणिमात्र के हृदयो मे ओतप्रोत है। माण्डूक्योपनिषद् के अनुसार ॐकार ब्रह्म है, त्रिकाल वाला संसार भी है।

जैन धर्म मे भी ओंकार का बड़ा महत्व है। तीर्थंकर की भाषा केवल ओंकार मय होती है जिसे गणधर शास्त्र रूप मे गुम्फित करते है। जैन धर्म मे इसको पंच परमेष्ठी का सार होना भी इस प्रकार बताते है- असरीर (सिद्ध) अर्हंत, आइरिय, उवज्झाय, मुनि (साधु) इनके प्रथमाक्षर अ अ आ उ म् की स्वर संधि करने पर बनता है शब्द ओम्। यदि ऐसा है तो इसका ॐ नमः कहना समुचित ठहरता है। मेरे विचार से यह वह बिना बजाया (अनहत) नाद है जो सब ध्वनियां शेष होने जाने पर भी सुनाई देता है।

तमाम मंत्र संस्कृत भाषा में है, फिर भी मंत्रो मे प्रयुक्त बीजाक्षरों या कुछ शब्दों का कोई शाब्दिक अर्थ नही होता परन्तु हर ध्वनि का तात्पर्य जरूर है, कोई प्रभाव अवश्य है। क्योंकि अमंत्रमक्षरं नास्ति-नास्ति मूलमनोषधम् याने जैसे कोई जड़ अनौषधृ नही होती वैसे कोई बीज अक्षर अमंत्र नहीं होता। वैसे दरअसल किसी ध्वनि को वही अर्थ मिलता है जिससे नाम व भाव की स्थापना उसमें हमने या हमारे पूर्वजो ने की है। ध्वनि उत्पन्न करना हर जीव का सहज स्वभाव है और ये ध्वनियां अनन्त हैं। सर्वत्र जगत में सम्प्रेषण की माध्यम हैं। किसी भी भाषा में सारी ध्वनियां काम में नहीं ली जातीं। कुछ ध्वनियां ऐसी हैं जिनका सम्बन्ध कार्य से जुड़ा होता है, किसी सन्दर्भ में उनका प्रयोग होता है। मंत्र ऐसी ही ध्वनियां है जिनका क्रिया से अविनाभावी सम्बन्ध है। पूजा व ध्यान की जो अनिवार्य ध्वनियां हैं वे ही मंत्र है। क्रिया के बिना वे ध्वनियां अर्थहीन लगती हैं। विधिपूर्वक पूजा करने का मतलब है कुछ निश्चित ध्वनियो यथा बीजाक्षरों के प्रयोग के साथ पूजा की क्रिया करना। क्योंकि इन ध्वनियो के बिना क्रिया का कोई फल नही, अत· विसर्जन पाठ मे कहते है। मंत्रहीन क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैव च। तत्सर्व क्षम्यतां देव रक्ष रक्ष जिनेश्वर।। मंत्र और क्रिया का यह सम्बन्ध पुराना है और साधक इस सम्बन्ध की फलदायिनी शक्ति पर विश्वास करते आ रहे है। वह विश्वास ही इन ध्वनियो को सार्थकता व शक्ति प्रदान करते हैं। ये ध्वनियां एक प्रकार का संगी व रहस्यात्मकता पैदा करती हैं और संगीत या काव्य की भांति बार-बार बोली जाने पर ही ये ध्यान की ओर ले जाती हैं और साधक की तल्लीनता उसे इन्द्रियातीत करती है। ये मंत्र ध्वनियां देवता या ध्येय का नाम भी हैं, ध्येय को आहूत करने के लिए भी हैं। साधक की शरीर शुद्धि न्यास के लिए, प्रेतात्माओ के भगाने के लिए भी प्रयुक्त होती हैं। अत. मंत्र वे ध्वनियां हैं जिनको धार्मिक संस्कारो ने व्यवस्थित संहित ही नही किया बल्कि उनके प्रयोग पर भी एक सीमा व पाबंदी लगा दी है।

इस तरह मंत्र वाक् शक्ति का स्वरूप है। संसार की हर क्रिया वाक् से होती है। वाक् ही मति है, क्योकि बिना वाक् के कोई सोच विचार सम्भव नहीं है, अत: चित्त ही मंत्र है। क्योकि बिना शब्द के कोई प्रत्यय नही है। इस वाक् शक्ति को ऋषियो ने स्वर, व्यंजन और अननुनासिक में बांटा है। इस विशाल विश्व मे जो भूत (elements) हैं उनका मूल व सूक्ष्म रूप व ध्वनि करण ही मंत्र है, यथा कं = वायु, रं = अग्नि, लं = पृथ्वी, वं = जल। ये मंत्र स्वर व्यंजनो के सयोग से बनते है।

अकारादि हकारान्ता मंत्रा परमशक्तय:।
स्वमण्डलगता ध्येया लोकद्वव्य फलप्रदा।।

ऋषियों ने 16 स्वर और 33 व्यंजन पहचान किए हैं। इनके अलग-अलग मण्डल हैं। स्वर-व्यंजनों के संयोग से मंत्र बनते है और यह संयोजन कठिन ही नहीं दुर्लभ भी है। मंत्रों की शक्ति उच्चारण मे है। उससे बढ़कर है उपांशु मे और उससे भी बढ़कर है तूष्णी में। मन ही मन बार बार दुहराना - इस आवृत्ति से निरर्थक दिखाई देने वाले अक्षरों में एक शक्ति का संचार होता है, एक ऊर्जा पैदा होती है। मंत्र शास्त्र मे इसलिए स्वर-व्यंजनो मे से प्रत्येक को अलग अलग शक्ति-लब्धि का देने वाला माना गया है।

मंत्रोचार के साथ की गई पूजा की क्रिया ही पूजा का फल देती है। आत्म कल्याण के लिए की गई पूजा परहित भी करे इसके लिए पूजा के अंत में शांति पाठ किया जाता है जिसमे प्रार्थना की जाती है कि वृषभ आदि तीर्थकर पुर, देश, राष्ट्र, जगत मे सर्वत्र सब की सब तरह से शांति करे और राज करने वाले बलवान और धर्मवान हो और जैन-धर्म-चक्र का प्रभाव हो।

तीर्थंकरों का जीवन-काल दो भागो में विभाजित किया जा सकता है। 1. दीक्षा के पहले तथा 2. दीक्षा के बाद। पहले भाग में वे शक्ति पूर्वक शासन व्यवस्थाओ मे व सामान्य जनता के सर्वमुखी कल्याण में लगे होते है और दीक्षा के बाद आत्म हित मे लगे रहते हुए भी अपने उपदेशो के द्वारा परहित साधन करते हैं। उनके प्रभाव से, उनकी मौजूदगी मात्र से ही संसार मे सुख-शांति व्याप्त हो जाती है। पूजा के अंत मे इसी शांति की कामना की जाती है।

''करोतु शांतिं भगवा ॐ जिनेन्द्र.।''

- *न्यायमूर्ति एम. एल जैन*
215, मंदाकिनी एन्क्लेव, अलकनंदा, नई दिल्ली-19

भावेण होइ णग्गो बाहिर लिंगेण किं च णग्गेण।
कम्मपयडीण णियरं णासइ भावेण दव्वेण।।
णग्गत्तणं अकज्जं भावणरहियं जिणेहि पण्णत्तं।
इयणाऊण य णिच्चं भाविज्जहि अप्पयं धीर।।

भावपाहुण ५४-५५

'भाव से नग्नपना होता है, केवल बाहरी नग्न वेष से क्या लाभ है? भावसहित द्रव्यलिंग होने पर कर्म प्रकृति-समूह का नाश होता है, मात्र द्रव्यलिंग से नहीं। भाव-रहित नग्नपना कार्यकारी नही, ऐसा जिनेन्द्र ने कहा है। ऐसा जानकर हे धीर। सदा आत्मा का चिंतन कर।'

ग्रामीण अञ्चल के जैन मन्दिरों की विशेषताएँ

जयपुर नगर एवं जयपुर जिला पहिले ढूंढाड प्रदेश के नाम से प्रसिद्ध था । इस पूरे प्रदेश में दिगम्बर जैनो का बाहुल्य था । शासन मे उनका अप्रतिम प्रभाव था । दीवान रामचन्द्र को ढूंढाहड की ढाल कहा जाता था और यहां सन् 1947 के पूर्व 17 वी शताब्दी से ही एक के पश्चात् एक जैन दीवान होते गये जिन्होंने गांवों एवं जयपुर नगर मे अनेक मंदिर बनवाये, पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएँ सम्पन्न करवायी और पूरे जैन समाज को जयपुर राज्य मे एवं अन्य जगह उच्च स्थान दिलवाया । इसलिये जयपुर नगर के अतिरिक्त यहां के कस्बों और गांवो मे भी जैन समाज की घनी बस्ती थी । जयपुर जिले के साँगानेर, चाकसू, मौजमाबाद, नरायणा, सांभर, आमेर, बैराठ, बांसखोह, जोबनेर जयपुर आदि घनी बस्ती वाले कस्बे/नगर थे, लेकिन नगरीय सभ्यता से, एवं रोजगार धन्धे की तलाश के कारण गांव उजडने लगे और कस्बो मे भी समाज संख्या की दृष्टि से घटती गई । फिर भी वर्तमान मे जयपुर जिले के 192 गांवो मे दिगम्बर जैन मन्दिरो की संख्या 269 है, जो राजस्थान के किसी भी जिले की जैन मन्दिरो की संख्या से अधिक है । इसमे कुछ ऐसे भी ग्राम एवं कस्बे है जहां मन्दिरो की संख्या 6-7 तक पहुंच गई है । इस दृष्टि से सागानेर, चाकसू, सांभर, आमेर, फागी आदि के नाम विशेषत: उल्लेखनीय है ।

जयपुर जिले की एक विशेषता यह है कि इसमे दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र भी विद्यमान है । जो निम्न हैं:- (1) दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा,(बाड़ा), (2) दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चन्द्रप्रभु जी, नेवटा, (3) दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र आदिनाथ स्वामी मंदिर संघीजी, सांगानेर, (4) दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र आदिनाथ स्वामी, मौजमाबाद, (5) दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पदम्प्रभ, झराणा, (6) दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, बैनाड, (7) दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, कूकस (आमेर)।

अतिशय क्षेत्रों के अतिरिक्त इस जिले के अनेक मन्दिर भव्य एवं कलापूर्ण हैं, जिनमें विराजित प्रतिमाएं भी दर्शनार्थियो को स्वत: ही अपनी ओर आकर्षित करती है । अतिशय क्षेत्र पदमपुरा मे तो प्रतिवर्ष लाखों यात्रियो का आवागमन होता रहता है । अत्यंत प्राचीन एवं मनोज्ञ भगवान पद्मप्रभु की अतिशय युक्त प्रतिमा के अतिरिक्त पद्मप्रभु की विशाल खडगासन् प्रतिमा भी यहां के आकर्षण का केन्द्र है । दशहरा एवं चैत्र के नवरात्राओ मे यहां भूत-प्रेत बाधा से पीडित स्त्री-पुरुषो की अपार भीड देखी जा सकती है । उसकी प्रसिद्धि एवं अतिशय सर्वत्र लोगो की जुबान पर रहता है । इसी तरह सांगानेर का कलापूर्ण मन्दिर, वहां के शिखरो की छटा, भगवान आदिनाथ की चार हजार वर्ष पुरानी प्रतिमा

एवं निजमन्दिर की छतरी में अंकित संवत् 1011 का लेख, साथ में रामायण एवं महाभारत के महापुरुषों की प्रथम एवं दूसरे द्वारो पर पाषाण में उकेरे गये विभिन्न आकृतियां, लौकिक गीतो के नायक ढोला-मारू की मनोरम आकृतियां वहां को मन्दिर की कुछ विशेषताएं है। इसके अतिरिक्त यहां के तलघर मे विराजित निशदिन देव पूजित चैत्यालय भी यहां की अमूल्य निधि है जिनको तलघर से ऊपर लाने मे भी निश्चित अवधि बतानी पडती है । इतनी सब यहां के अतिशय की कहानी है । जिसको सुनकर यहां प्रतिदिन दर्शनार्थियो एवं यात्रियो की संख्या मे आशातीत वृद्धि हो रही है ।

नेवटा ग्राम में स्थित भगवान चन्द्रप्रभु की प्रतिमा महान अतिशयकारी है। जिनकी छत्रछाया में आते ही भक्त की व्यन्तर बाधा दूर हो जाती है । यहां प्रतिवर्ष आश्विन मास में अच्छा मेला भरता है ।

मोजमाबाद में विराजमान भगवान आदिनाथ की विशाल एवं अतिशय युक्त प्रतिमा, मंदिर के तीन उत्तुंग शिखर, मूलवेदी के ऊपर के शिखर मे अंकित रंगीन भित्ति चित्र, यहां के दोनो भोहरे, संवत् 1664 की विशाल पंच कल्याणक प्रतिष्ठा समारोह मे प्रतिष्ठित सैकडों प्रतिमाएं, महाराजा मानसिंह के दीवान (महामात्य) नानू गोधा का यश और ख्याति यहां पर आने वाले यात्रियो एवं दर्शनार्थियो के हृदय में भक्ति भाव उंडेला करते हैं । इसी तरह का अतिशय क्षेत्र बैनाड है जहां भाद्रपद के पश्चात् विशाल मेला भरता है । झराणा का अतिशय क्षेत्र अभी लोगो की जुबान पर कम है । लेकिन यह तो सात अतिशय क्षेत्रो की कहानी है । यहां तो जयपुर ग्रामीण अंचल मे स्थित दिगम्बर मन्दिरो की निराली गौरव गाथा है और वे भी किसी अतिशय क्षेत्र से कम नही है। यहां कुछ ऐसे ही मन्दिरों का परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है ।

सबसे पहिले जयपुर राज्य की पुरानी राजधानी आमेर व चोमू तहसील का वर्णन करते है । यहां 23 गांवों मे 34 मन्दिर है, लेकिन स्वयं आमेर में 7 मन्दिर एवं एक कीर्ति-स्तंभ की नशियाँ के नाम से प्रसिद्ध है । कीर्ति-स्तम्भ एक ऐतिहासिक दस्तावेज है जो 12½ फीट ऊंचा एवं 4 फीट 7 इंच गोलाकार है । संवत् 1 से लेकर 1883 तक होने वाले भट्टारको की पाषाण में उकेरी हुई मूर्तियां हैं । इसमें सभी आचार्यो को भी भट्टारक नाम से अंकित किया है । वैसे भगवान महावीर को परम भट्टारक के नाम से सम्बोधित किया जाता है इसलिये उनके बाद होने वाले आचार्यों को भट्टारक नाम से भी सम्बोधित किया जा सकता है । कीर्ति-स्तम्भ के अलावा यहां आमेर गादी के भट्टारको की चार चरण छत्रियां भी हैं । वे भी आमेर नगर को जैन इतिहास से जोडती है । इस कीर्ति-स्तम्भ के ऐतिहासिक महत्व की ओर ध्यान देकर दर्शनार्थियो एवं यात्रियों के लिए आकर्षक दर्शनीय स्थल बनाया जा सकता है ।

आमेर मे सांवला जी (नेमिनाथ जी) के मन्दिर मे प्रतिष्ठित भगवान नेमिनाथ जी की संवत् 1120 में प्रतिष्ठित प्रतिमा बहुत मनोज्ञ एवं अतिशयकारी है । विक्रमीय 16वी शताब्दी के चतुर्थ पाद मे कविवर थेल्ह के पुत्र कवि धनपाल यहां दर्शनार्थ आये और उन्होने नेमिनाथ स्वामी की प्रतिमा के दर्शन कर एक पद में उनका निम्न प्रकार यशोगान गाया है :-

गुण गाइसै श्री नेमि जिणवर सयल सुख दातार
जहि नाम लीया दुरित नासै, गुणह गणत न पार
अंबावती प्रतिव्यंब शोभिता, स्याम वर्ण गहीर
वंदहु सुभ वीयहु नेमिजिणु दोइ अट्ठ धनुष सरु ।।

यहां का शास्त्र भण्डार सारे विश्व में प्रसिद्ध है जिसमे अपभ्रंश भाषा की अधिकांश पाण्डुलिपियां सुरक्षित है । उनकी प्रशस्तियो के प्रकाशन के पश्चात् डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल जैसे उच्चस्तरीय विद्वानो ने हिन्दी साहित्य का ''आदिकाल का इतिहास'' मे अच्छी चर्चा की है । डॉ० रामसिंह तोमर जैसे विद्वान ने अपना शोध प्रबन्ध इन्ही पाण्डुलिपियो के आधार पर लिखा था और आज भी उनका उतना ही महत्व है जितना पहिले कभी रहा होगा । वास्तव में आमेर के सांवला जी मन्दिर की ऐतिहासिकता राजस्थान के किसी मन्दिर से कम नही है । इस मन्दिर के इतिहास पर कभी विस्तृत प्रकाश डालने की महती आवश्यकता है।

आमेर की बाहरली नशियां मे नेमिनाथ स्वामी की गेहूं वर्ण की पद्मासन प्रतिमा संवत् 1205 की प्रतिष्ठित है । यह प्रतिमा इतनी मनोज्ञ एवं भव्य तथा आकर्षक है कि दर्शनार्थी का मन कभी नही भरता । आमेर की ये तीनों ही निधियाँ हमारे अतीत के इतिहास पर अच्छा प्रकाश डालती है ।

आमेर-चोमूं तहसील मे ही कालाडेरा एक प्राचीन कस्बा है जिसमे भगवान नेमिनाथ का दिगम्बर जैन मन्दिर एक हजार वर्ष प्राचीन बताया जाता है तथा जिसमे संवत् 1163 मे प्रतिष्ठित दो चौबीसी यंत्र हैं । यहां की प्रतिमाएं भी अतिशय युक्त हैं जिन्हें चोरों द्वारा भी ले जाया नही सका और खेत में ही छोडकर पुलिस को सूचित करना पड़ा ।

इस तहसील मे एक दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चन्द्रप्रभ जी बैनाड है जहां प्रति वर्ष विशाल मेला भरता है । पहाडी पर स्थित होने के कारण इस मन्दिर का विशेष महत्व है । पूज्य मुनि श्री सुधासागर जी महाराज इस क्षेत्र पर पर्याप्त समय तक रहे जिससे अतिशय क्षेत्र के विकास में पर्याप्त योगदान मिला । यहां की पहाडी पर तीर्थंकरों के पुराने चरण-चिन्ह हैं जो इसकी प्राचीनता के द्योतक हैं ।

आमेर तहसील में एक और अतिशय क्षेत्र है जो दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कूकस के नाम से जाना जाता है । यह क्षेत्र मुख्य सड़क से दूर घने जंगल में स्थित है । इसका इतिहास 500 वर्ष पुराना बताया जाता है ।

दिगम्बर जैन मन्दिर जमवा रामगढ़

यहां का कलात्मक शिखरबन्द मन्दिर जयपुर के दीवान रामचन्द्र के पूर्वजो ने बनवाया था जो करीब 500 वर्ष पुराना है । दीवान रामचन्द्र को ढूंढाहड की ढाल कहा जाता था । रामगढ़ जैन संस्कृति का कला केन्द्र था यहां भूगर्भ से 12 वीं शताब्दी की प्रतिमाऐं प्राप्त हुई थी । रामगढ मे जैन परिवार नही होने से मन्दिर चहल पहल से शून्य रहता है ।

बैराठ (विराट नगर)

विक्रम की 17 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में विराट नगर के दि0 जैन मन्दिर की विशेष ख्याति थी । यहां के मन्दिर का निर्माण खण्डेलवाल जैन जातीय पापल्या गौत्र वाले किसी श्रावक द्वारा सम्पन्न हुआ था । यहां पर पं0 राजमल्ल जैसे धाकड़ विद्वान हुए जिन्होंने समयसार हिन्दी टव्वा टीका, जम्बूस्वामी चरित्र, अध्यात्मकमलमार्तण्ड, लाटी संहिता एवं पंचाध्यायी जैसे महान ग्रंथों की रचना करके साहित्य जगत में एक महान क्रान्ति मचा दी । महाकवि बनारसीदास जैसे कवि ने भी पं0 राजमल की निम्न प्रकार प्रशंसा की है-

पांडे राजमल्ल जिन धर्मी, समयसार नाटक के मर्मी ।
तिन्हे ग्रंथ की टीका कीनी, भाषा सुगम अर्थ कर दीनी ।।

संवत 1641 में लिपि की हुई लाटी संहिता की यहां के शास्त्र भण्डार मे एक पाण्डुलिपि सुरक्षित है जो संभवत· लाटी संहिता की मूल पांडुलिपि लगती है । इस पाण्डुलिपि की प्रशस्ति के अनुसार इस मन्दिर के निर्माणकर्ता भारूमल संघी थे । विराट नगर का यह मन्दिर सेन गण के भट्टारकों का कभी केन्द्र भी रहा था ।

बस्सी क्षेत्र के जैन मन्दिर

बस्सी तहसील में केवल 14 गांवों मे 17 मन्दिर हैं। गांवो मे जैन परिवारो की संख्या दिन प्रतिदिन नगण्य होती जा रही है । केवल बस्सी को छोड कर शेष सभी गांवो में 5-6 परिवार या इससे भी कम परिवार रह गये है और सभी नगरों में आकर बस गये हैं । संवत 1783 मे बांसखोह में विशाल पंच कल्याणक प्रतिष्ठा हुई थी जिसमे प्रतिष्ठापित प्रतिमाऐ जयपुर एवं राजस्थान के अन्य मन्दिरों मे खूब मिलती है । यहां के मन्दिर का निर्माण संवत् 1736 के पूर्व हुआ था । मन्दिर तीन शिखरो वाला एवं दर्शनीय है ।

चाकसू क्षेत्र के जैन मन्दिर

जयपुर जिले का चाकसू कस्बा पहिले चंपावती के नाम से विख्यात था जिसका उल्लेख जैन साहित्य एवं इतर साहित्य मे खूब हुआ है । यहां सर्व प्रथम संवत् 1135 मे पंच कल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई उसके पश्चात यहां 13 बार प्रतिष्ठाऐ और हो चुकी है जिसमे हजारो मूर्त्तिया प्रतिष्ठित होकर देश के एवं राजस्थान के विभिन्न मन्दिरो मे विराजमान की जा चुकी है । भट्टारको एवं साहित्य सेवियो का चाकसू सदैव केन्द्र रहा है । 16 वी शताब्दी में होने वाले ठक्कुरसी कवि चम्पावती (चाटसू) के थे । उनके घर के पास ही जिन मन्दिर था जिसके दर्शन मात्र से ही भवभव की बाधा दूर हो जाती थी ।

दिण्णोक ढूढाहड देस मज्झि
णयरी चंपावइ अरिअ सत्थि
तहि भुवनि पास जिणवर निकेऊ
जो भव किण्णिहि तारण हसेउ

कविवर ठक्कुरसी चाकसू के जिन मन्दिर मे बैठ कर ही साहित्य रचना किया करते थे । इस मन्दिर मे विराजमान भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा अतिशय युक्त है । जब इब्राहीम लोदी ने चाकसू पर आक्रमण किया तो चम्पावती पुरवासी भय से कंपित होकर जैन मन्दिर मे एकत्रित हो गये और भगवान पार्श्वनाथ से संकट हरण के लिये प्रार्थना करने लगे ।

तिवहि कंपिउ सयल पुर लोउ ।
कोउन कसु वरज्जिउ रहइ ।
भज्जि दहइ विसि जाण लगउ ।
मिलिवि करी तव वीनती ।
पासणाह सामी तु अगउ ।
सवणा जोतिग केवली ।
चित्तु न मंडउ आस ।
कालि पंचए पास प्रभ ।
जगि तुव तणाउ विसासु ।।

कवि ने इस अवसर पर पार्श्वनाथ शकुन सत्तावीसी को संवत् 1578 (1521 ए0डी0) छन्दोबद्ध किया था । कवि ठक्कुरसी के पश्चात् यहां ब्र. रायमल्ल कवि आये जिन्होने संवत् 1615 (1558) मे नेमिश्वर रास की रचना इसी पार्श्वनाथ मन्दिर मे की थी। कवि ने मन्दिर को ''स्वामी हो पारसनाथ को धाम'' कहकर उल्लेख किया है । चाकसू के इस मन्दिर को अतिशय क्षेत्र के रूप मे माना जाता रहा है । यहां भट्टारक जी की नशियां भी दर्शनीय है ।

भट्टारक सुखेन्द्र कीर्ति जी का यहीं स्वर्गवास हुआ था जिनकी यहां चरण छत्री भी बनी हुई है । इसी तरह यहां दिगम्बर जैन नशियां बड़ी शिव डूंगरी के नाम से विख्यात है । यह नशियां पहिले जैन नशियां थी जो यहां के शिला लेखों से स्पष्ट प्रतिभासित होता है । शिलालेखो में पिच्छी कमण्डलु लिये हुये भट्टारको की खड्गासन मुद्राऐ हैं जिनके ऊपर दिगम्बर मुद्राएं है । इस तरह चाकसू नगर प्राचीन काल से ही जैन इतिहास मे अपना विशिष्ट स्थान बनाये हुए है ।

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पद्‌मपुरा (बाड़ा)

चाकसू तहसील में दि0 जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा (बाड़ा) देश के प्रसिद्ध अतिशय क्षेत्रों मे गिना जाता है । यहां का गोलाकार मन्दिर 85 फीट ऊंचा मन्दिर का कलश, भगवान पदमप्रभ की अतिशय युक्त प्रतिमा, विशाल कटला, भगवान पद्‌मप्रभ की 28 फीट ऊंची विशाल खड्गासन प्रतिमा, मन भावन प्राकृतिक दृश्य, भगवान पद्‌मप्रभ की चरण छत्री, विशाल जिन मन्दिर आदि दर्शनीय है, जहां प्रति वर्ष देश के विभिन्न कोनो से लाखो यात्री आते है । भगवान पद्‌मप्रभ के इस पावन क्षेत्र को देश के नवोदित तीर्थों मे प्रमुख माना जाता है । चाकसू तहसील के अन्य दर्शनीय मन्दिरो में चंदलाई, शिवदासपुरा, कोटाखावदा, रूपाहेडी के मन्दिर भी दर्शनीय एवं कलात्मक है ।

फागी क्षेत्र के जैन मन्दिर

फागी तहसील मे 26 ग्रामों मे जैन समाज रहता है तथा इन गांवो मे 40 जैन मन्दिर है । सबसे ज्यादा जैन परिवार एवं जैन मन्दिर फागी कस्बे मे हीं है इन मन्दिरो मे हस्तलिखित ग्रंथो का भी अच्छा संग्रह है लेकिन किसी विद्वान द्वारा अनदेखे है । फागी तहसील के चकवाडा ग्राम के जैन मन्दिर मे कहते हैं प्रतिदिन भगवान के पाट के सामने 1/- रूपया चढाया हुआ मिलता है । इस तहसील में माधोराजपुरा, चित्तोडा, रेनवाल मे जैन समाज के अच्छी संख्या में घर है ।

दूदू मोजमाबाद क्षेत्र के जैन मन्दिर

जयपुर जिले की इस तहसील का नाम यद्यपि दूदू है लेकिन कहने मे दूदू मोजमाबाद आता है । मोजमाबाद बहुत पुराना कस्बा है । प्राचीन काल से ही यह जैन समाज का केन्द्र रहा है । यह अब अतिशय क्षेत्र है जहां भगवान आदिनाथ की विशाल पद्मासन प्रतिमा छोटे तलघर मे विराजमान है । बादशाह अकबर के प्रमुख शासनाधिकारी एवं बंगाल के सूबेदार महाराजा मानसिंह के नानू गोधा प्रधान अमात्य थे जिनके द्वारा इस विशाल तीन शिखरो वाले मन्दिर का निर्माण करवाया और फिर सवत् 1664 मे विशाल स्तर पर पंच कल्याणक

प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न करवाया । इस प्रतिष्ठा मे हजारो जिन बिम्बो की प्रतिष्ठा हुई जो आज राजस्थान के ही नहीं किन्तु सारे देश के मन्दिरो मे विराजमान हैं। कितने ही मन्दिरों में तो यहां की प्रतिष्ठित कलापूर्ण प्रतिमाएँ मिलती हैं । यदि इनका सर्वे किया जावे तो एक पुस्तक तो इसी पर लिखी जा सकती है। मोजमाबाद के इस मन्दिर की विशालता, भव्यता, कलात्मकता देख कर कोई भी यात्री मुग्ध हुए बिना नही रह सकता । निज मन्दिर का प्रवेश द्वार तथा अन्दर का विशाल गुम्बज, उसमे उकेरी गयी भित्ति चित्रकला, संस्कृति एवं इतिहास के उत्कृष्ट नमूने हैं । संवत् 1664 मे आयोजित प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रतिष्ठाचार्य थे भट्टारक देवेन्द्र कीर्ति जिनकी महिमा चारो ओर व्याप्त थी । मोजमाबाद महाराजा मानिसंह का जन्म स्थान था जिनके महल आज भी वहां खण्डहर स्थिति मे हैं ।

मोजमाबाद के छोटे मन्दिर मे पाण्डुलिपियो का अच्छा संग्रह है । उसमे भी एक तलघर है । गांव के बाहर की नशियां पिकनिक स्थल के रूप मे प्रसिद्ध है ।

मोजमाबाद तहसील मे महला गाव का मन्दिर 500 वर्ष पुराना एव दर्शनीय है । तहसील के दूसरे बडे गांवों मे दूदू ही एक मात्र ऐसा कस्बा है जहां 45 दिगम्बर जैन परिवार है । सावडदा मे भगवान नेमिनाथ की संवत् 1264 में प्रतिष्ठित प्रतिमा है । इसी तरह दूदू मे भी संवत् 1200 के आसपास प्रतिष्ठित भव्य प्रतिमा है । पूरी तहसील में 28 गांवो मे 36 मन्दिर है ।

जयपुर तहसील क्षेत्र के जैन मन्दिर

जयपुर तहसील के 8 गांवो मे तो केवल 16 जैन परिवार है, किन्तु अब जयपुर के उप नगरों को भी जयपुर तहसील के अन्तर्गत माना गया है इसलिये इन 6 उप नगरो मे वर्तमान मे 540 परिवार रहने लगे है जो एक अच्छी संख्या है । सभी 6 उप नगरो मे नये मन्दिर बन चुके हैं । श्याम नगर में बहुत अच्छा मन्दिर का निर्माण हुआ है । इसी तहसील मे जयसिंहपुरा खोर का श्रेयासंनाथ जैन मन्दिर गोधान विशेष उल्लेखनीय है । इस मन्दिर का निर्माण सवत् 1780 मे आमेर के महाराजा जयसिंह के शासन काल मे हुआ था। मन्दिर निर्माणकर्ता श्री नाथू गोधा थे । मन्दिर शिखर बन्द तथा कलापूर्ण है।

सांभर क्षेत्र के जैन मन्दिर

सांभर फुलेरा तहसील में 36 गांवां में 49 जैन मन्दिर है। जैन परिवारों की दृष्टि से भी यह तहसील उल्लेखनीय है । अकेले सांभर मे ही 4 दिगम्बर जैन मन्दिर है तथा 55 परिवार रहते है । यहां सिंघाणियो के मोहल्ले में स्थित दि0 जैन बड़ा मन्दिर 700 वर्ष पुराना तथा समुद्र का मन्दिर 900 वर्ष पुराना

है । इसी तरह मंडी सांभर का मन्दिर 500 वर्ष पुराना है । यहां के मन्दिरो मे शास्त्र भण्डारों में भी अच्छी संख्या में हस्तलिखित पाण्डुलिपियां हैं जिनकी सूची राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूची पंचम भाग मे प्रकाशित हो चुकी है ।

तहसील का दूसरा बडा कस्बा नरायणा है जिसके भूगर्भ में पता नही कितनी प्राचीन प्रतिमाऐं दबी हुई हैं । यही के भूगर्भ में जो प्रतिमाऐ प्राप्त हुई हैं वे पुरातत्व की दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है । यहां आचार्य धरषेणाचार्य के चरण चिन्ह तथा भगवान बाहुबली स्वामी के शरीर पर चढी हुई बेल पर एक बन्दर उत्कीर्ण है । यहां 12 वीं शताब्दी की एक सरस्वती की प्रतिमा भी बहुत मनोज्ञ एवं कलापूर्ण है ।

फुलेरा में भी 40 जैन परिवार तथा एक मन्दिर एवं एक नशियाँ हैं जिसका निर्माण संवत् 1992 (1935) मे सम्पन्न हुआ था, जिसकी प्रेरणा क्षु. सिद्धसागर जी महाराज से प्राप्त हुई थी । यहा के मन्दिर मे आचार्य शान्ति सागर जी एवं दूसरे साधुओ के अच्छे भित्ति चित्र हैं ।

इस तहसील का जोबनेर एक अच्छा कस्बा है जिसमे 60 जैन परिवार एवं पांच दिगम्बर जैन मन्दिर है । एक जैन गुरुकुल भी संचालित है । जोबनेर कस्बे की एवं समाज की अच्छी प्रसिद्धि है । तहसील मे भादवा गांव भी है जो पं0 चैनसुखदास जी एवं पं0 सत्यन्धरकुमार जी सेठी की जन्म भूमि रही है।

रेनवाल तहसील का व्यापारिक कस्बा है । जहां 57 जैन परिवार निवास करते है । एक मन्दिर है जिसमे ऊपर की मंजिल मे समवसरण है । यहा अच्छा ग्रंथालय भी है जिसमें करीब 160 पाण्डुलिपियां संग्रहीत है । ग्रंथालय को अभी पूरी तरह देखा नहीं गया है ।

सांगानेर क्षेत्र के जैन मन्दिर

राजस्थान का सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक नगर सांगानेर का नाम प्राचीन नगरो मे उल्लेखनीय है । यहां दि0 जैन मन्दिर संघीजी अतिशय क्षेत्र है जिसके निर्माण को एक हजार से अधिक वर्ष हो चुके है । जिसका वर्णन पहिले किया जा चुका है । सांगानेर मे तेरहपंथ का विकास हुआ । भट्टारको का जोरदार विरोध हुआ जिससे उनका अस्तित्व ही खतरे में पड गया और 20 वी शताब्दि आते आते उनका नामलेवा भी नही रहा । तेरहपंथ के कट्टर समर्थक जोधराज गोदीका एवं कट्टर विरोधी भट्टारक नरेन्द्रकीर्ति यहां पर हुये ।

सांगानेर मे संवत् 1633 (1576) मे कविवर ब्र. रायमल्ल का आगमन

हुआ । कवि ने अपनी भविष्यदत्त चौपाई मे सांगानेर के वैभव, वहां पर बहने वाली नदी, उत्तुंग शिखर वाले मन्दिरों का निम्न प्रकार वर्णन किया है—

देश ढूंढाहड शोभा घणी, पूजे तहा अली मन तणी ।
निर्मल तलै नदी बहु फिरि, सुबस बसै बहु सांगानेरि ।
चहुं दिशि बण्या भला बाजार, भरे पटोला मोती हार ।
भवन उतुंग जिनेसुर तणा, सोभै चंदवा तोरण घणा ।

सांगानेर में 7 जिन मन्दिर और हैं इनमे दि0 जैन मन्दिर बधीचन्द जी विशेषत: उल्लेखनीय है । इस मन्दिर का निर्माण देहली के लाला हरसुखराय सुगनचन्द अग्रवाल एवं जयपुर के दीवान अमरचन्द इन दोनो द्वारा संभव हुआ था। सांगानेर तहसील मे दिगम्बर जैन मन्दिर शान्तिनाथ जी की खोह प्राचीन एवं ऐतिहासिक मन्दिर है । खोह लगभग एक हजार वर्ष पुराना गांव है । यहां के मन्दिर का निर्माण कब हुआ था इसका कोई प्रामाणिक इतिहास नही मिलता।, लेकिन ऐसा लगता है कि पुराने मन्दिर के स्थान पर दीवान भगतराम छाबड़ा ने संवत् 1842 से 1885 तक किसी समय नया मन्दिर बनवाया था ।

सांगानेर तहसील मे बगरु कस्बे का नाम भी उल्लेखनीय है । बगरु भट्टारको एव उनके शिष्य पांड्याओ का केन्द्र रहा था। बगरु मे जैन समाज के 18 घर है । भांकरोटा ग्राम के मन्दिर की दीवारो पर रंगीन चित्रो एवं कलात्मक कारीगरी का बेजोड नमूना देखा जा सकता है।

इसी तरह से जयपुर नगर का उपनगर मानसरोवर एक बडा उपनगर है जिसके वरुण पथ, हीरा पथ, अग्रवाल फार्म मे समाज की अच्छी बस्ती है और जिनमे मन्दिरो का निर्माण हो चुका है।

— डॉ कस्तूरचन्द कासलीवाल
867, अमृतकलश, बरकत नगर, टोक फाटक, जयपुर

दर्शनेन जिनेन्द्रणां पाप संघात कुंजरम्
शतधा भेद मायाति गिरिवज्रहतो यथा।।

आचार्य वीरसेन : धवल पु. 6 पृ. 424

जिनेन्द्र देव के दर्शन से पाप संघात रूपी कुंजर के सौ टुकडे हो जाते है जिस प्रकार कि वज्र के आघात से पहाड़ के सौ टुकडे हो जाते हैं। जिनेन्द्र देव के स्वरूप का चिन्तवन करते हुये जिनबिम्ब के दर्शन करने से मिथ्यात्व कर्म का स्थिति अनुभाग कम होता है ।

स्वाध्याय की महिमा

स्वाध्याय की महिमा न्यारी
स्वाध्याय अज्ञान मिटाता।
स्वाध्याय हितकारी अनुपम
स्वाध्याय सन्मार्ग दिखाता।।
स्वाध्याय सब करो नित्य ही
स्वाध्याय से सद्गुण आते।
स्वाध्याय कर करो चिंतवन
जीवन के संकट मिट जाते।।
स्वाध्याय से चलना फिरना
और बैठना उठना आता।
ग्राह्य और अग्राह्य वस्तु का
स्वाध्याय ही भेद बताता।।
स्वाध्याय ही जप तप संयम
स्वाध्याय वैराग्य बढ़ाता।
स्वाध्याय संसार-दुखों से
व्यथित हृदय को शांति दिलाता।।
स्वाध्याय से इच्छाओं पर
सदा नियंत्रण होता आया।
स्वाध्याय से बन जाती है
रोगी की नीरोगी काया।।
स्वाध्याय से आधि-व्याधि सब
दूर भागती देखी जाती।
स्वाध्याय से श्रद्धा जागृत
होकर सारे कष्ट मिटाती।।
स्वाध्याय को मोक्षमार्ग की
पहली सीढ़ी मन में जानो।
स्वाध्याय ही श्रेयस्कर है
इसकी शक्ति स्वयं पहिचानो।।

– अनूपचन्द न्यायतीर्थ, जयपुर

निवार्ण क्षेत्रों संबन्धी आवश्यक जानकारी

स्थान	निकटस्थ रेल-स्टेशन	क्षेत्र तक दूरी कि मी	मोक्षगामियो के नाम आदि	विशेष
उत्तरप्रदेश				
01. बद्रीनाथ	ऋषिकेश	297	ऋषभदेव के पिता नाभिराय	बद्री विशाल प्रतिमा के दिगम्बर स्वरूप दर्शन विशेष द्रव्य देने पर भगवान आदिनाथ की माता मरुदेवी की तपस्या स्थली
02. कैलाश पर्वत	ऋषिकेश/ काठगोदाम	5	भगवान आदिनाथ, बाहुबली, भरत एवं अनेक गणधर	यह पर्वत चीन की अधिकार सीमा मे है। पासपोर्ट आवश्यक है। अष्टापद के नाम से विख्यात
03. अहिच्छेत्र	आंवला	18	भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञान स्थल	सवरदेव-कमठ द्वारा पार्श्वनाथ पर उपसर्ग
04 चौरासी	मथुरा जंक्शन	5	अंतिम केवली जम्बूस्वामी	विद्युच्चर आदि 500 मुनियो पर उपसर्ग
05. पाटलिपुत्र	गुलजारबाग पटना	3	श्रेष्ठी वृषभदास के पुत्र-सुदर्शन मुनि	क्षेत्र दर्शन स्टेशन पर ही है
बिहार				
06. पांवापुरी	बिहार शरीफ	12	भगवान महावीर	सरोवर मे सुन्दर मन्दिर तथा समवशरण मदिर
07. गुणावा	नवादा	2	भगवान महावीर के मुख्य गणधर इन्द्रभूति गौतम	पावापुरी के समान तालाब के मध्य जल मंदिर
08. सम्मेद-शिखर	पार्श्वनाथ हिल	22	वर्तमान चौबीसी के 20 तीर्थंकर एव करोडो मुनि	पहाड परिक्रमा 45 कि मी. व वन्दना 30 कि.मी
09. मंदार-गिरि	मंदार हिल	3	पद्मरस, अंचल एवं अशोक आदि अनेक मुनि	उत्तग मदार पर्वत की चढाई 2 कि मी 700 फुट
10. चम्पापुरी	भागलपुर	4	भगवान वासुपूज्य	नाथनगर मोहल्ला ही चंपापुरी

मध्यप्रदेश

11. सोनागिरि	सोनागिर	5	महाराजा अरिन्जय के पुत्र नंग, अनंग एवं 5½ करोड़ मुनि	पहाड़ी वन्दना अत्यन्त सुलभ
12. द्रोणगिरि पर्वत लघु	द्रोणगिरि/(मलहरा)		गुरुदत्त एवं अनेक मुनि	अर्ध चन्द्राकार समेद शिखर 232 सीढ़ियाँ
13. रेशन्दीगिरि	दलपतपुर	11	वरदत्त, इन्द्रदत आदि मुनि	तलहटी मे सुन्दर जल मन्दिर
14. मुक्तागिरि	एलिचपुर		3½ करोड़ मुनि	निर्मल परिणामों से मेढ़ भर कर स्वर्ग गये
15. सिद्धवरकूट	ओकारेश्वर		2चक्रवर्ती, 10कामदेव, 3½ करोड़ मुनि	रेवा नदी का पूर्वी तट नर्मदा एवं कावेरी का संगम
16. नेमावर बडवानी	(खरगोन)		रावण पुत्र आदिकुमार एवं 5½ लाख मुनि	रेवा नदी का पश्चिमी तट
17. पांवागिरि	(ऊन)	15	स्वर्णभद्र आदि 4 मुनि	चेलना नदी का तट पंच पहाड़ी
18. चूलगिरि बावनगजाजी	बडवानी		रावण भाई कुंभकर्ण एवं पुत्र इंद्रजीत	संसार की सर्वोच्च 84 फुट ऊँची कायोत्सर्ग प्रतिमा
19. उज्जैन	उज्जैन	40	अन्त :कृत केवली अभय घोस	स्मशान मे रुद्र ने भगवान महावीर पर उपसर्ग किया

महाराष्ट्र

20. कुन्थलगिरि	काशीटाउन	55	कुलभूषण एवं देशभूषण मुनि	आचार्य शांतिसागर समाधि स्थल
21. गजपन्था	नासिक	6	7 बलभद्र एवं 8 करोड़ मुनि	म्हसरूल गांव, पर्वत वन्दना 435 सीढ़ियाँ
22. मांगी-तुंगी		1	राम, हनुमान, सुग्रीव, गव, गवाख्य, नील, महानील एवं 77 करोड़ मुनि	पर्वत वन्दना 2960 सीढ़ियाँ

गुजरात

23. पांवागढ़	चांपानेर		रामपुत्र अनंग लवण (लव) मदनांकुश (कुश) लाड के राजा, 5 करोड़ मुनि	जल प्रपात और नदी के मनोरम दृश्य

24. शत्रुञ्जय	पालीताणा	4	3 पांडव (युधिष्ठर, भीम, अर्जुन) एवं 8 करोड़ द्रविड़ राजा	श्वेताम्बर समाज के 3500 मंदिरों के बीच एक दिगम्बर मन्दिर
25. गिरिनार	जूनागढ़	5	भगवान नेमीनाथ एवं 72 करोड़ 700 मुनि	पर्वत वन्दना 11 हजार सीढ़ियाँ
26. तारंगा	तारंगा हिल	9	वरदत, वरांग, सागरदत्त एवं 3½ करोड़ मुनि	कोटिशिला एवं सिद्धशिला नामक 2 पहाड़ियाँ

- जैन डायरी, जयपुर

ववहारेणुवदिस्सदि णाणिस्स चरित्तदंसणं णाणं।
ण वि णाणं ण चरित्तं ण दंसणं जाणगो सुद्धो।।

ज्ञानी के ज्ञान, दर्शन व चारित्र – ये तीन भाव व्यवहारनय से कहे जाते है, निश्चयनय से न ही दर्शन है, न ज्ञान है और न चरित्र है। वह तो ज्ञायक शुद्ध भाव है।

जो हि सुदेणहिगच्छदि अप्पाणमिणं तु केवलं सुद्धं।
तं सुदकेवलिमिसिणो भणंति लोयप्पदीवयरा।।

जोसुदणाणं सव्वं जाणदि सुदकेवलिं तमाहु जिणा।
सुदणाणमाद सव्वं जम्हा सुदकेवली तम्हा।।

जो जीव वास्तव मे श्रुतज्ञान (भावश्रुत) से इस अद्वितीय शुद्ध आत्मा का अनुभव करता है उसको लोक के प्रकाशक ऋषि निश्चय श्रुतकेवली कहते है।

जो जीव समस्त श्रुतज्ञान (द्रव्यश्रुत) को केवल जानता है उसे जिनदेव (व्यवहार) श्रुतकेवली कहते है, क्योकि सम्पूर्ण श्रुतज्ञान (द्रव्यश्रुत) (के आधार से उत्पन्न फल भावश्रुत) आत्मा होता है। इस कारण वह (व्यवहार) श्रुतकेवली है।

- निर्ग्रन्थ प्रवचन 5

षष्ठम् खण्ड

卐

ART AND PAINTINGS OF
JAIN TEMPLES

1. TIRTHAS, TIRTHANKARA STATUES
& TEMPLES TREASURES OF INDIAN CULTURE
J D. JAIN 1

2 BHANWAN MAHAVIRS MASSAGE TO HUMAINITY
MAHAVIR PRASHAD JAIN 3

With Best Compliments From

QUICK SAFE LOW RATE

ROHIT ROAD LINES

Fleet Owners & Transport Contractor

H.O. H-2, Transport Nagar JAIPUR

☎

45134 44122, 44127, 510997, 600102

Available :

Full Truck & Daily Parcel Service For
All Rajasthan & Uttar Pradesh

Specialist in :

Trailer & Truck Suppliers for Heavy
Machineries & ODC Equipments in ALL Over India

Branches & Agencies :

Kishangarh *Phone:* 44167	**Bhilwara** *Phone* 27059	**Beawar** *Phone* 20546
Kanpur *Phone :* 600480	**Agra** *Phone :* 362280	**Balotra** *Phone :* 20142
Allahabad *Phone* · 404128	**Lucknow** *Phone* 234987	**Varanasi** *Phone :* 370523

PROP. HEERALAL KATARIA

TIRTHAS, TIRTHANKARA STATUES & TEMPLES TREASURES OF INDIAN CULTURE

From literary point of view, the place (Ghat) from where the river is crossed is called Tirtha In a similar analogy, all those avenues and methods which help in crossing the worldly ocean (desires) are named as Tirthas In this way Gandharas, Aagama and Shrutas can also be called as Tirthas, because they can become the noble cause for swimming the worldly ocean Shravakas help the Shramanas in observing their activities (Saadhana) and the Shramanas encourage in turn, Shravakas in following and observing their religious traditions Hence the Jainacharyas have called four type (Chaturvidha) Shramana Sangha also Tirtha

Tirthas are of three types 1) Siddha Khyetra- from where the Tirthankaras and other saints attain Nirvana e g Sammed Shikhar Girnar etc , 2) Atishaya Khyetra- where miracles happen and the devoties believe that their desire swill be fulfilled e g Shri-Maveerji, Padampura etc 3) Ancient temples of historical and Archeological importance and new temples

Jain Tirthas were mostly established in the mountain valleys having beautiful surroundings and gardens The Tirtrhas like Sammed Shikhar, Girnar, Mount Abu , Ranakpur, Palitana are few examples of such Tirthas They have direct link with the environment and nature These Tirthas contrbute in maintaining the ecology and naturalness of the environment The religion is defined as the 'Nature of the Substances' and one enjoys the direct view of the Nature at the Tirthas

Tirthas (Pilgrimage centers) remind us of those days when the sources and resources were used for the development of social and cultural activities The history of Shalaka Persons is hidden in these centers, the shear remembrance of which enlightens our life The stream of great deeds done by these Shalaka Persons act like instruments of healing for the depressed persons The sand ofthe roads leading to these Tirthas become so sacred that by simply touching it the soul gets purified The birth and death cycles in the life comes to an end

The Tirthas strengthen the patriotic feelings and develop national character A pious persons wants to get relieved of the bad deeds done in

the past and at the same time one wants to enjoy the natural beauty of the surroundings of these places That is why our forefathers established these Tirthas at those places where there was natural beauty good climate, peace and tranquility, where the mind and body get consolation in the laps of the nature

The Tirthas are the direct examples of the life lead by the Tirthankaras and the Siddhas (the liberated souls) Their life has been a source of inspiration to the human beings Tirthas are the Saadhana (Meditation) centers These places bring togethter the seekers of the truth One gets the opportunity to read the scriptures and listening the discourses from saints and eminent person

The statues existing at these places, on whose faces the infinite peace and non-attatchment is visible, say silently only one thing "O Saadhak, you do'nt look at us, you see inner of yourself for a moment only be closing your eyes-your Karman bondages will be broken The penetrating insight of a purer mind explodes the Great-delusion Through concentrating at the statue-without craving for the pleasent or showing an aversion for the unpleasent- the mind gets purified This is the real Dhamma or Cosmic law The Saadhak experiences the fundamental truth, that is the nature of the substances as it is,not as he would like it to be The delusion of the ego begins to crumble He begins to experience real happiness

The statues inspire us silently 'Do what is right Be pure-translated into daily life this is an art of living efficiently and beneficially with an X-ray lke mind that can penetrate any problem See the things as it is-minus delusions and illusions that cloud intellectual exercises One has to go deep within oneself, not merely at the intellectual or devotional but at the actual experiential level

There are people, who inspite of their meagre resources, but with a zeal to visit piligrimage centers, save money regularly for this cause Among the main constituents of religion, piligrimage is one of the most important aspect of it Piligrimage is a means of spiritual upliftment for both Shramanas and Shravakas During the piligrimage period as much as restraint of body and thought should be observed-e g Chastity, avoid eating of items not prescribed in jaina religion, maximum time to be devoted in "Bhakti and Bhajan Pooja and Kirtan and reading of philosophical and religious books etc

continue ..... Page No. 4

Bhagwan Mahavira's Message To Humanity

Bhagwan Mahavira pronounced that the human soul (jeeva-Atman) has the potentialaity of Divinity in it and has the innate capacity of ascending to Godhood (Param-atman) through a process of purification by inculcating Right Faith (Samyak Darshan), Right Knowledge (SAMYAK GYAN) and Right conduct (Samay Charitra)- "Saymak Darshan, Gyan, Charitrani Moksha Maragha" to attain this Noble End he preached the five fold path of Anuvrata for the householder & Mahavrata for recluse or the 'Sadhu' These five tenets of Satya (Truth), Ahimsa (Non-Violence to the living), Achaurya (Non steacling), Aparigraha (non possessiveness) and Brahamcharya (Celibacy) These five principles are to be observed in thought, word and deed (Mann, Vachana and Kaye) The strict observance of this code of conduct will lead both the householder and the 'Sadhu' to the control of his senses causing the elimination of 4 'Ghatia Karmas' and leading him towards Omnisence (enlightenment) which is the state of Godhood or 'Paramatman' The destruction of another 4 'aghatia karma's will lead to the attainment of Nirvana (Moksha), liberation from the cycle of birth and death He ordained that Love for the humans and other living beings and hatred or malice for none is the essential primary condition for the purification of the soul The principle of Live and Let Live (jeo or jene do) was the hallmark of his teachings Truth (Satya) lies in describing the thing as you see or understand it without any favour or prejudice It will despel all fears from your mind thus helping you attain the state of perfect equanimity Earn according to your full capacity but keep only as much as you need and distribute the rest among others is the crux of the principal of 'Aparigraha' Never take which is not yours or which is not given to you even if it is within your easy reach, is the essence of the tenet of Non-stealing 'Achaurya' 'Brahamcharya' entails complete control over your senses through 'mann', 'vachan' and 'kaye' i e in thought, word and deed Thus sanctified by the meticulous and willing observance of these principles human soul gets well set on the path of Godhood The doctrine of 'Anekantvada' or Non-absolutism, is another unique contribution of jaina philosophy, propounded by Bhagwan Mahavira, to human thought and philosophy This doctrine reveals that human findings of truth are neither sationery non absolute These are both dynamic and realistic depending upon the four cornered immutable phenomena of 'Dravya, Kshetra Kala and Bhava' i.e substance, Place, Time and Circumstance We should, therefore, respect all religions and human faiths fully recognising the differences in

Dravya, Kala, Bhava and Kshetra in which these were propounded Taking Ahimsa as a common denominator all human thought preach love, compassion & respect for all for all living beings This principle of 'Anekantavada' thus prostulates the theory of Relativity of all human faiths and enjoins upon us to speak the truth as we see and understand it with a prefix of also and not only saying that we are also right and not that only we are right and others are wrong Thus the philosophy of 'Anekantvad' calls for peace on this earth through the teachings of all absorbing Ahimsa in our hearts and 'Syadavada' (Anekantvada) in our speech This principle thus puts an end to all religious controversies enjoining upon us to respect all religions while having firm faith in our own

Bhagwan Mahavira through his twin principles of Ahimsa & Anekantvada taught us Tolerance, Love and Respect for all humans and compassion towards other living beings Let us bow in obeisence to his memory and follow his teachings to bring about everlasting Peace on our planet earth

- *Mahavir Prashad Jain,*

Kendriya Jeevan Vigyan Academy New Delhi 30

---

from page No.... 2

is our duty to pass-on these Tirthas to our next generation with complete sacredness and protection As long as the Jaina culture is alive in this world the path of true happiness will also be alive This land of Bharat has been considered as leader in the spiritual field is only because the ideals of the religion is practised and preached here Our contribution to this cause should be in the form of protecting these ideals through body, thought and money The society should spend money in rennovating the old temples and Tirthas and in the proper maintenance of the statues specially the ones which are of Archeological and historical importance instead of waisting money in the construction of New temples and Vedi-pratishthas If one discriminates between what is good and what is wrong and if one becomes completely free from house hold activities then this activity itself is Tirtha

- *J. D. JAIN,*

A-2 SHRIJI NAGAR DURGAPURA JAIPUR

सप्तम खण्ड

卐

विज्ञापन

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासघ उन सभी विज्ञापन दाताओ के प्रति आभार प्रकट करता है, जिन्होने अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन देकर अपना सहयोग प्रदान किया है।

शुभ कामनाओं सहित :

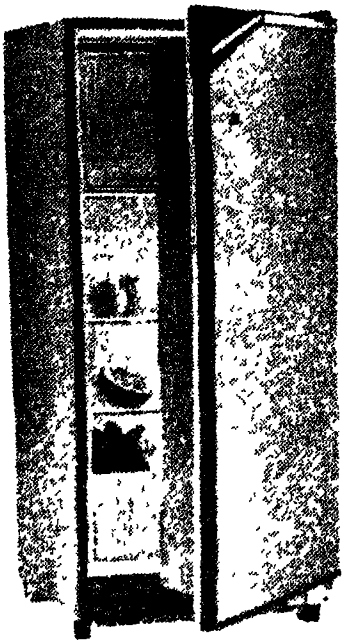

JETMATIC

Popular

टेक्नोलॉजी जो रखे ताज़गी खाने की

कीमत जो रखे ताजगी मुस्कान की

पेश है वीडियोकान का जेटमैटिक पॉपुलर कीमत केवल 7990/ रु
रेफ्रिजरेटरो की जेटमैटिक श्रेणी. कीमत जो रखे ताजगी खाने की

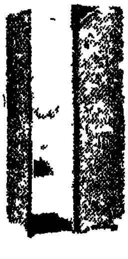

जेटमैटिक पॉपुलर 165 लीटर
(बाह्य कंडेन्सर) 7990 रु

जेटमैटिक रेगुलर 165 लीटर
8990/-रु

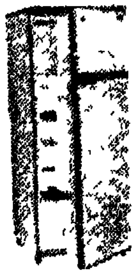

जेटमैटिक एक्स्ट्रा 230 लीटर
9990/- रु

वीडियोकॉन

लीडर है सबका, वीडियोकॉन आपका

With best compliments from

Tej Karan Sogani
Rajeev Sogani

जो घर की चर्चा मंदिर मे करता है, वह पापात्मा है,
और जो मंदिर की चर्चा घर मे करता है, वही धर्मात्मा है।

Kt
Jewellers

KANHAIYALAL TEJKARAN JAIN
(SOGANI)

215, Johari Bazar, Jaipur- 302003

Phone:
561628 (S) 517576 (R)

Deals in
22crt Pure Gold Ornaments
&
Silver Jewellery

।। वंदे श्री गुरुतारणम्।।

श्री तारण स्वामी द्वारा रचित,
(श्री मालारोहण जी ग्रन्थ से उद्धृत)

"जे मुक्ति सुक्खं नर कोपि सार्थं,
सम्यक्त्व शुद्धं ते नर धरेत्वं।
रागादयो पुन्यपापाच्य दूरं,
ममात्मा स्वभावं ध्रुव शुद्ध दृष्टं।।६।।"

अर्थ :- जो कोई भी मानव मोक्ष के सुख का अनुभव करता है वही नर शुद्ध सम्यक्त्व को धरने वाला है, वह रागादि से व पुण्य–पाप से दूर है। मेरा आत्मा ऐसा ही स्वभाव वाला है– ऐसा निश्चय से शुद्ध सम्यक्त्वी ने जाना है।

भावार्थ :- शुद्ध सम्यक्त्व के धारक श्रद्धावान जीव अपने चित्–चमत्कार आत्मा का स्वरूप स्याद्वाद–विद्या के द्वारा निर्णय करके अपने को निर्विकल्प और देहातीत चितवन करते हैं। वे निश्चय कर चुके है, मैं सर्वदा मोक्षरूप ही हूँ। शुद्ध निश्चयनय की दृष्टि से आत्मा कभी कर्मो से नही बँधता और जा बँधा नही है वह छूटेगा ही क्या? भाव यह कि आत्मा सदा मोक्षरूप है, शुभाशुभ परिणति आत्मा की नही है, कर्म जनित है और असका विपाक पुदगल मे है, पुण्य–पाप आत्मा की स्वाभविक परिणति नही है, कर्म के सम्बन्ध से हुई है, इसलिये पौद्गलिक है, अत सम्यग्दृष्टि जीव शुभाशुभ परिणति से सर्वथा विरक्त रहकर अपने स्वरूप मे स्थिर होते है।

◆

सादर शुभ कामनाओं सहित :

मैसर्स भगवानदास शोभालाल जैन

निर्माता– बालक बीडी

चमेली चौक, सागर (मध्यप्रदेश) 470002

ज्ञान सर्व समाधान कारक है।

With best compliments from:

M/S Patni Enterprises

Manufacturer and Exporter of

All types of Rajasthani Prints, Dress Materials, Garments, Handicrafts, Silver Jewellery and Antique Type Wooden Furniture etc.

Patni Bhawan,

D-127, Savitri Path,

Bapu Nagar,

Jaipur-302015

Phone

515831, 512406, 512390

Fax.

518571

Pager

9610-312831

शुभ कामनाओं सहित :

दो खूबसूरत पल आराम के ......

सलोना बिछौना

Exclusive Bed Sheets, Bed Covers, Dohar Sets, Quilts

डीलर - मुकेश कुमार राजेश कुमार

अनिता एन्टर प्राईजेज

2695, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता,

चौथा चौराहा, जयपुर (राज.)

ज्ञानी के लिए मरण भी एक उत्सव है।

शुभ कामनाओं सहित :

जयपुर प्रिन्टर्स प्रा० लि०

सुन्दर व आकर्षक छपाई का एकमात्र मुद्रण संस्थान

एम. आई. रोड़, जयपुर - 302001 (राज.)
फोन - 3 7 3 8 2 2
3 6 2 4 6 8
फैक्स - 375970 p.p.

With Best Compliments From: *Ashok Jain*
Vinod jain

Chhabra Communications
&
Jain Photo Copier

309/6, Shop No.6, Shanti Path,
Raja Park, Jaipur.-4
Phone: 623847, FAX · 91-141-620260

S T D , I S D , Conference Facility, Fax,
Photostat, Lamination, Computer Works, And
Data Processing

Res. 5-GA-21, Jawahar nagar, Jaipur-302004
Phone : 652700, 653800.

शुभ कामनाओं सहित :

एम. डी. पांड्या
फोन . 564087
दुकान न 138, जौहरी बाजार, जयपुर

आर. के. जैन
फोन : 562986
दुकान नं. : 85, 86 जौहरी बाजार, जयपुर

शुभ कामनाओं सहित :

फेक्स : 0141-315896
316563
310810
315617
310453

बाकलीवाल

एस.टी.डी., पी.सी.ओ.
67-बी, रेडियो मार्केट, मनिहारों का रास्ता,
नेहरू बाजार, जयपुर

प्रो. अशोक कुमार जैन (बाकलीवाल)

चारित्तं खलु धम्मो

चारित्र ही निश्चय धर्म है।

With Best Compliments From.

Off 319839
311093
Resi : 372601
368810

JAIN TRADERS

Whole Sale Dealers in:

Steel Tube, Fitting, P.V.C Polythene, H.D.P.E Pipe
Rubber Belting, Hose Tube Rigid Pipe, etc.

Vijay Jain

Office:
E-89, M G D (Aatish) Market,
Jaipur (Raj.)

Residence:
24, Vivek Nagar, Inside Mewar
Hotel Gali, Sindhi Camp, Jaipur

शुभ कामनाओं सहित :

जैन आइरन एण्ड फिटिंग स्टोर्स

दुकान नं 186, चौडा रास्ता, जयपुर- 302003
फोन :
कार्यालय- 312440 निवास - 515734, 515457

'चार मिनार' ब्रांड एसीसीट्स,
'कैपस्टन' ब्रांड पानी के मीटर
स्टीम पाइप फिटिंग, आर ब्रांड फिटिंग, लीडरवाल्वस
एण्ड कोकस, सीमलेस ट्यूब आदि के विक्रेता

शुभ कामनाओं सहित :

णमो अरिहंताणं

णमो सिद्धाणं

णमो आयरियाणं

णमो उवज्झायाणं

णमो लोए सव्वसाहूणं

यह पंचणमोकार मंत्र सब पापों का नाश करने वाला है।
इसके पढने से सब प्रकार का मगल होता है।

प.पू.मु. श्री सुधा सागर जी महाराज

JCT FABRICS

Anilkumar Sunilkumar (Jain)

Authorised Dealer :

JCT Ltd. PHAGWARA

Radio Market, Nehru Bazar, JAIPUR-3

Phone :

Shop 317033 Resi. 314595

शुभ कामनाओं सहित :

वर्धमान

डीलर :

वर्धमान, ओसवाल व मालवा ऊन

ऊन, ऊनी होजरी व कोटन होजरी के थोक व खैरूज विक्रेता

208, हिन्द होटल के सामने, चौड़ा रास्ता, जयपुर-3

गुलाबचन्द पाँण्डया

राकेश पाँण्डया

फोन : घर - 323824 दुकान - 561260 पीपी

अहिंसा परमो धर्मः

शुभ कामनाओं सहित

वर्धमान आइरन स्टोर

लीक सरिया, एंगल पत्ती, प्लेन-नालीदार चददर के

थोक एवं खेरूज विक्रेता

हमारे यहाँ फैब्रिकेशन का कार्य भी होता है

फोन दुकान - 313567 घर - 561714

शुभ कामनाओं सहित :

'झादि णियदं णाणं सो संधुणोदि कम्मरंय'
जो ज्ञान को निश्चय रूप में ध्याता है, वह कर्मरज को खिरा देता है।
- आचार्य कुन्दकुन्द

सब तरह की छपी हुई स्टेशनरी के प्रमुख विक्रेता

राज पंचायत प्रकाशन

धामाणी मार्केट, चौडा रास्ता,
जयपुर-302003 (राजस्थान)

☎
312402(S), 312364(W), 603654(R)

❖

सब तरह के कागज के प्रमुख विक्रेता

डीलक्स पेपर कन्वर्ट्स

धामाणी मार्केट की गली,
चौडा रास्ता,
जयपुर-302003 (राजस्थान)

श्री महावीराय नम

शुभ कामनाओं साहित :

गणेशलाल जयकुमार एण्ड सन्स

जनरल मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजेन्ट

Spl. डी-3, नई अनाज मण्डी, चादपोल, जयपुर-302001

फोन 374030

❖

गणेशलाल जयकुमार

8, अमर तल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता - 1

☎

ऑफिस : 25-1845, 25-1458 घर . 334-8655, 334-6179

।। श्री महावीराय नमः ।।

शुभ कामनाओं साहित :

घेवरचन्द विनोदकुमार जैन

डी-64, अनाज मण्डी,

चांदपोल, जयपुर (राजस्थान)

☎

ऑफिस : 361298

घर : घेवरचन्द - 361550, अशोककुमार - 372380

With best compliments from :

JAIN ELECTRICALS

E-59, M.G.D. Market, Jaipur- 302 002

☎

(O) 318113, 316484 (R) 315496, 511414

Authorised Distributors & Dealers :-

- "Sigma" M C B'S & D B'S
- "Vinay" "SSK" "FINE" "Anchor" & "Veto" Electrical Accessories
- "Godrej" P V C. Wires & Cables
- "Konark" ISI Wires & Armoured Cables
- "Gindal" M S Pipe & Fitting
- "Allwin" "Setia" ISI & "BLP" "Godrej" P V C Conduit Pipe & Fitting
- "Chetan" "Maxel" Mono Block Pump Set

Factory :

Jain Plastics

A-15, Ramgarh Road, Near Baniwal Kanta
Jaipur - 302 002

Manufacturers of ·

- P V C Wires
- Armoured & Unarmoured Cables
- Submersible Cables

श्री महावीराय नम

शुभ कामनाओं सहित :

Phone: Office - 379711
Resi. - 364078

RAMJI WAN KAILASH CHAND

Siwar wale

Grain Merchants and Commission Agents

B-13, New Anaj Mandi, Chandpole, Jaipur-302001

रामजीवन कैलाशचन्द जैन

बी-१३, नई अनाज मण्डी, चाँदपोल, जयपुर-१

श्री महावीराय नम

शुभ कामनाओं सहित :

Phone. Office - 372836
Resi - 301099
Tele . Mertawala

Saraogi Traders

सरावगी ट्रेडर्स

ग्रेन, किराणा मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजेन्ट

बी-14, नई अनाज मण्डी, चॉदपोल

जयपुर- 302001 (राज)

संबन्धित फर्म - रामटैक मार्बल (प्रा.) लिमिटेड

मदनगंज किशनगढ़, फोन नं. 45314

परम्परा का अंधानुकरण मूर्खों की चाल है।

शुभ कामनाओं सहित :

स्व० मालचन्द जी झांझरी
की
प्रेरणादायक स्मृति में
अग्रसर

वर्धमान एन्टरप्राइजेज

109, आतिश मार्केट, त्रिपोलिया बाजार,
जयपुर - 302002

322108, 322343
फैक्स
314995

शुभ कामनाओं सहित :

ललित कुमार गोधा
दीपक कुमार गोधा

चाँदमल उमरावमल हलवाई

हमारे यहाँ सभी प्रकार की शुद्ध मिठाईयाँ हर समय तैयार मिलती है एवम् शादी व अन्य उत्सवों में केटरिंग की व्यवस्था की जाती है।

म.नं. 653, मनिहारों का रास्ता,
त्रिपोलिया बाजार, जयपुर
फोन . 312253

With Best Compliments From:

Good Luck Dresses

82-83, Johari Bazar, Jaipur

Phone :
Showroom
565959
Residence
563490

Exclusive
Family Wear Shop

With best compliments from

Gyanjee Sweet & Caterers

'Laxmi Niwas' C-22, Bhagwandas Road, Jaipur-1

Gyan Chand Jain

✆ 374260, 362156

Outside Catering-A Speciality

With Best Compliments From:

ES

Evergreen Sanitations

HOUSE OF SANITARY GOODS

CERA
SANITARY WARES

JOHNSON
TILES

GI Pipe Fittings

ARK
BATHROOM FITTINGS

SHOP · 66-67, GOPAL PURA BY-PASS
NEAR RLY CROSSING, JAIPUR-18
PHONE : 545300, (R) 551332
FAX 0141-312715 PAGER · 9610-304715

RIF
C I Pipes & Fittings

Shri Mahaviray Namah

With Best Compliments From:

Sweet House

Main Shop:

MAHAVEER PARK, Kishan Pole Bazar, Jaipur-3
Tel.: 319080 (S) 316805 (R)

Ext. COUNTER :

39, Kishan Pole Bazar, Jaipur.

श्री दिगम्बर जैन संस्कृत शिक्षा समिति, जयपुर (राजस्थान) द्वारा संचालित

श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर

१. श्री दिगम्बर जैन आचार्य सस्कृत महाविद्यालय, जयपुर भारतवर्ष मे दिगम्बर जैनसमाज के सहयोग से सचालित प्राचीनतम सस्कृत महाविद्यालय है जिसमे जैन धर्म–दर्शन एव सस्कृत साहित्य की उच्च शिक्षा की उत्तम व्यवस्था ह।

२ राजस्थान मे जैनदर्शन का एक मात्र उच्चस्तरीय अध्ययन केन्द्र।

३ शास्त्री, आचार्य एव विद्यावारिधि (पी–एच डी) हेतु राजस्थान विश्वविद्यालय एव विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से सम्बद्ध।

४ 10+2 शिक्षा नीति के अन्तर्गत प्रवेशिका, वरिष्ठ उपाध्याय के लिए माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान अजमेर से सम्बद्ध है।

श्री दिगम्बर जैन संस्कृत शिक्षा समिति द्वारा प्रदत्त सुविधाएँ

१ महाविद्यालय मे अध्ययनरत योग्य छात्रो के लिए नि शुल्क शिक्षा एव छात्रावास मे नि शुल्क भोजन एव आवास की व्यवस्था।

२ वेदी–प्रतिष्ठा कलश–ध्वजारोहण, मण्डल–विधान आदि धार्मिक अनुष्ठान एव विवाह, नवगृह–प्रवेश आदि सामाजिक सस्कार जैन विधि से सम्पन्न करवाने की व्यवस्था।

3 पर्यूषण पर्व, अष्टान्हिका पर्व आदि पर्वो म प्रवचन एव धर्म प्रभावना हेतु जैन विद्वानो की व्यवस्था।

४ दर्शन भारती पत्रिका का प्रकाशन।

डॉ० कस्तूरचन्द कासलीवाल	*रमेश चन्द पापडीवाल*	*डॉ० शीतलचन्द जैन.*
अध्यक्ष	**मंत्री**	**प्राचार्य**

With Best Compliments From:

☎ 560261 (O)
600255 (R)

F.D. RANGWALA

एफ. डी. रंगवाला

Stockist : Indokem Limited, Mumbai

फतेहचन्द दासुराम जैन एजेन्सीज

रंग एवम् रसायन के विक्रेता

नवाब साहब की हवेली, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर-302002

With Best Compliments From:

☎ 563866 (O)
516727 (R)

पदम कुमार जैन / मुकेश बिलाला

BILALA TEXTILE AGENCY

❖

P.M. AGENCY

TEXTILE COMMISSION AGENTS

210, Ist Floor, Gali Gujarwada
Purohitji Ka Katla
Johari Bazar, Jaipur- 302 003 (Raj.)

आयुर्वेदिक औषधियों के

निर्माता व विक्रेता

श्री वर्धमान आयुर्वेदिक रसायनशाला

पण्डित चैनसुखदास मार्ग, जयपुर - 302003

फोन : 317152

शास्त्रोक्त पद्धति से शुद्ध एव
त्यागी–व्रतियो के लिए ग्राह्य
औषधि निर्माण का एक मात्र सर्वाधिक प्राचीन सस्थान

हमारे विशेष उत्पादन :

च्यवनप्राश, ब्रह्मरसायन, द्राक्षावलेह,रस, भस्में, वटिका, चूर्ण, दन्तमञ्जन, शर्बत, अर्क आदि।

।। श्री महावीराय नमः।।

शुभ कामनाओं सहित

धनकुमार जैन

Deepti Textiles

दीप्ति टैक्सटाइल्स

नूतन सूटिंग शर्टिंग
के
थोक व्यापारी

एम.डी. टैक्सटाइल्स

✱

स्टॉकिस्ट

महावीर टैक्सटाइल्स मिल्स, मुम्बई

फैन्सी ब्लाउज 2x2 रूबिया एव पॉपलीन
के
थोक व्यापारी

✱

मनिहारों का रास्ता, किशनपोल बाजार,
जयपुर 302003
फोन : (दु.) 319915 (नि) 318479

है अस्तित्व सप्त तत्वों का, यों मन से करना श्रद्धान।
कहलाता सम्यक्त्व यही बस जो पदार्थ का समुचितज्ञान।।

शुभ कामनाओं सहित :

Gram : FOODGRAIN

Phone:
Office · 372849, 320527
Resi. : 310366

बिरधीचंद चिरंजीलाल जैन एण्ड संस

ग्रेन मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजेन्ट

C-14, न्यू ग्रेन मण्डी, चांदपोल, जयपुर-302001

विरेन्द्र कुमार जैन
राजेन्द्र कुमार जैन
महेन्द्र कुमार जैन

सम्बन्धित प्रतिष्ठान

महावीर आयल इण्डस्ट्रीज

C-66 विश्वकर्मा इण्डस्ट्रीयल एरिया,
रोड न 1, जयपुर (राज)
फोन 330734

With best compliments from :

Gram : DHANIAKING

Phones : Shop 361376
378534
Resi 600989
607912

GOPICHAND SARDARMAL & SONS

Special D-4, New Grain Mandi,
Chandpole, Jaipur- 302003

Grain Merchant & Commission Agent

With Best Compliments From :

ADVERTISING, PHOTOSTAT

Hulash Chand Sablawat Jain

WEDDING CARDS, COMMERCIAL DESIGNING

Readiprint

Arvind Marg, M. I. Road, Jaipur - 302 001.
Phone & Fax : 373468
email : rahul.@jp1.vsnl.net.in

SCREEN PRINTING

With Best Compliments From

SANTOSH ROADWAYS

Transport Contractors & Fleet Owners

H.O. : Ahatram Manzil, Moti Dungari Road,JAIPUR-302 004

Phone : (O) 48834, 45923 (R) 49589, 608731

*

Fax . 0141- 48834

*

Ujas Jain

(Daily Parcel Service Varanasi to All Rajasthan)

Jaipur - 45923 ◆ Varanasi - 327309

Regular service between our Branches

***Ajmer - 432841**
***Bhilwara - 22572**
***Gulabpura - 23189**
***Jodhpur - 47737**
***Kishangarh - 44020**
***U.P. Border Delhi -624327**
***Bhadrawati - 66027**
***Rajkot - 362883**
***Allahabad - 633504**
***Kanpur - 270343**
***Lucknow - 214108**
***Meerut - 513646**
***Mirzapur - 52525**
***Gorakhpur - 332086**
***Varanasi - 327309**
***Indore - 461511**

Sister Concern

Speedways

Moti Dungari Road, Jaipur-302004

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

विश्व के जड चेतन सभी पदार्थ अनादि अनत स्याधीन एव परस्पर अत्यन्त भिन्न है।

AMAR CHAND
BHAG CHAND PAHARIA

Girraj Enterprises Ltd.

(Builders & Promoters)

Jaipur Towers,
Opp. All India Radio
M.I. Road, JAIPUR

Phones:

378794, 374490, 372009

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Rajkumar Kothyari

Kothyari Dresses

121, JOHARI BAZAR,
JAIPUR-302 003

☎

(S) 560432 , (RES) 313421

With Best Compliments From :

राात्रि भोजन से अनेक बीमारियाँ होती हैं,
अतः रात्रि भोजन का त्याग करे।

ADINATH MEDICAL STORES
&
ADINATH ENTERPRISES

Opp S M S Hospital
Jaipur- 302004

☎

(O) 375331 (R) 363140, 373385

With Best Compliments From

COTLERE ®

fine crafted garments

FOR

SCHOOL UNIFORMS

Please Visit -

READYMADE CENTRE

(Near L.M.B. HOTEL)

104, JOHARI BAZAR, JAIPUR-302 004

Phone **Showroom** 565539, **Resi** : 48166

●

RAJENDRA SETHI

PRESIDENT

RAJASTHAN READYMADE VASTRA NIRMATA & VIKRETA SANGH, JAIPUR

With Best Compliments From

Shree Jain Roadways

TRANSPORT CONTRACTORS & TRUCK FLEET OWNERS

Head Office

SANSAR CHANDRA ROAD, JAIPUR- 302001

Phone : **(O) 364895, 369419 (R) 364373, 376762**

Branches & their Phones :

AJMER 432841	BURHANPUR 55532	INDORE 461511 (R) 433562	KISHANGARH 44020, 42242
MEERUT 513646	PANIPAT 23669	BHILWARA 22572	KUCHAMAN CITY 20078
U.P BORDER (Delhi) 624327		KANPUR 270343	PILKHUWA 322737, 322557

REGULAR BOOKING FOR

ALL RAJASTHAN, M.P. & MAHARASTRA

Our Sister Concerns:

SANJAY FREIGHT CARRIERS
(P) LTD
Madanganj-Kishangarh
Phone : 44020

SANTOSH ROADWAYS
Moti Dungari Road,
Jaipur
48834, Resi 49589

ANANT MARBLES & GRANITES (P) LTD.
H.O. Madanganj-Kishangarh
Phone : 42879, 44382

मन्दिर समाज को संचालित व नियमित करते हैं।

शुभ कामनाओं सहित :

नवीन, नीलम, रजत, निशी ठोलिया

1803, फतेहपुरियों का दरवाजा
चौडा रास्ता, जयपुर-302003
Tel.: 568687

शुभ कामनाओं सहित :

**"सांभर नमक रसोई में लाओ
भोजन की पौष्टिकता बढ़ाओ"**

उत्तम गुणो वाला प्रसिद्ध
आयोडाइज्ड सांभर नमक

आई. एस. आई. मार्क के साथ
नये आकर्षक पैक में उपलब्ध

Super wased

SAMBHAR SALT

IODIZED

शुद्धता का प्रतीक

निर्माता:

Is:7224

सांभर साल्ट्स लिमिटेड
(एक सरकारी उपक्रम)

बी-427, प्रधान मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017
Phone - 524097, Pbx- 524093-95

शुभ कामनाओं सहित :

POLO

EXERCISE NOTE BOOK

Paradise

कापियाँ, रजिस्टर, कॉलेज नोट बुक,
स्लीप पैड व लेखन सामग्री
के
निर्माता

अभिनव ट्रेडर्स
1459, संघी जी का रास्ता,
चौड़ा रास्ता जयपुर 3
☎ 316999

फैक्ट्री -
किसान मार्ग,
बरकत नगर, जयपुर
☎ 593721

शुभ कामनाओं सहित :

हरक चन्द सरावगी

❖

❖

❖

❖

❖

पी- 8 कलाकार स्ट्रीट
कलकत्ता-700007

जिनालय जीवन की सुगति का बीमा है।

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

Chhitarmal Bhuramal Traders Pvt. Ltd.

CBB

डबल मयूर ब्रांड ®

जीरा धनियाँ सौंफ

के थोक विक्रेता

छीतरमल भूरामल ट्रेडर्स प्रा.लि.

रजिस्टर्ड ऑफिस :

बी-11, चांदपोल अनाज मंडी, जयपुर - 302 001 (राज.)

फोन : (ऑफिस) 376741, 368567 ♦(घर) 563589, 562660, 565818

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

रूपनारायण सरदारमल सराफ
खण्डाका

सोना, चाँदी के थोक व स्वेरूंज व्यापारी तथा आर्डर सप्लायर्स

दु.नं. **170**, छोटी चौपड़, किशनपोल बाजार
(कोतवाली के पास) जयपुर-**302003**
फौन:
दुकान : **315486, 323783**
घर : **367963**

हमारे यहाँ शुद्ध चांदी व शुद्ध चांदी से बने हुए जेवरात
कड़े, खंगाली, आंवला, नेवरी, पाजेव, व चुटकी

शुद्ध सोने से बने हुए जेवरात
बोरला, बाटा, जोल्या, भोंरीया, टापस, अंगूठी,
फैन्सी सामान आदि

हर समय तैयार मिलता है व आर्डर पर माल तैयार मिलता है। शुद्धता की पूर्ण गारन्टी है।

प्रो० ओमप्रकाश खण्डाका

[illegible]

[illegible]

— [illegible]

With Best Compliments from :

GEMCO

(GEM STONES, DIAMOND, JEWELRY, HANDICRAFTS & GARMENTS)

OFFICE :	LAL HAVELI, RASTA M.S.B., JAIPUR 302003(INDIA)		
	TEL.	:	(141) 561039, 573324, 556408, 569406
	FAX	:	(141) 561233
	E-MAIL	:	GEM COIND @ JPI. VSNL. NET.IN
RES. :	TEL.	:	(141) 545823, 545824
	FAX	:	(141) 562694

✪ INDIA'S HIGHEST GEM STONE EXPORT AWARD WINNER ✪

[illegible]

With Best Compliments From :

KALA
COLOUR LAB

1340, Maniharo Ka Rasta, Nehru Bazar, Ph. - 321626 JAIPUR

JAIPUR
- 7-8-9 Kishanpole Bazar. Ajmeri Gate Phone 318257, 314642, 324646
- Near Kamal & Co. Tonk Road. Phone 513795
- 321, Johari Bazar, Phone : 574096
- Shop No 27, Chandpole Bazar, Jaipur. Phone 317784

JODHPUR
- M G Hospital Road, Jalori Gate. Ph · 37242, Fax 0291-611841

BHILWARA
- 108, Indira Maket. Phone. 23077

एक्को सहावसिद्धों, सोहं अप्पा वियप्प परिमुक्को।
अण्णो ण मज्झो सरणं सरणं सो एक्को परमप्पा।।

अर्थात् जो आत्मा अनुपम है, स्वभाव से सिद्ध है, विकल्प से रहित है वह मैं हूँ। मेरे लिये दूसरा कोई शरण नही है, वह अनुपम परम आत्मा ही मेरे लिये शरण है।

शुभ कामनाओं सहित :

पोल्याका इन्वेस्टमेंट प्रा. लि.

म न. 42, गोधों का रास्ता,
किशनपोल बाजार,
जयपुर 302003

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया

से

अनुमति प्राप्त नान बैंकिंग फाइनैन्स कम्पनी

♦

कम्पनी के पास भारतीय रिजर्व बैक अधिनियम 1934 की धारा 45 आइ ए के अन्तर्गत् भारतीय रिजर्व बैक स्वीकृति सख्या 1000002 द्वारा जारी दिनाक 5 जनवरी, 1998 का वेध पजीकरण प्रमाण पत्र है। तथापि भारतीय रिजर्व बेक, कम्पनी की वित्तीय सुदृढता की वर्तमान स्थिति अथवा कम्पनी द्वारा दिये गये किसी विवरण अथवा प्रतिवेदन अथवा व्यक्त की गयी किसी राय को सत्यता के लिये और कम्पनी द्वारा जमा राशियो की अदायगी/देयताओ के निर्याह के लिये कोई जिम्मेदारी अथवा गारटी स्वीकार नही करता।

अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु, जिनमन्दिर, जिनबिम्ब, जिनवाणी, और जिनधर्म — ये ही नवदेवता हैं।

इनकी पूजा, प्रक्षाल, दर्शन, स्वाध्याय, द्वारा मन्दिरों एवं शास्त्र भण्डारों की सुरक्षा सम्भव है।

दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ, जयपुर

जीवन में कभी न भूलिये!

धन पाकर धर्म न भूलिये।

पद पाकर न्याय करना न भूलिये।

ऐश्वर्य पाकर स्वजनों को न भूलिये।

आयोजन में प्रयोजन को न भूलिये।

समय बीत जाने पर उपकार को न भूलिये।

स्वार्थ वश होकर रीति-नीति को न भूलिये।

भोग-भोगते समय उसके फल को न भूलिये।

स्त्री पाकर माता, पिता व गुरुजनों को न भूलिये।

संयोग में स्वभाव को न भूलिये।

हरपल-हरक्षण ज्ञायकस्वभावी आत्मा को न भूलिये।

शुभ कामनाओं सहित :

सुन्दर, सस्ती एवं आकर्षक छपाई के लिए

जैन कम्प्यूटर्स,

मंगलधाम, फ्लेट नं. 107,

ए-4 बापूनगर, जयपुर -302 015

इसे कहते हैं
सोने पर सुहागा

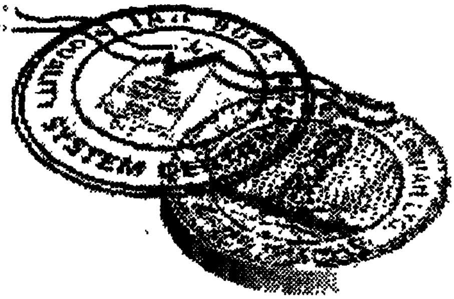

**कार्यकुशलता और आर्थिक सुदृढता के साथ
गुणवत्ता का भी प्रमाण**

इसके साथ है - असख्य ग्राहको का बैक मे अटूट विश्वारा और भरारा।
जैसे **खरा सोना**। इस अद्वितीय बन्धन को और मज़बूती देती हैं बैंक की
उत्तम सेवाऐ और कार्यकुशलता जिसके लिये मिला है हमको

ISO 9002 : 94

सी-स्कीम, जयपुर शाखा
को प्रदत्त

प्रमाण-पत्र।

गुणवत्ता की एक अन्तर्राष्ट्रीय मोहर, जो कडी रो कडी गुणवत्ता स्तर की कसौटी
पर खरो उतरने के बाद ही मिलती है। इस सम्मान को पाने का गौरव,
निजी क्षेत्र की बैंको मे पहली बार मिला है, सिर्फ हमे।

इसे ही कहते है सोने पर सुहागा।

दी बैंक ऑफ राजस्थान लि.

केन्द्रीय कार्यालय - जयपुर
पजि कार्यालय - उदयपुर

हार्दिक शुभकामनाएँ

विधवा स्त्री एवं अनाथ बच्चा सहायता फंड ट्रस्ट

ठिकाना बख्शी भागचन्द, जयपुर

(धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त)

सामाजिक उत्थान हेतु

विधवा स्त्री मासिक सहायता, अनाथ बच्चों को शिक्षा,

स्कूल फीस एवं चिकित्सा सहायता।

कार्यालय :

अशोक कुमार सुनील कुमार बख्शी

175 [illegible]

फोन [illegible] 561696, 561880 [illegible]

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

श्री दिगम्बर जैन चैरिटेबिल ट्रस्ट मलजी छोगालाल

एम. आई. रोड
जयपुर